विषय-सूची।

वर्त्तमान प्रकरण ।

पृष्ठ

परिवर्त्तन-प्रकरण।

(१८९०—१९२५)

बत्तीसवाँ अध्याय।

परिवर्त्तन-कालिक हिन्दी।

यों तो प्रौढ़ माध्यमिक काल ही में हिन्दी भाषा परिपक्व हो चुकी थी, पर अलंकृत काल में उसे हमारे कविजनों ने आभूषणों से सुसज्जित कर ऐसी मनमोहिनी बना दी, कि उसमें किसी प्रकार की कमी न रह गई, वरन् यों कहना चाहिए कि उत्तरालंकृत काल में भूषणों की ऐसी भरमार मच गई कि उसके कोमल कलेवर पर उनका बोझ प्रायः असह्य प्रतीत होने लगा। हम स्वीकार करते हैं कि कोई शशिवदनी चाहे जितनी स्वरूपवती हो, पर कुछ आभूषण पिन्हा देने से उसकी शोभा बढ़ जाती है। फिर भी कहना ही पड़ता है कि जैसे अंग-प्रत्यंगों को आभरणों से आच्छादित कर देने से कुछ ग्रामीणता एवं भद्दापन बोध होने लगता है, उसी प्रकार कविता को भी विशेष रूप से अलंकृत करने पर उसकी नैसर्गिक सुघराई में वट्टा लग जाना स्वाभाविक ही है। अन्य भाषाओं में प्रायः माध्यमिक काल के पीछेही परिवर्तन

समय आजाता और कुछही दिनों के बाद उनकी वर्तमान दशा का वर्णन होने लगता है, पर हिन्दी में यह विलक्षण विशेषता है कि माध्यमिक और परिवर्तन काल के बीच में दो शताब्दियों से भी कुछ अधिक समय तक हमारे कविजन भाषा को अलंकृत करने ही में लगे रहे। इसका परिणाम यह अवश्य हुआ कि हिन्दी जैसी मधुर एवं अलंकारयुक्त दूसरी भाषा का ढूँढ़ना कठिन है और इस अंग की प्रौढ़ता हमारी भाषा में प्रायः एक दम अद्वितीय और अभूतपूर्व है, तो भी मानना ही पड़ेगा कि कम से कम उत्तरालंकृत काल में इस अंग की पूर्ति में आवश्यकता से कहीं विशेष श्रम कर डाला गया। इसके अतिरिक्त उस समय कवियों का झुकाव शृंगार रस की ओर इतना अधिक रहा कि उनमें से अधिकांश का रुझान दूसरे विषयों पर न हो सका। हमारी समझ में पूर्वालंकृत काल तक हिन्दी को जितने आभूषण पिन्हाये जा चुके थे उन पर यदि हमारे कविजन संतोष कर लेते और शृंगार रस को छोड़ उपकारी बातों का उचित समादर करते, तो आज दिन हमें अपने भाषाभंडार में नूतन विषयों की न्यूनता पर शोक न प्रकट करना पड़ता। स्मरण रखना चाहिए कि उत्तरालंकृत काल में, जब कि हमारे यहाँ लोग भाषा को बाह्याडम्बरों से ही सुसज्जित करने में विशेष रूप से बद्धपरिकर थे, अन्य देशी भाषायेँ और ही छटा दिखलाने लगी थीं। बँगला में भी हमारे पूर्वालंकृत काल एवं उत्तरालंकृत काल के विशेषांश में भाषा अलंकृत रही, परन्तु वहाँ संवत् १८७५ में ही सिरामपुर के पादरियों द्वारा एक समाचारपत्र निकला और इसी समय से गद्य का प्रचार बढ़ने लगा। संवत् १८८५ के लग-

भग मृत्युञ्जय नामक लेखक ने बँगला का प्रबोधचन्द्रिका नामक प्रथम गद्य-ग्रन्थ लिखा। इन्हीं कवि ने पुरुषपरीक्षा नामक एक द्वितीय गद्य ग्रन्थ रचा। इसी समय ईश्वरचन्द्र गुप्त ने संवाद-प्रभाकर नामक एक उत्कृष्ट पत्र निकाला और राजा राममोहन राय ने न्यायशीली लेखनी से संसार को पवित्र किया। ईश्वर-चन्द्र विद्यासागर और अक्षयकुमारदत्त बँगाली गद्य के मुख्य उन्नायक हो गये हैं। इनका रचना-काल १८५० के लगभग था। इन्होंने बहुत ही उत्कृष्ट गद्य-ग्रन्थ रचे और इनके समय से प्रायः सभी विषयों में बँगला भाषा ने बहुत अच्छी उन्नति की। इसी समय के बंकिमचन्द्र चैटर्जी, मधुसूदनदत्त और दीनबन्धु बड़े भारी लेखक और कवि थे। रमेशचन्द्रदत्त ने भी अच्छे ग्रन्थ रचे। आज कल रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुत बड़े कवि हैं, और उनके भाई द्विजेन्द्रनाथ तथा यतीन्द्रनाथ परमोत्कृष्ट गद्यलेखक तथा नाटकरचयिता हैं। बँगला ने वर्तमान उन्नत विषयों में बड़ी अच्छी उन्नति कर ली है। गुजराती एवं मराठी भाषा भी उन्नत दशा में है। अस्तु।

चन्द के समय से उन्नति करते करते इतने दिनों में हिन्दी ने वह उत्कर्ष प्राप्त कर लिया था कि जिसके सहारे अन्य भाषाओं की अपेक्षा उसके काव्यांग इतने दृढ़तर हैं कि प्रायः उन सभों को इसके सामने सिर झुकाना पड़ता है, पर नवीन उपयोगी विषयों की अब तक कुछ भी संतोषदायक उन्नति नहीं हो पाई थी। इस परिवर्तनकाल में अनेक लेखकों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और विविध विषयों पर लेखनी चंचल करने की प्रथा पड़ने

लगी। यों तो आज दिन तक अन्य भाषाओं को देखते हिन्दी में इस विभाग की न्यूनता अगत्या स्वीकार करनी ही पड़ती है, पर जो प्रथा परिवर्तन काल के कतिपय विचारशील हिन्दीहितैषियों ने चलाई उस पर क्रमशः उन्नति होती ही आई है। उत्तरालंकृत काल में कथाप्रासंगिक ग्रन्थों के लिखने की रीति प्रायः जैसी की तैसी ज़ोरों पर रही थी, पर परिवर्तनकाल में उसका कुछ ह्रास हो चला। शृंगार रस एवं रीतिग्रन्थों का प्राधान्य भी अब घटने लगा, पर उसीके साथ काव्योत्कर्ष में भी विशेष न्यूनता आ गई और ठाकुर, दूलह, सूदन, बोधा, रामचन्द्र, सीतल, थान, बेनीप्रबीन और परताप के जोड़ वाले प्रायः कोई भी कवि इस परिवर्तनकाल में दृष्टिगोचर नहीं होते। इतना ही नहीं, वरन् यों कहना चाहिए कि लेखराज, ललितकिशोरी, पजनेस, आदि को छोड़ प्रायः कोई भी वास्तव में बढ़िया कवि इस समय में न हुआ। इसी के साथ इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि यह परिवर्तनकाल केवल ३६ वर्ष का है और उत्तरालंकृतकाल प्रायः एक सौ वर्ष पर विस्तृत है। भक्तिपक्ष की कविता प्रौढ़ माध्यमिक काल में पूरे ज़ोरों पर थी और तत्पश्चात् उसमें कमी हो चली। पूर्वालंकृत समय की अपेक्षा उत्तरालंकृत काल में उसने फिर कुछ कुछ उन्नति की, पर परिवर्तनकाल में सिवा महाराजा रघुराजसिंहजी, लेखराज और ललित-किशोरी के और किसी भी नामी कवि ने उसकी ओर ध्यान न दिया। इस काल में ललितकिशोरी (साह कुन्दनलालजी) ने उस ढंग की कविता की, जो प्रायः तीन सौ वर्ष पहले प्रचलित

थी। वीर-काव्य कब बन्द सा हो गया और गद्य लिखने की प्रथा पहले पहल औरों के साथ चली। टीका लिखने की रीति सब से पहले प्रसिद्ध महात्मा कृष्णदासजी ने चलाई थी और उनके बहुत दिनों पीछे अलंकृत काल में इन पर कतिपय लोगों ने ध्यान दिया था। कृष्ण और सूरति मिश्र ने बिहारी-सतसई पर अनेक प्रकार से टीकायें कीं, पर अब तक इन चार को छोड़ किसी दूसरे भाषाकवि को उत्कृष्ट टीकाकार बनने का गौरव नहीं प्राप्त हुआ था। इस परिवर्तन-काल में सरदार कवि ने सूर, केशव आदि अन्य नामी कवियों के उत्तमोत्तम ग्रन्थों पर भी टीकायें बनाईं और अन्य अनेक लेखकों ने भी टीकाओं पर श्रम किया।

इस काल में सब से बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि हिन्दी-साहित्य से चार पाँच सौ वर्ष के बाद व्रजभाषा और पद्य विभाग का आधिपत्य हटने लगा। जहाँ तक हम को विदित है, सबसे पहले भूपति और सारंगधर ने संवत् १३५० के लगभग व्रजभाषा का हिन्दी कविता में प्रयोग किया। प्रायः तीस वर्ष पीछे अमीर ख़ुसरो ने भी इसे अपनाया, पर वे पहले पहल खड़ी बोली में भी कविता करते थे। १४५० के आसपास नारायण देव ने व्रजभाषा ही में हरिश्चन्द्रपुराण नामक ग्रन्थ रचा और १४८० में नामदेव ने उसमें अनेक ग्रन्थ निर्माण किये। इनके पश्चात् चरणदास और वल्लभाचार्य जी ने व्रजभाषा को ही प्रधानता दी और तदनन्तर सूरदास और अष्टछाप के अन्य कवीश्वरों ने उसका सिक्का हमारी भाषा पर मानों अटल करदिया। अवश्यही बीच बीच में कोई कोई लेखक अवधी, खड़ी बोली, और अन्य प्रकार की

भाषाओं में कविता करते रहे और स्वयं गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में अवधी भाषा को ही विशेष आदर दिया, तो भी प्रायः ९० सैकड़े कविजन बराबर व्रजभाषा ही से अनुरक्त रहे। उत्तरालंकृत काल में लल्लू लाल ने प्रेमसागर की रचना व्रजभाषामिश्रित खड़ीबोली में की, पर उसमें भी उन्होंने छन्द व्रजभाषा ही के रक्खे। परिवर्तनकाल में गणेशप्रसाद, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, स्वामी दयानन्द, बालकृष्ण भट्ट आदि महानुभावों के प्रयत्न से लोगों को समझ पड़ने लगा कि हिन्दी गद्य एवं पद्य तक में यह आवश्यकता नहीं कि व्रजभाषा का ही सहारा लिया जाय। पद्य में तो कुछ कुछ आज दिन तक व्रजभाषा का प्रभुत्व कई अंशों में वर्तमान है और अभी कुछ समय तक हमारे कविजन इसकी ममता छोड़ते नहीं दिखाई पड़ते, पर गद्य में इसी परिवर्तन-काल से खड़ी बोली का पूर्ण प्रभुत्व जम गया और पद्य में भी उसका आदर होने लगा है।

अँगरेज़ी साम्राज्य स्थापित होने से जहाँ देश को अन्य अनेक लाभ हुए वहाँ साहित्य ही कैसे विमुख रह जाता! जीवन-होड़ के प्रादुर्भाव से ही उन्नति का सुविशाल द्वार खुला करता है। जब तक किसी को बिना हाथ पैर डुलाये कुछ मिलता जाता है तब तक विशेष उन्नति की ओर उस का चित्त नहीं आकर्षित होता, पर जब मनुष्य देखता है कि अब तो बिना परिश्रम के काम नहीं चलता और आलसी बने रहने से अन्य उन्नत पुरुषों के सामने उसे नित्य प्रति नीचे ही खिसकना पड़ेगा, तभी उसमें उन्नति के विचार जाग्रत होते हैं और जातीय एवं व्यक्तिगत होड़ में उसे

क्रमशः सफलता प्राप्त होने लगती है। जब हम लोगों में अँगरेज़ी राज्य स्थापित होने पर अन्य प्रकार के उन्नत विचार आने लगे, तभी अपनी भाषा की उपयोगी उन्नति की इच्छा भी अंकुरित हुई। बस, भाषा में परिवर्तन-काल उपस्थित हो जाने का यही एक प्रधान कारण था।

इस समय में महाराजा मानसिंह, शंकर दरियावादी, नवीन, पजनेस, सेवक, लेखराज, ललितकिशोरी, गदाधर भट्ट, औध, लछिराम, बलदेव प्रभृति प्राचीन प्रथा के सत्कवियों में हुए, तथा उमादास, निहाल जीवनलाल, सूरजमल, माधव, क़ासिम, गिरिधर दास, प्रतापकुँअरि, महाराजा रघुराजसिंह, शम्भुनाथ मिश्र, और रघुनाथदास रामसनेही ने कथाप्रासंगिक कविता की। ललितकिशोरी जी ने एक बार सौरकाल की छटा फिर से दिखला दी, और क़ासिम ने अपने हंस जवाहिर में जायसी के पैरों पर पैर रखना चाहा, पर क़ासिम की रचना तादृश प्राशंसनीय नहीं है। महा-राजा रघुराजसिंह जी ने अनेक विषयों पर अनेक भारी ग्रन्थ निर्माण करके हिन्दी का अच्छा उपकार किया। स्वामी काष्ठजिह्वा, बाबा रघुनाथदास और महंत सीतारामशरण इस समय के उन महात्माओं में हैं, जिन्होंने हिन्दी को अपनी लेखनी द्वारा पुनीत किया। कृष्णानन्द व्यास ने एक संग्रहग्रन्थ बनाया। गणेशप्रसाद फ़र्रुख़ाबादी के खड़ी बोली वाले पद और लावनियाँ प्रसिद्ध हैं और उनका एतद्देश में अच्छा प्रचार है। टीकाकारों में सरदार और गुलाबसिंह का श्रम विशेषतया प्रशंसनीय है। यह दोनों महाशय कवि भी अच्छे थे। राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द, महर्षि दया-

नन्द सरस्वती, डाकृर रुडाल्फ़ हार्नली, नवीनचन्द्रराय, श्रीर बालकृष्ण भट्ट नवीन प्रकार के लेखकों में हैं श्रीर सच पूछिए तो विशेषतया ऐसे ही महानुभावों के श्रम का यह फल हुआ कि हिन्दी में प्राचीन अलंकृतकाल दूर होकर परिवर्तन होते होते वर्तमान उन्नति का समय हम लोगों को नसीब हुआ।

राजा शिवप्रसाद का हिन्दी पर यह ऋण सदा बना रहेगा कि यदि वह समुचित उद्योग न करते तो सम्भव है कि शिक्षा-विभाग में हिन्दी बिलकुल स्थान ही न पाती श्रीर कल की छोकरी उर्दू ही उत्तरीय भारत वर्ष की एक मात्र देशी भाषा बन बैठती। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश श्रीर जाति का जो महान् उपकार किया, उसे यहाँ पर लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनेक भूलों श्रीर पाखंडों में फँसे हुए लोगों को सीधा मार्ग दिखला कर उन्होंने वह काम किया है जो अपने अपने समय में महात्मा गौतम बुद्ध, स्वामी शंकराचार्य, रामानन्द, कबीरदास, बाबा नानक, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु श्रीर राजा राममोहन राय ठौर ठौर कर गये। हम आर्यसमाजी नहीं हैं, तो भी हमारी समझ में ऐसा आता है कि हम लोगों का जो वास्तविक हित इस ऋषि के प्रयत्नों द्वारा हुआ श्रीर होना सम्भव है, उतना उपरोक्त महात्माओं में से बहुतों ने नहीं कर पाया। दयानन्दजी ने हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभूमिका, इत्यादि अनुपम ग्रन्थ साधु श्रीर सरल भाषा में लिख कर उसकी भारी सहायता की श्रीर उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज से उसका दिनों दिन हित हो रहा है।

तेंतीसवाँ अध्याय।

द्विजदेव-काल।

(१८९०—१९१५)

(१७८३) महाराजा मानसिंह, उपनाम द्विजदेव।

ये महाराजा अयोध्या-नरेश तथा अवध-प्रदेशान्तर्गत ताल्लुक़ेदारों की असोसियेशन (सभा) के सभापति थे। इनका स्वर्गवास संवत् १९३० में संभवतः पचास वर्ष की अवस्था में हुआ था। ये महाशय कवियों के कल्पवृक्ष थे। इनके आश्रय में बहुत से कवि रहते थे। इसी कारण बहुतेरे पर सन्तापी मनुष्यों ने उड़ा दिया था कि ये महाराज स्वयं कवि न थे, वरन् लछिराम कवि से बनवा कर अपने नाम से कविता प्रकाशित करते थे। यह बात सर्वथा अशुद्ध थी और इससे ऐसी बातें उड़ानेवालों की क्षुद्रता प्रकट होती है। वास्तव में इनकी कविता के बराबर लछिराम का कोई भी ग्रन्थ या छन्द नहीं पहुँचता है। ये महाराज शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। अपने मरणकाल में ये अपने दौहित्र महामहोपाध्याय महाराजा सर प्रतापनारायणसिंह के० सी० आई० ई० उपनाम दद्दुआ साहेब को अपना उत्तराधिकारी नियत कर गये थे। थोड़े दिन हुए महाराज दद्दुआ साहेब ने 'रसकुसुमाकर' नामक एक मनोरंजक सचित्र भाषा-साहित्य का संग्रह प्रकाशित किया। इसमें द्विजदेव जी के बहुत से छन्द हैं। इनके भतीजे भुवनेशजी ने लिखा है कि इन्होंने शृंगारबत्तीसी और शृंगारलतिका नामक दो ग्रन्थ बनाये। इनका द्वितीय ग्रन्थ हमारे पास वर्तमान है, जिसमें १०५

पृष्ठ हैं। ये महाराज ब्रजभाषा में ही कविता करते थे। इनकी भाषा बड़ी ललित और कविता परम मनोहर होती थी। इन्होंने अनुप्रास बहुत रक्खा है। इनका षट्ऋतु बहुत ही बढ़िया बना है और शेष ग्रन्थ में शृंगार रस के स्फुट छन्द हैं। इनकी कविता में बहुत से परमोत्तम छन्द हैं जिन के बराबर बड़े बड़े कवियों के अतिरिक्त सधारण कवियों के छन्द नहीं पहुँचते। इनके शेष छन्द भी बुरे नहीं हैं। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण लीजिए:—

सोंधे समीरन को सरदार, मलिन्दन को मनसा फल दायक।
किंसुक जालन को कलपद्रुम, मानिनी बालन हूँ को मनायक॥
कन्त इकन्त अनन्त कलीन को, दीनन के मन को सुखदायक।
साँचो मनोभव राज को साज, सु आवत आज इतै ऋतुनायक॥

चहकि चकोर उठे सोर करि भौंर उठे,
बोलि ठौर ठौर उठे कोकिल सोहावने।
खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार,
हिलि हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने॥
पलक न लागी अनुरागी इन नैनन पै,
पलटि गये धौं कबै तरु मन भावने।
उमँगि अनन्द अँसुवान लौं चहूँ घा लागे,
फूलि फूलि सुमन मरन्द बरसावने॥

इनका कविता-काल संवत् १९०६ के इधर उधर था। इनकी भाषा बहुत अच्छी थी।

नाम—(१७८४) चन्द कवि संवत् १८९० के लगभग थे। कोई कोई इन्हें शाहजहाँगीर के समय का समझते हैं

नाम—(१७८५) गोस्वामी गुलाललाल, वृन्दावनवासी, अनन्य सम्प्रदाय वाले।

ग्रन्थ—अनन्यसभामण्डल।

कवीता-काल—संवत् १८९२।

विवरण—पहले पूजा इत्यादि का वर्णन किया। उसके पीछे साल भर के उत्सव कहे हैं। ग्रन्थ ७०० श्लोकों के बराबर है। यह हमने दरबार छतरपूर में देखा। काव्य इसका निम्न श्रेणी का है। समय जाँच से मिला है।

नाम—(१७८६) उमादास।

ग्रन्थ—१ महाभारत भाषामाला (१८९४), २ कुरुक्षेत्रमाहात्म्य (१८९४), ३ नवरत्न, ४ पंचरत्न, ५ पंचयज्ञ।

कविता-काल—१८९४।

विवरण—महाराजा करणसिंह पटियालानरेश के यहाँ थे। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है।

उदाहरण।

कृपाहू के पारावार गुन जाके हैं अपार,
सुन्दर विहार मन हार है उदार है।
जाके बल को निहार बीर ना धरैं सँभार,
अरिन की नार वेग चढ़त पहार है॥
श्री गुरु गोविन्द सिंह सोढ़ वंस महा बाहु,
बार बार सेवक को सदा रखवार है।

नराकार निराकार निराधार असधार भू-
उधार जगधार धर्म धार धार है॥

नाम—(१७८७) जीवनलाल ब्राह्मण नागर, बूँदी।

ग्रन्थ—१ ऊषाहरण, २ दुर्गाचरित्र, ३ भागवत-भाषा, ४ रामायण, ५ गंगाशतक, ६ अवतारमाला, ७ संहिता-भाष्य।

जन्मकाल—१८७०।

रचनाकाल—१८९५ मृत्यु १९२६।

विवरण—ये संस्कृत, फ़ारसी, और भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। संवत् १८९८ में ये रावराजा बूँदी के प्रधान नियुक्त हुए, जिस पद का काम इन्होंने बड़ी योग्यता से किया। संवत् १९१४ के ग़दर में इन्होंने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया, जिस पर दरबार से इनको ताजीम हाथी, कटारी इत्यादि मिली। संवत् १९१९ में आगरे में दरबार हुआ, जिसमें इन्हें जी० सी० यस० आई० का ख़िताब मिला। संवत् १९२३ में दरबार में महारुद्रयाग हुआ, जिसका प्रबन्ध आपने उत्तम किया। आप दस्तकारी में भी बड़े चतुर थे। कविता भी आप की सरस, तथा प्रशंसनीय होती थी। आप की गणना तोष की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण।

बदन मयंक पै चकोर ह्वै रहत नित,
पंकज नयन देखि भौंर लौं गयो फिरै।

अधर सुधारस के चाखिबे को सुमनस,
पूतरी ह्वै नैनन के तारन फयो फिरै॥
अंग अंग गहन अनंग को सुभट होत,
बानि गान सुनि ठगे मृग लौं ठयो फिरै।
तेरे रूप भूप आगे पिय को अनूप मन,
धरि बहु रूप बहुरूप सो भयो फिरै॥ १॥
चन्द मिस जा को चन्द्रसेखर चढ़ावैं
सीस पट मिस धारै गिरा मूरति सबाब की।
चन्दन के मिस चारु चर्चत अगर सार,
रमामिस हरि हिय धारैं सित आब की॥
भूप रामसिंह तेरी कीरति कला की कांति,
भाँति भाँति बढ़ै छवि कवि के किताब की।
मित्र सुखसंगकारी आब माहताब की त्यौं,
सत्रुमुख रंगहारी ताब आफताब की॥ २॥

(१७८८) शंकर कवि।

ये महाशय कवि धनीराम के पुत्र और कवि सेवकराम के ज्येष्ठ भ्राता, असनीनिवासी थे। आप बाबू रामप्रसन्नसिंह रईस काशी के यहाँ रहे। इनका जन्मकाल निश्चित रूप से विदित नहीं है, परन्तु सेवकराम के पूर्वज होने से अनुमान किया जा सकता है कि ये लगभग संवत् १८६९ में उत्पन्न हुए होंगे। इनके वंश इत्यादि का विशेष विवरण कवि सेवकराम के वर्णन में द्रष्टव्य है। इनका कोई ग्रंथ हमारे दृष्टिगोचर नहीं हुआ, परन्तु सेवकजी की जीवनी

से विदित होता है कि इन्होंने ग्रंथ भी बनाये हैं। यह समालोचना इनकी स्फुट कविता के आधार पर लिखी गई है। इनकी रचना रसपूर्ण एवं भाषा प्रशंसनीय है। ये महाशय तोष कवि की श्रेणी के हैं। उदाहरणस्वरूप तीन छन्द उद्धृत किये जाते हैंः—

सोहत अकास मैं अनिन्द इंदु—रूप साजि
संकर बखानै दीहद्युति को धरत है।
सीतल विमल गंग जल ह्वै महीतल मैं
परम पुनीत पापपुञ्जनि दरत है॥
पैठि कै पताल मैं रसाल सेस-रूप राजै
कहाँ लौं गनाऊँ यौं समंत बिहरत है।
रावरो सुजस भूप रामपरसन सिंह
ओक ओक तीनौ लोक पावन करत है॥१॥
कैधौं तेज बाड़व की सोहै धूम धार कैधौं
दीन्हीं उपहार बज्र बासव प्रमान की।
संकर बखानै डसै खल को भुअङ्गिनी सी
देखी चारु कीरति निकेत या बिधान की॥
कैधौं तेरे बैरिन के बंस तारिबो को
रन-सागर मैं सेतु मग सुर-पुर जान की।
राम परसन तेरे कर मैं कृपान कै
फते की फरमान राखै सान हिन्दुआन की॥२॥
मंजु मलयाचल के पौन के प्रसंगन तें
लाल लाल पल्लव लतान लहकै लगे।

फूले लगे कमल गुलाब आब चारे घने
　　संकर पराग भू अकास अहके लगे ॥
बोले लगे कोकिल भनंत भौंर डोलै लगे
　　चोप सों अमोले मकरंद चहके लगे ।
नेकौ ना अटक चढ़्यो काम को कटक चारु
　　चारयौ ओर चटक सुगंध महके लगे ॥

विवरण—इनका कविता-काल १८९५ जान पड़ता है ।

नाम—(१७८६) निहाल ।

ग्रन्थ—(१) महाभारत भाषा, (२) साहित्यशिरोमणि (१८९३), (३) सुनीतिपन्थप्रकाश (१८९६), (४) सुनीतिरत्नाकर (१९०२) ।

रचना-काल—१८९६ ।

विवरण—ये राजा करमसिंह और नरेन्द्रसिंह (दोनों) पटियाला-नरेश के यहाँ थे । हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे ।

उदाहरण ।

जल बिनु सर जैसे, फल बिनु तर जैसे,
　　सुत बिनु घर जैसे, गुन बिनु रूप है ।
सस्त्र बिनु बीर जैसे, फर बिनु तीर जैसे,
　　खाँड़ बिनु खीर जैसे, दिन बिनु धूप है ॥
दया बिनु दान, गुन बिनु ज्यों कमान,
　　जैसे तान बिनु गान, जैसे नीर हीन कूप है ।
बुधि बिनु नर जैसे, पंछी बिनु पर जैसे,
　　सेवा बिनु डर जैसे, नीति बिनु भूप है ॥

(१७९०) देव कवि काष्ठ-जिह्वा बनारसी ।

ये महाराज संस्कृत के बड़े भारी विद्वान् थे। आपने एक दफ़े गुरु से विवाद करके प्रायश्चित्तार्थ अपनी जीभ पर काष्ठ की खोल चढ़ा कर सदा को बोलना बंद कर दिया। इन्होंने ये ग्रन्थ बनाये:— विनयामृत, रामलगन रामायणपरिचर्या, वैराग्यप्रदीप और पदावली सात कांड (१८९७)। इनकी कविता विशेषतया भगवद्भक्ति के विषय पर होती थी। वह प्रशंसनीय है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है। महाराजा बनारस के यहाँ इनका बड़ा आदर होता था।

उदाहरण:—

जग मङ्गल सिय जू के पद हैं। (टेक)
जस तिरकोण यन्त्र मङ्गल के अस तरवन के कद हैं॥
मलहि गलावहिँ ते तन मन के जिनकी अटक विरद हैं।
मङ्गल हू के मङ्गल हरि जहँ सदा बसे ये हद हैं॥ १॥

नाम—(१७९१) रत्नहरि।

ग्रन्थ—सत्योपाख्यान, अर्थात् रामरहस्य का भाषा उल्था।

रचना-काल—१८९९।

विवरण—साधारण श्रेणी। ग्रन्थ दोहा, चौपाइयों में है। कहीं कहीं और छन्द भी हैं। इसमें ५२५ पृष्ठ हैं। यह ग्रन्थ हमने दरबारपुस्तकालय छतरपूर में देखा।

उदाहरण ।

यह रामराय रहस्य दुरलभ परम प्रतिपादन कियो ।
श्रीराम करुना करि लहिय बिन तासु नहिँ पावन वियो ॥
श्रुतिसार सर्वसु सर्व सुकृत बिपाक जिय जानो यही ।
रघुबीर व्यास प्रसाद ते पायो कह्यो तुम सों सही ॥

नाम—(१७६२) किशोरदास, पीताम्बरदास के शिष्य निंबार्क सम्प्रदाय के ।

ग्रन्थ—(१) निजमनसिद्धांतसार, (२) गणपतिमाहात्म्य, (३) अध्यात्म-रामायण ।

रचनाकाल—१९०० ।

विवरण—प्रथम ग्रन्थ में भक्तों के विस्तारपूर्वक कथन, एवं मन के सिद्धांत वर्णित हैं। इस के तीन खंड ५५८ सफ़ा फ़ूल्सकैप साइज़ के हैं। यह ग्रन्थ हमने दरबार छतरपूर में देखा है। काव्यलालित्य साधारण श्रेणी का है।

उदाहरण ।

लखि दारा सब सार सुख परसत हँसत उदार ।
मरकट जिमि निरतत हँसत सिकिलि उतारि उतारि ॥
बढ़त अधिक ताते रस रीती, घटत जात गुरुजन पर प्रीती ।
सीखत सुनत विषय की बातैँ, ऐंठत चलत निरखि निज गातैँ ॥
बल दै बाँधत पाग बिसाला, पँच रँग कुसुम गुच्छ उर माला ।
हास करत पितु मातु ते अटत करत उतपात ॥
धन दै करि निज बाम को, पितु जननी तजि भ्रात ॥

नाम—(१७६३) कृष्णानन्द व्यास, गोकुल।

ग्रन्थ—रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमसंग्रह।

रचना-काल—१९००।

इन महाराज ने संवत् १९०० के लगभग रागसागरोद्भव नामक एक बृहत् ग्रन्थ संग्रहीत कर के कलकत्ते में मुद्रित कराया था, जिसमें २०५ भक्त तथा कवियों के पद संगृहीत थे। इसमें बहुत से ऐसे कवियों के पद संगृहीत हैं कि जिनकी कविता अन्यत्र प्रायः नहीं मिलती। इस संग्रह से इतिहास साहित्य का भी बड़ा उपकार हुआ है। यदि यह संग्रह न हुआ होता तो शायद इतने सब कवियों के नामों का मिलना असम्भव था। इनकी कविता तोष कवि की श्रेणी की समझनी चाहिए।

उदाहरण।

सैननि बिसरै बैननि भोर।
　　बैन कहत का सों, पिय हिय ते बिहसत काहि किसोर।
दुख मेटत भेटत तुमको नहि चुंबन देत न थोर॥

(१७६४) गणेशप्रसाद फ़रुख़ाबादी।

ये महाशय जाति के कायस्थ थे श्रोर फ़रुख़ाबाद में हलवाई का व्यापार करते थे। ऐसा साधारण व्यापार करके भी इन्होंने कविता की श्रोर ध्यान दिया। ये परमोत्तम रचना करने में समर्थ हुए। इन्होंने फ़िसानेचमन, बारहमासा, ऋतुवर्णन, शिखनख श्रोर छन्दलावनी नामक ग्रन्थ रचे हैं, जो प्रायः सब प्रकाशित हो चुके हैं श्रोर सभी पुस्तक बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं।

इनकी समस्त कविता बहुत करके पदों में है और उसका विशेषांश खड़ी बोली को लिये हुए है। इनकी लावनियाँ इतनी प्रसिद्ध हैं कि उतने बड़े बड़े कवियों तक के काव्य नहीं हैं। उनमें अलौकिक स्वाद, अनूठापन, एवं बल है। ऐसी सजीव कविता बड़े बड़े कवि रचने में समर्थ नहीं हुए हैं। हमने इनके कई ग्रन्थ देखे हैं, पर इस समय हमारे पास इनका फ़िसानेचमन मात्र है। इनकी रचना के हमने बड़े बड़े चमत्कारिक तथा उड़ते हुए पद देखे हैं, पर इस समय साधारण ही पद हमें उपलब्ध हैं। आपके छन्द बहुत प्रचलित हैं, सो हमने उत्कृष्ट उदाहरण ढूँढ़ने का श्रम नहीं किया। इनकी भाषा साधारण बोलचाल को लिये हुए बड़ी ज़ोरदार है। हम इनको पद्माकर कवि की श्रेणी में रखते हैं। संवत् १९३० के लगभग तक ये विद्यमान थे। इनका कविता-काल संवत् १९०० से १९३० तक समझना चाहिए। इनका हाल इनके मिलनेवालों ने सराय मीरा में हमसे कहा था। उदाहरण—

किया पिय किन सैातिन घर वास।
विकल उन बिन जिय बारह मास॥
गरज आली असाढ़ आया। घटा ना ग़म दुख दिखलाया॥
अबर हो बर विदेस छाया। कहीं बरसा कहिँ तरसाया॥१॥

जोबन पर जिसके शम्सोक़मर वारी है।
हर गुलशन में उस गुल की गुलज़ारी है॥
ज़ंजीर .जुल्फ़ जाना ने लटकाली है।
काली है फ़िदा जिस पर नागिन काली है॥
अबरू कमान .कुदरत ने परकाली है।
वह आँख आँखआहू ने झपकाली है॥

बदन ससि मदनभरी प्यारी। अदा की बाँकी ब्रजनारी॥
सीस धर गोरस की गगरी। रूप रस जोबन की अगरी॥
बजा छमछम पायल पगरी। गई ग्वालिनि गोकुल नगरी॥२॥

(१७६५) नवीन।

ये महाशय नाभानरेश महाराजा देवेन्द्रसिंहजी के यहाँ थे। इन्होंने अपने को ब्रजवासी कहा है परन्तु कुल कुटुम्ब का कुछ भी हाल नहीं लिखा है। इन्होंने नाभानरेश के यहाँ गज, ग्राम, एवं रुपया पैसा सभी कुछ पाया। इनका वहाँ पूरा सम्मान हुआ। इन्होंने महाराजा साहब की आज्ञा से भाषा-साहित्य के सुधासर, सरसरस, नेहनिदान और रंगतरंग नामक चार ग्रन्थ बनाये। हमारे पास इनका तृतीय ग्रन्थ है और उसी में उपरोक्त बातों का वर्णन है। यह रंगतरंग संवत् १८९९ में सबसे पीछे बना था।

नवीन कवि ने इस ग्रन्थ में रसों का वर्णन किया है। इसमें अनुप्रासों का बाहुल्य है। इस कवि की कविताशैली पद्माकर से बहुत कुछ मिलती है और उत्तमता में भी उसी कवि के समान है। इस कवि की रचना बहुत ही प्रशंसनीय है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

राजैं गजराज ऐसे दारुन दराज दुति
जिनकी गराज परैं वैरी के तहलके।
सुंडादंड मंडित जँजीर झकझोरैं
गुन जीरन लौं तोरैं जे भरैया मद जल के॥

श्रीमति नरिन्द मालवेन्द्र देव इन्द्रसिंह
　　तेरी पैारि पेखिये हजारन के हलके ।
मैाज के सिँगार बड़ी मैाज के सिँगार
　　निज फैाज के सिँगार जैतवार पर-दल के ॥१॥
सूरज के रथ के से पथ के चलैया चारु
　　न थके थिराहिँ थान चैाकरी भरत हैं ।
फाँदत अलंगैं जब बाँधत छलंग
　　जिन जीनन ते जाहिर जवाहिर झरत हैं ॥
मालवेन्द्र भूप की सवारी के
　　अनूप रूप गैान में दपेटि पोनहू को पकरत हैं ।
करि करि वाजी जिन्हैं लाजै चपलाजी देखि
　　तेरे तेज वाजी पर-वाजी सी करत हैं ॥२॥
चम्पक के चैासर चमेलिन की चम्पकली
　　गजरे गुलाबन के गलते उमाह के ।
कदम तरौना तरे कंजलक झूमका की
　　झलक कपोलन पै बाजू जुही जाह के ॥
बेनी बीच माधुरी गुही है बार बार तपै
　　रंग पहिराये हैं बसन अंग लाह के ।
बीन बीन कुसुमकलीन के नवीन सखी
　　भूखन रचे हैं ब्रजभूषन की चाह के ॥३॥

(१७६६) रसरंग ।

ये महाशय लखनऊ के रहनेवाले थे । इनका समय संवत् १९०० के लगभग था । इनकी कविता सरस ग्रोर मनोहर है ।

इनका कोई ग्रन्थ हमने नहीं देखा है, परन्तु स्फुट छन्द देखने में आये हैं। इनकी रचनाश्रेणी साधारण कवियों में है। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है और वह सराहनीय है।

सुखमा के सिन्धु को सिँगार के समुन्द्र तें
मथि कै सरूप सुधा सुखसों निकारे हैं।
करि उपचारे तासों स्वच्छता उतारे तामैं
सौरभ सोहाग श्री सो हास रस डारे हैं॥
कवि रसरंग ताको सत जो निसारे
तासों राधिका बदन बेस बिधि ने सँवारे हैं।
बदन सँवारि बिधि धोयो हाथ जम्यो रंग
तासों भयो चन्द, कर झारे भये तारे हैं॥

नाम—(१७९७) व्रजनाथ बारहट, चारण, जयपुर।

रचना—स्फुट।

कविताकाल—१९००। मृत्यु—१९३४।

विवरण—ये जयपुरदरबार के कवि महाराज रामसिंह के समय में थे। कविता इनकी साधारण श्रेणी की है। नीचे लिखा कवित्त इन्होंने महाराज तख़तसिंह जोधपुर के मरने पर बनाया था।

आजु छिति छत्रिन को भानु सो अथत भयो
आजु पात पंछिन को पारिजात परिगो।
आजु मान सिन्धु फूटो मंगन मरालन को
आजु गुन गाढ़ को गरीस गंज गरिगो॥

आजु पंथ पुञ्ज को पताका टूटो बिजैनाथ
　　　　आजु दास हरख हजारन को हरिगो ।
हाय हाय जग के अभाग तखतेस राज
　　　　आजु कलिकाल को कन्हैया कूच करिगो ॥

नाम—(१७६८) बाबा रघुनाथ दास महंत अयोध्या, ब्राह्मण पांड़े पँतेपुर, ज़िला बाराबंकी ।

ग्रन्थ—हरिनामसुमिरनी ।

जन्मकाल—१८७३ । मरणकाल—१९३९ ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—ये महाराज बड़े तपस्वी, भगवद्भक्त, महात्मा हुए हैं । इनकी सिद्धता की बहुत सी जनश्रुतियाँ विख्यात हैं । ये सरयू जी के निकट छावनी में रहा करते थे । इन्होंने भक्तिसम्बन्धी उत्कृष्ट काव्य किया है जो साधारण श्रेणी का है ।

उदाहरण ।

मारा मारा कहे ते मुनीस ब्रह्मलीन भयो
　　　　राम राम कहे ते न जानौं कौन पद है ।
जमन हराम कह्यो राम जू को धाम पायो
　　　　प्रगट प्रभाव सब पोथिन में गद है ॥
कासिहू मरत उपदेसत महेस जाहि
　　　　सूझि न परत ताहि माया मोह मद है ।
ऐसहू समुझि सीताराम नाम जो न भजै
　　　　जन रघुनाथ जानो तासों फेरि हद है ॥

(१७६६) माधव रीवाँ-निवासी।

इन्होंने आदिरामायण नामक ग्रन्थ संवत् १९०० के लगभग रीवाँ-नरेश महाराज विश्वनाथसिंह की आज्ञानुसार बनाया। माधवजी ने अपने को काशीराम का पुत्र और गङ्गाप्रसाद का नाती कहा है। इनका ग्रन्थ छतरपूर में है। इसमें ३५९ बड़े पृष्ठ हैं। यह ग्रन्थ पद्म-पुराण के आधार पर बना है। इसमें ब्रह्मा और काकभुशुंड का संवाद है। ग्रन्थ सुन्दर है। ये छत्र कवि की श्रेणी में हैं।

उदाहरण।

अति सुन्दर नैन सुरंग रँगे मद झूमत नीके सनींद लसैं।
अँगिरात जम्हात औ तोरत गात दोऊ झुकि जात निहारि हसैं।
अरुझी नथ कुंडल मालनि मैं मुकता मनि फूलनि औलि खसैं।
लघु ब्रह्मसुखी तिनको दरसात लुभात जे प्रात के ध्यान रसैं॥

(१८००) क़ासिमशाह।

इन्होंने हंसजवाहिर ग्रन्थ संवत् १९०० के लगभग बनाया। आप दरियाबाद, ज़िला बारहबंकी के निवासी थे। ग्रन्थ की वन्दना जायसी-कृत पद्मावत की भाँति उठी है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को इसकी अपूर्ण प्रति खोज में प्राप्त हुई है, जिसमें फ़ूलसकैप आकार के २०० पृष्ठ हैं। ग्रन्थ दोहा चौपाइयों में कहा गया है, जिसमें रचना-चमत्कार मधुसूदनदास की श्रेणी का है। इसमें एक प्रेम-कहानी वर्णित है।

(१८०१) जानकीचरण, उपनाम प्रिया सखी ।

इन्हों ने 'श्री रामरत्नमंजरी' नामक ११५ पृष्ठों का एक ग्रन्थ रचा, जो छतरपूर में है । इस में कई छन्द हैं, पर विशेषतया दोहे हैं। इसमें साधारण कविता में राम का वर्णन है । इनका कविताकाल जाँच से संवत् १९०० जान पड़ा । इन्होंने जुगलमंजरी और भगवानामृत-कादम्बिनी नामक दो ग्रन्थ और रचे थे, जो छतरपूर में हैं । इनमें भी रामचन्द्र का ही रसात्मक वर्णन है ।

उदाहरण ।

नाना विधि लीला ललित गावत मधुरे रंग ।
नृत्य करत सखि सुन्दरी बाजत ताल मृदंग ॥
चन्दन चरचे अंग सब कुंकुम अतर कपूर ।
रचि सुमनन की माल बहु पहिराई भरपूर ॥

(१८०२) परमानन्द ।

इनके केवल दो छन्द हमने देखे हैं । इनका कोई भी हाल हमें ज्ञात न हुआ । इनकी कविता और बोलचाल अच्छी है । सुनते हैं कि इस नाम के दो कवि हो गये हैं, एक अजयगढ़ रियासत (बुन्देलखंड) के रहने वाले संवत् १९०० के आस पास हुए हैं और दूसरे पदमाकरवंशी दतिया में संवत् १९३० में रहते थे । जो कवित्त हमने देखे हैं वे किस परमानन्द के हैं सो हम नहीं कह सकते । ये महाशय साधारण श्रेणी के कवियों में हैं ।

छाई छवि अमल जुन्हाई सी बिछौनन पै
　　तापर जुन्हाई जुदी दीपति रही उमंग ।

कबि परमानँद जुन्हाई अवलोकियत
जहाँ तहाँ नील कंज पुंजन परै प्रसंग ॥
सोनजुही माल किधौं माल मालती की
पहिँचानियत कैसे सनी पंकज सुगंध संग।
आवत निहारी हैां तिहारे सेज प्यारे
पग धरत चुवोई परै गहब गुलाबी रंग ॥ १ ॥

(१८०३) गिरिधरदास ।

सुप्रसिद्ध बाबू हरिश्चन्द्र के पिता काशीनिवासी बाबू गोपाल चन्द्रजी इस उपनाम से काव्य करते थे। कहीं कहीं इन्होंने अपना नाम गिरिधारी एवं गिरिधारन भी रक्खा है। यह हिन्दी के अच्छे कवि थे। छोटे बड़े सब मिला कर इन्होंने चालीस ग्रन्थ रचे हैं, जैसा कि हरिश्चन्द्रजी ने भी लिखा है, "जिन श्री गिरिधर दास कवि रचे ग्रंथ चालीस।" इनके ग्रंथों में "जरासंधवध" प्रसिद्ध है। इन्होंने दशावतार, भारतीभूषण, बारहमास, षटऋतु एवं अन्य अनेक विषयों पर ग्रन्थ निर्माण किये हैं। इनकी कविता सरस और अच्छी होती थी। इन्हें यमक का बहुत ज़्यादा शौक़ था, जिस से कभी कभी पद्माकरजी की भाँति अपने भाव तक बिगाड़ देने, एवं भरती पदों के रखने में भी कोई संकोच न होता था। इनका समय संवत् १९०० के लगभग था। इनका देहान्त २६ या २७ वर्ष की ही अवस्था में हो गया। ये काशी के प्रतिष्ठित रईसों में से थे। हम इन्हें तोष की श्रेणी का कवि मानते हैं।

उदाहरण ।

आनन की उपमा जो आनन को चाहै,
　　तऊ आन न मिलैगी चतुरानन बिचारे को ।
कुसुमकमान के कमान को गुमान गयो,
　　करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को ॥
गिरिधरदास दोऊ देखि नैन वारिजात,
　　वारिजात वारिजात मान सर धारे को ।
राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप,
　　जातरूप जातरूप जातरूप वारे को ॥ १ ॥

लाल गुलाल समेत अरी जब सों यह अम्बर ओर उठी है ।
देखत हैं तब सों तितही लखि चन्द चकोर की चाह छुठी है ॥
डारतही गिरिधारन दीठि अबीरन के कन साथ लुठी है ।
मोहन के मन मोहन को भटू मोहनमूठि सी तेरी मुठी है ॥ २ ॥

(१८०४) पजनेस ।

ठाकुर शिवसिंहजी ने लिखा है कि ये महाशय पन्ना में हुए और इन्होंने मधुप्रिया और नखशिख नामक दो ग्रन्थ बनाये हैं। उन्होंने इनका जन्म संवत् १८७२ लिखा है। इनका कविताकाल १९०० जान पड़ता है। बुन्देलखंड में जाँच करने से भी जान पड़ा कि ये महाशय पन्ना के रहने वाले थे। हमने इनके उपरोक्त ग्रन्थों में एक भी नहीं देखा है और न ये ग्रंथ अब साधारणतया मिलते हैं। भारतजीवन प्रेस के स्वामी ने इन के ५६ छन्दों का एक ग्रन्थ पजनेसपचासा नाम से प्रकाशित किया था। फिर

बहुत खोज करके पीछे उन्होंने पजनेसप्रकाश में इनके १२७ छन्द छापे। इससे अधिक इनके छन्द देखने में नहीं आते। इनकी कविता बड़ी ओजस्विनी है। इतनी उद्दंडता बहुत कम कवियों में पाई जाती है। परन्तु इन्होंने उद्दंडता के स्नेह में मधुर भाषा को तिलांजलि दे दी, और इसी कारण इनकी कविता में टवर्ग एवं मिलित वर्णों का बाहुल्य है। इन्होंने अनुप्रास का बड़ा आदर किया है तथा जमकानुप्रास का भी विशेष प्रयोग इनकी रचना में हुआ है, परन्तु भाषा व्रजभाषा ही है। फिर भी एकाध स्थान पर फ़ारसी-मिली कविता भी आप ने बनाई। इनकी रचना देखने से विदित होता है कि ये फ़ारसी और संस्कृत के पंडित थे। इनकी कविता में अश्लीलता की मात्रा विशेष है। इन्होंने उपमायें बहुत अच्छी खोज खोज कर दी हैं। कुल मिलाकर हम इनको सुकवि समझते हैं, क्योंकि इनके छन्द बहुत ललित बने हैं। इतने कम छन्दों में इतने उत्तम छन्द बहुत कम कविजन बना सके हैं। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। इनके छन्द थोड़े होने पर भी बहुत फैले हुए हैं, अतः हम इनका एक ही छन्द यहाँ लिखते हैं:—

मानसी पूजा मई पजनेस मलिच्छन हीन करी ठकुराई।
रोके उदोत सबै सुर गीत बसेरन पै सिकराली बसाई॥
जानि परै न कला कछु आजु की काहे सखी अजया यक लाई।
पोसे मराल कहो केहि कारन एरी भुजंगिनि क्यों पोसवाई॥

इनके छन्द देखने से अनुमान होता है कि इन्होंने एक नख-शिख भी बनाया होगा।

(१८०५) सेवक ।

इनका जन्म संवत् १८७२ वि० में हुआ था और छाछठ वर्ष की अवस्था भोग कर संवत् १९३८ में काशीपुरी में इन्होंने स्वर्गवास पाया। ये महाशय असनी के ब्रह्मभट्ट थे। इनके पूर्वपुरुष देवकीनन्दन सरयूपारीण पयासी के मिश्र थे, परन्तु उन्होंने राजा मँझौली के यहाँ बरात में भाटों की भाँति छन्द पढ़े और उनका पुरस्कार भी लिया, अतः उनके स्वजनों ने उन्हें जातिच्युत कर दिया। इस पर विवश होकर उन्होंने असनी के भाट नरहरि कवि की लड़की के साथ अपना विवाह करके असनी में ही रहना स्वीकार किया। उस समय से वे और उनके वंशज सचमुच भाट हो गये। उन्हीं के वंश में ऋषिनाथ कवि परम प्रसिद्ध हुए। इन्हीं महाशय के पुत्र सुप्रसिद्ध ठाकुर कवि हुए। ठाकुर कवि काशी के बाबू देवकीनन्दन के यहाँ रहते थे। ठाकुर ने इन्हीं के नाम पर सतसई का तिलक बनाया था। ठाकुर के पुत्र धनीराम हुए, जो देवकीनन्दन के पुत्र जानकीप्रसाद के कवि थे और जिन्होंने उन्हीं के यहाँ रामचन्द्रिका तथा रामायण के तिलक, एवं रामाश्वमेध तथा काव्यप्रकाश के उलथा बनाये। इन्होंने बहुत से स्फुट छन्द भी रचे। इनके शंकर, सेवकराम, शिवगोपाल, और शिवगोविन्द नामक चार पुत्र उत्पन्न हुए। शंकरजी भी अच्छे कवि थे। सेवक के पुत्र मान और उनके काशीनाथ हुए, जो आज कल असनी में वैद्यक करते हैं। शिवगोपाल के पुत्र मुरलीधर और पौत्र देवदत्त हुए। शिवगोविन्द के श्रीकृष्ण, नागेश्वर, और मूल-

चन्द नामक तीन पुत्र हुए। इन्हीं श्रीकृष्ण ने सेवक-कृत वाग्विलास ग्रन्थ में उनका जीवनचरित्र और उपरोक्त वंश वर्णन लिखा है। स्वयं सेवक ने भी अपने कुटुम्ब का वर्णन निम्न छन्द द्वारा किया है :—

श्रीऋषिनाथ को हैं मैं पनाती
औ नाती हैं श्री कवि ठाकुर केरो।
श्रीधनीराम को पूत मैं सेवक
शंकर को लघु बन्धु ज्यों चेरो॥
मान को बाप बबा कसिया को
चचा मुरलीधर कृष्णहू हेरो।
अश्विनी मैं घर काशिका मैं
हरिशंकर भूपति रच्छक मेरो॥

सेवक उपरोक्त जानकीप्रसाद के पौत्र हरिशंकर के यहाँ रहते थे। सो इन आश्रयदाता एवं आश्रयी, दोनों के कुटुम्बों की स्थिरचित्तता प्रशंसनीय है कि जिन्होंने चार पुश्तों तक अपना सम्बन्ध निबाह दिया। सेवक महाशय हरिशंकरजी को छोड़ कर किसी भी अन्य राजा महाराजा के यहाँ नहीं जाते थे, यहाँ तक कि महाराजा काशीनरेश वहीं रहते थे, परन्तु इस कुटुम्ब ने उनसे आश्रयदाता से भी सम्बन्ध कभी नहीं जोड़ा। सेवक का यह भी प्रण था कि काशी में चाहे जितना बड़ा महाराज भी आवे, परन्तु ये उससे मिलने नहीं जाते थे और बाबू हरिशंकरजी के ही आश्रय से सन्तुष्ट रहते थे। एक बार काशी के प्रसिद्ध ऋषि स्वामी विशुद्धानन्दजी सरस्वती ने इनके ऊपर कृपा करके अपने

शिष्य महाराजा काश्मीर के यहाँ इन्हें ले जाने को कहा। स्वामीजी कहते थे कि सेवक की विदाई वहाँ पचीस हज़ार रुपये से कम की न होगी, परन्तु सेवक ने अपने बाबू साहब के रहते वहाँ जाना उचित न समझा। धन्य है इस संतोष को।

इन्होंने वाग्विलास नामक नायिकाभेद का एक बड़ा ग्रन्थ बनाया है, जिसमें १९८ पृष्ठ हैं। इसमें नृपयश, रस-रूप, भावभेद और उसके अन्तर्गत नायिकाभेद, नायकभेद, सखी, दूती, षटऋतु, अनुभाव और दश दशाओं का वर्णन किया गया है। सेवक ने नायिकाभेद की भाँति बड़े विस्तारपूर्वक नायक भेद भी कहा है और उसमें भी लगभग उतने ही भेद लिखे हैं जितने कि नायिका-भेद में। इनके बनाये हुए पीपाप्रकाश, ज्योतिषप्रकाश और बरवै नखशिख ग्रन्थ भी हैं। इनमें से वाग्विलास और बरवै नखशिख हमारे पास प्रस्तुत हैं। बरवै नायिकाभेद भी अच्छा है। इसमें ९८ छन्दों में नायिकाभेद का संक्षेप में वर्णन है। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने लिखा है कि ये महाशय एक छन्दोग्रन्थ भी लिखते थे, परन्तु उसका कहीं पता नहीं है।

इन्होंने सब विषयों पर अच्छी कविता की है। इनका षट्ऋतु तो बहुत ही प्रशंसनीय है। ये अपने पितामह ठाकुर की भाँति आशिक़ न थे और इनकी कविता में वैसी तल्लीनता नहीं देख पड़ती, परन्तु इनके सवैया ठाकुर की भाँति प्रसिद्ध हैं, एवं बहुत लोग इन्हें वैसाही आदर देते हैं। इन की भाषा व्रजभाषा है और वह सराहनीय है। ये महाशय अपने ग्रन्थों में टीका के ढंग पर वार्त्ताओं में शंकायें

लिख लिख कर उनका समाधान भी करते गये हैं। इनके ग्रन्थों में चामत्कारिक छन्द भी पाये जाते हैं, परन्तु उनकी बहुतायत नहीं है। इनकी कविता में प्रशस्त छन्दों की अपेक्षा साधारण छन्द बहुत अधिक हैं। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं:—

उनये घन देखि रहैं उनये दुनये से लताद्रुम फूलो करैं।
सुनि सेवक मत्त मयूरन के सुर दादुर ऊ अनुकूलो करैं॥
तरपैं दरपैं दबि दामिनि दीह यही मन माँह कबूलो करैं।
मनभावती के सँग मैनमई घन स्याम सबै निसि झूलो करैं॥१॥

दधि आछत आछत भाल मैं देखि गए अँग के रँग छीन से ह्वै।
दुख औचक वारो कहे न बनै बिधु सेवक सौंहे अरीन से ह्वै॥
मृगराज के दावे बिँधे बनसी के बिचारे मले मृगमीन से ह्वै।
हरि आए बिदा को भटू के तहाँ भरि आए दोऊ दृग दीन से ह्वै॥२॥

बंसी बजावत आनि कढ़े बनिता घनी देखन को अनुरागीं।
हौं हूँ अभाग भरी डगरी मगरी गिरे चौंकि सबै डरि भागीं॥
लागै कलंक न सेवक सों इन्हैं फेरि हौं सौति सुभाव लै जागीं।
हाय हमारी जरैं अँखियाँ विष बान ह्वै मोहन के उर लागीं॥३॥

जहाँ जोम कै अनीन कीन कठिन कनीन कन,
लोहे मैं बिलीन जिन्हैं घूमत बिमान।
जहाँ धोयन धमकि घाव बोलत बमकि नहीं,
लोहू की लमकि लेन लागी लहरान॥
जहाँ रुंडन पै रुंड मुंड झुंडन के झुंड कटैं,
कोटिन बितुंड विंध्य बंधु की समान।

तहाँ सेवक दिलान भीम रुद्र के समान,
हरिशंकर सुजान झुकि भारी किरवान ॥४॥

(१८०६) प्रताप कुँवरि बाई।

ये जाखँण गाँव परगना जोधपुर के भाटी ठाकुर गोयंददासजी की पुत्री श्रार माड़वार के महाराजा मानसिंह जी की रानी थीं। इनका विवाह संवत् १८८९ में हुआ था। इन्होंने कई मंदिर वनवाये श्रोर ये वहुत दान, पुण्य किया करती थीं। ७० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९४३ में इनका स्वर्गवास हुआ। इन्होंने अपने पिता के यहाँ शिक्षा प्राप्त की थी श्रोर संवत् १९०० में विधवा हो जाने पर देवपूजन तथा काव्य की श्रोर अधिक ध्यान लगाया। इनकी कविता देवपक्ष की है, जो मनोहर है। इनके निम्न-लिखित ग्रन्थ हैं:—

ज्ञानसागर, ज्ञानप्रकाश, प्रतापपच्चीसी, प्रेमसागर, रामचन्द्र-नाममहिमा, रामगुणसागर, रघुबरस्नेहलीला, रामप्रेमसुख सागर, रामसुजसपच्चीसी, पत्रिका संवत् १९२३ चैत्रवदी ११ की, रघुनाथजी के कवित्त, श्रोर भजनपदहरजस। इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में है। उदाहरणार्थ हम इनके कुछ छन्द नीचे देते हैं:—

धरि ध्यान रटौ रघुवीर सदा धनुधारि को ध्यानु हिए धरु रे।
पर पीर में जाय कै वेगि परो करते सुभ सुकृत को करु रे॥
तरु रे भवसागर को भजि कै लजि कै अघ श्रौगुन ते डरु रे।
परताप कँवारि कहै पद पंकज पाव घरी जनि बीसरु रे॥

होरी खेलन की रितु भारी ॥ टेक ॥
नर तन पाय भजन करि हरि को है औसर दिन चारी।
अरे अब चेतु अनारी।
ज्ञान गुलाल अबीर प्रेम करि प्रीत तणी पिचकारी।
सास उसास राम रँग भरि भरि सुरति सरी सी नारी।
खेल इन संग रचारी।
सुलटो खेल सकल जग खेलै उलटो खेल खेलारी।
सतगुर सीख धारु सिर ऊपर सतसंगति चलि जारी।
भरम सब दूरि गँवारी।
धुव पहलाद विभीखन खेले मीराँ करमा नारी।
कहे प्रताप कुँवरि इमि खेले सो नहिँ आवै हारी।
सीख सुनि लेहु हमारी।

(१८०७) महाराजा रघुराजसिंहजू देव जी० सी० एस० आई० रीवाँनरेश।

रीवाँ-नरेशों में महाराजा जयसिंह, उनके पुत्र महाराजा विश्वनाथ सिंह और तत्पुत्र महाराजा रघुराजसिंह तीनों बहुत अच्छे कवि थे। ये महाराजा गण बघेल ठाकुर थे।

महाराजा वीरध्वज सोलंकी के पुत्र महाराजा व्याघ्रदेव ने गुजरात से आकर भेरों, गोडों, लोधियों आदि से बघेलखंड जीत कर वहाँ शासन जमाया। कहते हैं कि इस कुटुम्ब के पूर्व-पुरुष ब्रह्मचोलक अंजली के पानी एवं सूर्य्यांश से उत्पन्न हुए थे और इसी लिए सूर्य्यवंशी कहलाये। ब्रह्मचोलक से करणशाह

श्री १०८ महाराजा रघुराजसिंह जू देव बहादुर मृत रीवां-नरेश ।

पर्य्यन्त ५०७ पुश्तें चैालकवंशी कहलाती रहीं। करणशाह का पुत्र सुलंकदेव हुआ। तब से वीरध्वज पर्य्यन्त ५८२ पीढ़ियां सोलंकी कहलाईं। वीरध्वज के पुत्र व्याघ्रदेव से वर्त्तमान महाराजाधिराज श्रीव्यंकटरमण रामानुजप्रसाद सिंह जू देव वहादुर तक ३२ पुश्तें हुई हैं। ये लोग बघेल कहलाते हैं। ब्रह्मचैालक से अब तक ११२१ पीढ़ियाँ हुई हैं।

महाराजा व्याघ्रदेव का जन्म संवत् ६०६ में हुआ और आप संवत् ६३१ में गद्दी पर बैठे। इनके उत्पन्न होने पर ज्योतिषियों ने इनके प्रतिकूल बहुत कुछ कहा था और ये जंगल में छोड़ दिये गये थे। कहते हैं कि वहाँ यह शिशु एक बाघिनी का स्तन पान करता पाया गया था। इसी से यह बघेला कहलाया। वास्तव में यह नाम बाघेल ग्राम से निकला है, जो रियासत बरोदा में है, जहाँ से यह वंश बघेलखंड गया था। व्याघ्रदेव ने अपना पैत्रिक राज्य अपने भाई सुखदेव को देकर कठेर देश को जीता, जो इनके नाम पर बघेलखंड कहलाने लगा। कहते हैं कि यहाँ के राजा रामचन्द्र ने एक दिन में प्रसिद्ध गायक तानसेन को दस करोड़ रुपये दिये थे। महाराजा विक्रमादित्य ने बान्धवगढ़ छोड़ कर रीवाँ को राजधानी बनाया।

महाराजा जयसिंह जू देव (नम्बर ११३२) का जन्म संवत् १८२१ में हुआ और सं० १८६५ में आप गद्दी पर बैठे। संवत् १८६० वाली बसीन की सन्धि द्वारा पेशवा ने बघेलखंड का वह भाग अँगरेज़ों को दिया कि जो बाँदा के नवाब अलीबहादुर ने जीता था। अँगरेज़ों ने कहा कि इस सन्धि द्वारा रीवाँ राज्य भी उन्हें

मिल गया था, किन्तु उन्हें यह दावा छोड़ना पड़ा और सं० १८६९ से दो वर्ष तक तीन सन्धियाँ अँगरेज़ों से हुईं जिनसे रीवाँ राज्य स्थिर हुआ। महाराजा जयसिंह ने सं० १८६९ में नाम छोड़ राज्य के प्रायः सब अधिकार अपने पुत्र विश्वनाथसिंह को दे दिये। राज्य में पहली अदालत (धर्मसभा) सं० १८८४ में कचहरी मिताक्षरा के नाम से स्थापित हुई। उसका मान बढ़ाने को एक बार स्वयं विश्वनाथसिंह जू देव प्रतिवादी के स्वरूप में उसमें पधारे। महाराजा जयसिंह का स्वर्गवास सं० १८९१ में हुआ।

महाराजा विश्वनाथसिंह जू देव (नम्बर ६४४) का जन्म संवत् १८४६ में हुआ था और अपने पिता के स्वर्गवास होने पर आप सं० १८९१ में गद्दी पर बैठे। आप ने संवत् १९११ तक राज्य किया। आपका हाल इस ग्रन्थ के ६२९ वें पृष्ठ से आरम्भ होता है। भ्रमवश इनके समय के संवत् सनों से निकालने में ५७ बढ़ाने के स्थान पर हमने घटा दिये। इसलिए इनके समय में ११२ वर्षों की भूल होगई। पाठक महाशय कृपया इसे सुधार लेंगे। इन महाराज के समय में उत्कोच की चाल फैली और कई कारणों से इनके पुत्र रघुराजसिंह से इनका वैमनस्य हो गया। झगड़ों से इन्होंने कई बड़े सरदारों को देशनिकाले का दंड दिया। अन्त को संवत् १८९९ में आपने अपने पिता की भाँति राज्य-प्रबन्ध अपने पुत्र रघुराजसिंह को दे दिया, जो बड़ी बड़ी बातों में इनकी सम्मति ले लेते रहे। रघुराजसिंह ने देशनिर्वासित सरदारों को लौटने की आज्ञा दी और क्षत्रियों में कन्यावध की

प्रथा हटाई। आपका विवाह उदयपुर के महाराणा सरदारसिंह की पुत्री से हुआ। आपके शासन से क्रूर दंड और सती की प्रथायें उठ गईं।

नम्बर ६४४ के नीचे लिखे हुए ग्रन्थों के अतिरिक्त महाराजा विश्वनाथसिंह ने परमतत्व, संगीतरघुनंदन, गीतरघुनन्दन, तत्वमस्य सिद्धान्त भाषा, ध्यानमंजरी और विश्वनाथप्रकाश नामक अन्य ग्रन्थ भी रचे। आपने निम्नलिखित ग्रन्थ संस्कृत भाषा में भी बनायेः—राधावल्लभी भाष्य, सर्वसिद्धान्त, आनन्द रघुनन्दन (दूसरा), दीक्षानिर्णय, भुक्ति मुक्ति सदानन्द सन्दोह, रामचन्द्राह्निक सतिलक, रामपरत्व, धनुर्विद्या और संगीत-रघुनन्दन (दूसरा) भाषा आनन्द रघुनन्दन बनारस में छप चुका है। इन महाराज के ग्रन्थ अप्रकाशित बहुत हैं। आपका विशाल पांडित्य अनेकानेक उत्कृष्ट हिन्दी और संस्कृत-ग्रन्थों से प्रकट है और इतने अधिक ग्रन्थों की रचना से आपका भारी साहित्य-प्रेम एवं श्रमशीलता प्रत्यक्ष प्रमाणित होती है। आप बड़े दानी थे और कवियों का सदैव अच्छा मान करते थे। अपने पुत्र रघुराजसिंह के जन्मोत्सव में आपने सोने की ज़ंजीर समेत एक भारी हाथी दे डाला था।

महाराजा रघुराजसिंह का जन्म संवत् १८८० में हुआ था और अपने पिता के स्वर्गवास पर आप सं० १९११ में गद्दी पर बैठे। आपका मृत्यु १९३६ में हुआ। आपके बारह विवाह हुए थे। आप पूर्ण पंडित, हिन्दी और संस्कृत के अच्छे कवि और मृगयाव्यसनी थे। आपने अनेकानेक छोटे बड़े ग्रन्थ बनाये

और ९१ शेर, एक हाथी, १६ चीते और हज़ारों अन्य मृग भी अपने हाथ से मारे। आप भड़े दानी और भारी भक्त भी थे और २०००० विष्णुनाम नित्यप्रति जपते थे। उपर्युक्त बातों में समय अधिक लगाने के कारण आप राज्यप्रबन्ध कम कर सकते थे। मरण-काल के ५ वर्ष पूर्व आप ने राज्यप्रबन्ध बिल्कुल छोड़ दिया और अँगरेज़ी सरकार की ओर से प्रबंध होने लगा। सिपाहीविद्रोह में आप ने सरकार का साथ दिया था। रीवाँ के वर्त्तमान महाराजा का जन्म सं० १९३३ में हुआ।

महाराजा रघुराजसिंहजी बड़े ही कवितारसिक और कवियों के कल्पवृक्ष हो गये हैं। इन्होंने कविता प्रकृष्ट बनाई है। इनके रचे हुए ग्रन्थों के नाम ये हैं:—

सुन्दरशतक (सं० १९०३), विनयपत्रिका (१९०६), रुक्मिणी-परिणय (१९०६), आनन्दाम्बुनिधि (१९१०), भक्तिविलास (१९२६), रहस्यपंचाध्यायी, भक्तमाल, राम-स्वयंवर (१९२६), यदुराज विलास (१९३१), विनयमाला, रामरसिकावली, गद्यशतक, चित्र-कूट-माहात्म्य, मृगया-शतक, पदावली, रघुराजविलास, विनय-प्रकाश, श्रीमद्भागवत-माहात्म्य, रामअष्टयाम, भागवत-भाषा, रघु-पतिशतक, गंगाशतक, धर्मविलास, शम्भुशतक, राजरंजन, हनुमतचरित्र, भ्रमर-गीत, परमप्रबोध, और जगन्नाथशतक। इनमें से सब ग्रन्थ इन्हीं महाराज ने नहीं बनाये हैं, किन्तु दो एक के कुछ भाग इन्होंने स्वयं रचे और कुछ उनके आश्रित कवीश्वरों ने बनाये, जिनके नाम रसिक-नारायण, रसिकविहारी, श्रीगोविन्द, बालगोविन्द, और रामचन्द्र शास्त्री हैं। इन लोगों का पता इनके

लिखित ग्रन्थों तथा नागरीप्रचारिणी सभा के खोज की रिपोर्ट से लगा है। इनमें से कई ग्रन्थ बहुत बड़े बड़े हैं।

इनकी कविता बहुत विशद और मनमोहनी होती है। इन्होंने विविध छन्दों में कविता की है। उपर्युक्त ग्रन्थों में से कई हमने देखे हैं।

रुक्मिणीपरिणय में रास, शिखनख, जरासंध और दंतवक्र के युद्ध अच्छे हैं। फाग आदि भी बढ़िया कहे गये हैं।

ये महाराज राम के भक्त थे, सो इनका रामाष्टयाम रुक्मिणी-परिणय से बढ़ कर है। इनकी भक्ति दासभाव की थी। इनकी कविता में छन्दों की छटा और अनुप्रास दर्शनीय हैं, तथा युद्ध, मृगया और भक्ति के वर्णन सुन्दर हैं। ये परम प्रशंसनीय कवि थे। इनके अनेकानेक ग्रन्थ बड़े ही सुन्दर हैं।

अनल उदंड को प्रकाश नव खंड छायो
　　ज्वाला चंड मानो ब्रह्मंड फोरै जाय जाय।
पुरी ना लखाति ज्वालमालै दरसाति
　　एक लोहित पयोधि भयो छाया एक छाय छाय॥
देवता मुनीस सिद्ध चारण गँधर्व जेते
　　मानि महाप्रलै वेगि व्योम ओर धाय धाय।
देखि रामराय हेत दीन्ही लंक लाय
　　सबै चाय भरे चले कपि राय यश गाय गाय॥ १॥
बसुधा धर मैं बसुधा धर मैं त्यौं सुधाधर मैं त्यौं सुधा मैं लसै।
अलि बृन्दन मैं अलि बृन्दन मैं अलि बृन्दन मैं अतिसै सरसै॥

हिय हारन मैं हर हारन मैं हिमि हारन मैं रघुराज लसै।
ब्रज बारन बारन बारन बारन बारन बार बसन्त बसै ॥ २ ॥

(१८०८) शंभुनाथ मिश्र।

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण खजूरगाँव के राना यदुनाथसिंह के यहाँ थे और उन्हीं की आज्ञानुसार इन्होंने शिवपुराण के चतुर्थ खण्ड का भाषानुवाद संवत् १९०१ में विविध छन्दों में किया। शिवसिंहसरोज में इनका एक ग्रन्थ बैसवंशावली का बनाना लिखा है। यह हमने नहीं देखा। शिवपुराण की भाषा बहुत उत्तम व मधुर है, जिसमें ब्रजभाषा व बैसवाड़ी मिश्रित हैं। यह ग्रन्थ बहुत ही ललित और विविध छन्दों में शिवकथा रसिकों व काव्यप्रेमियों के पढ़ने योग्य है। हम इस ग्रन्थ को कथाविषयक ग्रन्थों में बहुत ही बढ़िया समझते हैं। इस ग्रन्थ में १००० अनुष्टुप् छन्दों का आकार है। हम इस महाशय की गणना कवि छत्र की श्रेणी में करते हैं। उदाहरण के लिए कुछ छन्द यहाँ उद्धृत किये जाते हैं :—

इन्द्रवज्रा।

ह्वैगो तुरंतै सोइ बाल नीको। जाके लखे लागत चंद फीको ॥
अनूप जाके सब अंग सोहै। बिलोकि कै रूप अनंग मोहै ॥
ऐसे महा सुन्दर नैन राजैं। जाके लखे खंजन कंज लाजैं ॥
निकासि कै सार मनौ ससी को। रच्यौ विधातै निज हाथ जी को ॥

हरिगीती।

शुभ श्रवन नैन कपोल कुंतल भृकुटि बर नासा बनी।
अति अरुन अधर विसाल चिबुक रसालफल सम छवि घनी ॥

कर चरन नवल सरोज तहँ नख जोति उड़गन राजहीं ।
जनु पदुम बैर विचारि उर करि सरन तिन की भ्राजहीं ॥

(१८०६) सरदार ।

ये महाशय महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह काशी-नरेश के यहाँ थे । इनका कविताकाल संवत् १९०२ से १९४० पर्य्यन्त रहा । इन्होंने कविप्रिया, रसिकप्रिया, सूर के दृष्टकूट और विहारी सतसई पर परमोत्तम टीकायें गद्य में लिखी हैं । पद्य में इन्होंने साहित्यसरसी, व्यंग्यविलास, षटऋतु, हनुमतभूषण, तुलसीभूषण, मानसभूषण, शृंगारसंग्रह, रामरनरत्नाकर, रामरसजन्त्र, साहित्यसुधाकर, और रामलीलाप्रकाश नामक अद्भुत ग्रन्थ बनाये हैं । इनकी रचना में एक अलौकिक स्वाद मिलता है । इनके भाव और भाषा दोनों प्रशस्त हैं । इनकी काव्य-पटुता टीकाओं से विदित होती है । वर्त्तमान काल में इन्होंने अपनी कविता पुराने सत्कवियों में मिला दी है । इनके शृंगार-संग्रह में घनआनन्द के क़रीब १५० बाँके छन्द मिलेंगे । इन्होंने अश्लील विषय के भी दो चार छन्द कहे हैं । हम इनकी गणना पद्माकर की श्रेणी में करेंगे । उदाहरण :—

वा दिन तें निकसो न बहोरि कै जा दिन आगि दै अन्दर पैठो ।
हाँकत हूंकत ताकत है मन माखत मार मरोर उमैठो ॥
पीर सहौं न कहौं तुम सों सरदार विचारत चार कुठैठो ।
ना कुच कंचुकी छोरो लला कुच कन्दर अन्दर बन्दर बैठो ॥

मनि मन्दिर चन्द मुखी चितवै हित मंजुल मोद मवासिन को।
कमनीय करोरिन काम कला करि थामि रही पिय पासिन को।
सरदार चहूँ दिसि छाय रहे सब छन्द छरा रस रासिन को।
मन मन्द उसासन लेन लगी मुख देखि उदास खवासिन को॥

(१८१०) पूरनमल भाट उपनाम पूरन।

इनका जन्म संवत् १८७८ के लगभग हुआ। ये दरबार अलवर के कवि थे। कविता अच्छी की है। इनके पौत्र जयदेवजी अभी अलवर दरबार में हैं। इनकी कविता साधारण है।

उदाहरण।

ललित लवंग लवलीन मलयाचल की
मंजु मृदु मारत मनोज सुखसार है।
मौलसिरी मालती सु माधवी रसाल मौर
झौरन पै गुंजत मलिंदन को भार है॥
कोकिल कलाप कल कोमल कुलाहल कै
पूरन प्रतिच्छ कुहू कुहू किलकार है।
वाटिका बिहार बाग बीथिन बिनोद बाल
बिपिन बिलोकिए बसंत की बहार है॥ १॥

(१८११) बिरंजी कुवँरि।

ये गाँव गढ़वाड़ ज़िले जमनपूर के दुर्गवंशी ठाकुर साहवदीन की धर्मपत्नी थीं। इन्होंने संवत् १९०५ में सतीविलास नामक ग्रंथ सती स्त्रियों के विषय में बनाया, जिससे विदित होता है

कि इन्होंने उसी भाषा में कविता की है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास ने की। इनकी रचना प्रायः दोहा चौपाइयों में है। सवैया आदि में इन्होंने व्रजभाषा भी लिखी है। इनकी कविता का चमत्कार साधारण है और हम इन्हें मधुसूदन दासजी की श्रेणी में रखते हैं। इनका एक सवैया नीचे लिखा जाता है।

होय मलीन कुरूप भयावनि जाहि निहारि घिनात हैं लोगू।
सोऊ भजे पति के पदपंकज जाय करै सति लोक मैं भोगू॥
ताहि सराहत हैं विधि शेष महेश बखानैं बिसारि कै जोगू।
याते विरंजि बिचारि कहै पति के पद की तिय किंकरि होजू॥

(१८१२) जानकीप्रसाद।

ये महाशय भवानीप्रसाद के पुत्र पँवार ठाकुर ज़िला राय-बरेली के निवासी थे। शिवसिंहजी ने इन्हें विद्यमान लिखा है। इनका "नीतिविलास" नामक ग्रंथ हमने देखा है जो सं० १९०६ का छपा हुआ है। इसमें अनेक छन्दों में नीति वर्णित है। इसमें ४९ पृष्ठ और ३६१ छंद हैं। इस ग्रंथ की कविता-छटा साधारण है। शिवसिंहजी ने इनके रघुवीरध्यानावली, रामनवरत्न, भगवतीविनय, रामनिवास रामायण और रामानंदविहार नामक ग्रन्थ और लिखे हैं। इन्होंने उर्दू में एक हिन्दुस्तान की तारीख़ भी लिखी है। हम इनको साधारण श्रेणी का कवि समझते हैं। उदाहरणार्थ एक छंद नीचे देते हैं:—

बीर बली सरदार जहाँ तहँ जोति बिजै नित नूतन छाजै।
दुर्ग कठोर सुडौर जहाँ तहँ भूपति संग सो नाहर गाजै॥

बिक्रम समान मानसिंह सम साँची कहौं
प्राची दिसि भूप है न पारावार धारा लौं ॥३॥

कवि—(१८१५) अनीस।

रचना-काल—१९११।

विवरण—इनके छन्द दिग्विजयभूषण में हैं। कविता सरस और प्रशंसनीय है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है। इनका निम्नलिखित अन्योक्ति का छन्द परम प्रसिद्ध है।

सुनिए बिटप प्रभु सुमन तिहारे संग,
राखिहौ हमैं तौ सोभा रावरी बढ़ाय हैं।
तजि हौ हरखि कै तौ बिलगु न मानैं कछू,
जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनो जसु छाय हैं॥
सुरन चढ़ैंगे नर सिरन चढ़ैंगे बर,
सुकवि अनीस हाट बाट मैं बिकाय हैं।
देस मैं रहैंगे परदेस मैं रहैंगे,
काहू बेस मैं रहैंगे तऊ रावरे कहाय हैं॥

(१८१६) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, काशी।

ये महाशय संवत् १८८० में उत्पन्न हुए थे और १९५२ में इन का स्वर्गवास हुआ। इन्होंने सिक्ख युद्ध के समय अँगरेज़ों कीसहायता जी तोड़ कर की थी। इस पर आप शिक्षाविभाग के सरकारी उच्च कर्म्मचारी अर्थात् इंस्पेक्टर नियत हुए और इन्हें राजा तथा सी० एस० आई० की उपाधियाँ मिलीं। ये महाशय हिन्दी के बड़े

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद ।

ही पक्षपाती थे, विशेषतया उर्दू और संस्कृत मिश्रित खिचड़ी हिन्दी के। इसी खिचड़ी हिन्दी का उन्नत स्वरूप खड़ी बोली है। इन्होंने अनेकानेक पाठ्य पुस्तकें लिखीं और शिक्षाविभाग में हिन्दी को स्थिर रखकर उसका बड़ाही उपकार किया। उस समय यह विचार उठा था कि शिक्षा-विभाग से हिन्दी उठाही दी जाय। ऐसे अवसर पर राजा साहब के ही परिश्रम से वह रुक गई। इनकी रची हुई पुस्तकों की नामावली यह है:—

वर्णमाला, बालबोध, विद्यांकुर, वामामनरंजन, हिन्दी-व्याकरण, भूगोलहस्तामलक, छोटा हस्तामलक भूगोल, इतिहास-तिमिर-नाशक, गुटका, मानवधर्म्मसार, सैंडफ़ोर्ड ऐंड मारटिंस स्टोरी, सिक्खों का उदाय और अस्त, स्वयम्बोध उर्दू, अँगरेज़ी अक्षरों के सीखने का उपाय, बच्चों का इनाम, राजा भोज का सपना, और वीरसिंह का वृत्तान्त। इन ग्रन्थों में से कई संग्रह-मात्र हैं और अधिकतर राजा साहब के ही बनाये हैं। राजा साहब की भाषा वर्त्तमान भाषा से बहुत मिलती है, केवल वह साधारण बोल चाल की ओर अधिक झुकती है और उस में कठिन संस्कृत अथवा फ़ारसी के शब्द नहीं हैं। उस में उर्दू शब्दों का भी कुछ आधिक्य है। इन्होंने कुछ छन्द भी बनाये हैं, पर विशेष-तया गद्य ही लिखा है। ये महाशय जैनधर्म्मावलम्बी थे।

(१८१७) गुलाबसिंह जी कविराव (गुलाब)।

इनका जन्म सं० १८८७ में बूँदी में हुआ। ये संस्कृत के बड़े विद्वान् तथा डिंगल प्राकृत और भाषा के अच्छे ज्ञाता, बूँदी

दरबार के राजकवि एवं कामदार थे। ये बूँदी के स्टेट कौंसिल और वाल्टर-कृत राजपुत्रहितकारिणी सभा के सभासद तथा रजिस्टरी के हाकिम थे। आप भाषा की कविता सरस और मधुर करते थे। इनके रचित ये ग्रंथ हैं:—

गुलाबकोश १ नामचन्द्रिका २ नामसिंधुकोष ३ व्यंग्यार्थ-चन्द्रिका ४ बृहद् व्यंग्यार्थचन्द्रिका ५ भूषणचन्द्रिका ६ ललितकौमुदी ७ नीतिसिंधु ८ नीतिमंजरी ९ नीतिचन्द्र १० काव्यनियम ११ वनिता भूषण १२ बृहद्वनिताभूषण १३ चिंतातंत्र १४ मूर्खशतक १५ कृष्णचरित्र १६ आदित्यहृदय १७ कृष्णलीला १८ रामलीला १९ सुलोचनालीला २० विभीषणलीला २१ लक्षणकौमुदी २२ कृष्ण-चरित्र में गोलोक खंड, वृंदावन-खंड, मथुरा-खंड, द्वारिका-खंड, विज्ञान-खंड, और सूची २३ तथा ९ छोटे छोटे अष्टक इत्यादि। इनकी कविता सरस तथा मनोहर होती थी। इनकी गणना पद्मा-कर की श्रेणी में की जाती है। संवत् १९५८ में इनका देहांत हुआ।

उदाहरण।

पूरन गँभीर धीर बहु बाहिनी को पति,
धारत रतन महा राखत प्रमान है।
लखि दुजराज करै हरष अपार मन,
पानिप विपुल अति दानी छमावान है॥
सुकवि गुलाब सरनागत अभयकारी,
हरि उरधारी उपकारी हू महान है।

बलाबंध शैलपति साह कवि कौल भानु,
रामसिंह भूतलेंद्र सागर समान है ॥ १ ॥
मृदुता ललाई माँहि पल्लव कतल करैं,
सुचिसुभ तानें करे कमल निकाम हैं।
लाली ने लुटाय दियो लालन प्रबालन को,
सुख मानै सोखे थल कमल तमाम हैं ॥
सुकवि गुलाब तो सी तुही है तिलोक माँह,
सुमिरत तोँहि घनश्याम आठो जाम हैं।
कीरति किसोरी तेरी समता करै को आन,
चरन कमल तेरे कमला के धाम हैं ॥ २ ॥
छै हैं बकमंडली उमड़ि नभ मंडल मैं,
जुगुनू चमक ब्रजनारिन जरै हैं री।
दादुर मयूर झीने झींगुर मचै हैं सोर,
दैारि दैारि दामिनी दिसान दुख दै हैं री ॥
सुकवि गुलाब ह्वै हैं किरचैं करेजन की,
चौंकि चौंकि चोपन सों चातक चिचैहैं री।
हंसिनि लै हंस उड़ि जै हैं रितु पावस मैं,
ऐहैं घनश्याम घनश्याम जो न ऐहैं री ॥ ३ ॥

(१८१८) बाबा रघुनाथदास रामसनेही।

इन महाशय ने संवत् १९११ विक्रमीय में विश्रामसागर नामक एक बृहत् ग्रन्थ बनाया। ये महाशय रामानुज सम्प्रदाय के महन्त थे। इस सम्प्रदाय के महन्त गोविन्दराम अग्रदास के द्वारा में हुए।

उनके शिष्य सन्तराम, उनके कृपाराम, उनके रामचरण, उनके रामजन्न, उनके कान्हर और उनके हरीराम हुए। रघुनाथदास के गुरु देवादासजी इन्हीं महात्मा हरीरामजी के शिष्य थे। इन्होंने फ़क़ीर होने के अतिरिक्त अपने कुल गोत्र आदि का कुछ ब्योरा नहीं लिखा है। ये सब महात्मा अयोध्या में बड़े महन्त थे। अयोध्या में रामघाट के रास्ते पर रामनिवास नामक एक स्थान है। उसी पर ये लोग रहते थे और उसी स्थान पर इस महात्मा ने यह ग्रन्थ बनाना आरम्भ किया। इन्होंने भाषा का लक्षण और अपने ग्रन्थ का संवत् इस प्रकार कहा है :—

संस्कृत प्राकृत फ़ारसी बिबिधि देस के बैन।
भाषा ताको कहत कवि तथा कीन्ह मैं पैन॥
संवत् मुनि बसु निगम शत रुद्र अधिक मधु मास।
शुक्ल पक्ष कवि नौमि दिन कीन्हीं कथा प्रकास॥

विश्रामसागर रायल अठपेजी आकार में छपा हुआ ६१३ पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है। इसमें तीन प्रधान खंड हैं, अर्थात् पृष्ठ २८६ तक इतिहास, ३७४ तक कृष्णायन और ६०८ तक रामायण। इसके पीछे पृष्ठ ६१३ तक प्रश्नावली है। प्रथम खंड में मंगलाचरण के अतिरिक्त नारद, कृष्णदत्त, वाल्मीकि, गज, गणिका, यवन, अजामिल, यमदूत, बधिक कपोत, यमपुरी, कर्मविपाक, सुवर्त्ता, गौतमी सुबर्त्ता, मुद्गल, बीरभद्र, हरिश्चन्द्र, सुधन्वा, शिवि, देवदत्त, सुदर्शन, वहुला, मोरध्वज, ध्रुव, प्रह्लाद नृसिंह, ब्रह्मा, अयोध्या, स्वयम्भुव मनु, सप्त द्वीप नवखंड, गंगा उत्पत्ति, एकादशी, तुलसी, युधिष्ठिर यज्ञ, जाजुल्य तुलाधार, मक्षी दत्तात्रेय,

पितापुत्र, शयनजीत, सत्संग, अम्बरीष, चन्द्रहास, सन्त लक्षण, क्कास, नवधा भक्ति, और षट्शास्त्र का वर्णन है। द्वितीय में कृष्ण की उत्पत्ति से लेकर रुक्मिणीविवाह और प्रद्युम्न उत्पत्ति एवं विवाह तक की कथा वर्णित है। तृतीय खंड में रावण की उत्पत्ति और विजय तथा राम की उत्पत्ति से लेकर राम राज्य तक का वर्णन है।

प्रत्येक खंड के अन्त में इस कवि ने उस खंड के छन्दों की संख्या कह दी है। यह ग्रन्थ विशेषतया दोहा चौपाइयों में कहा गया है। इसमें यत्र तत्र और छन्द भी कहे गये हैं। रघुनाथदास ने बन्दना में गोस्वामी तुलसीदास का अनुकरण किया है, यहाँ तक कि कई स्थानों पर गोस्वामीजी के भाव भी विश्रामसागर में आ गये हैं। इस ग्रन्थ के पढ़ने से जान पड़ता है कि रघुनाथदासजी पूरे भक्त थे और उन्होंने भक्तों के विनोदार्थ यह ग्रन्थ बनाया था। इसकी रचना ब्रजविलास और रामाश्वमेध के समान है। इन तीनों ग्रन्थों का रचनाचमत्कार साधारण है, परन्तु इनमें कथायें रोचक वर्णित हैं। इस ग्रन्थ के उदाहरणस्वरूप हम कुछ छन्द नीचे लिखते हैं:—

पैहैं सुख सम्पति यश पावन। ह्वैहैं हरि हरि जन मन भावन॥
कल्पित ग्रन्थ कहै जो कोऊ। याचौं ताहि जोरि कर दोऊ॥
राम कथा शुभ चिन्तामन सी। दायक सकल पदारथ जन सी॥
अभिमत फलप्रद देवधेनु सी। स्वच्छ करन गुरु चरन रेनु सी॥
हरि भय हरणि विभाव सुता सी। दुखद अविद्या तूल हुता सी॥
धर्म कर्म वर बीज रसा सी। सुमति बढ़ावन सुख सुदसा सी॥

इस महात्मा ने संस्कृत के ग्रन्थों की बहुत सी कथायें लिखी हैं और कुछ श्लोक भी बनाये हैं। इससे विदित होता है कि ये संस्कृत के जानने वाले थे। इनकी भाषा गोस्वामी तुलसीदास की भाषा से मिलती जुलती है और उत्तमता में व्रजविलास के समान है। इनके वर्णन साधारण उत्तमता के हैं।

(१८१६) लेखराज (नन्दकिशोर मिश्र)।

ये महाशय भगवन्त नगर के मिश्र संवत् १८८८ में उत्पन्न हुए थे। इनकी पितामही लखनऊ के वाजपेयियों के घराने की थीं। उन के मातामह भट्टाचार्य्य पाँडे थे जो अवध के बादशाह के यहाँ से इलाहाबाद प्रान्त के शासक नियत थे। जब वह प्रान्त अँगरेज़ों को मिल गया तब वह लखनऊ में रहने लगे। उनके दोनों पुत्र बड़े विख्यात चकलेदार थे। इनके यहाँ करोड़ों की सम्पत्ति थी। कोई अन्य उत्तराधिकारी न होने से लेखराज की पितामही इस सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी हुईं। इनका महल वहीं था जहाँ अब विक्टोरिया पार्क बना हुआ है। समय पाकर यह सब धन लेखराज के हाथ आया और ये महाशय सुखपूर्वक लखनऊ में रहते रहे। संवत् १९१४ वाले सिपाहीविद्रोह की गड़ बड़ में इन्हें लखनऊ से बाहरी ज़िमीदारी गँधौली ज़िला सीतापूर में सब सम्पत्ति छोड़ कुछ दिनों को भाग जाना पड़ा। दैववश विद्रोहियों ने इनका महल खोद कर सब ख़ज़ाना तथा माल असबाब रक्षकों के रहते हुए भी लूट लिया। इन के हाथ जो कुछ धन ये ले गये थे वही लगा और गँधौली तथा सिंहपूर की ज़िमींदारी इनके पास रह गई। फिर भी

ये महाशय ऐसे शान्तचित्त और सन्तोषी थे कि कभी यह इस आपत्ति का नाम भी नहीं लेते थे।

इनको कविता का सदैव शौक़ रहा और बहुत प्रकार के उत्तम पदार्थ अपने हाथ से ये बना सकते थे। इनके यहाँ कविगण प्रायः आया करते थे। ये तथा इनके अनुज बनवारीलाल काव्य के पूर्ण ज्ञाता थे। इन्हों ने रसरत्नाकर (नायिकाभेद), राधानखशिख, गंगाभूषण और लघुभूषण नामक चार ग्रन्थ बनाये थे। रसरत्नाकर इनके बड़े पुत्र की असावधानी से लुप्त हो गया। यह बड़ा विशद ग्रन्थ था। गंगाभूषण में इन्होंने गंगाजी की स्तुति में हीं सब अलङ्कार निकाले हैं। लघुभूषण में बरवै छन्दों द्वारा अलङ्कारों के लक्षण तथा उदाहरण कहे गये हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त स्फुट छन्द बहुत हैं। इनका शरीरपात काशीजी में मणिकर्णिका घाट पर शिवरात्रि के दिन संवत् १९४८ में हुआ। इनके लालबिहारी (द्विजराज कवि) जुगुलकिशोर (व्रजराज कवि), और रसिकविहारी नामक तीन पुत्र हुए, जिनमें से अन्तिम दो अब भी वर्त्तमान हैं। इनके तीनों पुत्र कविता में पूर्णज्ञ हुए और प्रथम दो ने उत्कृष्ट कविता भी की। हमारे पिता के ये महाशय मित्र थे और इनके पितामह हमारे पितामह के विमात्र भाई थे। हमको कविता की बहुत बातें ये महाशय बताया करते थे। इनकी गणना हम किसी श्रेणी में नहीं कर सकते।

उदाहरण।

राति रतिरंग पिय संग सो उमंग भरि
उरज उतंग अंग अंग जम्बूनद के।

ललकि ललकि लपटात लाय लाय उर
बलकि बलकि बोल बोलत उलद के॥
लेखराज पूरे किये लाख लाख अभिलाष
लोयन लखात लखि सूखे सुख खद के।
दोऊ हद रद के सुदेत छद रद के
बिबस मैन मद के कहै मैं गई सदके॥

गाजि कै घोर कढ़ो गुफा फोरि कै पूरि रही धुनि है चहुँ देस री।
दोऊ कगार बगारि कै आनन पाप मृगान को खात जु बेसरी॥
तापै अघात कबौ न लख्यो गति नेकु सकै नहिँ सारद सेसरी।
सो लेखराज है गंग को नीर जो अद्भुतकेसरी बेसरी केसरी॥

(१८२०) रघुवरदयाल।

ये महाशय मध्य प्रदेशान्तर्गत दुर्ग ज़िला रायपूर के वासी थे। इन्होंने संवत् १९१२ में छन्दरत्नमाला नामक एक ग्रन्थ बनाया, जिसमें प्रत्येक छन्द का लक्षण तथा उदाहरण उसी छन्द में कह दिया। इनकी भाषा संस्कृत मिश्रित है और कहीं कहीं इन्होंने श्लोक भी कहे हैं। इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर १६२ छन्द हैं। ये महाशय अच्छे पंडित थे। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे। उदाहरण—

मालती सवैया।

सुन्दर सात निवास जहाँ गण इन्दु अमंगल कर्ण लिवैया।
है पुनि कर्ण सवै पद अन्तनि मो मन नाचत मोद दिवैया॥

तेइस वर्ण पदेक सुभ्राजत यो विधि चारिहु चर्ण रचैया।
काव्य बिचच्छन तें सु कहैं यह लच्छन मालति छन्द सवैया॥

(१८२१) ललितकिशोरी साह कुंदनलाल।

तथा (१८२२) ललित माधुरी।

इनका जन्म-स्थान लखनऊ था। ये जाति के वैश्य प्रसिद्ध साह विहारीलालजी के पौत्र थे। ये संवत् १९१३ में श्रीवृन्दावन चले गये और वहाँ गोस्वामी राधागोविंदजी के शिष्य होगये। संवत् १९१७ में इन्होंने वृन्दावन में प्रसिद्ध साहजी का मन्दिर बनवाना आरम्भ किया, जिसकी स्थापना सं० १९२५ में हुई। सं० १९३० कार्तिक शु० २ को इनका स्वर्गवास हुआ। इन्होंने कई बड़े बड़े ग्रंथ निर्मित किये, जिनका वर्णन नीचे किया जायगा। उनमें विषय प्रायः एक ही है। सब में श्रीकृष्णचंद्र का अष्टयाम या समयप्रवंध विशेषतया वर्णित है। समयप्रवंध व अष्टयाम में यह भेद है कि अष्टयाम में श्रीकृष्णचन्द्रजी के हर घड़ी और पहर का शृंगारपूर्ण वर्णन है और समयप्रवंध में दिन की पृथक् पृथक् पूजा और उपासनाओं का सविस्तर कथन है। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्णजी की विविध लीलाओं का वर्णन भी इन्होंने विस्तारपूर्वक किया है। श्रीसूरदासजी के व इन लोगों के कथनों में यह भेद है कि सूर ने सूक्ष्मतया समस्त भागवत की और मुख्यतया पूर्वार्द्ध दशम स्कंध की कथायें कही हैं जिससे उनके ग्रन्थ में विविध विषय आगये हैं, परंतु इन लोगों ने सिवाय ब्रज वर्णन के और कुछ भी नहीं कहा, और उसमें भी कृष्ण की

बाललीला इत्यादि की कथायें छोड़ दी हैं। इस कारण इनके कथनों में सिवाय प्रेमालाप, मान, मानमोचन, रास, भोजन, सोने, जागने आदि के और विषय बहुत कम आये हैं। ये कविगण विशेष भक्त तथा भक्ति विषय में लीन थे, सो इनको इतने ही विषय अलम् थे, परंतु सर्वसाधारण तो इस लीला तथा विहार में उतना आनंद नहीं पा सकते, अतः इन गोसाईं सम्प्रदाय वाले कवियों की कविता उतनी रुचिकर नहीं होती। इन लोगों की रचनाओं से सर्वसाधारण को क्या शिक्षा मिलती है? इस प्रश्न पर विचार करने से शोकपूर्वक कहना ही पड़ता है कि इस कवितासमुदाय से साधारण जनों के चरित्र शुद्ध होने की जगह बिगड़ने की अधिक सम्भावना है। इस प्रथा के संचालक लोग बहुधा भक्त और विरक्त थे। उनको ये वर्णन बाधा नहीं कर सकते थे, परंतु सर्व साधारण तो इन वर्णनों को पठन करके अपने चित्तों को वश में नहीं रख सकते। हम लोग संसारी जीव हैं। हमारे वास्ते जो कविता या प्रबंध रचे जावें वे शिक्षापूर्ण होने चाहिए। ऐसा न होकर यह काव्य उसका उलटा प्रभाव हम लोगों पर छोड़ता है। तिस पर भी भाषा-साहित्य को इन लोगों से लाभ ही हुआ, क्योंकि यदि इस सम्प्रदाय के कविगण इतनी काव्यरचना न किये होते तो हिन्दी-साहित्य आज इतना परिपूर्ण तथा मनोरंजक न होता, अस्तु। इनके छोटे भाई साह कुंदनलाल भी कवि थे और इनके जो ग्रंथ अपूर्ण रह गये थे उनकी पूर्ति उन्होंने कर दी थी, परंतु उन्होंने अपना नाम पृथक् कहीं नहीं लिखा, न कोई ग्रंथ ही अलग

बनाया । उनकी यह महानुभावता प्रशंसनीय है । किसी किसी छंद में ललितमाधुरी नाम पड़ा है । यही उनका उपनाम था ।

ललितकिशोरीजी का काव्य बड़ा ही सरस, मधुर श्रौर प्रेम-पूर्ण है । इनकी रचना से जान पड़ता है कि ये भाषा, फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे । जगह जगह पर इन्होंने फ़ारसी, अरबी श्रौर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया है । खड़ी बोली की भी कविता इन्होंने यत्र तत्र की है श्रौर कहीं कहीं कूट भी कहे हैं । सब बातों पर निगाह करने से इनकी रचना बहुत ही उत्कृष्ट श्रौर प्रशंसनीय है । हम इनको दास की श्रेणी का कवि मानते हैं । इनके रचे ये ग्रंथ हैं:—

अष्टयाम १ से ६ तक १ जिल्द
अष्टयाम ७ से ११ तक २ ,,
लीलासंग्रह अष्टयाम ३ ,,
ज्वालादिक मानलीला ४ ,,
} १०८६ पृष्ठ ।

रसकलिकादल १ से २४ तक ४ जिल्द ९१७ पृष्ठ फ़ूल्सकैप साइज़ । कहीं कहीं गद्य भी इन्होंने लिखा है ।

उदाहरण ।

ग़ज़ल ।

मटकी को आबरू की चट चौरहे में फोड़ै ।
क्या भाई बंद गुरजन सब दुरजनों को छोड़ै ॥
उल्फ़त जहाँ कि तिनसी ललिताकिशोरी तोड़ै ।
चंचल छबीले ज़ालिम जानाँ से नैन जोड़ै ॥

इस रस के पावे चसके जेहि लोकलाज खोई।
मैं बेंचती हूँ मन के माखन को लेवे कोई ॥ १ ॥

पद।

चालिस द्वै अध चन्द थके।
चंचल चारु चारि खंजन बर चितै परसपर रूप छके॥
दामिनि तीनि अनेक मधुप गन ललित भुजंगम संग जके।
अष्टादस अरबिंद अचल अलि ललितकिशोरी आजु टके॥ २ ॥

दोहा।

अंग अंग सों अंबुकन भरि भरि आवत नीर।
चन्द स्रवन पीयूष कै बरसत दामिनि बीर॥ ३ ॥
नील बरन जल जमुन तिय चपल इतै उत जाहिँ।
धसीं अनेकन दामिनी सिंधु स्याम घन माहिँ॥ ४ ॥

पद।

कमल मुख खोलौ आजु पियारे।
बिकसित कमल कुमोदिनि मुकुलित अलिगन मत्त गुँजारे।
प्राची दिसि रवि थार आरती लिए ठनी निवछारे॥
ललितकिशोरी सुनि यह बानी कुरकट बिसद पुकारे।
रजनी राज बिदा माँगै बलि निरखौ पलक उघारे॥ ४ ॥

केकी कीर कोकिला कोयल सामुहि करैं जुहार।
परसन दृगनि कंज हित बोलैं भृंगी जैजेकार॥
मूँदौ रंध्र वेगि प्राची दिसि इति अब कहत पुकार।
ललितकिशोरी निरख्यो चाहत रवि नव कुंज विहार॥ ५ ॥

लाभ कहा कंचन तन पाए ।
बचननि मृदुल कमलदललोचन दुखमोचन हरि हरखि न ध्याए ॥
तन मन धन अरपन नहिँ कीनो प्रान प्रानपति गुननि न गाए ।
योबन धन कलधौत धाम सब मिथ्या सिगरी आयु गँवाए ॥
गुरजन गरब विमुख रँग राते डोलत सुख सम्पति बिसराए ।
ललितकिशोरी मिटै ताप नहिँ बिन दृढ़ चिंतामनि उर लाए ॥६॥
प्रिया मुख राजत कुटिली अलकैं ।
मानहु चिबुक कुंड रस चाखन ह्वै नागिनि अति उमगीं थलकैं ।
बेनी छूटि परी एंड़ी लैं बिथुरि लटैं घुघुरारी हलकैं ।
यह अरबिंद सुधारस कारन भँवर वृंद जुरि मानहुँ ललकैं ॥
चंदन भाल कुटिल भ्रू मोरी ता पर यक उपमा हैं झलकैं ।
गै चढ़ि अरध चंद तट अहिनी अमी लूटिबे मन करि चलकैं ॥
पुहुप सचित उरमाल बिराजत चरन कमल परसत ढलढलकैं ।
मनहुँ तरङ्ग उठत पुनि ठिठुकत रूप सरोवर माहिँ बिमलकैं ॥
ललित माधुरी बदनसरोजहि रास करत पिय श्रमकन झलकैं ।
भृङ्ग दृगनि पिय छबि मकरंदहि घूँटत मुदित परत नहिँ पलकैं ॥ ७ ॥
मधुकर मेरे ढिग जनि आय ।
तैं हरजाई वंसकलंकी सब फूलन बसिजाय ॥
कारे सबै कुटिल जग जाने कपटी निपट लवार ।
अमृत पान करैं विष उगिलैं अहिकुल प्रतछ निहार ॥
देखत चिकनी सुभग चमकनी राखी मंजु बनाय ।
कारी अनी बान की पैनी लगत पार ह्वै जाय ॥

कारी निसि चोरन को प्यारी औगुन भरी अनेक।
ललितकिशोरी प्रीति न करि हैं। कारे सों यह टेक॥ ८॥

इस समय के अन्य कविजन।

नाम—(१८२३) आज़म।

ग्रन्थ—(१) षट्ऋतु, (२) नखशिख।

कविताकाल—१८९०।

नाम—(१८२४) उदयचंद ओसवाल भंडारी।

ग्रन्थ—(१) रसनिवास, (२) रसशृंगार, (३) दूषणदर्पण, (४) ब्रह्म-प्रबोध, (५) ब्रह्मविलास, (६) भ्रमविहंडन।

कविताकाल—१८९०।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा मानसिंह।

नाम—(१८२५) दास दलसिंह।

ग्रन्थ—दलसिंहानन्दप्रकाश।

कविताकाल—१८९०।

नाम—(१८२६) परमेश्वरीदास कायस्थ, कालिंजर।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१८६०। मृत्यु १९१२।

कविताकाल—१८९०।

विवरण—चौबे नाथूराम जागीरदार मालदेव बुँदेलखंड के दरबारी कवि थे।

नाम—(१८२७) लक्ष्मणसिंह, बिजावर के राजा।

ग्रन्थ—(१) नृपनीतिशतक, (२) समयनीतिशतक, (३) भक्तिशतक, (४) धर्म्मप्रकाश।

जन्म—१८६७।

रचनाकाल—१८९० से १९०४ तक।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८२८) सन्तोषसिंह पटियाला।

ग्रन्थ—वाल्मीकीय रामायण भाषा।

रचनाकाल—१८९०।

नाम—(१८२९) गणेशबख़्श, रामपूर मथुरा, ज़िला सीतापूर।

ग्रन्थ—प्रियाप्रीतमविलास।

रचनाकाल—१८९१ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८३०) नवलसिंह प्रधान।

ग्रन्थ—अद्भुतरामायण।

रचनाकाल—१८९१।

विवरण—मधुसूदन दास श्रेणी।

नाम—(१८३१) भावन पाठक, मौरावाँ, ज़िला उन्नाव।

ग्रन्थ—काव्यशिरोमणि (या काव्यकलपद्रुम)।

रचनाकाल—१८९१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८३२) बेनीदास बंदीजन।

जन्मकाल—१८६५।

रचनाकाल—१८९२।

विवरण—मेवाड़ के इतिहासलेखक थे।

नाम—(१८३३) शङ्कर पाँडे।

ग्रन्थ—सारसंग्रह पृ० ८०।

रचनाकाल—१८९२।

विवरण—नीति।

नाम—(१८३४) शङ्करदयाल, दरियाबादी।

ग्रन्थ—(१) अलंकृतमाला, (२) वज्रसूची।

रचनाकाल—१८९२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८३५) नैनयोगिनी।

ग्रन्थ—सावर तंत्र।

रचनाकाल—१८९३ के पूर्व।

नाम—(१८३६) शिवदयाल खत्री, प्रयाग।

ग्रन्थ—(१) सिद्धिसागर तंत्र (१८९३ सं०) (२) शिवप्रकाश (१९१०-३२)

कविताकाल—१८९३।

विवरण—तंत्र और आयुर्वेद।

नाम—(१८३७) बालकृष्ण चौबे, बूंदी।

ग्रन्थ—स्फुट काव्य।

कविताकाल—१८९४।

विवरण—विहारीलाल के वंशज ।

नाम—(१८३८) सीतलराय बन्दीजन, बौंडी, बहरायच ।

कविता काल—१८९४ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । राजा गुमानसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(१८३९) उत्तमदास मिश्र ।

ग्रन्थ—(१) स्वरोदय, (२) शालिहोत्र ।

कविताकाल—१८९५ के पूर्व ।

नाम—(१८४०) घनश्यामदास कायस्थ ।

ग्रन्थ—(१) अश्वमेध पर्व, (२) वसुदेवमोचिनीलीला ।

कविताकाल—१८९५ ।

विवरण—महाराजा रतसिंह चरखारी वाले के यहाँ थे ।

नाम—(१८४१) प्राणसिंह कायस्थ, चरखारी ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

जन्मकाल—१८७० । मृत्यु १९०७ ।

कविताकाल—१८९५ ।

विवरण—रियासत चरखारी में फ़ौज के बख़्शी थे ।

नाम—(१८४२) विष्णुदत्त, चैमलपुरा ।

ग्रन्थ—(१) राजनीतिचन्द्रिका, (२) दुर्गाशतक ।

कविताकाल—१८९५ ।

विवरण—ठाकुर जैगोपालसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(१८४३) बुधजन जैन ।

ग्रन्थ—योगीन्द्रसार भाषा ।

कविताकाल—१८९५।

नाम—(१८४४) लालदास।

ग्रन्थ—(१) ऊषाकथा, (२) वामनचरित्र।

कविताकाल—१८९६ के पूर्व।

विवरण—मनोहरदास के पुत्र।

नाम—(१८४५) गणेशप्रसाद।

ग्रन्थ—हनूमतपच्चीसी (पृ० १२)।

कविताकाल—१८९६।

विवरण—श्रीकाशीनरेशजी की आज्ञा से रचना की।

नाम—(१८४६) बलदेव ब्राह्मण चरखारी।

कविताकाल—१८९६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८४७) भोलासिंह, पन्ना।

कविताकाल—१८९६।

नाम—(१८४८) हरिदास कायस्थ, पन्ना।

ग्रन्थ—(१) नखशतक, (२) रसकौमुदी, (३) राधिकाभूषण, (४) इतिहाससूर्यवंश, (५) अलंकारदर्पण, (६) श्रीराधाकृष्णजी को चरित्र, (७) लीलामहिमा समय वर सैन को, (८) गोपालपच्चीसी।

जन्मकाल—१८७६। मृत्यु १९००।

कविताकाल—१८९६।

विवरण—पन्नानरेश महाराज हरवंशराय के यहाँ थे।

संवत् १८८९ वाले सूर्य्यमल्ल नामक कवि ने नीचे लिखे हुए कवियों के नाम अपने १८९७ में बने हुए ग्रन्थ में लिखे हैं। इससे प्रकट होता है कि ये कवि १८९७ तक हुए थे। नाम ये हैं:— (१८४९) अजिता, (१८५०) अतीत, (१८५१) आस, (१८५२) उदय, (१८५३) कमलानाथ, (१८५४) करनी, (१८५५) कलंक, (१८५६) कल्यानपाल, (१८५७) कृपाल चारण, (१८५८) कंकाली, (१८५९) कंजुली, (१८६०) गजानन, (१८६१) चक्रधर, (१८६२) चामुंड, (१८६३) चिमन, (१८६४) दयालाल, (१८६५) दान, (१८६६) देवक, (१८६७) देवमणि (आपने १६ अध्याय तक चाणक्यनीति भाषा रची), (१८६८) धनपति, (१८६९) धनसुख, (१८७०) धनंजय, (१८७१) धराधर, (१८७२) धर्म्मसिंह यती (स्फुट काव्य), (१८७३) नल, (१८७४) नाज़िर, (१८७५) निर्मल (भक्तिकविता), (१८७६) नंदकेसरीसिंह (सगारथलीला रची, जिसमें साधारण श्रेणी का काव्य है), (१८७७) परिचारण, (१८७८) पुरान, (१८७९) बोरी, (१८८०) भगंड, (१८८१) भरतेस, (१८८२) भागु, (१८८३) भैरव-चारण (बटुकपचासा), (१८८४) मदन, (१८८५) मधुकर, (१८८६) मधुप, (१८८७), रच्छपाल, (१८८८) रामकृष्ण की बधू, (१८८९) शिवपाल, (१८९०) सरूपदास, (१८९१) सवाई राम, (१८९२) सिरा, (१८९३) सुन्दरिका, (१८९४) हरिसुख, (१८९५) हून और (१८९६) हृदयानंद। (१८९७) जयलाल का भी नाम सूर्य्यमल ने लिखा है। ये उनके भाई थे। इनका समय १८९७ समझना चाहिए।

नाम—(१८९८) बिहारी उपनाम भोजराज (भोज)।

ग्रन्थ—(१) भोजभूषण, (२) रसविलास।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। महाराजा रतनसिंह चरखारी-नरेश के यहाँ थे।

नाम—(१८९९) बिहारीलाल त्रिपाठी, टिकमापुर ज़िला कानपुर।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—ये मतिराम कवि के वंशधर हैं। तोष श्रेणी।

नाम—(१९००) बुद्धसिंह कायस्थ, बुन्देलखंडी।

ग्रन्थ—(१) सभाप्रकाश, (२) माधवानल।

कविताकाल—१८९७।

नाम—(१९०१) रामदीन त्रिपाठी तिकवाँपूर, कानपूर।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—मतिरामवंशी साधारण कवि।

नाम—(१९०२) रावराना वन्दीजन।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। रतनसिंह चरखारी-नरेश के यहाँ थे।

नाम—(१९०३) शिवराम।

ग्रन्थ—तख़्तविलास।

कविताकाल—१८९७।

नाम—(१६०४) साहबरामजी जोशी।

ग्रन्थ—(१) रोज़नामचा, (२) लाला साहब री मुलाखात।

कविताकाल—१८९७।

नाम—(१६०५) सीतल, तिकवाँपूर, कानपूर।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। मतिरामवंशी।

नाम—(१६०६) सेवक, चरखारी वाले।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—राजा रतनसिंह चरखारीनरेश के यहाँ थे।

नाम—(१६०७) हरप्रसाद कायस्थ, पन्ना तथा टीकमगढ़।

ग्रन्थ—(१) रसकौमुदी, (२) हिसाब।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। कड़ा में जन्म हुआ था। हिसाब का ग्रन्थ बनाया।

नाम—(१६०८) अजित दास जैन जौनपूर।

ग्रन्थ—जैनरामायण।

कविताकाल—१८९८।

विवरण—वृन्दावन, जैन कवि के पुत्र।

नाम—(१६०९) बादेराय भाट, डलमऊ, ज़िला राय बरेली।

जन्मकाल—१८८२।

कविताकाल—१८९८।

विवरण—राजा दयाकृष्ण राय लखनऊ वाले के यहाँ थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(१६१०) हरिप्रसाद।

ग्रन्थ—अलंकारदर्पण।

कविताकाल—१८९८।

विवरण— महाराजा हरि वंश के यहाँ थे।

नाम—(१६११) श्रीनिवास।

ग्रन्थ—जानकीसहस्र नाम।

कविताकाल—१८९९ के पूर्व।

नाम—(१६१२) धीरज सिंह कायस्थ।

ग्रन्थ—(१) गणितचन्द्रिका, (२) दस्तूरचिन्तामणि, (३) दफ़्र-मोदतरंग।

कविताकाल—१८९९ के पूर्व।

विवरण—धोरवाई उरछा राज्य। आप दतिया में भी थे।

नाम—(१६१३) रसानंद भट्ट।

ग्रन्थ—संग्रामरत्नाकर।

कविताकाल—१८९९।

विवरण—भरतपुरनरेश महारजा बलवंतसिंह की आज्ञानुसार रचा।

नाम—(१६१४) आशुतोष।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१६१५) कमलाकर ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१६१६) करतालिया ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१६१७) करुणानिधान ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१६१८) कल्यान स्वामी ।

ग्रन्थ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१६१९) कृपामिश्र ।

ग्रन्थ—(१) रसपद्धति, (२) सवैयाप्रबोध ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१६२०) कृपासिन्धुलाल ।

ग्रन्थ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६२१) गोपालनायक।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१६२२) गोपीलाल।

ग्रन्थ—स्फुट पद।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२३) चन्द सखी।

ग्रन्थ—स्फुट पद।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—जयपुरवासी। सम्भव है कि ये १६३८ वाली चन्द सखी हों।

नाम—(१६२४) जगराज।

कविताकाल—१९०० के प्रथम।

नाम—(१६२५) जनार्दन भट्ट।

ग्रन्थ—(१) कवि-रत्न, (२) वैद्य-रत्न, (३) बाल-विवेक, (४) हाथी को सालिहोत्र।

कविताकाल—१९०० के प्रथम।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२६) जितऊ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९२७) ठंढी सखी।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९२८) धुरन्धर।

ग्रन्थ—शब्दप्रकाश।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनकी रचना दिग्विजयभूषण में है। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९२९) नरसिंहदयाल।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३०) नीलमणि।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३१) भरथरी।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में संगृहीत हैं।

नाम—(१९३२) माननिधि।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—साधारण श्रेणी, पदरचयिता।

नाम—(१९४५) शिवचन्द्र।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४६) शङ्कर कायस्थ, बिजावर।

ग्रन्थ—स्फुट।
कविताकाल—१९०० के कुछ पूर्व।
विवरण—कवि ठाकुर के पौत्र।

नाम—(१९४७) श्याममनोहर।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१९४८) श्यामसुन्दर।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४९) सगुणदास।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५०) साँवरी सखी।

ग्रन्थ—भजन।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९५१) सोनादासी।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९५२) हरिदत्तसिंह ब्राह्मण।

ग्रन्थ—राधाविनोद।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—शाकद्वीपी ब्राह्मण, महाराजा अयोध्या के वंशज।

नाम—(१९५३) अम्बुज।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१८७५।

कविताकाल—१९००।

विवरण—इनके नीति के छंद भी अच्छे हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५४) इच्छाराम कायस्थ छतरपूर।

ग्रन्थ—(१) द्रौपदीविनय, (२) राधामाधवशतक।

जन्मकाल—१८७६। मृत्यु १९४५।

कविताकाल—१९००।

नाम—(१९५५) उमापति त्रिपाठी, उपनाम कोविद।

ग्रन्थ—(१) दोहावली, (२) रत्नावली।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाशय अयोध्या में रहते थे। इन की संस्कृत की कविता उत्तम है। ये महाराज महात्मा ऋषियों की तरह माने जाते थे और ये संवत् १९२५ तक जीवित रहे हैं। अतः इनका कविताकाल संवत् १९०० हो सकता है। भाषाकविता भी भक्तिपक्ष में उत्तम की है।

नाम—(१६५६) ऋषिजू।

जन्मकाल—१८७२।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६५७) कमलेश।

ग्रन्थ—नायिकाभेद का एक ग्रन्थ।

जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६५८) कृष्ण।

ग्रन्थ—विदुरप्रजागर।

जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६५९) गुलाल।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

जन्मकाल—१८७५ ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९६०) गोकुल कायस्थ, बलरामपुर ।

ग्रन्थ—(१) नामरत्नाकर (पृ० ६२), (२) नामविनोद (पृ० २०४) (१९२९)

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—धर्म एवं नीति कही ।

नाम—(१९६१) गोपाल कायस्थ, रीवाँ ।

ग्रन्थ—गोपालपचीसी ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—महाराज विश्वनाथसिंह रीवाँनरेश के समय में थे ।

नाम—(१९६२) गोपाल कायस्थ, पन्ना ।

ग्रन्थ—(१) शालिहोत्र, (२) गजविलास ।

कविताकाल—१९०० । मृत्यु १९२० ।

विवरण—पन्नानरेश हरवंशराय और नरपतिसिंह के समय में थे । ये अजयगढ़ में भी रहे थे ।

नाम—(१९६३) गोपालराय भाट ।

ग्रन्थ—दम्पति वाक्यविलास ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारणश्रेणी ।

नाम—(१९६४) चतुर्भुज मिश्र, आगरा ।

ग्रन्थ—(१) व्रजपरिक्रमा सतसई, (२) वंशविनोद ।

कविताकाल—१९००।

विवरण—ये महाशय प्रसिद्ध कवि कुलपति मिश्र के वंशज थे। कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(१६६५) जवाहिरसिंह कायस्थ पन्ना।

ग्रन्थ—वैद्यप्रिया।

कविताकाल—१९००।

विवरण—महाराजा मानसिंह के समय में थे।

नाम—(१६६६) दीनानाथ अध्वर्यु, मोहार।

ग्रन्थ—ब्रह्मोत्तरखंड भाषा।

जन्मकाल—१८७६।

कविताकाल—१९००।

नाम—(१६६७) दुलीचंद, जयपूर।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

कविताकाल—१९०० के लग भग।

विवरण—महाराज रामसिंह जयपुरनरेश की आज्ञा से बनाया था।

नाम—(१६६८) नंदकुमार कायस्थ, बाँदा।

कविताकाल—१९०० के लग भग।

विवरण—पन्ना से कुछ पेंशन पाते थे।

नाम—(१६६९) परमवन्दीजन महोवा वाले।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१८७१।

कविताकाल—१९००।

विवरण—तोष-श्रेणी ।

नाम—(१९७०) प्रधान ।

जन्मकाल—१८७५ ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९७१) बलिरामदास ।

ग्रन्थ—चित्तविलास ।

जन्मकाल—१८७० ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(१९७२) बंसगोपाल बुँदेलखंडी ।

ग्रन्थ—भाषासिद्धान्त (गद्य व्रजभाषा) ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण भाषा । ग्रन्थ छतरपूर में है । जालवन वासी वन्दीजन ।

नाम—(१९७३) भारतीदान जोधपूरवासी ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—ये महाशय मुरारिदान के पिता थे। इनकी कविता अनुप्रासविभूषित साधारण श्रेणी की थी ।

नाम—(१९७४) मदनगोपाल शुक्ल, फतूहाबादी ।

ग्रन्थ—(१) अर्जुनविलास, (२) वैद्यरत्न ।

जन्मकाल—१८७६ ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९७५) माखन ।

जन्मकाल—१८७० ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९७६) रणजीतसिंह धंधेरे क्षत्रिय, पंचमपुर ।

ग्रन्थ—कलाभास्कर ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१९७७) रामनाथ उपाध्याय ।

ग्रन्थ—(१) रसभूषण ग्रन्थ, (२) महाभारत भाषा ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—महाराजा नरेन्द्रसिंह पटियाले वाले के समय में थे ।

नाम—(१९७८) लक्ष्मण ।

ग्रन्थ—धर्मप्रकाश (१९०५), (२) भक्तप्रकाश (१९०२), (३) नृपनीतिशतक (१९००), (४) समयनीतिशतक (१९०१), (५) शालिहोत्र, (६) रामलीलानाटक, (७) भावनाशतक ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—भावनाशतक व शालिहोत्र हमने दरबार छतरपुर के पुस्तकालय में देखे ।

नाम—(१६७६) लक्ष्मणप्रसाद उपाध्याय, बाँदा

ग्रन्थ—नामचक्र ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—गुन्नूलाल के पुत्र ।

नाम—(१६८०) लोने बन्दीजन, बुँदेलखंडी ।

जन्मकाल—१८७६ ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६८१) सम्पति ।

जन्मकाल—१८७० ।

कविताकाल—१९०० ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१६८२) हरिजन कायस्थ, टीकमगढ़ ।

ग्रन्थ—कविप्रिया टीका, (२) तुलसीचिन्तामणि (१९०३) ।

कविताकाल—१९०० ।

नाम—(१६८३) हिमंचलसिंह कायस्थ, छतरपूर ।

ग्रन्थ—सतसई की टीका ।

कविताकाल—१९०० ।

नाम—(१६८४) रामजू ।

ग्रन्थ—बिहारीसतसई टीका ।

कविताकाल—१९०१ के पूर्व ।

नाम—(१९८५) अवधेस, चरखारी बुँदेलखंड।

कविताकाल—१९०१।

विवरण—ये महाराज रतनसिंह चरखारीनरेश के यहाँ थे। सरोजकार ने भूपा वाले बुँदेलखंडी का एक और नाम दिया है। जान पड़ता है कि ये दोनों नाम एक ही हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९८६) जय कवि।

कविताकाल—१९०१।

विवरण—लखनऊ के नवाब वाजिदअलीशाह के यहाँ थे। व्रज-भाषा व खड़ी बोली मिश्रित रचना की है। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९८७) वंशीधर वाजपेयी, चिंताखेड़ा ज़िला रायबरेली।

जन्मकाल—१८७४।

कविताकाल—१९०१।

विवरण—स्फुट काव्य।

नाम—(१९८८) वंशीधर भाट, बनारसी।

ग्रन्थ—(१) विदुर प्रजागर (साहित्य वंशीधर), (२) मित्रमनोहर (भापा राजनीति)।

जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९०१।

नाम—(१९८९) वंसरूप बनारसी ।

जन्मकाल—१८७४ ।

कविताकाल—१९०१ ।

विवरण—स्फुट कविता काशीराज महाराज की की है और नायिकाभेद भी कहा है । साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९९०) रामगुलाम द्विवेदी ।

ग्रन्थ—(१) संकटमोचन, (२) प्रबंधरामायण, (३) किष्किन्धा-कांड, (४) विनयनवपंचक ।

कविताकाल—१९०१ ।

विवरण—मिरज़ापुरनिवासी । आप तुलसीकृत रामायण के प्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता हैं । आपके पद रागसागरोद्भव में भी हैं ।

नाम—(१९९१) चैनदान चारण ।

ग्रन्थ—बिसू (मरसिया) ।

कविताकाल—१९०२ के प्रथम ।

नाम—(१९९२) भैरववल्लभ ।

ग्रन्थ—युद्धविलास ।

कविताकाल—१९०२ के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९९३) अयोध्याप्रसाद शुक्ल, गोला गोकरणनाथ, ज़िला खीरी ।

कविताकाल—१९०२।

विवरण—ये राजा भूड़ के यहाँ थे। कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(१६६४) कालीचरण वाजपेयी, बिगहपुर, ज़िला उन्नाव।

ग्रन्थ—वृन्दावनप्रकरण।

कविताकाल—१९०२।

नाम—(१६६५) भवानीदास।

जन्मकाल—१८७५।

कविताकाल—१९०२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६६६) सुखलाल भाट, ओड़छा।

ग्रन्थ—(१) दस्तूरअमल, (२) नसीहतनामा, (३) राधाकृष्ण-कटाक्ष।

कविताकाल—१९०२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६६७) हरी आचार्य्य।

ग्रन्थ—अष्टयाम।

कविताकाल—१९०३ के पूर्व।

नाम—(१६६८) गजराज उपाध्याय।

ग्रन्थ—(१) वृत्तहार पिंगल, (२) सुवृत्तहार, (३) रा

जन्मकाल—१८७४।

कविताकाल—१९०३।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९९९) सर्वसुखशरण।

ग्रन्थ—तत्त्वबोध।

कविताकाल—१९०३ के पूर्व।

विवरण—अयोध्या के महन्त ज्ञात होते हैं।

नाम—(२०००) नरेन्द्रसिंह।

ग्रन्थ—बालकचिकित्सा।

कविताकाल—१९०३।

नाम—(२००१) अमीर, बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—रिसालातीरन्दाज़ी।

कविताकाल—१९०४।

नाम—(२००२) अवधबक्स।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९०४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२००३) चन्द कवि।

ग्रन्थ—भेदप्रकाश।

कविताकाल—१९०४।

विवरण—सवाई राजा रामसिंह जयपुरनरेश इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(२००४) जनकलाड़िलीशरण साधु, अयोध्या।

ग्रन्थ—(१) नेहप्रकाशिका (पृ० ८४), (२) नेहप्रकाश बालअली रचित पर टीका, (३) ध्यानमंजरी।

कविताकाल—१९०४।

नाम—(२००५) भीषमदास।

ग्रन्थ—रामरत्न दोहाई।

कविताकाल—१९०४।

नाम—(२००६) परमसुख।

ग्रन्थ—सिंहासनबत्तीसी।

कविताकाल—१९०५ के पूर्व।

नाम—(२००७) कृष्णाकर चारण, करौली।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९०५ के लगभग।

नाम—(२००८) थानसिंह (कान्ह) कायस्थ, चरखारी।

ग्रन्थ—हयग्रीवनखशिख।

जन्मकाल—१८८२।

कविताकाल—१९०५—मृत्यु १९१४।

विवरण—चरखारीनरेश रतनसिंह के समय में थे।

नाम—(२००९) फ़ाजिलसाह बनिया, छतरपूर।

ग्रन्थ—प्रेमरत्न।

कविताकाल—१९०५।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी।

नाम—(२०१०) हरिभक्तसिंह, भिनगानरेश।

ग्रन्थ—(१) ज्ञानमहोदधि (पृ० ४०), (२) दानमहोदधि।

कविताकाल—१९०५।

नाम—(२०११) अलखसनेही नैनदास।

ग्रन्थ—गीतासार।

कविताकाल—१९०६ के पूर्व।

नाम—(२०१२) सुखविहार साधु।

ग्रन्थ—सुखविहार।

कविताकाल—१९०६।

नाम—(२०१३) ठाकुरप्रसाद (उपनाम पंडित प्रवीन) पयासी।

कविताकाल—१९०७।

विवरण—तोष श्रेणी। अयोध्या के महाराजा मानसिंह के यहाँ थे।

नाम—(२०१४) भानुनाथ झा।

ग्रन्थ—प्रभावतीहरण।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९०७।

विवरण—महाराजा महेश्वरसिंहजी दरभंगा के यहाँ थे। मैथिली भाषा में [illegible] की है।

नाम—(२०१५) रमैया बाबा।

ग्रन्थ—(१) रमैया की कविता, (२) रमैया बाबा की कविता, (३) रमैया के कवित्त।

कविताकाल—१९०७।

नाम—(२०१६) साहबदीन साधु बनारसी।

ग्रन्थ—सन्देहबोध।

कविताकाल—१९०७।

विवरण—महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के समय में थे।

नाम—(२०१७) धीरसिंह महाराजा।

ग्रन्थ—अलंकारमुक्तावली।

कविताकाल—१९०८ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०१८) विष्णुसिंह चारण, करौली।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९०८।

विवरण—ये भाषा तथा संस्कृत के अच्छे कवि और पंडित थे। करौलीदरबार के आप वंशपरम्परा से कवि थे।

नाम—(२०१९) देवीदत्त।

ग्रन्थ—अरकपचीसी।

कविताकाल—१९०९।

नाम—(२०२०) मनराज।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९०९।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२०२१) लक्ष्मीप्रसाद।

ग्रन्थ—(१) शृंगारकुंडली, (२) नायिकाभेद।

कविताकाल—१९०९।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाराजा भानुप्रताप छत्रसाल बंसी के मुसाहब थे।

नाम—(२०२२) सुन्दरलाल (उपनाम रसिक) बाँदानिवासी।

ग्रन्थ—(१) सुन्दरचन्द्रिकारसिक, (२) कुंजकौतुक, (३) पूजा-विभास।

कविताकाल—१९०९।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०२३) अजबेस (द्वितीय) भाट।

ग्रन्थ—बघेलवंशवर्णन।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—महाराजा विश्वनाथसिंह बाँधवनरेश के यहाँ थे। तोष कवि की श्रेणी।

नाम—(२०२४) औघड़।

ग्रन्थ—तरंगविलास।

कविताकाल—१९१० के लगभग।

विवरण—बनारसनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के यहाँ थे।

नाम—(२०२५) ईश्वरीप्रसाद कायस्थ, क़नौज।

ग्रन्थ—(१) बिहारीसतसई पर कुण्डलिया, (२) जीवरक्षावली, (३) व्याकरणमूलावली, (४) नाटकरामायण, (५) ऊषा-अनिरुद्ध नाटक, (६) तवारीख़ महोबा।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०२६) ऋतुराज।

ग्रन्थ—बसन्तविहारी नीति।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०२७) ऋषिराम मिश्र, पट्टीवाले।

ग्रन्थ—वंशीकल्पलता।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—साधारण श्रेणी। लखनऊ के महाराजा बालकृष्ण के यहाँ थे।

नाम—(२०२८) कुँवर रानाजी क्षत्रिय, बलरामपुर।

ग्रन्थ—फ़ीलनामा (पृ० ६१ गद्य, तथा पृ० ४६ पद्य)।

कविताकाल—१९१० ।

नाम—(२०२९) गदाधरदास, समोगरा वाले।

ग्रन्थ—दिग्विजयचम्पू (पृ० २७८)।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—आश्रयदाता बलरामपुर राज्य।

नाम—(२०३०) गुणसिन्धु, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१८८२ ।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०३१) गौरचरण गोस्वामी, श्रीवृन्दावन।

ग्रन्थ—(१) जालीकुञ्जलाल, (२) भूषणदूषण, (३) विचित्रजाल, (४) श्रीगौराङ्गचरित्र, (५) चोरी है कि दग़ाबाज़ी, (६) चैतन्यविजय की समालोचना पर समालोचना, (७) अभिमन्यु-वध, (८) भवानी।

कविताकाल—१९१० । वर्त्तमान।

नाम—(२०३२) चैनसिंह खत्री, लखनऊ, उपनाम (हरचरण)।

ग्रन्थ—(१) शृङ्गारसारावली, (२) भारतदीपिका, (३) बृहत्कवि-बल्लभ।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(२०३३) जदुनाथ।

जन्मकाल—१८८१ ।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—इनके कवित्त तुलसी के संग्रह में हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०३४) दास।

ग्रन्थ—केदारपंथप्रकाश।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—राजा नरेन्द्रसिंह पटियाला वाले की केदारनाथयात्रा का वर्णन है।

नाम—(२०३५) द्रोणाचार्य त्रिवेदी।

ग्रन्थ—प्रियादास चरितामृत।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०३६) बलदेवदास माथुर।

ग्रन्थ—(१) कृष्णखंड भाषा, (२) करीमा हिन्दी।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०३७) भैरवप्रसाद कायस्थ, पन्ना।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१८८४।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०३८) मकरन्द राय, पुवाँयाँ, शाहजहाँपूर।

ग्रन्थ—हास्यरस।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०३९) मंगलदास कायस्थ, पैंतेपुर ज़ि० बारहबंकी।

ग्रन्थ—(१) ज्ञानतरंग, (२) विजय-चंद्रिका, (३) कृष्णप्रिया, (४) सहस्रसाखी।

जन्मकाल—१८८५।

कविताकाल—१९००, मृत्यु १९६४।

विवरण—ये ठाकुर महेश्वरबख़्श तालुक़ेदार रामपुर मथुरा के यहाँ थे। इन्होंने छोटे बड़े ४८ ग्रन्थ निर्मित किये थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०४०) रसाल, बिलग्राम हरदोई।

ग्रन्थ—(१) बरवै अलंकार, (२) नखशिख।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०४१) रामप्रसाद अगरवाल, मिर्ज़ापूर।

ग्रन्थ—(१) धर्मतत्त्वसार, (२) चौंतीस अक्षरी, (३) श्रीभक्तरस-चौंतीसी।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०४२) हलधर।

ग्रन्थ—सुदामाचरित्र।

कविताकाल—१९९० के पूर्व।

नाम—(२०४३) तुलसीराम अगरवाल, मीरापुर।

ग्रन्थ—भक्त-माल (उर्दू अक्षरों में)।

कविताकाल—१९११।

नाम—(२०४४) दीनानाथ बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—भक्तिमञ्जरी।

कविताकाल—१९११।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(२०४५) भूमिदेव।

कविताकाल—१९११।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०४६) भूसुर।

जन्मकाल—१८८५।

कविताकाल—१९११।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०४७) किशोरीशरण (उपनाम रसिक वा रसिकविहारी)।

ग्रन्थ—(१) रघुवर का कर्णाभरण, (२) सीतारामरसदीपिका, (३) कवितावली, (४) सीतारामसिद्धान्तमुक्तावली, (५) बारहखड़ी।

कविताकाल—१९१२ के पूर्व।

विवरण—सुदामापुर के गुजराती ब्राह्मण, सखी सम्प्रदाय के वैष्णव थे। अयोध्या में बसे।

नाम—(२०४८) रसिकसुन्दर।

ग्रन्थ—प्रियाभक्तिरसबोधिनी राधामंगल।

कविताकाल—१९१२ के पूर्व।

नाम—(२०४९) गुरुप्रसाद क्षत्रिय आज़मगढ़।

ग्रन्थ—सन्निपातचन्द्रिका (पृ० ५० पद्य)।

कविताकाल—१९१२।

विवरण—वैद्यक।

नाम—(२०५०) नरहरिदास।

ग्रन्थ—(१) नरहरिप्रकाश, (२) नरहरिदास की बानी।

कविताकाल—१९१२।

नाम—(२०५१) मृगेन्द्र।

ग्रन्थ—(१) प्रेमपयोनिधि (१९१२), (२) कवित्तकुसुमवाटिका (१९१७)।

कविताकाल—१९१२।

नाम—(२०५२) रामनाथ मिश्र आज़मगढ़वाले।

ग्रन्थ—प्रस्तुतचिकित्सा।

कविताकाल—१९१२।

नाम—(२०५३) ध्यानदास।

ग्रन्थ—(१) दानलीला, (२) मानलीला, (३) हरिचंदशत।

कविताकाल—१९१३ के पूर्व।

नाम—(२०५४) दामोदर जी (दास) तैलंग भट्ट, अलवर।

ग्रन्थ—स्फुट काव्य

जन्मकाल—१८८७।

कविताकाल—१९१३।

विवरण—ये अलवरदरबार के आश्रित थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०५५) देवीसिंह।

ग्रन्थ—(१) अर्बुदविलास, (२) देवीसिंहविलास, (३) आयुर्वेदविलास।

कविताकाल—१९१४ के पूर्व।

नाम—(२०५६) गोविन्द, गोपालपुर, ज़िला-गोरखपुर।

ग्रन्थ—विलासतरंग (कोकसार)।

कविताकाल—१९१४।

विवरण—बलवे में मारे गए।

नाम—(२०५७) घनश्याम ब्राह्मण, आज़मगढ़।

ग्रन्थ—वैद्यजीवन (पृ० ४४)।

कविताकाल—१९१४।

नाम—(२०५८) छत्रधारी रामजीवन के पुत्र।

ग्रन्थ—वाल्मीकीय रामायण भाषा।

कविताकाल—१९१४।

नाम—(२०५९) थिरपाल, सामर गाँव, मारवाड़।

ग्रन्थ—गुलाबचम्पा।

कविताकाल—१९१४।

विवरण—कहानी (श्लोकसंख्या ४१०)।

नाम—(२०६०) नरेन्द्रसिंह पटियाला के महाराज़।

कविताकाल—१९१४।

नाम—(२०६१) ब्रजजीवन।

ग्रन्थ—(१) भक्तरसमाल, (२) अरिल्लभक्तमाल, (३) चौरासीसार, (४) चौरासीजी को माहात्म्य, (५) छदम चौवनी, (६) हितजी महाराज की बधाई, (७) हरिसहचरीविलास, (८) हरि-रामविलास, (९) माझभक्तमाल, (१०) प्रिया जी की बधाई, (११) रामचन्द्रजी की सवारी, (१२) सतसंगसार।

कविताकाल—१९१४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०६२) शालिग्राम चौबे, बूँदी।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९१४।

विवरण—बूँदी दरबार में थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०६३) अच्छेलाल भाट, क़न्नौज।

जन्मकाल—१८८९।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०६४) काशी।

ग्रन्थ—(१) गदर रायसो, (२) धूसा रायसो।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०६५) कृपालुदत्त, काशीवासी।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—ये महाशय महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी के पिता और एक अच्छे कवि थे।

नाम—(२०६६) कृष्ण।

जन्मकाल—१८८८।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०६७) गयादीन कायस्थ, बाँदा।

ग्रन्थ—चित्रगुप्तवृत्तान्त।

जन्मकाल—१८९०।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—फ़तेहपूर में तहसीलदार थे। यह ज्ञानसागर प्रेस में छपा है।

नाम—(२०६८) गोमतीदास, अवध।

ग्रन्थ—रामायण।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०६९) गुरुदत्त।

जन्मकाल—१८८७।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—शिवसिंह सवाई के पुत्र के दरबार में थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०७०) ठाकुरदास के पिता खुमानसिंह कायस्थ चरखारी।

ग्रन्थ—(१) रामायण, (२) गोवर्द्धनलीला।

जन्मकाल—१८९० के लगभग। मृ० सं० १९५५।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—श्रीमान् वर्तमान चरखारी-नरेशजी ने कविता पर प्रसन्न हो पारितोषिक दिया था।

नाम—(२०७१) तुलसीराम मिश्र, कानपूर।

ग्रन्थ—सत्यसिन्धु।

जन्मकाल—१८८८।

कविताकाल—१९१५ से ५८ तक।

नाम—(२०७२) निर्भयानन्द स्वामी।

ग्रन्थ—शिक्षाविभाग की कुछ पुस्तकें।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०७३) महेशदास।

ग्रन्थ—एकादशीमाहात्म्य।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०७४) शिवदीन, भिनगा, बहराइच।

ग्रन्थ—कृष्णदत्तभूषण।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—राजा भिनगा के नाम ग्रन्थ रचा। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०७५) हरिदास बंदीजन, बाँदा।

ग्रन्थ—राधाभूषण।

जन्मकाल—१८९१।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

चौंतीसवाँ अध्याय।

दयानन्द-काल

(१९१६—२५)।

(२०७६) महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज।

स्वामी जी का जन्म संवत् १८८१ में औदीच्य ब्राह्मण अम्बाशंकर के यहाँ मोरवी शहर काठियावाड़ प्रदेश में हुआ था जहाँ पर इनका नाम मूलशङ्कर रक्खा गया। इनके पिता ने २१ बरस की अवस्था में इनका विवाह करना चाहा, परन्तु इन्होंने छिपकर घर से प्रस्थान कर दिया। एक ब्रह्मचारी ने इनको शुद्ध चेतन नाम का ब्रह्मचारी बनाया। पीछे से श्रीपूर्णानंद सरस्वती से संन्यास लेकर स्वामी जी ने दयानंद सरस्वती नाम धारण किया। इन्होंने कृष्ण शास्त्री से व्याकरण पढ़ा और योगानंद स्वामी तथा दो और महात्माओं से योग सीखकर आवू पर्वत पर उसका अभ्यास किया। इधर उधर भ्रमण करते हुए ये ३० वर्ष की अवस्था में हरिद्वार पहुँचे और बहुत दिन तक हिमालय पर्वत पर घूमते रहे। जहाँ
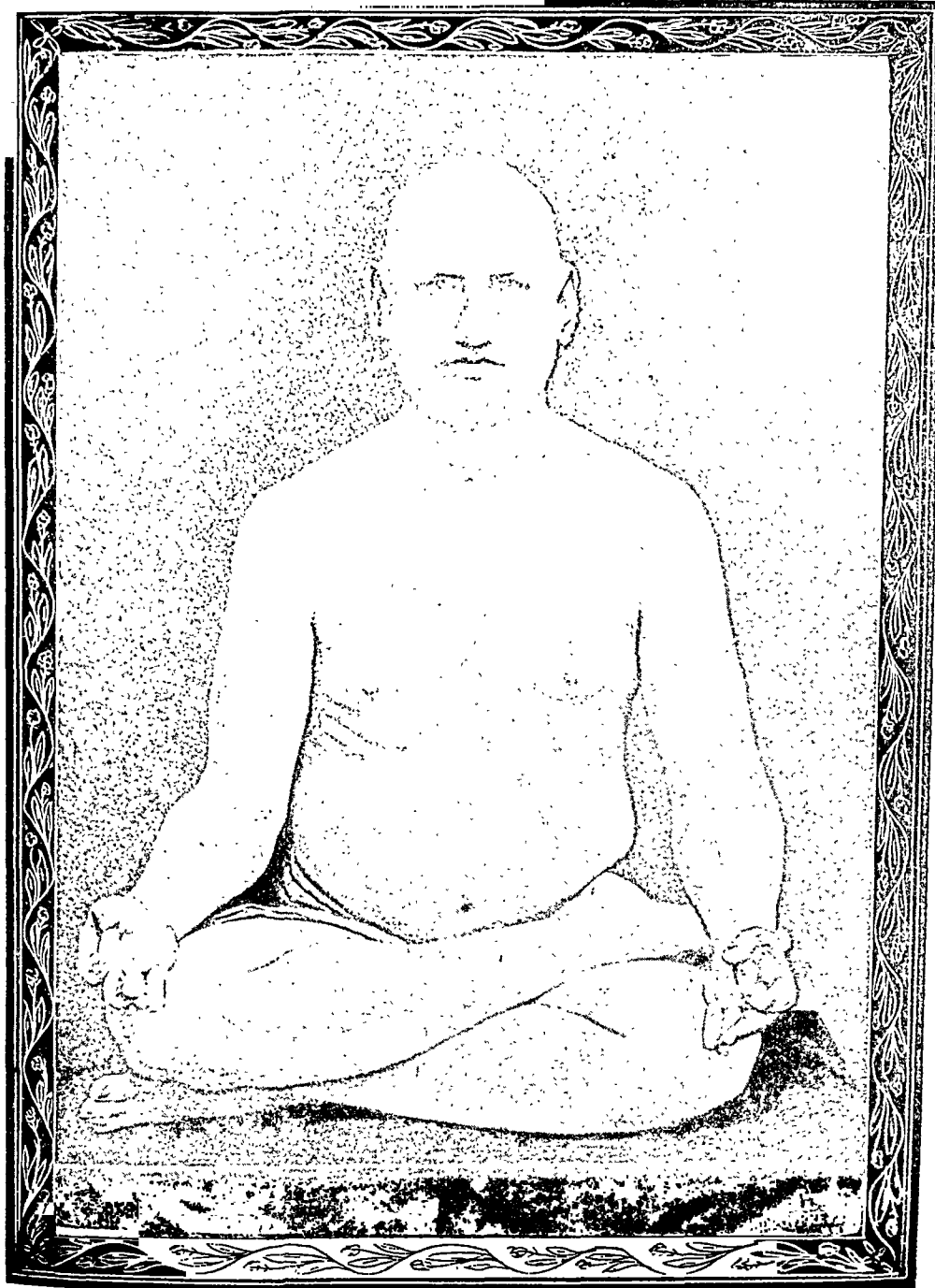
महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ।

जहाँ जो कोई विद्वान् इनको मिला उससे ये विद्या ग्रहण करते गये। इन्होंने सं० १९१७ से २० तक स्वामी विरजानंद जी शास्त्री से मथुरापुरी में विद्याध्ययन किया और उन्हीं के उपदेश से लोक-सुधार का बीड़ा उठाया।

सं० १९२० से इन्होंने लोगों से शास्त्रार्थ करना प्रारम्भ किया। आपने शैव, वैष्णव, वल्लभीय, जैन, रामानंदी आदि मतों का खंडन और इन मतों के बहुत से पंडितों को परास्त करके सं० १९२३ तक निम्न बातों को अशुद्ध ठहराया:—मूर्तिपूजा, वाममार्ग, वैष्णव-मत, चोलीमार्ग, बीजमार्ग, अवतार, कंठी, तिलक, छाप, पुराण, गंगा आदि तीर्थ स्थानों की पवित्रता, और नाम-स्मरण तथा व्रत आदि। इसके पीछे १९२३ में हरिद्वार वाले कुम्भ-मेले के अवसर पर पाखंडखंडिनी ध्वजा स्थापित करके आप ने बहुत से पंडितों और साधुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया। इसके बाद फर्रुख़ाबाद, कानपूर इत्यादि में स्वामी जी से बड़े बड़े शास्त्रार्थ होते रहे, जहाँ हर जगह इन की जीत होती रही। अंततो-गत्वा सं० १९२६ में इस महात्मा ने आर्यावर्त की केन्द्रस्वरूपा श्री काशीपुरी में पहुँचकर वहाँ के महात्माओं और पंडितों को शास्त्रार्थ के वास्ते ललकारा। आप तीन वर्ष के भीतर ५ या ६ दफ़ा काशी-धाम में गये। काशी के भारी शास्त्रार्थ में हिन्दू लोग विशुद्धानंद स्वामी को और समाजी लोग इन स्वामी जी को जीता हुआ कहते हैं। इसके बाद स्वामीजी पटना, कलकत्ता, मुंगेर इत्यादि पूर्वी शहरों में घूम घूम कर शास्त्रार्थ करते रहे। अनन्तर इन्होंने दक्षिण की यात्रा की, और ये जबलपूर, पूना इत्यादि होते हुए बम्बई होकर

काठियावाड़ पहुँचे। वहां भी ख़ूब शास्त्रार्थ हुए। इनका विचार बहुत दिनों से "आर्य्यसमाज" स्थापित करने का था, परन्तु उसके स्थापन में विघ्न पड़ते रहे। अंत में चैत्र शु० ५ सं० १९३२ को बम्बई के मुहल्ला गिरगाम में डाकृर मानिकचन्द जी की वाटिका में पहले पहल आर्य्यसमाज की स्थापना हुई और उसके २८ नियम बनाये गये। फिर वहाँ से पूना आदि घूमते हुए ये महाशय दिल्ली पहुँचे। वहाँ से पंजाब के प्रायः सभी शहरों में आप ने शास्त्रार्थ करके हर जगह विजय पाई। इसके बाद आपने मध्य-प्रदेश, राजपूताना इत्यादि में घूम घूम कर धर्मप्रचार किया। इस समय तक अन्य धर्म वाले कुछ कट्टर मूर्ख इनके घोर शत्रु हो गये। उन के षड्यन्त्रों से २९ सितम्बर सं० १९४० को स्वामी जी को दूध में पीस कर काँच दिया गया जिस से बहुत व्यथित होकर ये अजमेर को चले गये और बहुत समय तक पीड़ित रहे। अन्त को यह भारतभानु कार्तिक वदी १५ सं० १९४० को ५९ बरस तक भारत को प्रकाशित रखकर इस असार संसार को छोड़ ६ बजे संध्या को अस्त हो गया।

इन महाशय की रचना के ये ग्रंथ हैंः—सत्यार्थप्रकाश, वेदाङ्ग-प्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, गोकरुणानिधि, आर्य्योद्देश्य-रत्नमाला, भ्रमोच्छेदन; भ्रांतिनिवारण, आर्य्याभिविनय, व्यवहार-भानु, वेदविरुद्धमतखंडन, स्वामिनारायणमतखंडन, वेदान्तध्वांत-निवारण, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेदभाष्य, और यजुर्वेद-भाष्य। इन्होंने जितने भाषा-ग्रन्थ लिखे, उनमें वर्तमान शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया। आप की भाषा बहुत ही सरल होती थी।

संस्कृत के बड़े भारी विद्वान् होने पर भी आपने विशेषतया हिन्दी को आदर दिया और अपने प्रायः सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे।

ऐसे महात्मा पुरुष इस संसार में बहुत कम हुए हैं। इन्होंने यावज्जीवन अखंड ब्रह्मचर्य्य व्रत रक्खा और सदैव परोपकार तथा देशसेवा की। अपने उपदेशों में आप भारतोन्नति का बहुत बड़ा ध्यान रखते थे। यदि इनका मत पूरा पूरा स्थिर हो जावे तो भारत की बहुत सी अवनतिकारिणी रस्में यकबारगी मिट जावें। जैसे महात्मा बुद्ध-देव ने अपने समय की भारतमूलोच्छेदनकारिणी सभी चालों को हटाकर सीधा सादा बौद्ध-धर्म चलाया था, उसी प्रकार इस महर्षि ने भारतमुखोज्ज्वलकारी आर्य्यसमाज के सिद्धांतों को स्थिर किया है। यह एक ऐसा औषध है जिसके भले प्रकार सेवन से भारत के सभी भारी रोग दोष शांत हो सकते हैं। अर्थ-शास्त्र को धर्म-सिद्धांतों से मिलाकर इह लोक और परलोक दोनों में सुखद मत स्थापित करने में यह महात्मा समर्थ हुआ है। वेदों को इसी महात्मा ने पुनर्जन्म सा दिया। भारतवर्ष में बुद्धदेव,शङ्कर स्वामी, और स्वामी दयानंद--यही तीन मुख्य धर्मप्रचारक हुए हैं। इस महात्मा से संस्कृत तथा हिन्दी-प्रचार को भी बहुत बड़ा लाभ पहुँचा और आर्य्यसमाज के नियमानुसार हिन्दी का उन्नत करना भी एक धर्म है। ये महाशय गुजराती थे, तथापि राष्ट्र भाषा समझ कर इन्होंने हिन्दी ही को आदर दिया। यदि संसार के सर्वोत्कृष्ट महानुभावों की गणना की जावे तो उसमें स्वामी दयानंदजी का नम्बर अच्छा होगा। इस प्रबंध के लेखक आर्य्यसमाजी नहीं हैं और प्रतिमापूजन तथा श्राद्ध इत्यादि पर पूरा

उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिमाण साहृश्य वा मूर्त्ति नहीं है। जो वाणी की इयत्ता, अर्थात् यह जल है लीजिए, वैसा विषय नहीं और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है, उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर, और जो उससे भिन्न है, वह उपासनीय नहीं। जो मन से इयत्ता कर मन में नहीं आता, जो मन को जानता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर, जो उससे भिन्न जीव और अंतःकरण है उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान में मत कर।

(२०७७) राजा लक्ष्मणसिंह।

ये महाशय आगरा के रहने वाले थे। इनका कविताकाल संवत् १९१६ के इधर उधर है। ये संवत् १९१३ में डेपुटी कलेक्टर नियत हुए और १९४६ में इन्हें पेंशन मिली। संवत् १९२७ में सरकार से इन्हें राजा की पदवी राजभक्ति के कारण मिली। इनका जन्म संवत् १८८३ में हुआ और १९५३ में इनका स्वर्गवास हुआ। राजा साहब ने पहले पहल खड़ी बोली में कालिदास कृत "शकुंतलानाटक" का अनुवाद गद्य में करके संवत् १९१९ में प्रकाशित किया। इस पुस्तक का हिन्दी-रसिकों में बहुत बड़ा सम्मान हुआ और प्रथम संस्करण की सब प्रतियाँ बहुत जल्द बिक गईं। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने शिक्षाविभाग के लिए बने हुए अपने गुटका में इसे भी उद्धृत किया। संवत् १९३२ में विलायत के प्रसिद्ध हिन्दीप्रेमी फ़्रेडरिक पिनकाट महाशय ने इसे इँग्लिस्तान में छपवाया। इस पुस्तक को इँग्लेण्ड में यहाँ तक आदर मिला कि यह इंडियन सिविल-सर्विस की परीक्षापुस्तकों में सम्मिलित की गई। संवत् १९५३ में

राजा लक्ष्मणसिंह ।

यह फिर प्रकाशित की गई। इस बार राजा साहब ने मूल श्लोकों का अनुवाद गद्य के स्थान पर पद्य में कर दिया। संवत् १९३४ में राजा साहब ने रघुवंश का अनुवाद गद्य में मूल श्लोकों के साथ प्रकाशित किया। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है। इसके अनुवाद की भाषा सरल एवं ललित है, और उसमें एक विशेषता यह भी है कि अनुवाद शुद्ध हिन्दी में किया गया है; यथासाध्य कोई शब्द फ़ारसी अरबी का नहीं आने पाया है।

संवत् १९३८ में इन महाशय ने प्रसिद्ध मेघदूत के पूर्वार्द्ध का पद्यानुवाद छपवाया और संवत् १९४० में उसके उत्तरार्द्ध का भी अनुवाद प्रकाशित करके ग्रन्थ पूर्ण कर दिया। यह ग्रन्थ चौपाई, दोहा, सोरठा, शिखरिणी, सवैया, छप्पै, कुण्डलिया, और घनाक्षरी छन्दों में बनाया गया है, जिनमें भी सवैया और घनाक्षरी अधिक हैं। इन्होंने दोहा, सोरठा और चौपाइयों में तुलसीदास की भाषा रक्खी है और शेष छन्दों में व्रज भाषा। इनके गद्य में भी दो चार स्थानों पर व्रज भाषा मिल गई है, परन्तु उसकी मात्रा बहुत ही कम है। इनकी भाषा मधुर एवम् निर्दोष है, परन्तु इनका पद्य-भाग उतना अधिक प्रशंसनीय नहीं है जितना कि गद्य-भाग। इनके पद्य-भाग की गणना छत्र कवि की श्रेणी में की जाती है, और गद्य के लिए इनकी जितनी प्रशंसा की जाय वह सब योग्य है। वर्तमान हिन्दी-भाषा का प्रचार जब तक भारतवर्ष में रहेगा तब तक विद्वन्मडली में राजा साहब का नाम बड़े आदर के साथ लिया जावेगा। इनकी रचना में से कुछ उदाहरण नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

शकुन्तला नाटकः—

"अनसूया–(हौले प्रियम्बदा से) सखी मैं भी इसी सोच विचार में हूं॥ अब इससे कुछ पूछूंगी॥ (प्रगट) महात्मा तुम्हारे मधुर बचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है कि तुम किस राजवंश के भूषण हो? और किस देश की प्रजा को विरह में व्याकुल छोड़ यहां पधारे हो? क्या कारन है जिस से तुमने अपने कोमल गात को इस कठिन तपोवन में आकर पीड़ित किया है?"

"(१७२) पृथ्वी ऐसी जान पड़ती है माने ऊपर को उठते हुए पहाड़ों की चोटी से नीचे को खिसलती जाती है वृक्षों की पींड़ जो पत्तों में ढकी हुई सी थीं खुलती आती हैं नदियों का पतलापन मिटता जाता है और भूमंडल हमारे निकट आता हुआ ऐसा दीखता है माने किसी ने ऊपर को उछाल दिया है॥"

मेघदूतः—

रसबीच मैं लै चलियो निरविन्ध कौ जो मग तेरो निहारती हैं।
कटि किंकिनि मानो विहंगम पाँति तरङ्ग उठे झनकारती हैं॥
मनरञ्जनि चालि अनोखी चले अरु भौंर की नाभि उघारती हैं।
बतरात है मीत सों आदि यही तिय विभ्रम मोहनी डारती हैं॥
मीत के मंदिर जाति चली मिलि हैं तहँ केतिक राति में नारी।
मारग सूझ तिन्हें न परै जब सूचिका भेदि झुकै अँधियारी॥
कंचन रेख कसौटी सी दामिनि तू चमकाइ दिखाइ अगारी।
कीजियो ना कहुँ मेह की घोर मरैं अबला अकुलाइ विचारी॥

रघुवंशः—

मूल

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥ १ ॥

अनुवाद

वाणी और अर्थ की सिद्धि के निमित्त मैं वन्दना करता हूँ वाणी और अर्थ की नाईं मिले हुए जगत के माता पिता शिव पार्वती को ॥ १ ॥

क सूर्य्यप्रभवो वंशः क चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ॥ २ ॥

अनुवाद

कहाँ वह वंश जिसका पिता सूर्य्य है और कहाँ थोड़े व्यवहार वाली (मेरी) बुद्धि, मैं अज्ञानता से कठिन समुद्र को फूस की नाव से उतरना चाहता हूँ ॥ २ ॥

मूल

मंदः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशु लभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः ॥ ३ ॥

अनुवाद

कवियों के यश का अभिलाषी मैं मन्दबुद्धि हँसी को पहुँ-चूँगा, जैसे लम्बे मनुष्य के हाथ लगने योग्य फल की ओर लोभ से ऊँची बाँह करने वाला बौना ॥ ३ ॥

(२०७८) शंकरसहाय अग्निहोत्री (शंकर)।

ये महाशय दरियाबाद ज़िला बारहबंकी-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनका जन्म संवत् १८९२ विक्रमीय का है। छः सौ वर्ष से इनके पूर्व पुरुष इसी ग्राम में रहे। इनके पिता का नाम पंडित बच्चूलाल और मातामह का पं० रामबक्स तेवारी था। ११ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ। इनके कोई पुत्र नहीं है, परन्तु दो पुत्री व दो दौहित्र वर्तमान हैं, जिनके नाम संगमलाल और कृष्णदत्त हैं। ये दोनों इन्हीं के साथ रहते हैं। संगमलाल कविता भी करते हैं। शंकरसहायजी ने ३२ वर्ष की अवस्था से काम करना प्रारम्भ किया। पहले १६ वर्ष तक इन्होंने पाठशालाओं में अध्यापकी की और फिर २२ वर्ष पर्यंत राय शंकरबली तअल्लुक़दार के यहाँ ज़िलेदारी की। अब तीन साल से पेंशन पाते हैं। इन्होंने कविता-मंडन नामक एक अलङ्कारग्रंथ बनाया है, जिसमें ३७८ छंद हैं, जिन में सवैया बहुतायत से हैं और घनाक्षरी कम। यह ग्रंथ अभी मुद्रित नहीं हुआ है और न क्रमबद्ध लिखा ही गया है। हम इनसे मिलने दरियाबाद गये थे, जहाँ उपर्युक्त हाल इन्हीं महाशय के द्वारा हमें विदित हुआ, परंतु अपना ग्रंथ ये हमें नहीं दिखा सके। इसके अति-रिक्त इन्होंने स्फुट छंद भी बनाये हैं। इस कवि में समालोचना-शक्ति बहुत तीव्र है। हमारे क़रीब ३ घंटे बातचीत करने में अग्नि-होत्रीजी ने बहुत कम कवियों के विषय पूज्यभाव प्रकट किया। ये महाशय तुलसीदास और सेनापति को बहुत अच्छा समझते और पद्माकर एवम् ठाकुर को बहुत निंद्य मानते थे। इनकी समा-

लोचना में रियायत का नाम नहीं है। आप प्रत्येक विषय पर अपना स्वतंत्र विचार प्रकट किये बिना नहीं रहते थे, चाहे वह श्रोता को अप्रिय ही क्यों न हो। कविता के इतने प्रेमी हैं कि जब ९॥ बजे दिन को हम इनके यहाँ गये, तब आप स्नान के लिए जा रहे थे, परन्तु बिना स्नान किये ही ३ घंटे तक हमारे पास बैठे रहे और हमारे बहुत कहने पर भी हमारे चले आने के प्रथम आपने स्नान करना स्वीकार न किया। इनसे बात करने में हमें निश्चय हुआ कि इनके चित्त में कविता-प्रेमपादप का सच्चा अंकुर है, परन्तु इन सब बातों के होते हुए भी इनको प्राचीन कवियों के पद तथा भाव उठा लेने की ऐसी कुछ बानि सी पड़ गई है कि इनके उत्तम छन्दों में भी चोरी का संदेह उपस्थित रहता है। फिर भी इनकी भाषा उत्तम और कविता प्रशंसनीय है। हम इनकी गणना कवि तोष की श्रेणी में करते हैं। उदाहरण—

अँग आरसी से जुपै भाखत हौ हरि आरसी ही को निहारा करौ।
सम नैन जो खंजन जानत तौ किन खंजन ही सों इसारा करौ॥
भनि संकर संकर से कुच तौ कर संकर ही पर धारा करौ।
मुख मेरो कहौ जो सुधाकर सो तौ सुधाकरै क्यों न निहारा करौ॥
प्रवाल से पाँय चुनी से लला नख दंत दिपैं मुकतान समान।
प्रभा पुखराज सी अंगनि मैं बिलसैं कच नीलम से दुतिमान॥
कहै कवि संकर मानिक से अधरारुन हीरक सी मुसकान।
बिभूषन पंनन के पहिरे बनिता बनी जौहरी कीसी दुकान॥

क्रोध में आकर इस कवि ने बहुत से भँडौआ भी बनाये हैं।

थोड़े दिनों से ये विचारे कुछ विक्षिप्त से हो गये थे और संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए।

(२०७६) गदाधर भट्ट।

ये महाशय मिहीलाल के पुत्र और प्रसिद्ध कवि पद्माकर के पौत्र थे। इनका स्वर्गवास दतिया में ८० वर्ष की अवस्था में संवत् १९५५ के लगभग हुआ था। जैपूर, दतिया और सुठालिया के महाराजाओं के यहाँ इनका विशेष मान था। जैपूर के महाराजा सवाई रामसिंह की इच्छानुसार इन्होंने संवत् १९४२ में कामांधक नामक संस्कृत-नीति का भाषा-छन्दों में अनुवाद किया। अलंकारचन्द्रोदय, गदाधर भट्ट की बानी, कैसरसभाविनोद, और छन्दोमंजरी नामक इनके ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। अन्तिम ग्रन्थ कविजी ने सुठालिया के राजा माधवसिंह के आश्रय में बनाया। इसकी कवि ने वार्तिक व्याख्या भी लिखी थी। गदाधरजी का काव्य परम प्रशंसनीय और मनोहर है। इनकी भाषा ख़ूब साफ़, सानुप्रास और श्रुतिमधुर है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

चारौं ओर अटवी अटूट अवनी पै
बनी तड़िनी तड़ाग धेनुसिंह न भगर है।
गदाधर कहै चारु आश्रम बरन चार
सील सत्य बादी दानी भूपति सगर है॥
आपगा तुरग गज बाजि रथ प्यादे
घने अम्बिका महेस प्रभु भक्ति में पगर है।

ऊमट नरेस माधवेस महाराज

जहाँ बैरिन को मारिया सुठारिया नगर है॥

जौलौं जन्हुकन्यका कलानिधि कलानिकर

जटिल जटानि बिच भाल छवि छन्द पै।

गदाधर कहै जौलौं अश्विनी कुमार

हनुमान नित गावैं राम सुजस अनन्द पै॥

जौलौं अलकेस बेस महिमा सुरेस सुर

सरिता समेत सुर भूतल फनिन्द पै।

बिजै नृप नन्द श्री भवानीसिंह भूप

मनि बखत बिलन्द तौलौं राजौ मसनन्द पै॥

मोर के। मैार बिहाय गदाधर छोरि लटै नट बेस बनायो।

(२०८०) बालदत्त मिश्र (पूरन)।

आपका जन्म संवत् १८९१ में भगवन्तनगर ज़िला हरदोई में प्रसिद्ध माँझगाँव के मिश्रों वाले देवमणि वंश में हुआ था। आप के पिता पण्डित बालगोविन्द मिश्र बड़े ही दृढ़ आचरण के मनुष्य थे और प्राचीन प्रथा के ऐसे विकट अनुयायी थे कि गुरुजनों की लाज निभाने को इनसे उन्होंने यावज्जीवन सम्भाषण नहीं किया। इनके बड़े भाई सुखलालजी के कोई पुत्र जीवित नहीं रहा, सो इनकी स्त्री ने अपने एक मात्र पुत्र बालदत्तजी को अपनी जेठानी को दे दिया। इस समय आपकी अवस्था सात वर्ष की थी। इसी समय से अपने काका के साथ आप इटौंजा ज़िला लखनऊ में रहने लगे। काका के पीछे आपने उनका काम काज

सँभाला और अपनी व्यापारपटुता से थोड़ी सी सम्पत्ति को बढ़ा कर अच्छा धन उपार्ज्जन किया। आपने संवत् १९५६ में अपने मृत्युकाल तक साधारणतया बड़ी ज़िमींदारी पैदा करली। यावज्जीवन आपने गम्भीरता को निबाहा। सुरलोकयात्रा से ३ वर्ष प्रथम आप इटौंजा छोड़ सकुटुम्ब लखनऊ में रहने लगे थे। बालकपन में आपने हिन्दी तथा संस्कृत का कुछ अभ्यास किया और कुछ गीता को भी पढ़ा, परन्तु इनके काका को इनका गीता पढ़ना इस कारण अरुचिकर हुआ कि गम्भीर स्वभाव को बढ़ाकर कहीं ये संसार-त्यागी न हो जावें। काका की आज्ञा मान कर इन्होंने गीता छोड़ दिया। गंधौली के लेखराज कवि इनके एक अन्य काका के पौत्र थे। गंधौली इटौंजा से केवल १२ मील पर है, सो इन दोनों महाशयों में प्रीति बहुत थी और जाना आना भी बहुधा रहता था। लेखराजजी इनसे ३ वर्ष बड़े थे। इन कारणों एवं स्वभावतः रुचि होने से आपका कविता की ओर भी रुझान हो गया और सैकड़ों छन्द बन गये, पर पीछे से व्यापार में विशेष रूप से पड़ जाने के कारण आपकी कविता रचना बिल्कुल छूट गई, यहाँ तक कि प्राचीन छन्दों के रक्षित रखने का भी आपने प्रयत्न न किया। फिर भी प्राचीन कवियों के ग्रन्थ देखने की रुचि आपकी वैसीही रही और हम लोगों को काव्य तत्त्व बताने में आप सदैव चाव रखते रहे। आपकी रचना में अब केवल थोड़े से छन्द सुरक्षित हैं, जिनमें से उदाहरणस्वरूप दो छन्द यहाँ लिखे जावेंगे। आपके चार पुत्र और दो कन्यायें दीर्घजीवी हुईं, जिनमें से बड़े भाई लखनऊ में वकालत करते हैं और छोटे

तीन इस इतिहास-ग्रन्थ के लेखक हैं। विशाल कवि आपके छोटे जामातृ थे। इनकी बड़ी पुत्री के दो पुत्र हैं, जिनमें छोटा भाई अनन्तराम वाजपेयी गद्य-लेखन का बड़ा उत्साही है। वह अभी यफ़० ए० दर्जे में पढ़ता है। इनका पौत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत में पढ़ता है। वह भी कुछ कुछ छन्द बनाने और गद्य लिखने में रुचि रखता है। आप कविता में अपना नाम पूर्ण अथवा पूरन रखते थे। उदाहरण।

लाल से लाल बने दृग लाल के
　　　　जावक भाल बिसाल रह्यो फबि।
त्यों अधरान मैं अंजन लीक है
　　　　पीक भरे कहि देत महाछबि॥
पीत पटी बदली कटि मैं लखि
　　　　नारि सकोचनहीं सों रही दबि।
पूरन प्रीति की रीति यही पिय
　　　　दच्छिन झूठ कहैं तुम को कबि॥

पानी धूम इन्धन मसाला संग आतस
　　　　के हिकमति कोठरी अनूप हहरानी है।
उठत प्रभंजन कै घन घहरात ठौर ठौर
　　　　ठहरात जात जोर की निसानी है॥
चाल की न थाह जाकी पूरन विचारि
　　　　कहै पवन विमान बान गति तरसानी है।
नर लै समूह जूह भार लै अपार कूह
　　　　करत न रूह फेरि ताकी दरसानी है॥

(२०८१) सीतारामशरण भगवानप्रसाद (रूपकला)।

आपका जन्म संवत् १८९७ में सारन ज़िला के अंतर्गत गोआ परगने के मुबारकपूर ग्राम में कायस्थ कुल में हुआ। इन्होंने फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी और अँगरेज़ी की शिक्षा पाई। ये पहले ही शिक्षा-विभाग के सब-इन्स्पेक्टर नियत हुए। आप रामानन्दी सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इन्होंने सन् १८९३ ई० तक बहुत योग्यता के साथ एसिस्टेंट-इन्स्पेक्टरी का काम किया। इस समय आपका मासिक वेतन ३००) था। इसी समय आपने पेंशन लेली। आपके कोई सन्तान न थी, गृहिणी का स्वर्गवास पहले ही हो चुका था और चित्त में भगवद्भक्ति तथा वैराग्य की मात्रा पहले ही से अधिक थी, अतः पेंशन लेने के पश्चात् आप श्रीअयोध्याजी में जाकर साधुओं की तरह वास करने लगे। इनके बनाये कुल १३ ग्रन्थ हैं, जिनमें से ४ उर्दू के हैं और शेष ९ हिन्दी के। आप बड़े ही मिलनसार तथा सरल-हृदय और भक्त हैं। आपके रचित ग्रन्थों के नाम ये हैं :—

तनमन की स्वच्छता १, शरीरपालन २, भागवत गुटका ३, पीपाजी की कथा ४, भगद्वचनामृत ५, भक्तमाल की टीका ६, सीताराम-मानसपूजा ७, भगवन्नामकीर्तन ८, श्रीसीतारामीय प्रथम पुस्तक ९।

(२०८२) फेरन।

इनका जन्म-स्थान, समय इत्यादि कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी कविता से विदित होता है कि ये महाराज विश्वनाथसिंहजी

बाँधवनरेश के कवि थे। कविता इनकी सारगर्भित और प्रशं-सनीय है। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। महाराजा विश्वनाथसिंहजी सं० १९२० में राज्य पर थे। उसी समय यह भी विद्यमान थे। इनका कविताकाल १९२० के लगभग समझना चाहिए।

अमल अनार अरबिंदन को वृंद वारि
बिम्बाफल विद्रुम निहारि रहे तूलि तूलि।
गेंदा औ गुलाब गुललाला गुलाबास
आब जामैं जीव जावक जपा को जात भूलि भूलि॥
फेरन फबत तैसी पायन ललाई लोल
ईंगुर भरेसे डोल उमड़त झूलि झूलि।
चाँदनी सी चन्दमुखी देखो व्रजचन्द उठैं
चाँदनी बिछौना गुलचाँदनी सी फूलि फूलि॥१॥

गृहिन दरिद्र गृह त्यागिन बिभूति
दियो पापिन प्रमोद पुन्यवंतन छलो गयो।
असित ग्रहेश कियो सनि को सुचित्त
लघु व्यालन अनन्द शेष भारन दलो गयो॥
फेरन फिरावत गुनीन नित नीच द्वार
गुनन बिहीन तिन्हैं बैठे ही भलो भयो।
कहाँ लौ गनाऊँ दोख तेरे एक आनन सों
नाम चतुरानन पै चूकतै चलो गयो॥२॥

जनम समै मैं व्रज रच्छन समै मैं
सजि समर समै मैं ज्ञान यज्ञ जप जूट मैं।

देव देवनाथ रघुनाथ विश्वनाथ
करी फूल जल दान बान बरखा अटूट मैं॥
फेरन विचार्‌यो शुभ वृष्टि को विचार यश
चारिहू जनेन को प्रसिद्ध चारि खूट मैं।
अवध अकूट मैं गोबरधन कूट मैं
सुतरल त्रिकूट मैं विचित्र चित्रकूट मैं॥ ३॥
चंदन चहल चोवा चाँदनी चँदोवा चारु
घनो घनसार घेर सौंच महबूबी के।
अतर उसीर सीर सौरभ गुलाब नीर
गजब गुजारैं अंग अजब अजूबी के॥
फेरन फबत फैलि फूलन फरस तामैं
फूल सी फबी है बाल सुंदर सु खूबी के।
विसद विताने ताने तामैं तहखाने
बीच बैठी खसखाने मैं खजाने खोलि खूबी के॥४॥

(२०८३) मोहन।

इस नाम के चार कवि हुए हैं, जिनमें से हम इस समय चरखारी वाले मोहन का वर्णन करते हैं, जिन्होंने १९१९ में श्रृंगारसागर नामक ग्रन्थ बनाया। यह ग्रन्थ हमने देखा है। इनकी कविता अच्छी होती थी। ये साधारण श्रेणी के कवि हैं।

चन्द सो वदन चारु चन्द्रमा सी हाँसी परि-
पूरन उमासी खासी सुरति सोहाती है।
नीति प्रीति रीति रति रीति रस रीति गीत

गीत गुन गीत सील सुख सरसाती है॥
मोहन मसाल दीप माल मन माल जोति
जाल महताब आब दुरि दुरि जाती है।
आछो अति अमल अनूप अनमोल तन
अतन अतोल आभा अंग उफनाती है॥

(२०८४) मुरारिदासजी कविराज।

ये सूरजमल कविराज के दत्तक पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १८९५ में बूँदी में हुआ और मृत्यु संवत् १९६४ में। ये संस्कृत, प्राकृत, डिंगल तथा हिन्दी भाषा के अच्छे ज्ञाता और कवि थे। इन्होंने बूँदीनरेश रामसिंहजी की आज्ञा से वंश-भास्कर को पूरा किया, जिस पर इन्हें बड़ा पुरस्कार दिया गया। इनकी जागीर में पाँच गाँव थे। इन्होंने वंशसमुच्चय तथा डिंगल-कोष नामक ग्रन्थ बनाये। इनकी कविता प्राकृत-मिश्रित ब्रजभाषा में होती थी। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है। उदाहरण :—

कीरति तिहारी सेत सत्रुन के आनन में
ठौर ठौर अहो निसि मेचक मिलावै है।
बहुत प्रताप तप्त साधु जन मानस को
ऐसो सीर अमृत ज्यों सीतल करावै है॥
प्रभु से प्रतापी प्रजापालन प्रचंड दंड
उत्तम म्रजाद चित्त सज्जन चुरावै है।

महाराव राजा श्रीदिवान रघुबीर
धीर रावरे गुनूं के रवि लच्छन स्वभावै है ॥१॥
सेस अमरेस औ गनेस पार पावैं
नहिँ जाके पद देखि देखि आनँद लियो करैं।
अक्षर है मूल फेरि व्यक्त औ अव्यक्त भेद
ताही के सहाय सब उपमा दियो करैं॥
अव्यय है संज्ञा तीनौ काल मैं अमोघ
क्रिया वाके रसलीन होय पीयुष पियो करैं।
रचना रचावै केहि भाँति तैं मुरारिदास
ऐसे शब्द ईश्वर को मनन कियो करैं ॥२॥

नाम—(२०८५) शालिग्राम शाकद्वीपी (ब्राह्मण)। कोपागंज, ज़िला आज़मगढ़।

ग्रन्थ—१ काव्यप्रकाश की समालोचना, २ भाषाभूषण की समालोचना।

विवरण—इनका जन्म संवत् १८९६ में हुआ था और १९६० में स्वर्गवास हो गया। कविता साधारण श्रेणी की है। इनका कविताकाल संवत् १९२० मानना चाहिए।

उदाहरण।

रहुरे बसन्त तोहि पावस करौंगी
आजु कोकिल के रचना कै मोर सों नचावौंगी।
टूक टूक चन्द्र कै कै जुगुनू उड़ाय देहौं
तानि नभलीलपट घटा दरसावौंगी॥

कहैं शालिग्राम यह चन्द्रिका धनुष
ज्योति स्वेदनके कनिकासे बुन्द झरिलावैंगी।
कपटी कुटिल जिन भाल में लिखो है
ऐसो आज करतार मुखकार खलगावैंगी॥

(२०८६) औध (अयोध्याप्रसाद वाजपेयी)।

ये महाशय सातन पुरवा, ज़िला रायबरेली के रहनेवाले महाकवि और सभाचतुर हो गये हैं। इनका स्वर्गवास वृद्धावस्था में अभी १९५० के लगभग हुआ है। इन्होंने साहित्य-सुधासागर, छन्दानन्द, रासरसवस्व, रामकवितावली, और शिकारगाह नामक उत्तम ग्रन्थ बनाये हैं। इनको अनुप्रास से विशेष प्रेम था। इनके मिलनेवालों ने हम से इनके विषय में बहुत सी मज़ाक की बातें कही हैं। एक बार एक राजा ने इन्हें मख़मली अचकन और पायजामा दिया, पर सर के लिए कोई वस्तु टोपी आदि का देना वह भूल गया। इस पर आपने कहा कि 'वाह महाराज! आपने मुझे ऐसा सिरोपाव दिया है कि घटाटोप।' इस पर लोगों ने झट टोप का भी घटना पूरा कर दिया। इनका काव्य प्रशंसनीय और सरस होता था। हम इन्हें पद्माकर कवि की श्रेणी में रक्खेंगे। उदाहरण।

वाटिका विहंगन पै, वारि गात रंगन पै,
वायु वेग गंगन पै बसुधा बगार है।
बाँकी वेनु तानन पै, बंगले बितानन पै,
बेस औध पानन पै बीथिन बजार है॥

वृन्दावन बेलिन पै, बनिता नबेलिन पै,
ब्रजचन्द केलिन पै बंसी बट मार है।
बारि के कनाकन पै, बद्दलन बाँकन पै,
बीजुरी बलाकन पै बरषा बहार है ॥१॥

चारौ ओर राजैं औध राजै धर्मराजै
दुसमन की पराजै है सदाजै खतरान की।
ब्रह्मायच्च वासी भगवान ने उदासी
कहैं बीबियाँ मियाँ है तुम्हैं खता खफ़कान की॥
जानकी जहान की इमान की खराबी
हाय डूबा मनसूबा तूबा कसम कुरान की।
रामजी की सादी फिरँगान की मनादी
हिंदुवान की अबादी बरबादी तुरकान की ॥२॥

आई देखि गुय्यां मैं नरेस अँगनैया
जहँ खेलैं चारौ भैया रघुरैया सुख पाय पाय।
लोनी लरिकैया दै झँकैया मैं बलैया
जाउँ बैंयाँ बैयाँ चलत चिरैयाँ गहैं धाय धाय॥
पीछे पीछे मैया हेत लैया जैसे गैया हाथ
मेवा औ मिठैया गहि देतीं मुख नाय नाय।
वारैं नोन रैया औध आनँद बढ़ैया
मेरे निधनी के छैया दुलरावैं गुन गाय गाय ॥३॥

इनका रासस‌र्वस्व हमने छत्रपूर में देखा है। उसमें ९३ बढ़िया छन्द हैं।

(२०८७) लछिराम ब्रह्मभट्ट।

ये महाशय संवत् १८९८ में स्थान अमोढ़ा, ज़िला बस्ती में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम पलटनराय था। इनका एक २६ पृष्ठ का जीवनचरित्र डुमरावँ-निवासी पंडित नकछेदी तेवारी ने लिखा है जो हमारे पास वर्त्तमान है। दस वर्ष की अवस्था में लछिरामजी ने लासाचक, ज़िला सुल्तांपूर-निवासी ईश कवि से काव्य सीखना आरम्भ किया। सोलह वर्ष की अवस्था में ये अवध-नरेश महाराजा मानसिंह के यहाँ गये श्रौर उन्होंने कृपा करके इन्हें कविता में श्रौर भी परिपक्व किया। महाराजा साहब की इन पर उसी समय से बड़ी कृपा रहती थी। उन्होंने पीछे से इन्हें कविराज की पदवी भी दी श्रौर सदैव इनका मान किया। यों तो लछिरामजी बहुत से राजाश्रों महाराजाश्रों के यहाँ गये, परन्तु ये महाराजा अयोध्या श्रौर राजा बस्ती को अपना सरकार समझते थे। राजा सीतलाबख़्शसिंह (राजा बस्ती) ने इन्हें ५०० बीघा भूमि का चरथी ग्राम, हाथी आदि भी दिया। इनका मान बड़े बड़े महाराजाश्रों के यहाँ होता था श्रौर इन्होंने निम्न महाशयों के नाम ग्रन्थ भी बनाये:—

१ मानसिंहाष्टक, २ प्रतापरत्नाकर (महाराजा प्रतापनारायण-सिंह अयोध्या-नरेश के नाम), ३ प्रेमरत्नाकर (राजा बस्ती के नाम), ४ लक्ष्मीश्वररत्नाकर (महाराज़ा दरभंगा के नाम), ५ रावणेश्वर कल्पतरु (राजा गिद्धौर के नाम), ६ महेश्वरविलास (ताल्लुक़दार रामपुर मथुरा ज़िला सीतापुर के नाम), ७ मुनीश्वर-कल्पतरु (राव-

मल्लापुर के नाम), ८ महेन्द्रभूषण (राजा टीकमगढ़ के नाम), ९ रघुवीरविलास (बाबू गुरुप्रसादसिंह गिद्धौर के नाम), और १० कमलानन्दकल्पतरु (राजा पूर्निया के नाम)। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त इन्होंने नीचे लिखे हुए और भी ग्रन्थ बनाये:—

११ रामचन्द्रभूषण, १२ हनुमतशतक, १३ सरयूलहरी, १४ रामरत्नाकर, और १५ नायिकाभेद का एक और अपूर्ण ग्रन्थ।

इनमें से बहुत से रीति, अलंकार, भावभेद, रसभेद तथा स्फुट विषयों पर बड़े बड़े ग्रन्थ हैं। प्रेमरत्नाकर में इन्होंने बस्ती के वर्तमान राजा पटेश्वरीप्रसाद नारायण का भी नाम लिखा है। इनका स्वर्गवास संवत् १९६१ में अयोध्या नगर में हुआ था। इनके एक छोटा सा पुत्र भी है जो अब ११ वर्ष का है।

लछिराम की भाषा व्रजभाषा है और वह सराहनीय है। इनके वर्त्तमान कवि होने के कारण इनकी ख्याति बड़ी विस्तीर्ण है। इन की कविता उत्तम और ललित होती थी। हम इन को तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण:—

पन्नालाल माले गज गौहर दुसाल साले
हीरालाल मोती मनि माले परसत हैं।
महा मतवाले गजराजन के जाले
बरबाजी खेतवाले जड़े जीन दरसत हैं॥
कवि लछिराम सनमानि कै लुटावै नित
सावन सुमेघ साहिबी ते सरसत हैं।
महाराज सीतला बकस कर मौजन सों
बारिद लौं बारहो महीने बरसत हैं॥

चैत चन्द चाँदनी प्रकाश छोर छिति पर
मंजुल मरीचिका तरंग रंग बरसो।
कोकनद, किंसुक, अनार, कचनार, लाल,
बेला, कुन्द, बकुल, चमेली, मोतीलर सो॥
श्रीपति सरस स्याम सुन्दरी विहारथल
लछिराम राजै दुज आनँद अमर सो।
योंही व्रजबागन बिथोरत रतन फैल्यो
नागर बसन्त रतनाकर सुघर सो॥

लछिराम जी के ग्रंथ प्रायः सब प्रकाशित हो चुके हैं और वे बहुत करके भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुए हैं। हमारे पास इनके प्रेमरत्नाकर और रामचन्द्रभूषण नामक दो ग्रन्थ वर्त्तमान हैं। ये दोनों बड़े ग्रन्थ हैं।

(२०८८) बलदेव।

पंडित बलदेवप्रसाद अवस्थी उपनाम द्विज बलदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण कार्तिक वदी १२ संवत् १८९७ को मौज़ा, मानपूर ज़िला सीतापूर में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम व्रजलाल था। वे कृषिकार्य्य करते थे। बलदेवजी के तीन विवाह हुए, जिनसे इनके छः पुत्र और तीन कन्यायें वर्त्तमान हैं। इनके गंगाधर नामक एक और पुत्र था जो द्विज गंग के उपनाम से कविता करता था और जिसने शृंगारचन्द्रिका, महेश्वरभूषण, और प्रमदा पारिजात नामक तीन ग्रन्थ संवत् १९५१, १९५४ और १९५७ में बनाये थे। परन्तु दुर्भाग्यवश सम्भवतः संवत् १९६१ में क़रीब ३५ वर्ष की अवस्था

में अपने पिता के सामने वह गोलोकवासी हुआ। इन तीन ग्रन्थों में से प्रथम में स्फुट रस काव्य, द्वितीय में अलंकार एवं तृतीय में भावभेद और रसभेद का वर्णन है। प्रथम में २० और द्वितीय में ११४ पृष्ठ हैं। तृतीय ग्रन्थ अभी प्रकाशित नहीं हुआ है। द्विज बलदेवजी ने प्रथम ज्योतिष, कर्मकांड और व्याकरण को पढ़ा था। इनके चित्त में प्रेम की मात्रा विशेष थी, इसी कारण इनको काव्य करने का शौक़ हुआ। इन्होंने १८ वर्ष की अवस्था में दासापुर की भक्तेश्वरी देवी पर अपनी जिह्वा काट कर चढ़ा दी थी। अपनी जिह्वा का कटा हुआ शेष भाग भी इन्होंने हमें दिखाया है। अब वह ठीक हो गई है परन्तु उसमें काटने का चिह्न अब भी बना हुआ है। इन्होंने काशीवासी स्वामी निजानन्द सरस्वती से ३२ वर्ष की अवस्था में काव्य पढ़ा। इसके पहले भी ये महाशय काव्य करते थे। संवत् १९२९ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बन्दकपाठक, शास्त्री बेचनराम, सरदार, सेवक, नारायण, रत्नाकर, गणेशदत्त व्यास आदि कवियों ने इन्हें उत्तम कवि होने की सनद दी। इस पर इन सब महाशयों के हस्ताक्षर हैं और यह अवस्थी जी ने हमें दिखाई है। संवत् १९३३ में इनके पिता का देहान्त हुआ। ये महाशय काव्य से ही अपनी जीविका प्राप्त करते हैं और बड़े बड़े राजाओं महाराजाओं के यहाँ जाते आते हैं। ये महाशय काशिराज, रीवाँनरेश, महाराजा जयपूर और महाराजा दरभंगा के यहाँ क्रम से गये हैं और उन सब के यहाँ इनका सम्मान हुआ है। रामपुर मथुरा (ज़िला सीतापुर वाले) और इटौंजा (ज़िला लखनऊ) के राजाओं ने इनका विशेष सम्मान किया है। इन राजाओं के नाम बलदेव जी ने ग्रन्थ भी

बनाये हैं । इनकी कविता से प्रसन्न होकर बहुत से राजाओं ने इन्हें भूमि और अन्य वस्तुओं का पुरस्कार दिया है । अब इनके पास इसी प्रकार पाई हुई दो हज़ार बीघा भूमि है, जिसमें से ५०० बीघा बाग़ लगाने को मिली थी । रामपुर के ठाकुर महेश्वरबख़्श जी ने संवत् १९५४ में एक हाथी भी इन्हें दिया था । बहुत स्थानों पर इन्हें हज़ारों रुपये मिले हैं । वर्त्तमान अथवा थोड़े ही दिनों के मरे हुए कवियों में निम्न लिखित कविगण इनके मित्र अथवा मुलाक़ाती हैं:— औध, लछिराम, सेवक, सरदार, हरिश्चन्द्र, लेखराज, द्विजराज, ब्रजराज, दीन, आनन्द, अनिरुद्धसिंह, बिशाल, लच्छन, देवीदत्त, जंगली, महाराज रघुराजसिंह (रीवाँ), गुरुदीन इत्यादि । ये महाशय हम लोगों पर भी कृपा करते हैं और अपने बनाये हुए सब ग्रन्थों की एक एक प्रति आपने हमें दी है । आप जब लखनऊ आते हैं तब हमारे ही यहाँ ठहरने की कृपा करते हैं । अपना उपर्युक्त वृत्तान्त एवं अपने ग्रन्थों का हाल हमें इन्हीं ने बताया है जो याथातथ्यरूपेण हमने यहाँ लिख दिया । इनके ग्रन्थों का हाल हम नीचे लिखते हैं ।

(१) प्रताप-विनोद में पिंगल, अलंकार, चित्रकाव्य, रसभेद और भावभेद का वर्णन है । यह १७९ पृष्ठ का ग्रन्थ संवत् १९२६ में रामपुर मथुरा ज़िला सीतापुर के ठाकुर प्रतापरुद्र के नाम पर बना था ।

(२) शृंगारसुधाकर में शृंगाररस, शान्तरस, सज्जनों और असज्जनों का वर्णन है । यह हथिया के पवाँर दलथम्भनसिंह की आज्ञा से संवत् १९३० में बना था । इसमें पचास पृष्ठ हैं । इन दलथम्भनसिंह के पुत्र बजरंगसिंह हमारे

मित्र हैं। ये महाशय भी अच्छा काव्य करते हैं और काशी-कोत-वाल की पचीसी नामक एक ग्रन्थ भी इन्होंने बनाया है।

(३) मुक्तमाल में शान्तिरस के १०८ छन्द हैं। यह संवत् १९३१ में रानी मौज़ा कटेसर ज़िला सीतापूर के कहने से बना था। इसी ग्रन्थ के साथ इन्हीं रानी साहिबा की आज्ञा से रागाष्ट याम और समस्याप्रकाश नामक ५८ पृष्ठ के दो ग्रन्थ और भी बन कर तीनों एक्की ग्रन्थ की भाँति ९७ पृष्ठ में छपे थे। रागाष्टयाम में आठ पहर के चौंसठ राग हैं और यह संवत् १९३१ में बना था। समस्याप्रकाश संवत् १९३२ में बना था और इसमें स्फुट समस्याओं की पूर्तियाँ हैं।

(४) शृंगारसरोज ११ पृष्ठ का एक छोटा सा ग्रन्थ है, जिस में शृंगाररस के कवित्त हैं और जो संवत् १९५० में बना था।

(५) हीराज़ुबिली में १३ पृष्ठों द्वारा संवत् १९५३ में महारानी के साठ वर्ष राज्य करने का आनन्द मनाया गया है।

(६) चन्द्रकलाकाव्य में बूंदी की चन्द्रकला बाई की प्रशंसा है। यह भी संवत् १९५३ में बना था और इसमें २० पृष्ठ हैं।

(७) अन्योक्तिमहेश्वर संवत् १९५४ में रामपुर मथुरा के ठाकुर महेश्वरबख़्श के नाम पर बना था। इसमें ५६ पृष्ठों द्वारा अन्योक्तियाँ कही गई हैं।

(८) व्रजराजविहार २७० पृष्ठ का एक बड़ा ग्रन्थ इटौंजा के राजा इन्द्रविक्रमसिंह की आज्ञानुसार संवत् १९५४ में समाप्त हुआ। इसमें श्री कृष्णचन्द्र की कथा विविध छन्दों में सविस्तर वर्णित है।

(९) प्रेमतरंग बलदेवजी की कविता का संग्रह सा है। इसमें २३ पृष्ठ हैं और यह संवत् १९५८ में बना था। इस ग्रन्थ में स्फुट विषयों की कविता है।

(१०) बलदेव विचारार्क एक सौ पृष्ठ का गद्य-पद्य-मय ग्रन्थ संवत् १९६२ में बना था। इसमें पद्य का भाग बहुत ही न्यून है। इस ग्रन्थ में अवस्थीजी ने बहुत से विषयों पर अपनी अनुमति प्रकट की है और सब विषयों में इनका यही मत है कि असम्भव बातों के दिखानेवाले, ज्योतिष के कहने वाले, बड़ी बड़ी भड़कीली दवाइयों के बेचने वाले आदि प्रायः वंचक हुआ करते हैं। इन्होंने यत्र तत्र ऐसे लोगों से बचने के भी अच्छे उपाय लिखे हैं। यद्यपि अवस्थीजी अँगरेज़ी नहीं पढ़े हैं, तो भी यह ग्रन्थ वर्त्तमान काल के विचारों के अनुकूल है। इस से अवस्थीजी की स्वाभाविक बुद्धि-प्रखरता प्रकट होती है।

अवस्थीजी ने समस्यापूर्त्ति पर भी बहुत सी रचना की है। आशु कविता का भी इन्हें अच्छा अभ्यास है यहाँ तक कि इन्होंने बीस पच्चीस साल से यह दर्पोक्ति का वचन कह रक्खा है कि—

"देइ जो समस्या तापै कवित बनाऊँ चट कलम रुकै तो कर कलम कराइये।" इस कथन के पुष्ट्यर्थ इन्हों ने बहुत से छन्द बहुत

स्थानों पर बनाये, परन्तु कहीं इन का क़लम नहीं रुका। इन्होंने ब्रजभाषा में कविता की है और वह अच्छी है। इन की कविता के उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं:—

(द्विजबलदेव कृत)

कहा ह्वै है कछू नहिँ जानि परै सब अंग अनंग सों जोरि जरे।
उतै बीथिन मैं बलदेव अचानक दीठि प्रकाशक प्रेम परे॥
हँसि कै गे अयान दया न दई है सयान सबै हियरे के हरे।
चले कौन ये जात लिये मन मो सिर मोर की चन्द्रकला को धरे॥

सागर सनेह सील सज्जन सिरोमनि त्यों हंस कैसो न्याव लोक लायक कै लेख्यो है। गुन पहिँचानिबे को कंचन कसौटी मनो द्विज बलदेव बिश्व बिशद बिशेख्यो है॥ आछे रहौ जौलों लोक लोमस सुजस जूह धरम धुरन्धर रुचिर रीति रेख्यो है। राधाकृष्ण प्रेम-पात्र महाराज राजन मैं इन्द्र बिकरमसिंह जम्बूदीप देख्यो है॥

खुर्द घटै बढ़ै राहु गसै बिरही हियरे घने घाय घला है।
सो तौ कलंकित त्यों बिष बन्धु निसाचर बारिज बारि बला है॥
प्रेम समुद्र बढ़ै बलदेव के चित्त चकोर को चोप चला है।
काव्य सुधा बरषै निकलंक उदै जससी तुही चन्द कला है॥

(द्विज गंग कृत)

दमकत दामिनी लौं दीपति दुचन्द दुति दरसै अमन्द मनि मन्दिर के दर तैं। झांकति झरोखे चलि बाल ब्रजराज जू को सारी सेत सुन्दरि सरकि गई सर तैं॥ द्विज गंग अंग पर अलकैं कुटिल लुरैं मुक्तमाल सहित सुधारै कंज कर तैं। मानो कढ़्यो चन्द लै कै पन्नग नछत्र वृन्द मन्द मन्द मंजुल मनोज मानसर तैं॥

हम इन की गणना तोष कवि की श्रेणी में करेंगे।

(२०८९) बिड़दसिंहजा उपनाम (माधव)।

इनका जन्म संवत् १८९७ में अलवर के अन्तर्गत किशुनपुर में हुआ था। आप जाति के चौहान हैं। आपके पूर्वजों को ३ गाँव दरबार अलवर से मिले हैं, जो अब तक इनके अधिकार में हैं। आपकी कविता सरस होती है। उदाहरण :—

कोयल कूकतैं हूक हिए उठि है चपलान तैं प्रान डरैंगे।
देखि कै बुंदन की झरि लोचन सोत्रन सों अँसुवान झरैंगे॥
माधव पीय की याद दिवाय पपीहरा चित्त को चैत हरैंगे।
प्रीति छिपी अब क्यौं रहिहै सखि ए बदरा बदनाम करैंगे॥१॥
कलंक धरै पुनि दोष करै निसि मैं बिचरै रहि बंक हमेस।
उदै लखि मित्र को होत मलीन कमोदिनि को सुखदानि बिसेस॥
रखै रुचि माधव बारुनी की बपुरे बिरहीन को देत कलेस।
न जानिए काह बिचारि बिरंचि धर्‌यो यहि चंद को नाम दुजेस॥२॥

(२०९०) लखनेस।

पांडे लक्ष्मणप्रसादजी उपनाम लखनेस कवि रीवाँ-नरेश महाराजा विश्वनाथसिंह के मन्त्री पंडित बंसीधर पांडे सरयूपारीण ब्राह्मण के पुत्र थे। ये पण्डितजी महाराजा के बड़ेही कृपापात्र थे और इन्हें सेनापति और मित्र का भी पद प्राप्त था। महाराजा विश्वनाथसिंहजी के पुत्र प्रसिद्ध कवि महाराजा रघुराजसिंहजी हुए। इन्हीं के आश्रय में लखनेसजी रहते थे।

इन्होंने संवत् १९२१ में रसतरंग नामक ११६ पृष्ठों का एक ग्रन्थ कृष्णचरितामृत के गान में बनाया, जिसमें कुल मिलाकर ५७२ छन्द हैं। यद्यपि यह कथाप्रासंगिक ग्रन्थ है, तथापि इस रीति से बनाया गया है कि शृंगाररस के अन्य काव्यों में इससे बहुत अन्तर नहीं है। इसमें विविध छन्द हैं, जैसे कि केशवदास की रामचन्द्रिका में पाये जाते हैं, परन्तु फिर भी सवैयाओं और घनाक्षरियों का प्राधान्य है। इसकी भाषा ब्रज भाषा की ओर अधिक झुकती है, यद्यपि इसमें अवध की भाषा भी मिल जाती है। ग्रन्थारम्भ में कवि ने अपने आश्रयदाता की प्रशंसा की है और फिर क्रमशः राजनगर, और श्रीकृष्ण की उत्पत्ति से लेकर उद्धव-सन्देश-पर्यन्त कथा का अच्छा वर्णन किया है। रास का भी वर्णन बड़ा विशद हुआ है। इनकी कविता में जहाँ कहीं अलंकार अथवा रस आगये हैं, वहाँ उनका नाम लिख दिया गया है। इन्होंने चित्रकाव्य भी थोड़ा सा किया है और उसे भी एक प्रकार से कथा में हीं सम्मिलित कर दिया है। इनकी भाषा अच्छी और कविता प्रशंसनीय है। भाषा में रीति-काव्य और कथा-प्रसंग बनाने की दो भिन्न भिन्न प्रणालियाँ हैं, परन्तु लखनेसजी ने उन दोनों को मिला दिया है। इनके ग्रन्थ से कोरी कविता और कथा-प्रसंग, दोनों का स्वाद मिलता है। इनका परिश्रम सन्तोषदायक है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण नीचे लिखते हैं:—

राजै जैतवार रघुराज नर नाहन मैं
चाहत पनाह मुख साह हू तके रहैं।

विचरैं प्रफुल्लित प्रजानि पुंज बांधैा
राज्ञ दुष्ट की कहा है बनराज हू जके रहैं ॥
बरनै को पार लखनेस कृपा कोर जन
पोत सम पाय दुख सिन्धु के थके रहैं।
जासु कर कंज मकरन्द दान पान
कै कै हम से मलिन्द गुन गान मैं छके रहैं ॥
कुंजनि मैं, बन पुंजनि मैं, अलि गुंजनि मैं सुभ सब्द सुहात हैं।
धेनु घनी, धरनी, धन, धाम मैं को बरनै लखनेस विख्यात हैं ॥
थावर जंगम जीवन को दिन जामिनि जानि न जात विहात हैं।
ह्वै गई कान्ह मई ब्रज है सब देखैं तहाँ नँदनन्द देखात हैं ॥

खोज में लक्ष्मीचरित्र नामक इनके एक दूसरे ग्रन्थ का भी वर्णन है।

(२०९१) डाक्टर रुडाल्फ़ हार्नली सी० आई० ई०।

इनका जन्म संवत् १८९८ में आगरा ज़िले में सिकन्दरा के पास हुआ था। ये महाशय कालेजों में अध्यापक रहे और अन्त में सरकार ने इन्हें पुरातत्त्व की जाँच पर भी नियत किया। इनका उत्तरी भारतवर्षीय भाषा समुदाय के व्याकरणों वाला लेख परम प्रसिद्ध एवं विद्वत्तापूर्ण है। इन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी संस्कृत एवं प्राकृत से निकली है और अनार्य्य भाषाओं की शाखा नहीं है। इन्होंने विहारी भाषा का कोष एवं चन्द कृत रासो का भी सम्पादन किया, पर ये ग्रन्थ अपूर्ण रह गये। डाक्टर साहब ने जैन ग्रन्थ उवासग दसरावो भी प्रकाशित किया। इनका

हिन्दी भाषा से प्रगाढ़ प्रेम है और व्याकरण एवं भाषाओं की उत्पत्ति के विषय में इनका प्रमाण माना जाता है। अब ये विलायत चले गये हैं।

(२०९२) आनन्द कवि ठाकुर दुर्गासिंह।

आप डिकोलिया सीतापूर-निवासी हिन्दी के एक प्राचीन और प्रसिद्ध कवि हैं। आपकी अवस्था अब प्रायः ७० वर्ष की होगी। आपने कुछ ग्रन्थ रचे हैं और स्फुट छन्द सैकड़ों बनाये हैं। आप की कविता अच्छी होती है। काव्यसुधाधर में आपकी समस्य-पूर्तियाँ छपा करती थीं। आप साधारणतया एक बड़े ज़िमींदार हैं। हमें आनन्द जी ने अपने बहुत से छन्द सुनाये हैं।

(२०९३) नवीनचन्द्र राय।

इनका जन्म संवत् १८९४ में हुआ था। पिता का शैशवावस्था में ही मृत्यु होजाने से इनकी शिक्षा अच्छी न हो सकी, पर इन्होंने अपने ही कौशल से १६) मासिक से लेकर ७००) मासिक तक का वेतन भोगा और विद्याव्यसन के कारण अँगरेज़ी के अतिरिक्त संस्कृत और हिन्दी की भी बहुत अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। नवीन बाबू ने इन दोनों भाषाओं में प्रकृष्ट ग्रन्थ बनाये और विधवा-विवाह पर भी एक पुस्तक रची। इन्होंने पंजाब में स्त्री-शिक्षा पादप का बीज बोया और लाहौर में नार्मल फ़ीमेल स्कूल स्थापित किया। हिन्दी में आपने ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका भी निकाली। परोपकार में ये सदा लगे रहे। इनका देहान्त संवत् १९४७ में हुआ।

(२०९४) बालकृष्ण भट्ट ।

भट्टजी का जन्म संवत् १९०१ में प्रयाग में हुआ था । ये महाशय संस्कृत के अच्छे विद्वान् और भाषा के एक परम प्राचीन लेखक हैं । भारतेन्दुजी इनके लेख पसन्द करते थे । संवत् १९३४ में प्रयाग से हिन्दीप्रदीप नामक एक सुन्दर मासिक पत्र प्रायः ३२ वर्ष तक निकलता रहा । भट्टजी उसके सदैव सम्पादक रहे । इनकी गद्य-लेखन-पटुता एवं गम्भीरता सर्वतोभावेन सराहनीय है । कलिराज की सभा, रेल का विकट खेल, बालविवाह नाटक, सौ अजान का एक सुजान, नूतन ब्रह्मचारी, जैसा काम वैसा परिणाम आदि लेख इनके चमत्कारिक हैं । पद्मावती, शरमिष्ठा, और चन्द्रसेन नामक उत्तम नाटक ग्रन्थ भी भट्टजी ने रचे हैं ।

नाम—(२०९५) आत्माराम ।

ग्रन्थ—शृंगारसप्तशती (संस्कृत) ।

विवरण—१९२५ के पीछे इन्होंने बिहारीसतसई का संस्कृत में अनुवाद किया । भारतेन्दुजी ने इनको ५००) उसका पारितोषिक भी दिया । अतः इनका रचनाकाल संवत् १९२५ के लगभग है ।

यथा ।

अपनय भव बाधा भयं राधे त्वं कुशलासि ।
हरिरपि धरति हरि द्युतिं यदि माधवमुपयासि ॥

(२०९६) ब्रज।

गोकुल उपनाम ब्रज कायस्थ का संवत् १९२५ के लगभग कविता-काल है। ये बलरामपूर ज़िला गोंडा में हुए हैं। ये महाराजा दिग्विजयसिंह के यहाँ रहे। इन्होंने दिग्विजयभूषणसंग्रह, अष्टयाम, चित्रकलाधर, दूतीदर्पण, नीतिरत्नाकर, और नीतिप्रकाश नामक छः ग्रन्थ बनाये हैं। इनका कोई ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया पर पूछ पाँछ से इन ग्रन्थों के नाम निश्चयपूर्वक जान पड़े। इनकी कविना अनुप्रासपूर्ण परम विशद होती थी। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण।

तम नासि अवास प्रकास करै गुन एक गनै नहिँ औगुन सारै।
रवि अन्त पतंग दई प्रभुता इन संग पतंग अनेकन जारै॥
अति मित्र के द्रोही बिछोही सनेह के याते सखी सिख मेरी विचारै।
मनि मंजु धरै ब्रज मन्दिर मैं रजनी मैं जनी जनि दीपक बारै॥

नाम—(२०९७) शिवदयाल कवि पांडे उपनाम भेष; लखनऊ।

ग्रन्थ—स्फुट कविता १ दशम स्कंध भागवत भाषा क़रीब १००० विविध छन्दों में अपूर्ण।

जन्मकाल—१८९६।

कविता-काल—१९२५।

विवरण—ये लखनऊ रानीकटरा-निवासी कान्यकुब्ज पांडे थे। इन्हें ज्योतिष में अच्छा अभ्यास था और आप कविता भी सोहावनी करते थे। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

चित की हम ऊधो जु बातैं कहैं अवकास अकास न पाइ है जू।
यह तुंग के तुंग तरंगन के उमहे मन कौन समाइ है जू॥
ढुरि है हग कोर जु भेष कहूँ तौ अबै ब्रज फेरि बहाइ है जू।
सिगरी यह रावरी ज्ञानकथा कहि कौन को कौन सुनाइ है जू॥१॥

इस समय के अन्य कविगण।

नाम—(२०९८) असकंदगिरि, बाँदा।

ग्रन्थ—(१) असकंदविनोद, (२) रसमोदक (१९०५)।

कविता-काल—१९१६।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाराज हिम्मत बहादुर गोसाईं बाँदा के शिष्य व नवाब गनीबहादुर बाँदा के नौकर थे। कविता भी अच्छी करते थे।

नाम—(२०९९) दिलीप, चैनपुर।

ग्रन्थ—रामायण टीका।

कविता-काल—१९१६।

नाम—(२१००) ललू ब्राह्मण (पांडे), ग़ाज़ीपुर।

ग्रन्थ—ऊषाचरित्र पृ० ११०।

कविताकाल—१९१६।

नाम—(२१०१) हीरालाल चौबे, बूँदी।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९१६।

विवरण—ये भी बूँदी दरबार में थे।

नाम—(२१०२) सुदामाजी।

ग्रन्थ—(१) बारहखड़ी, (२) स्फुट।

कविताकाल—१९१७ के पूर्व।

नाम—(२१०३) हाजी।

ग्रन्थ—प्रेमनामा।

कविताकाल—१९१७ के पूर्व।

नाम—(२१०४) गंगादत्त ब्राह्मण राजापूर, ज़िला, बाँदा।

ग्रन्थ—विष्णोदविशदस्तोत्र।

जन्मकाल—१८९२।

कविताकाल—१९१७ वर्त्तमान।

नाम—(२१०५) भानुप्रताप, बिजावर महाराज।

ग्रन्थ—(१) शृंगारपचासा, (२) विज्ञानशतक।

कविताकाल—राजत्वकाल १९१७ से १९५८ तक।

नाम—(२१०६) सुन्दरलाल कायस्थ, राजनगर, छत्रपूर।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९१८।

नाम—(२१०७) गोपालराव हरी, फ़रुख़ाबाद।

ग्रन्थ—दयानन्ददिग्विजयार्क।

जन्मकाल—१८९४।

कविताकाल—१९१९।

नाम—(२१०८) लालचन्द ।

ग्रन्थ—सत्कर्म्म, उपदेश-रत्नमाला ।

कविताकाल—१९१९ ।

नाम—(२१०९) कृष्णदास ब्राह्मण, उज्जैन ।

ग्रन्थ—सिंहासनबत्तीसी ।

कविताकाल—१९२० के पूर्व ।

विवरण—आश्रयदाता राजा भीम ।

नाम—(२११०) माखन चौबे, कुलपहार, ज़िला हमीरपूर ।

ग्रन्थ—(१) श्रीगणेशजी की कथा, (२) श्रीसत्यनारायण कथा ।

कविताकाल—१९२० के पूर्व ।

विवरण—कुलपहाड़, हमीरपूर वाले ।

नाम—(२१११) खूबचन्द राठ, हमीरपुर ।

ग्रन्थ—तेरहमासी ।

कविताकाल—१९२० ।

नाम—(२११२) गणेशप्रसाद कायस्थ, पैंचवारा, ज़िला बाँदा ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

जन्मकाल—१८९६ ।

कविताकाल—१९२० । मृत्यु १९५६ ।

नाम—(२११३) गंगाराम बुँदेलखंडी ।

ग्रन्थ—(२)सिंहासनबत्तीसी, (२) देवी-स्तुति, (३) रामचरित्र ।

जन्मकाल—१८९४।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—निम्नश्रेणी।

नाम—(२११४) टेर, मैनपुरी।

जन्मकाल—१८८८।

कविताकाल—१९२०।

नाम—(२११५) दीनदयाल कायस्थ, कोयल, ज़िला अलीगढ़।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१८९५।

कविताकाल—१९२०।

नाम—(२११६) नरोत्तम, अंतर्वेद।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण कवि।

नाम—(२११७) परमानन्द लल्ला पौराणिक, अजयगढ़, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—(१) नखशिख, (२) हनुमाननाटकदीपिका।

जन्मकाल—१८९७।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२११८) व्रजचन्द जन ।

ग्रन्थ—श्रीरामलीलाकौमुदी ।

जन्मकाल—१८९० ।

कविताकाल—१९२० से १९६० तक ।

विवरण—इनका यह ग्रन्थ वार्तिक है और कहीं कहीं इसमें छन्द भी हैं। ७० बड़े पृष्ठों का व्रजभाषा का ग्रन्थ है। साधारण श्रेणी के कवि थे। ग्रन्थ हमने छतरपुर में देखा है।

नाम—(२११९) मदनमोहन ।

जन्मकाल—१८९८ ।

कविताकाल—१९२० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१२०) मनीराम मिश्र, साठी, कानपूर ।

जन्मकाल—१८९६ ।

कविताकाल—१९२० ।

नाम—(२१२१) माखन लखेरा पन्नावाले ।

ग्रन्थ—दानचौंतीसी ।

जन्मकाल—१८९१ ।

कविताकाल—१९२० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१२२) युगलप्रसाद कायस्थ, रीवाँ ।

ग्रन्थ—बघेलवंशावली ।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—रामरसिकावली रघुराजसिंह रीवाँनरेश-कृत की वंशावली इन्हीं की रचना है।

नाम—(२१२३) रामकृष्ण।

ग्रन्थ—नायिकाभेद।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२४) रामदीन बन्दीजन, अलीगंज इटावा।

जन्मकाल—१८९०।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२५) लक्ष्मणसिंह (परतीतराय) कायस्थ, दतिया

ग्रन्थ—(१) जैमिनि-अश्वमेध भाषा, (२) रामभूषण, (३) लोकेन्द्र ब्रजोत्सव।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—महाराज भवानीसिंह दतियानरेश के यहाँ थे।

नाम—(२१२६) लेखराज।

ग्रन्थ—रामकृष्णगुणमाला।

कविताकाल—१९२०।

नाम—(२१२७) लोनेसिंह, मितौली, खीरी।

ग्रन्थ—दशमस्कन्ध भागवत भाषा।

जन्मकाल—१८९२।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२८) शिवप्रकाशसिंह बाबू, डुमरावँ, शाहाबाद वाले।

ग्रन्थ—रामतत्त्वबोधिनी टीका (विनयपत्रिका की)।

जन्मकाल—१८९१।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—सधारण श्रेणी।

नाम—(२१२९) कुशलसिंह।

ग्रन्थ—नखशिख।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व।

विवरण—शिवनाथ के साथ लिखा।

नाम—(२१३०) दंपताचार्य्य।

ग्रन्थ—रसमंजरी।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व।

नाम—(२१३१) द्वारिकादास।

ग्रन्थ—माधवनिदान भाषा (वैद्यक ग्रंथ)।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व।

नाम—(२१३२) अनुनैन।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२१।

विवरण—कविता सानुप्रास और यमकयुक्त उत्तम है। साधारण श्रेणी।

नाम—(२१३३) राधाचरण कायस्थ, राजगढ़, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—(१) यमुनाष्टक, (२) राधिकानखशिख, (३) शम्भुपचासा।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२१। मृत्यु १९५१।

नाम—(२१३४) श्रीकृष्णचैतन्यदेव।

ग्रन्थ—सौंदर्य्यचन्द्रिका।

कविताकाल—१९२२ के पूर्व।

नाम—(२१३५) बख्तावरख़ाँ, बिजावर।

ग्रन्थ—धनुषसवैया।

कविताकाल—१९२२।

नाम—(२१३६) बेनी भिंड-निवासी।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

कविताकाल—१९२३ के प्रथम।

विवरण—खगेश के पुत्र।

नाम—(२१३७) मानसिंह अवस्थी, गिरवाँ, ज़िला बाँदा।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

कविताकाल—१९२३ के पूर्व।

विवरण—साधारण।

नाम—(२१३८) रामचरन (चिरगाँव)।

ग्रन्थ—(१) हिंडोलकुण्ड, (२) रहस्यरामायन, (३) सीताराम दम्पतिविलास।

कविताकाल—१९२३।

विवरण—मैथिलीशरण गुप्त के पिता।

नाम—(२१३९) भूरे, बिजावर।

ग्रन्थ—बारहमासा।

कविताकाल—१९२४ के पूर्व।

नाम—(२१४०) जयगोविन्ददास।

ग्रन्थ—हनुमत्सागर (पृ० ३२६)।

कविताकाल—१९२४।

नाम—(२१४१) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी, किशुनदासपूर, राय बरेली।

ग्रन्थ—रसचन्द्रोदय, (कोई संग्रह भी)।

जन्मकाल—१८८२।

कविताकाल—१९२४ तक।

विवरण—साधारण श्रेणी। इनके पास भाषा-साहित्य का अच्छा पुस्तकालय था।

नाम—(२१४२) दलपतिराम।

ग्रन्थ—श्रवणाख्यान।

कविताकाल—१९२४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१४३) पंचम, डलमऊ, राय बरेली।

कविताकाल—१९२४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१४४) खान।

कविताकाल—१९२५ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१४५) हनुमानदास।

ग्रन्थ—गीतमाला।

कविताकाल—१९२५ के पूव।

नाम—(२१४६) कमलाकांत वकील, गोरखपूर।

ग्रन्थ—होलीबिहार।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५ वर्त्तमान।

नाम—(२१४७) कमलेश्वर कायस्थ, मन्दरा, ज़िला ग़ाज़ीपु

ग्रन्थ—(१) सत्यनारायण, (२) स्फुट।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९६८।

नाम—(२१४८) चंडीदत्त।

जन्मकाल—१८९८।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२१४९) चंडीदान कविराजा चारण, कोटा।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—ये भी अच्छी कविता करते थे और देवीजी का एकाध कवित्त रोज़ बना लेते थे तब भोजन करते थे। इस कारण देवीजी के कवित्त इनके हज़ारों हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(२१५०) तपसीराम कायस्थ, मुबारकपूर, सारन।

ग्रन्थ—(१) रमूज़ महरवफ़ा, (२) प्रेमगंगतरंग, (३) वक़ाया देहली।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९४२।

नाम—(२१५१) देवीप्रसाद कायस्थ, मऊ, छत्रपूर।

ग्रन्थ—वैद्यकल्प।

जन्मकाल—१८९७।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९४६।

नाम—(२१५२) नारायणदास भाट।

ग्रन्थ—ऊधवव्रजगमनचरित्र।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—बनारस।

नाम—(२१५३) परमेश बन्दीजन सतावाँ, रायबरेली।

ग्रन्थ—कृष्णविनोद (पृ० ७८)।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२५ वर्त्तमान।

विवरण—तोषश्रेणी।

नाम—(२१५४) प्रेमसिंह उदावत रोठाड़ खडेला (गाँव) मारवाड़।

ग्रन्थ—राजाकामकेतुकीवार्ता (इतिहास)।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९५६।

विवरण—आश्रयदाता म० रा० यशवंतसिंह। श्लोक-सं० ९००।

नाम—(२१५५) बुधसिंह (रसीले) कायस्थ, बेरी।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९५०।

नाम—(२१५६) मथुराप्रसाद उपनाम लंकेश कायस्थ, कालपी।

ग्रन्थ—(१) रावणदिग्विजय, (२) रावणवृन्दावनयात्रा, (३) रावणशिवस्वरोदय, (४) दोहावली।

जन्मकाल—१८९९ ।

कविताकाल—१९२५ ।

विवरण—आप कालपी में वकील थे । रामलीला के रसिक ही न थे, वरन् रावण बनते भी थे और अपने को रावण का अवतार कहते थे । उपनाम भी लङ्केश रक्खा था ।

नाम—(२१५७) महेशदत्त शुक्ल अवधराम के पुत्र धनौली, ज़िला बारहबंकी ।

ग्रन्थ—(१) विष्णुपुराण भाषा गद्य पद्य, (२) अमरकोष-टीका, (३) देवी भागवत, (४) वाल्मीकीय रामायण, (५) नृसिंह-पुराण, (६) पद्मपुराण, (७) काव्यसंग्रह, (८) उमापति-दिग्विजय, (९) उद्योग-पर्व भाषा, (१०) माधव-निदान, (११) कवित्त-रामायण-टीका ।

जन्मकाल—१८९७ ।

कविताकाल—१९२५ । मृत्यु १९६० ।

नाम—(२१५८) मूलचंद कायस्थ, ख़ैराबाद, ज़ि० सीतापुर ।

ग्रन्थ—(१) धर्म्मसागर, (२) भजनावली ७ भाग ।

जन्मकाल—१९०० ।

कविताकाल—१९२५ । मृत्यु १९५० ।

नाम—(२१५९) रघुनंदन भट्टाचार्य ।

ग्रन्थ—(१) सनातनधर्मसिद्धान्त, (२) धर्मसिद्धांतसंहिता, (३) दिग्विजयाश्वमेध, (४) पाखंडमुंडिनिदर्शन, (५) कृत्यवाद,

(६)शब्दार्थनिरूपण, (७) दाननिरूपण, (८) लक्षणावाद, (९
सद्‌दूषण, (१०) सदाशिवास्तुति।

जन्मकाल—१८९९।

कविताकाल—१९२५।

नाम—(२१६०) रघुनंदनलाल कायस्थ, बनारस।

ग्रन्थ—चित्रगुप्तेश्वर पुराण।

जन्मकाल—१८९७।

कविताकाल—१९२५।

नाम—(२१६१) रामकुमार कायस्थ, बाँदा।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९५५।

नाम—(२१६२) रामप्रताप जी, जयपूर।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९२५।

नाम—(२१६३) रामभजनबारी, गजपुर, ज़ि० गोरखपुर।

ग्रन्थ—स्फुट काव्य।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—राजा बस्ती के यहाँ थे।

नाम—(२१६४) शिवप्रकाश कायस्थ अपहर, ज़ि० छपरा।

ग्रन्थ—(१) उपदेशप्रवाह, (२) भागवतरससम्पुट, (३) लीला-
रसतरंगिणी, (४) सतसंगविलास, (५) भजनरसामृता-

गाँव, (६) भागवततत्त्वभास्कर, (७) विनयपत्रिका टीका, (८) गीतावली टीका, (९) रामगीता टीका, (१०) वेदस्तुति की टीका, (११) इतिहासलहरी।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—डुमरावँ के प्रसिद्ध दीवान जयप्रकाशलाल के लघु भ्राता थे।

नाम—(२१६५) श्याम कवि मिश्र, आगरा।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—ये कुलपति मिश्र के वंशधर हैं।

नाम—(२१६६) हनुमानदीन, मिश्र, राजापूर, ज़ि० बाँदा।

ग्रन्थ—(१) वाल्मीकीय रामायण, (२) दीपमालिका।

जन्मकाल—१८९२।

कविताकाल—१९२५।

नाम—(२१६७) हरीदास भट्ट, बांदा।

ग्रन्थ—राधाभूषण।

जन्मकाल—१९०१।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—शृङ्गार विषय।

नाम—(२१६८) हिरदेस, झाँसी, बंदीजन।

ग्रन्थ—शृंगारनौरस।

जन्मकाल—१९०१।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—इनकी कविता उत्तम और मनोहर है। तोष श्रेणी के कवि हैं।

———

वर्तमान प्रकरण ।

पैंतीसवाँ अध्याय ।

वर्त्तमान हिन्दी एवं पत्र-पत्रिकायें ।

(१९२६ से अब तक)

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त कोई परमोत्तम कवि इस समय में नहीं हुआ । उनके अतिरिक्त उत्कृष्ट कवियों की गणना में महाराजा रघुराजसिंह और सहजराम ही के नाम आ सकते हैं, पर ये भी प्रथम श्रेणी के न थे, यद्यपि इनकी कविता आदरणीय अवश्य है। इनके अतिरिक्त साधारणतया उत्कृष्ट कवियों में गोविन्द गिल्लाभाई, द्विजराज, ब्रजराज, विशाल, पूर्ण, श्रीधर पाठक, हनुमान, मुरारिदान और ललित की भी गणना हो सकती है। इस समय में चन्द्रकला आदि कई स्त्रियों ने भी मनोहारिणि कविता की है, जैसा कि आगे समालोचनाओं से प्रकट होगा। प्राचीन प्रथा के कवियों में नायिकाभेद, अलंकार, षट्-ऋतु और नखशिख के ही ग्रन्थों के बनाने की कुछ परिपाटी सी पड़ गई थी । अच्छे कविगण प्रायः इन्हीं विषयों पर रचना करते थे और कथाप्रसंग अथवा अन्य विषयों पर कम ध्यान देते थे। इस काल में प्राचीन प्रथानुयायी कविगण तो पुराने ही ढर्रे पर

विशेषतया चल रहे हैं, पर बहुत से नवीन प्रथा के लोग इस रीति को अनुचित समझने लगे हैं। थोड़े ही विषयों को लेलेने से शेष उत्तम विषय छूट जाते हैं और कविता का मार्ग संकुचित हो जाता है। आज कल रेल, तार, डाक, छापेख़ानों आदि के विशद प्रबन्धों के कारण हम लोगों को दूर दूर के मनुष्यों तक से मिलने और भाव-प्रकाशन का पूरा सुभीता हो गया है। अँगरेज़ी राज्य के पूर्ण रीति से स्थापित हो जाने से भी कविता को बड़ा लाभ पहुँचा है। इस राज्य ने अच्छी शान्ति स्थापित कर दी, जिससे भाषा ने भी उन्नति पाई। इतने पर भी कुछ पूर्व-प्रथानुयायियों ने नई सुभीतावाली बातों से केवल समस्यापूर्ति के पत्र चलाने का काम लिया। समस्यापूर्ति में चमत्कारिक काव्य प्रायः कम मिलता है। पाँच छः वर्षों से अब समस्यापूर्ति के पत्रों का बल क्षीण होता देख पड़ता है और विविध विषयों के पत्रों की उन्नति दिखाई देती है। बहुत दिनों से हिन्दी में बारहमासाओं के लिखने की चाल चली आती है। इनमें प्रत्येक मास में विरहिणी स्त्रियों की विरह-वेदना का वर्णन होता है। सबसे पहला बारहमासा ख़ुसरो का कहा जाता है और दूसरा, जहाँ तक हमें ज्ञात है, केशवदास ने बनाया। उनके पीछे किसी भारी प्राचीन कवि ने बारहमासा नहीं कहा। इधर आकर बजहन, वहाब, गणेशप्रसाद आदि ने मनोहर बारहमासे लिखे हैं। ऐसे ग्रन्थों में खड़ी बोली का विशेष प्रयोग होता है। इनके अतिरिक्त सैकड़ों बारहमासे बने हैं, पर इनकी रचना अधिकतर शिथिल है। बहुतों में रचयिताओं के नामों तक का पता नहीं लगता।

अब तक कविता भी विशेषतया व्रजभाषा में ही होती थी, पर अब पण्डितों का विचार है कि एक प्रांतीय भाषा परम मनोहारिणी होने पर भी समस्तदेशीय हिन्दी भाषा का स्थान नहीं ले सकती। उनका मत है कि केवल ऐसी साधु बोली जो एकदेशीय न हो और जो उन सब प्रान्तों में व्यवहृत हो जहाँ हिन्दी का प्रचार है, वास्तव में हमारी भाषा कहलाने की योग्यता रख सकती है। उनके मत में खड़ी बोली ऐसी है और कविता इसी में लिखी जानी चाहिए। १७वीं शताब्दी में गंग एवं जटमल ने खड़ी बोली में गद्य लिखा। पर गद्य काव्य में इसका प्रचार लल्लूलाल तथा सदल मिश्र के समय से विशेष हुआ, और राजा लक्ष्मणसिंह तथा राजा शिवप्रसाद ने इसे और भी उन्नति दी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तथा प्रतापनारायण मिश्र के समय से गद्य की बहुत ही सन्तोषदायिनी उन्नति हुई, और इस समय सैकड़ों उत्कृष्ट गद्यलेखक वर्त्तमान हैं। इनमें बदरीनारायण चौधरी, गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, भुवनेश्वर मिश्र, मेहता लज्जाराम, शिवनन्दनसहाय व व्रजनन्दनसहाय, साधुशरणप्रसादसिंह, किशोरीलाल गोस्वामी, श्यामसुन्दरदास, गोविन्दनारायण मिश्र, गदाधरसिंह, अमृतलाल चक्रवर्ती, अयोध्यासिंह, देवीप्रसाद, जगन्नाथदास (रत्नाकर), गौरीशंकर ओझा, गोपालराम, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मदनमोहन मालवीय, सोमेश्वरदत्त सुकुल एवं अन्यान्य अनेक परम प्रतिभाशाली लेखक हैं। प्रायः चालीस वर्षों से हिन्दी में समाचार पत्र भी निकलने लगे हैं और इनकी दिनों दिन उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। तीन दैनिक पत्र भी हिन्दी में समय समय पर निकाले गये, जिनमें हिन्दु-

स्थान प्रसिद्ध है, पर अब तक कोई दैनिक पत्र स्थिर नहीं हो सका है। आज कल सर्वहितैषी नामक दैनिक पत्र निकला है, और भारत-मित्र का भी एक दैनिक संस्करण निकलता है। गद्य में विविध प्रकार के अच्छे और उपकारी ग्रन्थ लिखे गये, और अनुवादित हुए तथा होते जाते हैं। अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव अब बैठ चुका है। इससे भाँति भाँति के नवागत लाभकारी भाव देश में फैल रहे हैं। अँग-रेज़ी शिक्षा का भी यही प्रभाव पड़ता है। इसने देशभक्ति की मात्रा बहुत बढ़ा दी है। अँगरेज़ी राज्य से जीवन-होड़-प्राबल्य दिनों दिन बढ़ता जाता है। इससे देशवासियों का ध्यान उपयोगी विषयों की ओर खिँच रहा है। इन कारणों से हिन्दी में नवीन विचारों का समावेश ख़ूब होता जाता है और विविध विषयों के ग्रन्थ दिनों दिन बनते जाते हैं। यदि यही हाल स्थिर रहा, जैसी कि दृढ़ आशा की जाती है, तो पचास वर्ष के भीतर हिन्दी की बहुत बड़ी उन्नति हो जावेगी और इसमें किसी प्रकार के ग्रन्थों की कमी न रहेगी। पद्य में खड़ी बोली का कुछ कुछ प्रचार बहुत काल से चला आता है, जैसा कि ऊपर स्थान स्थान पर दिखलाया गया है, पर पूर्णबल से पहले पहल खड़ी बोली की पद्य-कविता सीतल कवि ने बनाई। इस महाकवि ने अपने 'गुल्ज़ार-चमन' नामक वृहत् ग्रन्थ में सिवा खड़ी बोली के और किसी भाषा का प्रयोग ही नहीं किया। इसके एक चमन की मुद्रित प्रति हमारे पास है। सीतल के पीछे श्रीधर पाठक ने खड़ी बोली की प्रशंसनीय कविता की, और महावीरप्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, भगवानदीन, बालमुकुन्द गुप्त, नाथूराम शंकर, मन्नन द्विवेदी आदि ने

भी इसी प्रथा पर अच्छी रचनायें की हैं। हमने भी 'भारतविनय' नामक प्रायः एक सहस्र छन्दों का ग्रन्थ एवं एक अन्य छोटी सी पुस्तक खड़ी बोली में बनाई है। अभी बहुत से कवि खड़ी बोली में कविता नहीं करते और बहुतों को इसमें उत्तम कविता बन सकने में भी सन्देह है, पर इसकी भी उन्नति होने की अब पूर्ण आशा है।

थोड़े दिनों से हिन्दी में उपन्यासों की बड़ी चाल पड़ गई है। इनसे इतना अवश्य उपकार है, कि इनकी रोचकता के कारण बहुत से हिन्दी न जानने वाले भी इस भाषा की ओर झुक पड़ते हैं। उपन्यास-लेखकों में देवकीनन्दन खत्री, गोपालराम, किशोरी-लाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त आदि प्रधान हैं।

नाटकविभाग हिंदी में बहुत दिनों से स्थापित नहीं है और न इस की अभी तक कुछ भी उन्नति हुई है। सबसे पहले नेवाज कवि ने शकुंतला नाटक बनाया, पर वह स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, वरन् विशेषतया कालिदास-कृत शकुंतला नाटक के आधार पर लिखा गया है। यह पूर्णरूप से नाटक के लक्षणों में भी नहीं आता, क्योंकि इसमें यवनिकादि का यथोचित समावेश नहीं है। व्रजवासीदास-कृत प्रबोधचंद्रोदय नाटक भी इसी तरह का है। केशवदास-कृत विज्ञानगीता भी नाटक के ढंग पर लिखा गया है, पर उसमें इन ग्रंथों से भी कम नाटकपन है, यहाँ तक कि उसे नाटक कहना ही व्यर्थ है। देवमायाप्रपंच नाटक में भी यवनिका आदि के प्रबन्ध नहीं हैं। इसे देव कवि ने बनाया। प्रभावती और आनन्दरघुनन्दन भी पूर्ण नाटक नहीं हैं। सबसे पहला

नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गिरधरदास ने सं० १९१४ में बनाया, जिसका नाम "नहुष नाटक" है। राधाकृष्णदास ने उसका सम्पादन किया। इसके पीछे राजा लक्ष्मणसिंह ने शकुंतला का भाषानुवाद किया। नाटकों का प्रचार हिन्दी में प्रधानतया हरिश्चन्द्र ही ने किया। उन्होंने बहुत से उत्तम नाटक बनाये, जिनमें से कई का अभिनय भी हुआ। इनके अतिरिक्त श्रीनिवासदास, तोताराम, गोपालराम, काशीनाथ खत्री, पुरोहित गोपीनाथ, लाला सीताराम आदि ने भी नाटक बनाये और अनुवादित किये हैं। राधाकृष्णदास, प्रतापनारायण मिश्र, देवकीनन्दन त्रिपाठी, बालकृष्ण भट्ट, गणेशदत्त, राधाचरण गोस्वामी, चौधरी बदरीनारायण, गदाधर भट्ट, जानी बिहारीलाल, अम्बिकादत्त व्यास, शीतलप्रसाद तेवारी, दामोदर शास्त्री, ठाकुरदयालसिंह, अयोध्यासिंह उपाध्याय, गदाधरसिंह, ललिताप्रसाद त्रिवेदी, राय देवीप्रसाद पूर्ण, बालेश्वरप्रसाद, महाराजकुमार खड्ग लालबहादुर मल्ल आदि कविगण इस समय के नाटककार हैं।

बिहारप्रांत में हिन्दीभाषी अन्य प्रांतों के देखते नाटकविभाग बहुत दिनों से अच्छी दशा में है। स्वयम् विद्यापति ठाकुर ने पन्द्रहवीं शताब्दी में दो नाटक-ग्रन्थ लिखे। लाल झा ने सं० १८३७ में गौरी-परिणय नाटक बनाया तथा सं० १९०७ में भानुनाथ झा ने प्रभावतीहरण नाटक निर्माण किया, जिसमें मैथिल भाषा के अतिरिक्त प्राकृत तथा संस्कृत का भी प्रयोग किया गया। हर्षनाथ झा ने भी इसी समय कई ग्रन्थ बनाये, जिनमें ऊषाहरण मुख्य है। व्रजनन्दनसहाय और शिवनन्दनसहाय ने भी नाटक रचे हैं।

फिर भी कहना ही पड़ता है कि हिन्दी में नाटकविभाग अभी बिलकुल सन्तोषदायक दशा में नहीं है। भारतेन्दु, श्रीनिवासदास आदि के रचित नाटकों के अतिरिक्त अधिकांश शेष उत्तम नाटक ग्रन्थ या तो नाटक हैं हीं नहीं अथवा केवल अनुवादमात्र हैं।

हिन्दी-इतिहास-विषयक अभी तक कोई अच्छा ग्रन्थ नहीं है। सबसे प्रथम प्रयत्न इस विषय में भूषण के समकालीन कालिदास कवि ने किया। पर उन्होंने केवल हज़ार छन्दों का हज़ारा नामक एक संग्रह बनाया। इस ग्रन्थ से इतना लाभ अवश्य हुआ कि जिन कवियों के नाम इसमें आये हैं उनके विषय में ज्ञात हो गया कि वे या तो कालिदास के समकालीन थे अथवा पूर्व के। बहुत से कवियों की रचनायें भी इसी ग्रन्थ के कारण सुरक्षित रहीं। संवत् १६६० के लगभग प्रवीण कवि ने सारसंग्रह नामक एक ग्रन्थ संगृहीत किया, जिसमें प्रायः १५० कवियों की कविता पाई जाती है। यह अमुद्रित ग्रन्थ पण्डित युगलकिशोर के पास है। दलपति-राय बंसीधर ने संवत् १७९२ में अलंकाररत्नाकर नामक एक संग्रह बनाया, जिसमें उन्होंने अपने अतिरिक्त ४४ कवियों के छन्द लिखे। भक्तमाल, काव्यमाला (१७१८), सत्कविगिराविलास (१८०३), विद्वन्मोदतरंगिणी (१८७४), और रागसागरोद्भव (१९००) भी कुछ प्राचीन संग्रह हैं। सूदन ने भी प्रायः १५० कवियों के नाम लिखे हैं। भाषाकाव्यसंग्रह स्कूलों की एक पाठ्य पुस्तक मात्र थी। संवत् १९३० के लगभग ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने शिवसिंहसरोज नामक एक अनमोल ग्रन्थ बनाया, जिसमें उन्होंने प्रायः एक सहस्र कवियों का सूक्ष्म हाल प्रचुर श्रम द्वारा

एकत्र किया। दि माडर्न वर्नैकुलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान और 'कविकीर्तिकलानिधि' को भी डाक्टर ग्रियर्सन तथा पण्डित नकछेदी तिवारी ने लिखा, पर ये ग्रन्थ विशेषतया 'सरोज' पर ही अवलम्बित हैं। सर्कार हाल में आर्थिक सहायता देकर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी-पुस्तकों की खोज १९५७ से करा रही है। इससे बहुत से उत्तम ग्रन्थों और कवियों का पता लग रहा है। खोज पूरे प्रांत तथा राजस्थान इत्यादि में हो जाने पर उससे इतिहास की उत्तम सामग्री मिल सकेगी।

हिन्दी में समालोचना की चाल बहुत थोड़े दिनों से चली है। प्राचीन प्रथा के लोग समझते थे कि समालोचना करने में किसी भी कवि की निन्दा न करनी चाहिए। इस विचार के कारण समालोचना की उन्नति प्राचीन काल में न हुई। सबसे प्रथम हिन्दी में महाकवि दास ने समालोचना की ओर कुछ ध्यान दिया, पर बहुत दबी क़लम से कहने के कारण उन्होंने किसी के विषय में अधिक न कहा। भारतेन्दु जी भी इस ओर कुछ झुके थे यहाँ तक कि उत्तरी हिन्द के वे एक मात्र वर्त्तमान समालोचक कहलाते थे। समालोचक नामक एक पत्र भी हाल में निकला था और छत्तीसगढ़-मित्र भी समालोचना पर विशेष ध्यान देता था, पर कालगति से ये दोनों पत्र अस्त हो गये। अन्य पत्र-पत्रिकायें भी समय समय पर समालोचना करती हैं। व्रजनन्दनप्रसाद एवं महावीर-प्रसाद द्विवेदी ने कुछ समालोचनायें लिखी हैं। "हिन्दीनवरत्न" नामक समालोचना ग्रन्थ थोड़े ही दिन हुए हमने भी बनाया था।

आजकल रामलीला और रासलीला से भी हिन्दी का प्रचार कुछ कुछ होता है। इनमें राम और कृष्ण की कथाओं का अभिनय किया जाता है। रामलीला प्रथम तो साधारण जनों के ही द्वारा विजयदशमी के अवसर पर और कहीं कहीं दीवाली पर्यंत की जाती थी, पर थोड़े दिनों से रासमंडलियों की भाँति रामलीला की भी अभिनयमंडलियाँ स्थिर हुई हैं, जिन्होंने रासमंडलियों से बहुत अधिक उन्नति कर ली है और जो वर्त्तमान थियेटरों के कुछ कुछ बराबर पहुँच गई हैं। रासमंडलियाँ भी प्राचीन रीति पर थियेटर की सी लीलायें करती हैं; यद्यपि इनसे अब तक बहुत कम उन्नति हो सकी है। समय समय पर ग्रामों में कहीं कहीं बहुत दिनों से वर्षा ऋतु में आल्हा गाने की परिपाटी चली आती है। इसका छंद तुकान्तहीन बड़ाही ओजकारी होता है। इसमें महोबे के राजा परिमाल तथा वीरवर आल्हा-ऊदन का वर्णन होता है, जो प्रायः लड़ाइयों से भरा है। आल्हा की प्रतियाँ थोड़े ही दिनों से छपी हैं। यह नहीं ज्ञात है कि इसकी रचना किस कवि ने कब की थी। कहा जाता है कि चन्द के समकालीन जगनिक बन्दीजन ने पहले पहल आल्हा बनाया, पर उस समय की भाषा का कोई अंश भी अब आल्हा में नहीं है। कहते हैं कि क़न्नौज के किसी कवि ने वर्त्तमान आल्हा बनाया, पर इसका कोई प्रमाण नहीं है। जो कुछ हो, आल्हा की कविता स्थान स्थान पर परम ओजस्विनी और मनोहर है। पँवारा भी एक प्राचीन काव्य समझ पड़ता है। पर इसके रचयिता का भी पता नहीं है और न इसकी कोई मुद्रित अथवा लिखित प्रति ही मिलती है। पँवारा विशेषतया पासी लोग

गाते हैं और उसमें देशीय राजाओं एवं ज़िमींदारों का हाल रहता है। जहाँ जो पँवारा प्रचलित है वहाँ के बड़े आदमियों का उसमें यश वर्णित होता है। यह पँवार राजाओं के यशोवर्णन से प्रारम्भ हुआ जान पड़ता है, जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है। यदि कोई मनुष्य श्रम करके पासी आदिकों से इसे एकत्र करे तो विदित हो कि इस की रचनायें कैसी हैं। अभी तो पँवारा ऐसा नीरस समझा जाता है, कि लोग निन्दा करने में किसी नीरस और लम्बे प्रबन्ध को पँवारा कहते हैं।

हिन्दी के सौभाग्य से पिछले १५ या १६ वर्ष के अन्दर पाँच सात सभायें भी काशी, मेरठ, जौनपूर, आरा, प्रयाग, कलकत्ता आदि में स्थापित हुईं। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने संवत् १९५० में जन्म ग्रहण किया। तभी से इसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाती है। यह बराबर नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका निकालती रही है और अब ग्रन्थमाला एवं लेखमाला भी निकालने लगी है। ग्रन्थमाला में अच्छे अच्छे ग्रन्थ निकल गये और निकलते जाते हैं। हिन्दी को युक्तप्रान्त के न्यायालयों में जो स्थान मिला है, वह अधिकांश में इसी के प्रयत्नों का फल है। इसने तुलसीकृत रामायण और पृथ्वीराज रासो की परम शुद्ध प्रतियाँ प्रचुर श्रम द्वारा प्रकाशित कीं और १३ साल से सरकार से सहायता लेकर हिन्दी के प्राचीन ग्रन्थों की खोज में यह बड़ा ही सराहनीय श्रम कर रही है। इसने पदकों, प्रशंसापत्र आदि के द्वारा उत्तम लेखप्रणाली चलाने का प्रबन्ध किया और लेखकों को बहुत प्रोत्साहन दिया। अनेकानेक प्रयत्नों से इसने हिन्दी भाषा और

नागरी अक्षरों का प्रचार बढ़ाया। बहुत से विद्वानों की सहायता से यह एक वैज्ञानिक कोष तैयार कर चुकी है और अब एक बृहत् कोष भी बना रही है। यह इतिहास भी इसी की प्रेरणा से बना है।

आरा-नागरीप्रचारिणी सभा प्रायः दश वर्षों से विहार में स्थापित है। इसने भी हिन्दी के प्रचार में परम प्रशंसनीय श्रम किया है। अब तक हिन्दी का कोई सर्वमान्य व्याकरण नहीं है। यह सभा एक ऐसा व्याकरण बनवाना चाहती है।

मेरठ-सभा ने भी हिन्दीप्रचार में अच्छा श्रम किया; पर दुर्भाग्यवश पण्डित गौरीदत्त का स्वर्गवास हो जाने से वह अब सुषुप्तावस्था को प्राप्त हो गई है। जौनपूर-सभा का भी परिश्रम अच्छा है; पर इसकी भी दशा सन्तोषदायिनी नहीं है। प्रयाग की नागरीप्रवर्द्धिनी सभा अभी थोड़े ही दिनों से स्थापित हुई है, पर तो भी इसके उत्साह से हिन्दी के विशेष उपकार होने की आशा है। कलकत्ते की एकलिपिविस्तारपरिषद् प्रायः पाँच वर्षों से स्थापित हुई है। इसका अस्तित्व हिन्दी के लिए बड़े ही गौरव तथा सौभाग्य का कारण है। इसका यह प्रयत्न है कि भारत की सब भाषायें नागरी-लिपि में लिखी जावें। इसी अभिप्राय से इस सभा ने देवनागर नामक पत्र निकाल रक्खा है, जिसमें सभी भाषाओं के लेख नागरी-लिपि में लिखे जाते हैं। भाषाओं के एकीकरण में यह सभा परमोपयोगिनी है। भूतपूर्व हाईकोर्ट-जज श्रीयुत शारदाचरण मित्र इस सभा के जीवन-मूल हैं। महाराष्ट्र देश में बहुत काल से नागरी-लिपि का प्रचार चला आता है।

अब मदरास एवं बंगाल के विद्वानों ने भी इसी लिपि को ग्राह्य माना है, और गुजरात में भी इसका प्रचार बढ़ता देख पड़ता है; यहाँ तक कि श्रीमान् बरोदा-नरेश ने नागराक्षरों की शिक्षा आवश्यक कर दी है। काशी-सभा के प्रयत्नों से १९६७ के नवरात्र में काशी में प्रथम हिन्दीसाहित्यसम्मेलन नामक एक महती सभा हुई थी; जिसमें भी अन्य विषयों के साथ एक-लिपि-विस्तार के उपायों पर विचार हुआ था। प्रयाग और कलकत्ते में भी इसके अधिवेशन हुए। पौष १९६७ में इसी बात के पुष्ट्यर्थ प्रयाग में एक-लिपि-विस्तार-सम्मेलन हुआ, जिसमें भारतवर्ष के सभी देशों से विद्वान् महाशयों ने मदरास के जस्टिस कृष्णा स्वामी ऐयर के सभा-पतित्व में नागराक्षरों के प्रचारार्थ योग दिया और उन्हें सारे देश के लिए सर्वमान्य ठहराया। अब हिन्दी के सुदिन से आते देख पड़ते हैं। इन सभाओं के अतिरिक्त और भी छोटी बड़ी सभायें यत्र तत्र नागरी-प्रचारार्थ स्थापित हुई हैं। भारतधर्म्ममहामंडल और आर्य्यसमाज आदि धार्म्मिक सभायें भी व्याख्यानों, लेखों, पत्रों एवं ग्रन्थों द्वारा हिन्दीप्रचार में अच्छी सहायता कर रही हैं। इन सभाओं ने सबसे अधिक उपकार व्याख्यानदाता उत्पन्न करके किया है। बहुत से सनातनधर्म्मी और आर्य्यसमाजी उप-देशक धारा बाँध कर उत्तम हिन्दी में घंटों व्याख्यान दे सकते हैं। इनके नाम समालोचनाओं, चक्र एवं नामावली में मिलेंगे। सामा-जिक तथा जातीय सभायें भी हिन्दीप्रचार को अनेक प्रकार से लाभ पहुँचा रही हैं।

आज कल हिन्दी भाषा के छापेखाने बहुत हैं और उनकी छपाई भी बढ़िया होती है। उनमें वेंकटेश्वर, लक्ष्मीवेंकटेश्वर, निर्णय-सागर, इंडियन प्रेस, भारतमित्र, नवलकिशोर, भारतजीवन, भारत, हरिप्रकाश, खड्गविलास, अभ्युदय, वैदिकयन्त्रालय आदि प्रसिद्ध हैं।

समय समय पर समस्यापूर्ति के लिए स्थान स्थान पर कवि-समाज तथा मंडल भी स्थापित हुए हैं। उनमें से प्रधान प्रधान नाम नीचे लिखे जाते हैं:—

काशी-कविमण्डल, काशी-कविसमाज, बिसवाँ-कविमण्डल, रसिकसमाज कानपूर, हल्दी-कविसमाज, फ़तेहगढ़-कविसमाज, कालाकाँकर-कविसमाज इत्यादि।

ये सब समाज प्रायः २५ वर्ष के भीतर स्थापित हुए हैं। इन सबमें अधिकांश वही कविगण पूर्तियाँ भेजते थे। इनके पत्रों से वर्त्तमान कवियों के नाम ढूँढ़ने में हमें बड़ी सुविधा मिली है। इन सब में समस्यापूर्ति की जाती थी और।इनमें बहुत से छन्द प्रशंसनीय भी बनते थे। पर इस प्रथा से स्फुट छन्द लिखने की रीति चलती है, जो विशेषतया शृंगार रस के होते हैं। अब भाषा में शृंगार-कविता की आवश्यकता बहुत कम है, क्योंकि भूत-काल में कविता का यह अंग उचित से अधिक ऐसे ही ऐसे स्फुट छन्दों द्वारा भर चुका है। अब हिन्दी गद्य-पद्य में वर्त्तमान प्रकार के विविध उपकारी विषयों पर रचना की आवश्यकता है और नाटक-विभाग की पूर्ति और भी आवश्यक है। स्फुट छन्दों के लिए अब स्थान बहुत कम है। फिर भी यह समस्यापूर्ति की प्रथा स्फुट छन्दों ही की रचना बढ़ाती है। इन्हीं एवं अन्य कारणों से

हमने संवत् १९५७ में एक लेखद्वारा समस्यापूर्ति की रीति को परम निन्द्य कहा था। उस समय इस प्रथा का ख़ूब ज़ोर था, पर अब उतना नहीं है। फिर भी इस रीति को उठा कर उन पत्रों के बन्द कर देने से लाभ नहीं है, वरन् उन्हीं में उत्तम और लाभकारी विषयों पर छन्दोबद्ध प्रबन्ध या कविता का छपना हमारी तुच्छ बुद्धि में उचित है। इस हेतु कई समाजों का टूट जाना और उनके पत्रों का बन्द हो जाना बड़े दुःख की बात है, जैसा कि आज कल हुआ है।

हमने स्थान स्थान पर शृङ्गार कविता एवं अन्य अनुपयोगी विषयों की रचनाओं की निन्दा की है। फिर भी ऐसे ग्रन्थों के रचयिताओं की प्रशंसा भी इसी ग्रन्थ में पाई जावेगी। इससे कुछ पाठकों को ग्रन्थ में परस्पर विरोधी भावों के होने की शंका उठ सकती है। बहुत से वर्त्तमान लेखकों का यह भी मत है कि शृंगार काव्य ऐसा निन्द्य है कि हिन्दी में उसका होना न होने के बराबर है और यदि ऐसे ग्रन्थ फेंक भी दिये जावें, तो कोई विशेष हानि नहीं। इन कारणों से उचित जान पड़ता है कि इस विषय पर हम अपना मत स्पष्टतया प्रकट कर देवें।

सबसे पहले पाठकों को कविता के शुद्ध लक्षण पर ध्यान देना चाहिए। पण्डितों का मत है कि अलौकिक आनन्द देना काव्य का मुख्य गुण है। कुलपति मिश्र ने काव्य का लक्षण यह कहा है:—

जगते अद्भुत सुखसदन शब्दरु अर्थ कवित्त।
यह लक्षण मैंने कियो समुझि ग्रन्थ बहु चित्त॥"

इसी आशय का एक लक्षण हमने भी कहा था।

वाक्य अरथ वा एकहू जहँ रमनीय सु होय।
सिरमौरहु शशिभाल मत काव्य कहावै सोय॥

इन लक्षणों के अनुसार उपर्युक्त प्रकार के ग्रन्थ भी आदरणीय हैं। जो प्रबन्ध जैसा ही आनन्द देता है, वह वैसा ही अच्छा काव्य है, चाहे जो विषय उसमें कहा गया हो। फिर वर्णन जैसा ही उत्कृष्ट होगा, कविता भी उसकी वैसी ही प्रशंसनीय होगी। विषय की उपयोगिता भी काव्योत्कर्ष को बढ़ाती है, पर साहित्य-चमत्कार-वर्द्धन की वह एकमात्र जननी नहीं है। इस कारण अनुपयोगी विषय वाले चमत्कृत ग्रन्थों को हम तिरस्करणीय नहीं समझते। किसी प्रसिद्ध आचार्य्य ने भी ऐसे ग्रन्थों के प्रतिकूल मत प्रकट नहीं किया है। इन ग्रन्थों से भी साहित्य-भंडार ख़ूब भरा हुआ देख पड़ता है और वास्तव में है। अभी उपयोगी विषयों के अभाव से बहुत लोगों को ये ग्रन्थ सौत के से लड़के समझ पड़ते हैं, परन्तु जिस समय लाभकारी विषयों के ग्रन्थ प्रचुरता से बन जावेंगे, जैसा शीघ्र हो जाने की दृढ़ आशा की जाती है, उस समय इन ग्रन्थों के बाहुल्य से भी हिन्दी की महिमा एवं गौरव में ख़ूब सहायता मिलेगी। आज कल भी ग्रन्थ-भंडार की बहुतायत से हिन्दी भारत की सभी वर्त्तमान भाषाओं से बहुत आगे बढ़ी हुई है। हम अनुचित विषयों पर शोक अवश्य प्रकट करते हैं, परन्तु हिन्दी के सभी उत्कृष्ट ग्रन्थों का समादर पूर्णरूप से करना बहुत उचित समझते हैं।

निदान इस वर्त्तमान काल में हिन्दी ने बहुत अच्छी उन्नति की है और उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होने के चिह्न चारों ओर से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अब हम इस अध्याय को इसी जगह समाप्त-प्राय कर इस काल के लेखकों के कुछ विस्तृत वृत्तांत आगे समालोचना, चक्र, और नामावली द्वारा लिखते हैं। जिन महाशयों के नाम चक्र अथवा नामावली मात्र में आये हैं उन्हें भी हम न्यून नहीं समझते। केवल विस्तार-भय से ऐसा करने को हम बाध्य हुए हैं। इनमें से कतिपय महानुभावों के ग्रन्थ देखने अथवा विशेष हाल जानने का भी सौभाग्य हमें नहीं प्राप्त हुआ।

इस भाग में संवत् १९२६ से अब तक का हाल लिखा गया है। इसे हमने दो भागों में विभक्त किया है, अर्थात् प्रथम हरिश्चन्द्र काल (१९४१ तक) और द्वितीय गद्य-काल (अब तक)। इन दोनों भागों के पूर्व और उत्तर नामक दो दो उपविभाग किये गये हैं।

इस प्रकरण के मुख्य विषय को उठाने से प्रथम हम पत्र-पत्रिकाओं का भी कुछ वर्णन करना उचित समझते हैं।

समाचारपत्र एवं पत्रिकायें।

हिन्दी में प्रेस के अभाव से समाचारपत्रों का प्रचार थोड़े ही दिनों से हुआ है। वारन हेस्टिंग्स के समय में संवत् १८३७ के लगभग बनारस ज़िले में किसी स्थान पर खोदने से दो प्रेस निकले थे, जिन में वर्त्तमान समय की भाँति टाइप इत्यादि सब सामान था और टाइप जोड़ने का क्रम भी प्रायः आज कल के समान ही था। पुरातत्त्ववेत्ता अँगरेज़ों का यह मत है कि यह प्रेस कम से कम

एक हज़ार वर्ष का प्राचीन है। इस हिसाब से स्वामी शंकराचार्य के समय तक में प्रेस होने का पता चलता है। फिर भी छापे का प्रचार यहाँ अँगरेज़ी राज्य के पूर्व बिल्कुल न था और इसी कारण समाचार-पत्र भी प्रचलित न थे। "हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास" नामक एक ग्रन्थ बाबू राधाकृष्णदास ने सन् १८९४ (संवत् १९५१) में प्रकाशित कराया था जो नागरीप्रचारिणी सभा, काशी से अब भी मिलता है। इसमें प्राचीन पत्र-पत्रिकाओं केवर्णन पाये जाते हैं। आशा है कि सभा इस का एक नया संस्करण निकाल कर पिछले १७-१८ वर्ष के भीतर का हाल भी पूरा कर देगी।

सबसे पहला हिन्दी पत्र "बनारस अख़बार" था, जो संवत् १९०२ में राजा शिवप्रसाद की सहायता से निकला। इसकी भाषा खिचड़ी थी और सभ्य समाज में इसका आदर नहीं हुआ। इसके सम्पादक गोविन्द रघुनाथ थत्ते थे। साधु हिन्दी में एक उत्तम समाचारपत्र निकालने के विचार से कई सज्जनों ने काशी से 'सुधाकर' पत्र निकाला। सबसे पहले परमोत्कृष्ट पत्र जो हिन्दी में निकला वह भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित 'कवि-वचनसुधा' था, जो संवत् १९२५ से प्रकाशित होने लगा। सुधा पत्र पहले मासिक था, पर थोड़े ही दिनों बाद पाक्षिक होकर साप्ताहिक हो गया। इसकी लेखनशैली बहुत गम्भीर तथा उन्नत थी। इसमें गद्य तथा पद्य में लेख निकलते थे और वह सभी तरह से संतोषदायक थे। संवत् १९३७ के पीछे भारतेंदुजी ने यह पत्र पण्डित चिन्तामणि को दे दिया, जिनके प्रबन्ध से यह संवत् १९४२ तक निकल कर बन्द हो गया। संवत् १९२९ में बाबू

कार्तिकप्रसाद ने कलकत्ते से 'हिन्दी-दीप्ति-प्रकाश' निकाला। यह पत्र प्रसिद्ध पत्र हिन्दी-प्रदीप से अलग था। इसी साल बिहार से 'बिहारबन्धु' का जन्म हुआ। भारतेन्दुजी ने संवत् १९३० में "हरिश्चन्द्र मैगज़ीन" निकाली, जिसका नाम बदल कर दूसरे साल 'हरिश्चन्द्रचन्द्रिका' कर दिया, जो संवत् १९४२ तक किसी प्रकार निकलती रही। संवत् १९३४ में भारतमित्र, मित्रविलास, हिन्दीप्रदीप और आर्यदर्पण नामक प्रसिद्ध पत्रों का जन्म हुआ। 'भारतमित्र' पं० दुर्गाप्रसाद तथा अन्य महाशयों ने निकाला। यह पहला साप्ताहिक पत्र है, जो बड़ी उत्तमता से निकाला गया और जिसकी प्रणाली बड़ी गौरवान्वित रही है। इसके सम्पादकों में हरमुकुन्द शास्त्री और बालमुकुन्द गुप्त प्रधान हुए। गुप्त जी के लेख बड़े ही हँसी-दिल्लगी-पूर्ण तथा गम्भीर होते थे। इस वर्ष से इसका एक दैनिक संस्करण भी निकलने लगा है। 'मित्रविलास' पंजाब का एक बढ़िया हिन्दी-पत्र था। "हिन्दीप्रदीप" प्रयाग से पंडित बालकृष्णजी भट्ट ने निकाला। इसमें बड़ेही गम्भीर तथा उच्च-कोटि के लेख निकलते रहे। यह पत्र हिन्दी-भाषा का गौरव समझा जाता था और घाटा खाकर भी भट्ट जी उदारभाव से इसे बहुत दिनों तक निकालते रहे। परन्तु हाल में कुछ राजनैतिक अड़चन पड़ी, जिसपर विवश होकर भट्ट जी ने इसे बन्द कर दिया। संवत् १९३५ में कलकत्ता से 'सारसुधानिधि' और 'उचितवक्ता' नामक पत्र निकले। उचितवक्ता को स्वर्गीय पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र ने निकाला और 'सारसुधानिधि' के संपादक प्रसिद्ध लेखक पंडित सदानन्द जी थे। संवत् १९३६ में उदयपुराधीश महाराणा

सज्जनसिंह जू देव ने प्रसिद्ध पत्र 'सज्जनकीर्तिसुधाकर' निकाला। महाराणा जी के अकाल मृत्यु से हिन्दी की बड़ी ही क्षति हुई। संवत् १९३९ में पंडित प्रतापनारायण मिश्र ने कानपूर से प्रसिद्ध ब्राह्मण पत्र निकाला, जिसने पठित समाज में अपने लेखों के चटकीलेपन से बहुत ही आदर पाया, परन्तु ग्राहकों की अनुदारता से यह स्थायी न हो सका। संवत् १९४० में हिन्दी का प्रसिद्ध पत्र 'हिन्दोस्तान' पहले पहल प्रायः दो वर्ष अँगरेज़ी में निकला, फिर प्रायः दो मास अँगरेज़ी तथा हिन्दी में निकल कर एक बरस तक अँगरेज़ी, हिन्दी और उर्दू में छापा गया। उस समय तक यह मासिक था। इसके पीछे यह दस महीने तक साप्ताहिक रूप से अँगरेज़ी में इँगलैंड से निकला। १ नवंबर सं० १९४२ से यह पत्र दैनिक कर दिया गया। इस पत्र के स्वामी राजा रामपालसिंह सदा इस के सम्पादक रहे और सहकारी सम्पादकों में बाबू अमृतलाल चक्रवर्ती, पंडित मदनमोहन मालवीय और बाबू बालमुकुन्द गुप्त जैसे प्रसिद्ध लोगों की गणना है। राजा साहब के मृत्यु के साथही साथ यह पत्र भी विलीन हो गया। कुछ दिन पश्चात् उनके उत्तराधिकारी हमारे मित्रराजा रमेशसिंह जी ने 'सम्राट्' पत्र को पहले साप्ताहिक और फिर दैनिक रूप में निकाला, परन्तु हिन्दी के अभाग्य से राजा रमेशसिंह जी की असामयिक मौत के कारण वह भी बन्द हो गया। सं० १९४० से प्रसिद्ध पत्र 'भारतजीवन' बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने साप्ताहिकरूप में काशी से निकाला, जिसमें बहुत दिन तक नागरीप्रचारिणी सभा की कार्यवाही छपती रही और अभी तक वह सफलता से चल रहा है। संवत्

१९४२ में कानपूर से भारतोदय दैनिक पत्र बाबू सीताराम के सम्पादकत्व में निकला, जो एकही साल चल कर बन्द हो गया। संवत् १९४४ व ४६ में 'आर्यावर्त' और 'राजस्थान' नामक दो पत्र आर्यसमाज की तरफ़ से निकले जो अब तक विद्यमान हैं। संवत् १९४५ में 'सुगृहिणी' मासिकपत्रिका हेमंतकुमारी देवी ने निकाली। सं० १९४६ में श्रीमती हरदेवी ने 'भारतभगिनी' मासिक रूप में निकाली जो अब तक चल रही है। संवत् १९४७ में सुप्रसिद्ध पत्र 'हिन्दी-बंगवासी' का जन्म हुआ, जो बड़ी उत्तमता से चल रहा है और जिसकी ग्राहकसंख्या शायद सब हिन्दीपत्रों से अधिक है। पंडित कुंदनलाल ने संवत् १९४८ से कुछ दिन "कवि व चित्रकार" पत्र निकाला, पर उन के स्वर्गवास होने पर वह बन्द हो गया।

बम्बई का श्रीवेंकटेश्वरसमाचार भी एक नामी साप्ताहिक पत्र है, जो प्रायः बीस वर्ष से हिन्दी की अच्छी सेवा कर रहा है। इधर प्रयाग से अभ्युदय पत्र बहुत अच्छा निकल रहा है। यह पहले साप्ताहिक था, पर अब अर्द्ध साप्ताहिक रूप में निकलता है। लखनऊ के बाबू कृष्णबलदेव वर्मा ने "विद्याविनोद" नामक साप्ताहिक पत्र कुछ दिन प्रकाशित किया था। "हिन्दीकेसरी" गरम दल वालों ने निकाला। आज दिन भारतमित्र के अतिरिक्त सर्वहितैषी पत्र भी दैनिक निकलता है।

संवत् १९५६ से सुप्रसिद्ध मासिकपत्रिका सरस्वती का विकास प्रयाग से हुआ और प्रायः सभी तत्कालीन नामी लेखक उसमें लेख देने लगे। इसके सम्पादन का भार पहले पाँच सज्जनों

की एक समिति पर रहा और पीछे से केवल बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० को यह काम सम्हालना पड़ा। अंत में पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सम्पादनभार उठाया और एक वर्ष को छोड़, जब कि पंडित देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए० सम्पादकत्व के काम पर रहे, द्विवेदीजी इसे बड़ी योग्यता के साथ चला रहे हैं। कमला, लक्ष्मी, सुदर्शन, समालोचक, छत्तीसगढ़ मित्र, राघवेन्द्र, यादवेन्द्र, इत्यादि कई पत्र पत्रिकायें इसी ढंग पर निकलीं, पर स्थिर न रह सकीं। अब कुछ काल से "मर्यादा" नामक मासिक पत्रिका बड़ेही उत्तम रङ्ग ढङ्ग पर चलने लगी है। स्त्रियों के उपयोगी पत्र-पत्रिकाओं में भारतभगिनी, स्त्रीधर्मशिक्षक, गृहलक्ष्मी और स्त्री-दर्पण प्रसिद्ध हैं। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा एक मासिक-पत्रिका, एक त्रैमासिक ग्रन्थमाला और एक लेखमाला प्रकाशित करती है। देवनागर अनेक भाषाओं के लेखों को नागरी अक्षरों में प्रकाशित कर और अन्य उपायों द्वारा हिन्दी-भाषा और विशेषतया नागरी लिपि का अच्छा उपकार कर रहा है। चित्रमयजगत् हिन्दी-पत्रों में बड़े ही गौरव का है। यह थोड़े ही दिनों से निकलने लगा है, पर इसके चित्र बड़े ही मनोरंजक और लेख प्रशंसनीय होते हैं। कवितासम्बन्धी पत्रों में रसिकवाटिका, रसिकमित्र, काव्यसुधाधर, हल्दीकविकीर्तिप्रचारक इत्यादि कई पत्र निकले, जिनमें कतिपय कवियों की रचनायें अच्छी कही जा सकती हैं। इन्दु, जासूस, व्यापारी, खेतीबारी, देहाती, निगमागमचन्द्रिका, सद्धर्मप्रचारक, सनातनधर्मपताका, अवधसमाचार, अमृत, अबलाहितकारक, आनन्द, आर्य्यप्रभा, आर्य्यमित्र, उपन्यास, कला-

कुशल, कबीरपंथी, कान्यकुब्ज, कान्यकुब्जहितकारी, कान्यकुब्ज-सुधारक, कुर्मीहितैषी, खत्रीहितकारी, गढ़वाली, चाँद, जीवदया-धर्मामृत, जैनगज़ट, टाडनामा, जैनप्रदीप, दारोग़ादफ़्तर, तंत्र-प्रभाकर, नवजीवन, नागरीप्रचारक, दीनबंधु, पांचालपंडिता, विलासिनी, बड़ाबाज़ारगज़ट, बालप्रभाकर, वीरभारत, ब्राह्मण-सर्वस्व, भूमिहारब्राह्मण-पत्रिका, भारतवासी, मारवाड़ी, मिथिला-मिहिर, यंगविहार, राजपूत, रसिकरहस्य, राजस्थानकेसरी, सद्धर्म, सत्यसिंधु, सारस्वत, सोलजरपत्रिका, साहित्यसरोज, स्वदेशबांधव, हितवार्ता, सुधानिधि, हिन्दीप्रकाश, हिन्दीसाहित्य, हिन्दूबांधव, क्षत्रियमित्र आदि ऐसे सामयिक पत्र हैं जो बाबू राधाकृष्णदास-कृत इतिहास के लिखे जाने बाद प्रकाशित होने लगे। इनमें से कतिपय बन्द भी होगये, पर अधि-कांश अब तक चल रहे हैं और उनसे हिन्दी की अच्छी सेवा हो रही है। तो भी कहना ही पड़ता है कि इनसे और भी विशेष लाभ हो सकता है और हमें दृढ़ आशा है कि इनके विज्ञ सम्पादक-गण इस ओर क्रमशः समुचित प्रकार से ध्यान देंगे। समयोपयोगी विचारों और विषयों की ओर पूर्ण झुकाव हुए विना अब काम नहीं चल सकता।

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र ।

छत्तीसवाँ अध्याय।

पूर्व हरिश्चन्द्र-काल।

(१९२६—३५)

(२१६६) भारतेंदु हरिश्चन्द्रजी।

इनका जन्म संवत् १९०७ में भाद्र शुक्ल ७ को काशीजी में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपालचन्द्र (उपनाम गिरधरदास) था। ये अग्रवाल वैश्य थे। इन्होंने बाल्यावस्था में पढ़ने में अधिक जी नहीं लगाया। केवल ११ वर्ष की अवस्था तक इन्होंने विद्याध्ययन किया, परन्तु पीछे से शौक़िया बहुत सी भाषाओं तथा विद्याओं का अभ्यास कर लिया था। इन्होंने बहुत से स्वदेशप्रेम के काम किये और हिन्दी-गद्य को इनसे बहुत सहायता मिली। इनका चित्त बहुत ही मज़ाकपसन्द था। पहली अप्रैल एवं होली को ये बिना कुछ दिल्लगी किये नहीं रहते थे। उदारता इनकी बहुत ही बढ़ी चढ़ी थी, यहाँ तक कि इन्होंने अपने भाग की पैत्रिक सम्पत्ति बहुत जल्द स्वाहा कर दी। इनका शरीरपात संवत् १९४१ में काशी में हुआ।

सत्रह वर्ष की अवस्था से इन्होंने काव्यरचना आरंभ कर दी थी और अन्त समय तक ये काव्यानन्द ही में मग्न रहे। इनकी रचनाओं का संग्रह छः भागों में खड्गविलास प्रेस से प्रकाशित हुआ है। सब मिलाकर इनके छोटे बड़े १७५ ग्रन्थ इस संग्रह में हैं। प्रथम भाग में १८ नाटक और १ ग्रन्थ नाटकों के नियमों का है।

इनमें सत्यहरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, चन्द्रावली, भारतदुर्दशा, नीलदेवी, और प्रेमयोगिनी प्रधान हैं। भारतदुर्दशा और नीलदेवी में भारतेन्दुजी का स्वदेशप्रेम दर्शनीय है। चन्द्रावली से इनके असीम प्रेम और भक्ति का अच्छा परिचय मिलता है। सत्यहरिश्चन्द्र भारतेन्दुजी की कवित्व-शक्ति का एक अद्‌भुत नमूना है। प्रेमयोगिनी में इन्होंने अपने विषय की बहुत सी बातें लिखी हैं। इसमें हँसी मज़ाक़ का अच्छा चमत्कार है। द्वितीय भाग इनके रचित इतिहास-ग्रन्थों का संग्रह है, जिसमें काश्मीरकुसुम, बादशाहदर्पण और चरितावली प्रधान हैं। चरितावली में इन्होंने अच्छे अच्छे महानुभावों के चरित्रों का वर्णन किया है। तृतीय भाग में राजभक्तिसूचक काव्य है। इसमें १३ ग्रन्थ हैं, परन्तु उनकी रचना उत्कृष्ट नहीं हुई है। चतुर्थ भाग का नाम भक्तिसर्वस्व है। इसमें १८ भक्तिपक्ष के ग्रन्थ हैं, जिनमें वैष्णवसर्वस्व, वल्लभीयसर्वस्व, उत्तरार्द्ध भक्तमाल तथा वैष्णवता और भारतवर्ष उत्तम रचनायें हैं। पंचम भाग का नाम काव्यामृतप्रवाह है। इसमें १८ प्रेम-प्रधान ग्रन्थ हैं, जिनमें प्रेमफुलवारी, प्रेमप्रलाप, प्रेममालिका और कृष्णचरित्र प्रधान हैं। नाटकावली के अतिरिक्त भारतेन्दुजी का यह भाग सर्वोत्तम है। छठे भाग में हँसीमज़ाक़ के चुटकुले और छोटे छोटे कई निबन्ध तथा अन्य लोगों के बनाये हुए कई ग्रन्थ हैं, जो इनके द्वारा प्रकाशित हुए थे।

इनकी कविता का सर्वोत्तम गुण प्रेम है। इनके हृदय में ईश्वरीय एवं सांसारिक प्रेम बहुत अधिक था; इसी कारण इनकी रचना में प्रेम का वर्णन बहुत ही अच्छा आया है। भारतेन्दुजी

अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। इनको हिन्दूपन तथा जातीयता का बहुत ही बड़ा ध्यान रहता था। हास्य की मात्रा भी इनकी रचनाओं में विशेषरूप से पाई जाती है। वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, अंधेरनगरी और प्रेमयोगिनी में हास्यरस का अच्छा समावेश है। इनकी कविता बड़ी सबल होती थी और विविध विषयों के वर्णनों में इस कवि ने अच्छी शक्ति दिखलाई है। सौंदर्य को यह सभी स्थानों पर देखता और अपनी कविता में उसे हर स्थान पर सन्निविष्ट करता था। रूपक भी भारतेन्दुजी ने बहुत विशद लिखे हैं। राजनैतिक तथा सामाजिक सुधारों पर इन्होंने अपने विचार जगह जगह पर सबल भाषा में प्रकट किये हैं। इस कविरत्न ने पद्य में व्रजभाषा का और गद्य में खड़ी बोली का विशेषतया प्रयोग किया है, परन्तु उर्दू, खड़ी बोली, व्रजभाषा, माड़वारी, गुजराती, बंगला, पंजाबी, मराठी, राजपूतानी, बनारसी, अवधी आदि सभी भाषाओं में उत्कृष्ट और सरस रचनायें की हैं। इन्होंने गद्य और पद्य प्रायः बराबर लिखे हैं। ग्रन्थों के अतिरिक्त बाबू साहब ने कई समाचारपत्र और पत्रिकायें चलाईं। वर्त्तमान हिन्दी की इनके कारण इतनी उन्नति हुई कि इनको इसका जन्मदाता कहने में भी अत्युक्ति न होगी। यदि इनका विशेष वर्णन देखना चाहिए तो हमारे रचित नवरत्न में देखिए। उदाहरण—

हम हूँ सब जानतीं लोक की चालन क्यों इतनो बतरावती हौ।
हित जामैं हमारो बनै सो करौ सखियाँ तुम मेरी कहावती हौ॥
हरिचन्दजू या मैं न लाभ कछू हमैं बातन क्यौं बहरावती हौ।
सजनी मन हाथ हमारे नहीं तुम कौन को का समुझावती हौ॥१॥

पचि मरत वृथा सब लोग जोग सिरधारी।
साँची जोगिन पिय बिना बियोगिन नारी॥
बिरहागिनि धूनी चारौं ओर लगाई।
बंसीधुनि की मुद्रा कानों पंहिराई॥
लट उरझि रही सोइ लटकाई लट कारी।
साँची जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी॥
है यह सोहाग का अटल हमारे बाना।
असगुन की मूरति ख़ाक न कभी चढ़ाना॥
सिर सेंदुर देकर चोटी गूथ बनाना।
सिवजी से जोगी को भी जोग सिखाना॥
पीना प्याला भर रखना वही खुमारी॥
साँची जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी॥२॥
भरित नेह नव नीर नित बरसत सुरस अथोर।
जयति अपूरब घन कोऊ लखि नाचत मन मोर॥३॥
उठहु बीर रण साज साजि जय ध्वजहि उड़ाओ।
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रन रङ्ग जमाओ॥
परिकर कसि कटि उठौ धनुष सों धरि सर साधौ।
केसरिया बानो सजि सजि रनकंकन बाँधो॥
जो आरजगन एक होय निज रूप विचारैं।
तजि गृह-कलहहिँ अपनी कुलमरजाद सँभारैं॥
तौ अमीरखाँ नीच कहा याको बल भारी।
सिंह जगे कहुँ स्वान ठहरिहै समर मँझारी॥
चींटिहु पद तल परे डसत है तुच्छ जंतु इक।
ये प्रतच्छ अरि इन्हैं उपेछै जौन ताहि धिक॥

धिक तिन कहँ जे आर्य्य होय यवनन को चाहैं ।
धिक तिन कहँ जे इनसों कछु सम्बन्ध निबाहैं ॥
उठहु बीर सब अस्त्र साजि माड़हु घन संगर ।
लोह-लेखनी लिखहु अज्ज बल दुवन हृदै पर ॥४॥
सब भाँति दैव प्रतिकूल होय यहि नासा ।
अब तजहु बीरवर भारत की सब आसा ॥
अब सुख-सूरज को उदै नहीं इत ह्वैहै ।
सो दिन फिरि अब इत सपनेहू नहिँ ऐहै ॥
स्वाधीनपनो बल बीरज सबै नसैहै ।
मंगलमय भारत भुव मसान ह्वै जैहै ॥
सुख तजि इत करि है दुःखहि दुःख निवासा ।
अब तजहु बीरवर भारत की सब आसा ॥५॥

यहाँ कवि ने स्वाधीनपनो आदि शब्दों से मानसिक स्वतन्त्रता का भाव लिया है न कि राजनैतिक का। यह कवि भारत का अँगरेज़ों से सम्बन्ध मंगलकारी समझता था और राजभक्ति के इसने कई ग्रन्थ रचे। इसके विलाप भारतीय मानसिक दुर्बलता-विषयक हैं।

(२१७०) तोताराम।

इनका जन्म संवत् १९०४ में कायस्थ कुल में हुआ था। कुछ दिन सरकारी नौकरी करके इन्होंने अलीगढ़ में वकालत जमाई, जहाँ इनकी आय प्रायः अयुत मुद्रा सालाना थी। आप प्रकृति से परम सुशील थे। अलीगढ़ में हम लोगों का इनसे परिचय हुआ था और

इन्हें हमने अपना लवकुशचरित्र सुनाया था। इन्होंने कुछ दिन भारतबंधु नामक साप्ताहिक पत्र भी निकाला। केटो-कृतान्त नामक इन्होंने एक नाटकग्रन्थ बनाया और वाल्मीकीय रामायण का आप रामरामायण नामक एक उलथा स्वच्छ दोहा चौपाइयों में बनाते थे, पर वह पूर्ण न होसका। उसका बालकांड इन्होंने हमें दिया था। हम इनकी गणना मधुसूदन दास की श्रेणी में करेंगे। संवत् १९५९ में इनका शरीरपात हुआ।

(२१७१) देवीप्रसाद मुंशी।

ये महाशय गौड़ कायस्थ मुंशी नत्थनलाल के पुत्र हैं। इनका जन्म नाना के घर जयपूर में माघ सुदी १४ संवत् १९०४ को हुआ था। संवत् १९२० से १९३४ पर्य्यन्त ये नवाब टोंक के यहाँ नौकर रहे और संवत् १९३६ से महाराज जोधपुर के यहाँ कर्म्मचारी हो गये। ये महाशय बहुत दिनों तक मुंसिफ़ रहे और मनुष्यगणना आदि का काम करके अब दरबार की ओर से प्राचीन शिलालेखों आदि की खोज का काम करते हैं। प्रत्येक पद पर अपने ऊँचे अफ़सरों को इन्होंने अच्छे काम से सदैव प्रसन्न रक्खा। पहले इन्हें उर्दू गद्य और पद्य लिखने का चाव था, पर पीछे से ये हिन्दी-गद्य के भी अच्छे लेखक हो गये। इन्होंने उर्दू की बहुत सी पुस्तकें बनाईं और हिन्दी में भी दरबार की आज्ञा से क़ानून तथा मनुष्य-गणना आदि से सम्बन्ध रखने वाले छोटे बड़े कई उपयोगी ग्रन्थ रचे। इन्होंने सबसे अधिक श्रम इतिहास पर किया और बहुत छान बीन कर के

इस विषय पर बहुत से परमोपयोगी ग्रन्थ रचे, जिन्हे इन्होंने ऐसी सरल भाषा में लिखा है कि प्रत्येक हिन्दी पढ़ लेने वाला परम स्वल्पज्ञ मनुष्य भी समझ सकता है। इतिहास के विषय पठितसमाज में आज इनका प्रमाण माना जाता है। महिलामृदुवाणी तथा राजरसनामृत नामक दो काव्य-ग्रन्थ भी इन्होंने संगृहीत किये हैं और कवियों की एक नामावली संकलित की है जो प्रकाशित होने वाली है। इनके रचे हुए ऐतिहासिक जीवनचरित्रों के नायक ये हैं:—

अकबर, शाहजहाँ, हुमायूँ, तुहमास्प (ईरान का शाह), बाबर, शेरशाह, साँगा (राणा), रतनसिंह, विक्रमादित्य (चित्तौर), वनवीर, उदयसिंह, प्रतापसिंह, पृथ्वीराज (जयपूर), पूरनमल, रतनसिंह, आसकरण, राजसिंह, (जयपूर), भारमल, भगवानदास, मानसिंह, बीकाजी, नराजी, लूणकरण, जैतसी, कल्याणमल, मालदेव, बीरबल (दो भागों में), मीरा बाई, जसवन्तसिंह (मारवाड़), ख़ानख़ाना, और औरंगज़ेब।

इन जीवनियों के अतिरिक्त नीचे लिखे हुए मुंशीजी के अन्य ग्रन्थ हैं:—

जसवन्तस्वर्गवास, सरदारसुखसमाचार, विद्यार्थीविनोद, स्वप्न राजस्थान, मारवाड़ का भूगोल तथा नक़शा, प्राचीन कवि, बीकानेर राजपुस्तकालय, इंसाफ़संग्रह, नारी नवरत्न, महिलामृदुवाणी, मारवाड़ के प्राचीन शिलालेखों का संग्रह, सिंध का प्राचीन इतिहास, यवनराजवंशावली, मुग़लवंशावली, युवतीयोग्यता, कविरत्नमाला, अरबी भाषा में संस्कृतग्रन्थ, रूठी रानी, परिहारवंशप्रकाश, और परिहारों का इतिहास।

इन ग्रन्थों का हाल हमें स्वयं मुंशीजी से ज्ञात हुआ है। आपने कविरत्नमाला वाले कवियों के नामों की एक हस्तलिखित सूची भी हमारे पास भेजने की कृपा की है। इसमें ७५४ नाम हैं। उपर्युक्त ग्रन्थों में बहुत से हमने देखे हैं और उनमें से बहुत से हमारे पास वर्त्तमान भी हैं। इन्होंने इतिहास-ग्रन्थों में गद्य-काव्य न लिख कर सीधी सादी इबारत में सत्य घटनाये लिखने का प्रयत्न किया है। रूठी रानी एक प्रकार से उपन्यास भी है। इनके अच्छे गद्य-लेखों की भाषा सुलेखकों की सी होती है। इनके प्रयत्नों से हिन्दी में इतिहासविभाग की अच्छी पूर्ति हुई है। उदाहरण—

दूसरे चित्र में एक सिंहासन बना था। ऊपर शामियाना तना था। उस सिंहासन पर एक भाग्यवान् पुरुष पावँ पर पावँ रक्खे बैठा था; तकिया पीठ से लगा था। पाँच सेवक आगे पीछे खड़े थे और वृक्ष की शाखा उस सिंहासन पर छाया किये हुए थी।

जहाँगीरनामा (पृष्ठ १४४)।

(२१७२) जगमोहनसिंह।

इनका जन्म संवत् १९१४ में विजयराघवगढ़ में हुआ। ठाकुर सरयूसिंहजी इनके पिता एक राजा थे, पर संवत् १९१४—१५ वाले विद्रोह में उनका राज्य सरकार ने ज़ब्त कर लिया। जगमोहनसिंहजी ने काशी में विद्या पढ़ी, जहाँ इनसे भारतेन्दुजी से स्नेह हुआ। ये १६ वर्ष की ही अवस्था से कविता करने लगे थे। पहले इन्हें सरकार ने तहसीलदार नियत किया और दो ही वर्ष में, संवत् १९३९ में, यक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर कर दिया। यह वही पद है

जो यहाँ डेपुटी कलेक्टर के नाम से प्रख्यात है। इन्होंने सरकारी नौकरी के समय भी साहित्यरचना को नहीं भुलाया और अवकाश पा कर ये बराबर ग्रन्थरचना करते रहे। इनका शरीरपात थोड़ी ही अवस्था में संवत् १९५५ में हो गया। इनके बनाये हुए ग्रन्थ ये हैं:—श्यामास्वप्न, श्यामसरोजिनी, प्रेमसम्पत्तिलता, मेघदूत, ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, प्रेमहज़ारा, सज्जनाष्टक, प्रलय, ज्ञानप्रदीपिका, सांख्य (कपिल) सूत्रों की टीका, वेदान्त सूत्रों (बादरायण) पर टिप्पणी और वानी वाई विलाप। हमारे देखने में इनके ग्रन्थ नहीं आये पर सुनते हैं कि वे उत्तम हैं। उदाहरण—

आई शिशिर बरोरु शालि अरु ऊखन संकुल धरनी।
प्रमदा प्यारी ऋतु सोहावनी क्रौंच रोर मनहरनी॥
मूँदे मन्दिर उदर झरोखे भानु किरन अरु आगी।
भारी बसन हसन मुख बाला नव योवन अनुरागी॥

(२१७३) गदाधरसिंह (बाबू)।

इनका जन्म संवत् १९०५ में हुआ था। इन्होंने कुछ दिन व्यापार किया, पर उसके न चलने से सरकारी नौकरी कर ली और अन्त तक उसे करते रहे। हिन्दी की इन्हें बड़ी रुचि थी और इन्होंने अन्त समय अपना पुस्तकालय एवं सब धन काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को दे दिया। इन्होंने कादम्बरी, वंगविजेता, दुर्गेशनन्दिनी, और ओथेलो के भाषानुवाद किये तथा रोमन उर्दू की पहली पुस्तक, एवं भगवद्गीता नामक पुस्तकें बनाईं। ये ऐतिहासिक और पौराणिक विवरण की एक डायरी नामक एक

उत्तम पुस्तक लिख रहे थे; पर वह असमाप्त रह गई और संवत् १९५५ में इनका शरीरपात हो गया।

(२१७४) श्रीनिवासदास लाला।

ये महाशय अजमेरा वैश्य लाला मंगीलाल के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १९०८ कार्तिक सुदी परिवा को मथुरा में हुआ था। राजा लक्ष्मणदास की ओर से ये महाशय उनकी दिल्ली वाली कोठी के संचालक और एक बड़े रईस थे। इनकी कविता अमृत में डुबोई होती थी। भारतेन्दु के अतिरिक्त इन्हीं ने हिन्दी में उत्कृष्ट नाटक बनाये हैं। तप्ता संवरण, संयोगिता स्वयंवर, तथा रणधीर प्रेममोहनी नामक इन्होंने तीन नाटक ग्रन्थ बनाये जिनका पूर्ण समादर हिन्दीपठित समाज में हुआ, विशेषतया अन्तिम दोनों का। इनके अन्तिम नाटक के अनुवाद उर्दू और गुजराती में हुए और वह खेला भी गया। इन्होंने परीक्षागुरु नामक एक उपन्यास भी बनाया, पर वह ऐसा अच्छा नहीं है जैसे कि इनके अन्य ग्रन्थ हैं। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करेंगे। इनकी अकालमौत संवत् १९४४ में हो गई, जिससे हिन्दी के नाटक-विभाग को बड़ी क्षति पहुँची।

(२१७५) राजा रामपालसिंहजी कालाकांकर ज़िला प्रतापगढ़।

इनके पिता का नाम लाल प्रतापसिंह और पितामह का राजा हनुमंतसिंह था। इनका जन्म संवत् १९०५ में हुआ। इनके पिता ग़दर के समय अँगरेज़ों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राजा साहब की शिक्षा का प्रबन्ध इनके दादा राजा हनुमंतसिंह ने किया। इन्होंने अठारह वर्ष की अवस्था तक हिन्दी, फ़ारसी और अँगरेज़ी में अच्छी योग्यता प्राप्त करली थी। राजा हनुमंतसिंह के और कोई उत्तराधिकारी न होने तथा इनके पिता के लड़ाई में मारे जाने के कारण वे इन पर विशेष प्रेम रखते थे। अतः राजा हनुमंतसिंहजी ने अपने जीते जी इनको कालाकाँकर की अपनी रियासत का मालिक कर दिया। राजा रामपालसिंहजी के विचार ब्राह्मो-धर्म्म के समान "एकं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" पर थे और हिन्दू धर्म के रस्म रवाजों पर वे ध्यान नहीं देते थे; इस कारण समय पर राजा हनुमंतसिंह और उनके बिरादरीवाले इनसे बहुत ही नाराज़ हुए। राजा रामपालसिंह ने उनका क्रोध शांत करने को अपना राज्याधिकार फिर उन्हें वापस दे दिया। थोड़े दिन के बाद ये अपनी रानी समेत इँगलैंड गये। वहाँ इनकी रानी का देहान्त हो गया। इँगलैंड में राजा साहब ने विद्योपार्जन में अच्छा श्रम किया और फ्रेंच तथा जर्मन भाषायें भी सीखीं तथा गणित एवं तर्क-शास्त्र में अभ्यास किया। वहाँ इन्होंने संवत् १८८३ से १८८५ तक हिन्दोस्थान नामक एक त्रैमासिक पत्र निकाला, जिसने कई अँगरेज़ों में हिन्दीप्रेम जागृत किया। इसी समय राजा हनुमंतसिंह का देहांत हो गया, अतः ये कालाकाँकर आये और रियासत का उचित प्रबंध करके दुबारा इँगलैंड गये। अबकी बार वहाँ से एक मेम को ये अपनी रानी बनाकर लाये। ये रानी साहबा भी संवत् १९५४ में हैज़े से मर गईं। इसके बाद राजा साहब ने एक विवाह और किया। संवत् १९४२ से आप हिन्दोस्थान को दैनिक

छाई नव बल्ली छटा छहरि रही है घनी
तेई रथ राजैं मोर भ्रमत अभंग क्यों।
रसिक बिहारी साज साजि ऋतुराज आयो
छायो बन बाग सेना लीन्हे चतुरंग यों॥

(२१७८) नृसिंहदास कायस्थ।

ये संवत् १९६६ में प्रायः ६५ वर्ष की अवस्था पाकर छतरपूर में मरे। इनके सन्तान वर्त्तमान हैं। ये प्रथम कालिंजर में रहते थे, पर पीछे छतरपूर में रहने लगे। ये वैद्यक करते थे। इनका ग्रन्थ 'सन्तनाम मुक्तावली' इन्हींके हाथ का लिखा हमने देखा है। इस में ६० छन्द हैं, जिनमें दोहे व पद प्रधान हैं। ये साधारण कवि थे। उदाहरणः—

सन्तनाममुकतावली निज हिय धारन हेत।
रची दास नरसिंह ने श्रद्धा भक्ति समेत॥
हैां नहिँ काव्यकलाकुशल बिनय करैां कर जोरि।
छमहु सन्त अपराध मम काव्य कलित अति थोरि॥

(२१७९) महारानी वृषभानुकुवँरि जी देवी।

ये उर्छा के वर्त्तमान महाराजा की पहली महरानी थीं। इनका छोटा पुत्र विजावर का महाराज है और इनकी कन्या छतरपूर की महारानी हैं। इनके बड़े पुत्र टीकमगढ़ (उर्छा का राजस्थान) में हैं। इनका शरीरपात प्रायः ६० वर्ष की अवस्था में चार पांच साल हुए हुआ था। इन्होंने पदों में रामयश का गान

किया है। इनकी कविता बढ़िया है। छतरपूर में इनके दम्पती-विनोद-लहरी (४६ पृष्ठ), बधाई (९ पृष्ठ), मिथिला जी की बधाई (१४ पृष्ठ), बना (२१ पृष्ठ), होरीरहस (१९ पृष्ठ), झूलनरहस (२१ पृष्ठ) और पावस (७ पृष्ठ) नामक ग्रन्थ प्रस्तुत हैं। इन सब में सीताराम का ही वर्णन है । हम इन को तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणः—

रघुबर दीन बचन सुनि लीजै ।
भवसागर को पार नहीं है तदपि पार मोहिँ कीजै ॥
जो कोउ दीन पुकारै प्रभु को अमित दोष दलि दीजै ।
सुनि बिनती वृषभानुकुवँरि की अब प्रभु मेहर करीजै ॥

(२१८०) ललिताप्रसाद त्रिवेदी (ललित)।

यह मल्लावाँ ज़िला हरदोई अवधप्रदेश के वासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और प्रायः कानपूर में रहा करते थे। इन्हों ने काव्य से जीविका नहीं की, किन्तु उसे अपने चित्तविनोदार्थ पढ़ा था। यह कानपूर में ग़ल्ले की दूकान पर मुनीवी का काम करते थे। काव्य का वोध इन को बहुत अच्छा था। हम इनसे दो एक बार कानपूर में मिले हैं । इन महाशय ने रामलीला के वास्ते एक जनकफुलवारी नामक ३० पृष्ठ का ग्रंथ निर्माण किया था और इसी के अनुसार गुरुप्रसाद जी शुक्ल रईस कानपुर के यहाँ धनुषयज्ञ में लीला होती थी । इन्होंने इसमें ग्रंथनिर्माण का समय नहीं दिया, परन्तु हमको अनुमान से जान पड़ता है कि यह संवत् १९४० के लगभग बना होगा। ललित जी का लगभग

६० वर्ष की अवस्था में प्रायः दस साल हुए स्वर्गवास हुआ। खोज में "ख्याल तरंग" नामक इनका एक ग्रंथ और मिला है। इनकी कविता रोचक और सरस है। उसकी रचना रामचन्द्रिका के समान विविध छन्दों में की गई है, और कविता प्रशंसनीय है, परन्तु रामचन्द्र और विश्वामित्र जी की बात चीत जो अंत में कराई गई है वह अयोग्य हुई है। ऐसी बातें गुरु और शिष्य नहीं कर सकते। ललित जी के कुछ स्फुट छंद और समस्या-पूर्तियाँ देखने में आती हैं। इन्होंने दिग्विजयविनोद नामक एक ग्रंथ नायिकाभेद का महाराजा दिग्विजयसिंह जी के नाम पर संवत् १९३० में बनाया था, जो मुद्रित भी हो गया है, परन्तु महाराजा साहब के यहाँ से इनको कुछ पारितोषिक इत्यादि नहीं मिला। शायद इसी कारण रुष्ट होकर इन्होंने काव्य से जीविका चलाना निंद्य समझ कर नौकरी कर ली। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। इनके कुछ छंद नीचे दिये जाते हैं। उदाहरणः—

सुखद सुजन ही के मान के करन हार
दीनन के दारिद-दवा को जलधर हौ।
कहै कवि ललित प्रभाव के प्रभाकर से
बस रसही के जसही के सुधाकर हौ॥
आछे रहौ राजन के राज दिगविजै सिंह
धीर-धुरधर सुखमा के मानसर हौ।
सोभा सील वर हौ परम प्रीतिपर हौ
निगम नीतिधर हौ हमारे देवतर हौ॥

बगरे लतान युत सगरे बिटपबर
सुमन समूह सोहैं अगरे सुवेस को ।
भौंरन के भार डार डार पै अपार दुति
कोकिल पुकार हरै त्रिविधि कलेस को ॥
कहत बनै न कछू ललित निहारिबे मैं
उमहो परत सुख मानो देस देस को ।
जनक सो राजत जनक जू को बाग
ताको नन्दन सो लागैवन नन्दन सुरेस को ॥

मार-लजावनहार कुमार हौ देखिबे को हग ये ललचात हैं ।
भूले सुगंध सों फूले सरोज से आनन पै अलिहू मड़रात हैं ॥
नेक चले मग मैं पग द्वै ललितै श्रम-सीकर से सरसात हैं ।
तोरिहौ कैसे प्रसून लला ये प्रसूनहु ते अति कोमल गात हैं ॥

(२१८१) गोविन्दनारायण मिश्र ।

ये भाषा के एक अच्छे विद्वान् तथा सुयोग्य लेखक हैं । आप का जन्म १९१६ में हुआ था, सो आपकी अवस्था इस समय ५५ वर्ष की है। आपने कई पत्रों का सम्पादन-कार्य उत्तमता से किया है। आप संस्कृत तथा हिन्दी में अच्छी योग्यता रखते हैं। द्वितीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति होकर आपने एक सारगर्भित एवं प्रशंसनीय वक्तृता दी। आपका कविताकाल संवत् १९५० से समझना चाहिए। इनका एक ग्रन्थ "विभक्तिविचार" हमने देखा है, जिससे इनकी विद्वत्ता प्रकट होती है। पर इस विषय में हम

इनसे सहमत नहीं हो सकते, क्योंकि हिन्दी यद्यपि अधिकांश में संस्कृत एवं प्राकृत से निकली है तथापि उसका रूप उक्त भाषाओं से बहुत कुछ भिन्न है और हर बात में हम उसे संस्कृत-व्याकरण से नियमबद्ध नहीं करना चाहते। आपका प्राकृतविचार नामक लेख भी दर्शनीय है। आपने शिक्षासोपान और सारस्वतसर्वस्व नामक दो ग्रन्थ भी लिखे हैं और सैकड़ों अच्छे लेख आपके वर्त्तमान हैं।

(२१८२) सहजराम।

ये महाशय अवधप्रदेशान्तर्गत ज़िला सुलतानपूर के बँधुवा ग्रामनिवासी सनाढ्य ब्राह्मण थे। शिवसिंहजी ने इनका जन्म संवत् १९०५ दिया है। इनका बनाया हुआ प्रह्लादचरित्र नामक ६५ पृष्ठ का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ हमारे पास वर्त्तमान है और इनकी रामायण के भी तीन काण्ड (किष्किन्धा, सुन्दर और लंका) हमने देखे हैं। अपने ग्रन्थों में इन्होंने समय का कोई ब्यौरा नहीं दिया है। इनका कविताकाल १९३० समझना चाहिए। इन ग्रन्थों की भाषा और रचना सब गोस्वामी तुलसीदासजी की भाँति है। इस सत्कवि ने अपनी कविता बिलकुल गोस्वामीजी में मिला दी है। ऐसी उत्तम कविता दोहा चौपाइयों में गोस्वामीजी और लाल के अतिरिक्त शायद कोई भी कवि नहीं कर सका है। इसके भक्ति, ज्ञान आदि के विचार सब गोस्वामीजी से मिलते से हैं और रचनाशैली भी वही है। प्रह्लादचरित्र की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। हम इस कवि को कथा-प्रासंगिक कवियों वाली

छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं :—

रामनाम लिखि बाँचन लागे। धिक धिक करि दोउ भूसुर भागे॥
सुनि पहलाद वचन कह दीना। मोहि धिक कत महिदेव प्रवीना॥
धिक नरेस जो प्रजा सतावै। धिक धनवन्त उथिरता पावै॥
धिक सुरलोक सोकप्रद सोई। पुनरागमन जहाँ ते होई॥
धिक नर देह जरापन रोगा। राम भजन बिन धिक जप जोगा॥
कोउ कह धिक जीवन गुन हीना। धौं कह सुत कोउ बिभव विहीना॥
सबै असत्य सत्य मत एहा। राम भजन बिनु धिक नर देहा॥
धिक छत्री जो समर सभीता। वैखानस बिखयन मन जीता॥

धिक धिक तपसी तप करहिँ तन कसि मन बस नाहिँ।
परमारथ पथ पाँउ धरि फिरि स्वारथ लपटाहिँ॥
हटकि हटकि हारे निपट पटकि पटकि महि पानि।
जाय पुकारे राउ पहँ बालक सठ हठखानि॥ १॥

रंध्र मास बीते यहि भाँती। महा बायु किय प्रकट तहाँती॥
भयो अधीर पीर तन माहीं। छिन मुर्छित छिन रुदन कराहीं॥
रूप चतुरभुज दीख न आगे। कहाँ कहाँ करि रोवन लागे॥
कीन्हेउ जबहिँ पयोधर पाना। भूली सुमति मोह लपटाना॥
जननी उबटन तेल करावा। अति पुनीत पलका पौढ़ावा॥
काटहिँ कीट दुसह दुख पावा। रहै रोय मुख वचन न आवा॥
क्रीड़ा करत बाल पन बीता। तरुन भए तरुनी मन जीता॥
भूखन बसन अलंकृत सोहै। चलै बाम पुनि पुनि जग मोहै॥

(२१८५) हनुमान।

ये महाशय प्रसिद्ध कवि मणिदेव बंदीजन के पुत्र और काशी के रहने वाले थे। हमने इनका कोई ग्रन्थ नहीं देखा है, परन्तु इनके स्फुट छन्द बहुतायत से मिलते हैं। इन्होंने शृंगार रस की कविता की है। इनकी भाषा व्रजभाषा है और वह सन्तोष-दायिनी है। इनकी कविता मनोहर और सरस है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके दो छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

ननदी औ जेठानी नहीं हँसती तौ हितू तिनहीं को बखानती मैं।
घरहाई चवाव न जो करतीं तौ भलो औ बुरो पहिँचानती मैं॥
हनुमान परोसिनि हू हित की कहतीं तौ अठान न ठानती मैं।
यह सीख तिहारी सुनौ सजनी रहती कुल कानि तौ मानती मैं॥
निज चाल सों और जे बाल तिन्हैं कुल की कुल कानि सिखावती हैं।
ननदी औ जेठानी हँसावैं तऊ हँसी ओठन ही लौं वितावती हैं॥
हनुमान न नेकौ निहारैं कहूँ दृग नीचे किये सुख पावती हैं।
बड़ भागिनि पी के सोहाग भरी कवौं आँगन हू लौं न आवती हैं॥

इनके पुत्र कविवर सीतलाप्रसादजी से विदित हुआ कि इन का शरीरपात संवत् १९३६ में ३८ वर्ष की अवस्था में हुआ। द्विज कवि मन्नालाल से हनुमान की घनिष्ठ मैत्री थी।

(२१८६) नन्दराम।

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण मौज़ा सालेहनगर ज़िला लख-नऊ के रहने वाले थे। यह स्थान गोमती जी के वसहरी घाट से

४ मील और हमारे जन्म स्थान इटौंजा ग्राम से ८ मील की दूरी पर स्थित है। संवत् १९३४ में ये महाशय हम से इटौंजा में मिले थे। शृंगारदर्प्पण की एक हस्तलिखित प्रति भी इनके पास थी, जिसके बहुत से छन्द इन्हों ने हमको सुनाये थे। इनकी अवस्था उस समय लगभग चालीस वर्ष की थी और उसके प्रायः दश वर्ष के पीछे इनका शरीरपात हुआ। अतः इनके जन्म और मरण काल संवत् १८९४ और १९४४ के आस पास हैं।

इन्होंने शृंगारदर्प्पण नामक १५४ पृष्ठों (मँझोली साँची) का एक बड़ा ग्रन्थ भावभेद और रसभेद के वर्णन में संवत् १९२९ में बनाया जिसकी रीति प्रणाली पद्माकर जी के जगद्विनोद से मिलती है। इसमें दोहा, सवैया और घनाक्षरी छन्द बहुतायत से हैं, परन्तु कहीं छप्पय आदि दो एक अन्य प्रकार के भी छन्द आ गये हैं। इन्होंने अपनी भाषा में बाह्याडम्बरों को स्थान नहीं दिया है और वह मधुर एवं निर्दोष है। इनके भाव भी साधारणतः अच्छे हैं। इनकी पुस्तक भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हो चुकी है, जिसके अन्त में इनके सात स्फुट छन्द भी लिखे गये हैं। शिवसिंहसरोज में शान्त रस के कवित्त बनाने वाले एक नन्दराम का नाम लिखा है, पर उनके समय के निश्चय में कुछ भी नहीं कहा गया है। जान पड़ता है कि ये नन्दराम दूसरे थे, क्योंकि शृंगारदर्प्पण के रचयिता नन्दराम ने शान्त रस के अच्छे छन्द नहीं कहे हैं। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

मोर किरीट मनोहर कुंडल मंजु कपोलन पै अलकाली।
पीत पटी लपटी तन साँवरे भाल पटीर की रेख रसाली॥

त्यों नँदराम जू बेनु बजावत आजु लखे बन मैं बनमाली।
नैन उघारिबे को मन होत न मोहन रूप निहारि कै आली॥

(२१८७) रायबहादुर लक्ष्मीशंकर मिश्र, एम० ए०।

ये महाशय सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १९०६ में हुआ था और संवत् १९६३ में इनका स्वर्गवास हुआ। पहले ये बनारस कालेज में गणित के अध्यापक थे, पर संवत् १९४२ में सरकार ने इन्हें शिक्षाविभाग में इंस्पेक्टर नियत कर दिया। इन्होंने गणितकौमुदी नामक एक पुस्तक हिन्दी में बनाई और बहुत दिन तक काशीपत्रिका चलाई। बहुत दिनों तक ये नागरी-प्रचारिणी सभा के सभापति रहे और यथाशक्ति सदैव हिन्दी की उन्नति करते रहे। बहुतेरी पाठ्य पुस्तकें भी इन्होंने शिक्षा-विभाग के लिए सम्पादित कीं।

(२१८८) रामद्विज।

आपका नाम रामचन्द्र था और आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपका जन्म संवत् १९०७ में हुआ था। इस समय आप हाई स्कूल अलवर के अध्यापक हैं। आपकी कविता सरस, अनुप्रास-पूर्ण और श्रेष्ठ होती है। इनके जानकीमंगल नामक ग्रंथ से नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

उदाहरणः—

राम हिय सिय मेली जैमाल। टेक।
मानहु घन बिच रुच्यो चंचला सुरपतिचाप बिलास॥

लखिकै सकल भूप तन झरसे ज्यों जवास जलकाल ।
कहि दुज राम बाम सुर गावत जनु कल कंठन जाल ॥ १ ॥

सवैया ।

भैारन मैार मनोहर मैालि अमोल हरा हिय मोतिया भायो ।
नूतन पल्लव साजि भँगा पटुका कटि सोनजुही छविछायो ॥
कोकिल गायन सैार बराती चढ़ो पवमान तुरंग सुहायो ।
छाइ उछाह दिगंतन राम ललास बसंत बनो बनि आयो ॥२॥

(२१८६) गौरीदत्त ।

सारस्वत ब्राह्मण पंडित गैारीदत्त जी का जन्म संवत् १८९२ में हुआ था। ४५ वर्ष की अवस्था तक इन्होंने अध्यापक का काम किया श्रैार फिर अपना पद छोड़ कर ये परमार्थ में प्रवृत्त हुए। उसी दिन अपनी सारी सम्पत्ति इन्होंने नागरीप्रचार में लगा दी श्रैार अपनी शेष आयु भर ये स्वयं भी इसी काज में लगे रहे। इन्होंने ग्राम ग्राम श्रैार नगर नगर फिर कर निरन्तर नागरी प्रचार पर व्याख्यान दिये श्रैार नागरी पढ़ाने को पाठशालायें स्थापित कीं। पंडित जी ने बहुत से ऐसे खेल श्रैार गोरखधन्धे बनाये, जिनमें लोगों का जी लगे श्रैार वे इसी प्रकार से नागरी लिपि जान जायँ। मेलों, तमाशों आदि में जहाँ अन्य लोग अपनी दूकानें ले जाते थे, वहाँ ये अपना नागरी का झंडा जाकर खड़ा करते थे। नागरीप्रचार में ये महाशय इतने तल्लीन थे कि जयराम के स्थान पर लोग भेंट होने पर इन से 'जय नागरी' कहते थे। मेरठ का नागरी स्कूल इन्हीं के प्रयत्नों से बना था। यह अब तक भली

पावस पयान पिय सुनिकै सयानि
आज अम्बुज अनूप द्रग बुंद बरसावैरी ॥१॥

कमल नैन कर कमल कमल पद कमल कमल कर।
अमल चन्द मुख चन्द विकट सिर चन्द चन्द धर॥
मधुर मंद मुसक्यानि कान कुंडल अति सोभित।
बसन पीत मनि माल माल गुंजन मन लोभित॥
जगदीस भौंह अलकैं अधर मंद मंद मुरली बजत।
ब्रजचंद अमन्द अलोकि अलि आवत लखि मनमथ लजत॥२॥

(२१६३) कार्तिकप्रसाद खत्री।

इनका जन्म संवत् १९०८ में कलकत्ते में हुआ था। इनके माता पिता का देहान्त इनकी बाल्यावस्था में हो गया, सो इनका पढ़ना भली भाँति न हो सका। इन्होंने बहुत से व्यापार किये, पर जम कर ये कोई व्यापार न कर सके। अन्त में काशी जी में रहने लगे। हिन्दी का इन्हें सदैव बड़ा प्रेम था और इन्होंने अनुवाद मिला कर प्रायः २० पुस्तकें रचीं। प्रेमविलासिनी और हिंदी-प्रकाश नामक दो पत्र भी आपने निकाले और प्रसिद्ध पत्रिका सरस्वती की प्रथम सम्पादकसमिति में यह भी सम्मिलित थे। इनका देहान्त संवत् १९६१ में काशी जी में हुआ। ये महाशय हिन्दी के एक बहुत अच्छे लेखक थे और इनका गद्य परम रुचिर होता था। इनके ग्रन्थों में से इला, प्रमिला, मधुमालती और जया हमारे पास प्रस्तुत हैं।

(२१६४) केशवराम भट्ट।

इनका जन्म संवत् १९१० में महाराष्ट्र कुल में हुआ था। इन्होंने १९३१ में बिहारबन्धु पत्र निकाला। पीछे से ये शिक्षा-विभाग में नौकर हो गये। ये हिन्दी के अच्छे लेखक और परम प्रेमी थे। विद्या की नींव, भारतवर्ष का इतिहास (बँगला से अनुवादित), शमशाद सौसन नाटक, सज्जाद सम्बुल नाटक, हिन्दी-व्याकरण, एक जोड़ अँगूठी, और रासेलस (अनुवाद) नामक पुस्तकें इन्होंने लिखीं। इनका देहान्त संवत् १९६२ के लगभग हुआ। ये विहार के रहने वाले थे।

(२१६५) तुलसीराम शर्मा।

ये परीक्षित गढ़ ज़िला मेरठ-निवासी हैं। इनका जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आप संस्कृत के बड़े भारी पंडित एवं आर्यसमाज के प्रधान उपदेशकों में हैं। आपने सामवेद भाष्य, मनुभाष्य, न्याय-दर्शन-भाष्य, श्वेताश्वतरोपनिषत् भाष्य, ईश, केन, कठ, मुंडक-भाष्य, हितोपदेश भाषा, सुभाषितरत्नमाला और दयानन्दचरितामृत नामक ग्रन्थ बनाये हैं।

(२१६६) गोविन्द कवि।

ये महाशय पिपलोदपुरी के राजा दूलहसिंह के आश्रय में रहते थे और उन्हीं की आज्ञा से संवत् १९३२ में इन्होंने हनुमन्नाटक का भाषा छन्दानुवाद किया। ये महाशय कवि टीकाराम के पुत्र

जाति के ब्राह्मण थे। आपने संस्कृत मिश्रित भाषा को आदर दिया है, इस कारण उसमें मिलित वर्ण बहुत आ जाने से ओज की प्रधानता और प्रसाद एवं माधुर्य्य की कमी हो गई है। इन्होंने अपने छन्दों के चतुर्थ पदों में कहीं कहीं 'पर हाँ' शब्द बिल्कुल बेकार लिख दिये हैं, जो न तो अर्थ का समर्थन करते हैं और न छन्द का। उन्हें छोड़ कर पढ़ने से छन्द और अर्थ दोनों पूरे होते हैं। तो भी इस ग्रन्थ की कविता बहुत ज़ोरदार है और इसमें प्रभावशाली छन्द बहुत पाये जाते हैं। नाटक में १३२ पृष्ठ हैं और सब प्रकार के छन्द रामचन्द्रिका एवं गुमान-कृत नैपध की भाँति रक्खे गये हैं। ग्रन्थ बहुत सराहनीय बना है। इस कवि ने अनुप्रास को भी आदर दिया है। हम गोविन्द जी को छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण:—

फुल्लित गल्ल करैं फुतकार प्रफुल्लन सापुट कोटर आयो।
ओघ अहंकृत पावक पुंज हलाहल घूमि तितै प्रगटायो॥
अन्ध समान किये सब लोकन अम्बर लौं छिति छोरन छायो।
लोयन लाल कराल किये ततकाल महा बिकराल लखायो॥

निखिल नरेन्द्र निकाय कुमुद जिमि जानिये।
तिनको मुद्रित करन मिहिर मोहिँ मानिये॥
कार्तवीर्य्य प्रति कढ़े यथा मम बोल हैं।
पर हाँ! सो सुनि लीजै राम श्रवण जुग खोल हैं॥

इस ग्रंथ में राम के राज्याभिषेक तक का वर्णन है।

(२१६७) अयोध्याप्रसाद खत्री।

ये महाशय बलिया के रहने वाले थे, पर इनकी बाल्यावस्था से ही इनके पिता मुज़फ्फ़रपूर (विहार) में रहने लगे। कुछ दिन इन्होंने अध्यापक का काम किया और पीछे से कलेक्टर के पेशकार हो गये; जिस पद पर ये मृत्यु पर्य्यन्त रहे। इनका स्वर्ग-वास ४ जनवरी संवत् १९६१ में ४७ वर्ष की अवस्था में हो गया। इन्होंने यावज्जीवन खड़ी बोली का पद्य में प्रचार करने और छन्दों से व्रजभाषा उठा देने का प्रयत्न किया। इस विषय में इन्हें इतना उत्साह था कि कुछ कहा नहीं जाता। खड़ी बोली के आन्दोलन पर एक भारी लेख भी छपवा कर इन्होंने उसे बेदाम वितरण किया था। उसकी एक प्रति इन्होंने अपने हाथ से हमें भी काशी सभा के गृहप्रवेशोत्सव में दी थी। जिस लेखक से ये मिलते थे उससे खड़ी बोली के विषय में भी बातचीत अवश्य करते थे। खड़ी बोली के प्रचार को ही ये अपना जीवनोद्देश्य समझते थे। ऐसे उत्साही पुरुष बहुत कम देखने में आते हैं। इस विषय पर आप ने इँगलैंड में भी एक लेख छपवाया था। संवत् १९३४ में इन्होंने एक हिन्दी-व्याकरण प्रकाशित किया। इनके अकाल-स्वर्गवास से खड़ी बोली के आन्दोलन को बड़ी क्षति पहुँची। इस आन्दोलन को पूर्ण बल के साथ पहले पहल इन्हीं ने उठाया। आपने इसमें इतना उत्साह दिखाया कि आपको देखते ही खड़ी बोली की याद आ जाती थी।

(२१६८) मुंशीराम महात्मा।

इन का जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप बड़े ही धर्मात्मा पुरुष हैं। आज कल आप गुरुकुल काँगड़ी के अध्यक्ष हैं। आपने

भारी आय की विकालत छोड़ कर फ़क़ीरी को अपनाया और भारत की प्राचीन पठन-पाठन-शैली का सजीव उदाहरण गुरुकुल स्थापित किया। वहाँ महात्मा बनाये जाने को बालक पढ़ाये जाते हैं। आप हिन्दी के भी लेखक हैं। आप का जीवन धन्य है। आर्य्यसमाज के एक भारी दल के आप नेता हैं। सद्धर्मप्रचारक नामक एक भारी पत्र भी आप बहुत दिनों से निकालते हैं। आपने नेपोलियन का जीवन-चरित्र लिखा है। आप हिन्दी के एक बड़े अच्छे व्याख्यानदाता और बड़े ही उत्साही हैं। चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आप सभापति हुए थे।

(२१६६) शिवसिंह सेंगर।

ये महाशय मौज़ा काँथा ज़िला उन्नाव के ज़िमीदार रंजीतसिंह के पुत्र और बख़तावरसिंह के पौत्र थे। इनका जन्म संवत् १८९० में हुआ था और ४५ बरस की अवस्था में इनका स्वर्गवास हुआ। आप पुलीस में इन्स्पेक्टर थे। इनको काव्य का बड़ा शौक़ था और इन्हों ने भाषा, संस्कृत और फ़ारसी का अच्छा पुस्तकालय संगृहीत किया था, जो इनके अपुत्र मरने के कारण अब इनके भतीजे नौनिहालसिंह के अधिकार में है। हमने इसे वहाँ जाकर देखा है।

इन्हों ने ब्रह्मोत्तर खंड और शिवपुराण का भाषा गद्य में अनुवाद किया और शिवसिंहसरोज नामक एक बड़ा ही उपयोगी ग्रंथ संवत् १९३४ में बनाया। उसमें प्रायः एक सहस्र कवियों के नाम, जन्मकाल और काव्य के उदाहरण लिखे हैं। इन्होंने कविता भी अच्छी की है।

इनका नाम शिवसिंहसरोज लिखने के कारण भाषा-साहित्य में चिर काल तक अमर रहेगा। जिस समय में कोई भी सुगम उपाय कवियों के समय व ग्रंथों के जानने का न था, उस समय ये बड़ी मेहनत और धनव्यय से इस ग्रंथ को बनाकर भाषा-साहित्य-इतिहास के पथप्रदर्शक हुए। हिन्दी-प्रेमियों और भाषा पर आपका अगाध ऋण है।

इनकी कविता सरस व मनोहर है और कविता की दृष्टि में हम इनको साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

महिख से मारे मगरूर महिपालन को
बीज से रिपुन निरबीज भूमि कै दई।
शुंभ औ निशुंभ से सँघारि झारि म्लेच्छन को
दिल्ली दल दलि दुनी देर बिन लै लई॥
प्रबल प्रचंड भुजदंडन सों खग्ग गहि
चंड मुंड खलन खेलाय खाक कै गई।
रानी महरानी हिंद लंदन की ईसुरी तें
ईश्वरी समान प्रान हिंदुन के ह्वै गई॥ १॥
कहकही काकली कलित कलकंठन की
कंजकली कालिँदी कलोल कहलन मैं।
सेंगर सुकवि ठंढ लागती ठिठोर वारी
ठाठ सब ठटे ठगि लेत टहलन मैं॥
फहरैं फुहारे फबिरही सेज फूलन सों
फेन सी फटिक चौतरा के पहलनि मैं।

चाँदनी चमेली चारु फूले बीच बाग आजु
बसिए बटोही मालती के महलन में ॥२॥

(२२००) श्रीकृष्ण जोशी।

ये एक बड़े सज्जन पहाड़ी ब्राह्मण हैं। आप पहले बोर्ड माल के दफ़्तर में नौकर थे, पर वहाँ से पेंशन लेकर बाराबंकी ज़िला में राजा पृथ्वीपालसिंह की रियासत के मैनेजर हुए। अब आपकी अवस्था प्रायः ५८ साल की होगी। आपकी बुद्धि बड़ी कुशाग्र है। आपने सूर्य्य की गरमी से शीशों द्वारा भोजन पकाने की भानुताप नामक कल ईजाद की है। आप हिन्दी के भी लेखक हैं।

(२२०१) चन्द्रिकाप्रसाद तेवारी।

ये राय साहब ज़िला उन्नाव के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। आपकी अवस्था प्रायः ५८ साल की है। आप बहुत दिनों से अजमेर में रहते थे। इनकी पुत्री इँगलैंड के प्रसिद्ध बैरिस्टर पंडित भगवान दीन दुबे को व्याही है। तेवारी जी रेल के ऊँचे कर्म्मचारी हैं। आपने एक नौकरी से पेंशन ले ली और दूसरी में फिर आप अच्छा वेतन पाते हैं। आप बड़े उत्साही पुरुष हैं। स्वामी दादूदयाल के ग्रन्थ आपने शुद्धतापूर्वक प्रकाशित किये हैं। आप गद्य के अच्छे लेखक हैं।

नाम—(२२०२) झारसीराम चौबे बूँदी।

ग्रन्थ—(१) वंशप्रदीप, (२) सर्वसमुच्चय, (३) ललितलहरी, (४) रघुवीरसुयश-प्रकाश।

जन्मकाल—१९१०।

कविताकाल—१९३५।

विवरण—ये महाशय बूँदी-दरबार में वंश-परम्परा से कवि हैं। आपकी कविता प्रशंसनीय होती है। उदाहरण:—

राजत गँभीर मरजाद मैं कुसल धीर,
करत प्रताप पुंज प्रगटित आठौ जाम।
चहुवान-मुकुट प्रकासित प्रबल आजु,
तेरे त्रास त्रसित नसाए सत्रु धाम धाम॥
नीति निपुनाई धरि पालत प्रजा को नित,
साहिबी मैं सुन्दर अमंद ह्वै बढ़ायो नाम।
पारावार सहस प्रियव्रत प्रभाकर से,
पारथ से पृथु से पुरंदर से राजा राम॥१॥

(२२०३) रुद्रदत्त जी शर्मा।

इनका जन्म सं० १९०९ में हुआ था। योगदर्शन-भाष्य, स्वर्ग में महासभा, स्वर्ग में सबजेक्ट कमेटी नामक पुस्तकें आपने लिखी हैं। इस समय आप 'आर्यमित्र' का सम्पादन करते हैं। इनकी रचना से धर्म्म-सम्बन्धी वर्त्तमान विचारों का अच्छा ज्ञान होता है।

इस समय के अन्य कविगण।

समय संवत् १९२६ के पूर्व।

नाम—(२२०४) छेदालाल ब्रह्मचारी, कानपूर।

ग्रन्थ—कई ग्रन्थ।

नाम—(२२०५) तुलसी ओझा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२०६) नरेश।

ग्रन्थ—नायिकाभेद का कोई ग्रन्थ।

विवरण—तोषश्रेणी।

नाम—(२२०७) नवनिधि।

ग्रन्थ—संकटमोचन।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(२२०८) पारस।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(२२०९) विद्याप्रकाश, कन्नौज।

ग्रन्थ—मनखेलवार।

जन्मकाल—१८९८।

विवरण—कुछ समय के लिए आप ब्रह्मचारी हो गये थे। आप बड़े ज़िन्दादिल पुरुष हैं।

नाम—(२२१०) मथुरादास कायस्थ, फ़ीरोज़पुर।

ग्रन्थ—(१) जड़तत्त्वविज्ञान, (२) जगत्पुरुषार्थ।

जन्मकाल—१८९९।

नाम—(२२११) मंगलदेव आगरी संन्यासी।

ग्रन्थ—(१) कुरीतिनिवारण, (२) विधवासंताप।

जन्मकाल—१८९९।

नाम—(२२१२) रसिया (नजीब)।

विवरण—महाराजा पटियाला के यहाँ थे।

नाम—(२२१३) लक्ष्मणानन्द संन्यासी।

ग्रन्थ—ध्यानयोगप्रकाश।

नाम—(२२१४) शिवप्रसाद मिश्र, सचेंडी—कानपुर।

ग्रन्थ—सन्ध्याविधि।

जन्मकाल—१८९९।

नाम—(२२१५) शेखर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

समय संवत् १९२६।

नाम—(२२१६) चरणदास, कंदैली, ज़िला नरसिंहपुर।

ग्रन्थ—(१) धर्मप्रकाश, (२) विनयप्रकाश, (३) गुरुमाहात्म्य, (४) धनसंग्रह।

जन्मकाल—१९०१। वर्त्तमान।

नाम—(२२१७) रामनाथसिंह राजा उपनाम नरदेव।

ग्रन्थ—देवीस्तुति आदि स्फुट छन्द।

जन्मकाल—१८९९। १९५१ तक।

नाम—(२२१८) सूर्यप्रसाद (हंस), पन्हौना, उन्नाव।

नाम—(२२४१) खड्गबहादुर मल्ल महाराजकुमार।

ग्रन्थ—(१) महारसनाटक, (२) बालविवाहविदूषक नाटक, (३) भारतआरत नाटक, (४) कल्पवृक्ष नाटक, (५) हरतालिका नाटिका, (६) भारतललना नाटक, (७) रसिकविनोद, (८) फागअनुराग, (९) बालोपदेश, (१०) बालविवाह-विषयक लेक्चर, (११) सद्धर्मनिर्णय, (१२) रतिकुसुमायुध, (१३) सपने की संपत्ति, (१४) वेश्यापंचरत्न।

विवरण—नाटककार हैं।

नाम—(२२४२) गणेशदत्त।

ग्रन्थ—सरोजिनी नाटक।

नाम—(२२४३) गणेशभाट।

विवरण—महाराजा बनारस ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के दरबार में थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२२४४) गदाधर भट्ट।

ग्रन्थ—मृच्छकटिक।

विवरण—अनुवाद।

नाम—(२२४५) गुणाकर त्रिपाठी काँधा, ज़िला उन्नाव।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२४६) गुरदीनबन्दीजन पैँतेपुर, ज़िला सीतापुर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२४७) गोकुलचन्द।

ग्रन्थ—बूढ़े मुँह मुहासे लोग चले तमाशे (नाटक)।

नाम—(२२४८) चौवा हरिप्रसाद बन्दीजन, होलपुर।

विवरण—इनकी स्फुट रचना अच्छी है। साधारण श्रेणी।

नाम—(२२४९) छितिपाल राजा माधवसिंह, अमेठी।

ग्रन्थ—(१) मनोजलतिका, (२) देवीचरित्रसरोज, (३) त्रिदीप।

विवरण—इन्होंने अच्छी कविता की है। साधारण श्रेणी।

नाम—(२२५०) जानी विहारीलाल (१९६७ तक)।

ग्रन्थ—विज्ञानविभाकर आदि कई ग्रन्थ।

विवरण—नाटककार हैं। आप भरतपूर राज्य के दीवान थे और आप को रायबहादुर पदवी मिली थी।

नाम—(२२५१) जानी मुकुन्दलाल।

ग्रन्थ—मुकुन्दविनोद।

विवरण—आप उदयपुरकौन्सिल के मेम्बर थे।

नाम—(२२५२) ठग मिश्र डुमरावँ, जानकीप्रसाद के पुत्र।

जन्मकाल—१९०३।

नाम—(२२५३) ठाकुरदयालसिंह।

ग्रन्थ—(१) मृच्छकटिक, (२) वेनिस का सौदागर।

विवरण—नाटक अनुवादित किये हैं।

नाम—(२२५४) दलेलसिंह दुरजनपुर।

जन्मकाल—१९०५ (वर्त्तमान)।

नाम—(२२५५) दामोदर शास्त्री।

ग्रन्थ—(१) रामलीला, (२) मृच्छकटिक, (३) बालखेल, (४) राधा-माधव, (५) मैं वही हूँ, (६) नियुद्धशिक्षा, (७) पूर्वदिग्यात्रा, (८) दक्षिणदिग्यात्रा, (९) लखनऊ का इतिहास, (१०) संक्षेप रामायण, (११) चित्तौरगढ़।

विवरण—नाटककार थे।

नाम—(२२५६) दीनदयाल (दयाल) बेंती, ज़िला रायबरेली।

विवरण—भैान कवि के पुत्र, साधारण श्रेणी।

नाम—(२२५७) देवकीनन्दन तेवारी।

ग्रन्थ—(१) जयनरसिंह की, (२) होलीखगेश, (३) चक्षुदान।

विवरण—अच्छे नाटककार थे।

नाम—(२२५८) देवीप्रसाद ब्रह्मभट्ट, बिलगराम, ज़िला हरदोई।

जन्मकाल—१९००।

नाम—(२२५९) द्विजकवि मन्नालाल बनारसी।

ग्रन्थ—प्रेमतरंगसंग्रह।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२६०) नीलसखी, जैतपूर, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२६१) नैसुक, बुँदेलखण्ड।

जन्मकाल—१९०४।

विवरण—साधारणश्रेणी।

नाम—(२२६२) नोने बन्दीजन, बाँदा।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—तोषश्रेणी। हरिदास के पुत्र।

नाम—(२२६३) परागीलाल, चरखारी।

ग्रन्थ—रसानुराग।

नाम—(२२६४) कालिकाराव, ग्वालियर वाले।

ग्रन्थ—कविप्रिया पर टीका।

जन्मकाल—१९०१।

नाम—(२२६५) वल्लभ चौबे, जयपुर।

विवरण—जयपुर-दरबार के राजकवि हैं। काव्य अच्छा करते हैं।

नाम—(२२६६) बल्लूलाल कायस्थ (जन ब्रजचन्द्र) तेलिया नाला, बनारस (१९६० तक)।

ग्रन्थ—रामलीलाकौमुदी।

नाम—(२२६७) वालेश्वरप्रसाद।

ग्रन्थ—वेनिस का सौदागर।

विवरण—मर्चेंट आफ़ वेनिस का अनुवाद है।

नाम—(२२६८) विजयानंद शर्म्मा, बनारस।

ग्रन्थ—सच्चा सपना।

विवरण—गद्य-लेखक थे।

नाम—(२२६९) महानन्द वाजपेयी, बैसवारे वाले।

ग्रन्थ—बृहच्छिवपुराण भाषा।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी।

नाम—(२२७०) माधवानंद भारती, बनारसी।

ग्रन्थ—शंकरदिग्विजय भाषा।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—मधुसूदनदास की श्रेणी।

नाम—(२२७१) मानिक चन्द्र कायस्थ, ज़िला सीतापूर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२७२) मिहींलाल, उपनाम मलिन्द, डलमऊ, रायबरेली।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२७३) मीतूदास गौतम, हरधौरपूर, फ़तेहपूर।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(२२७४) मुन्नाराम।

ग्रन्थ—सन्तनकल्पलतिका।

विवरण—ज़िला प्रतापगढ़ निवासी।

नाम—(२२७५) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, चरखारी।

ग्रन्थ—(१) शृङ्गारचन्द्रिका, (२) षटऋतुदर्पण, (३) काव्यसुधारत्नाकर, (४) रसिकबसीकर, (५) संगीतसुधानिधि, (६) मोदमहोदधि, (७) दुर्गाभक्तिप्रकाश, (८) मनमैाजप्रकाश, (९) शांतिपचासा, (१०) राधिकानखशिख, (११) रसिकमनोहर, (१२) राधाकृष्णपचासा।

जन्मकाल—१९०४ (१९४८ तक रहे)।

नाम—(२२७६) रसरङ्ग, लखनऊ।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२७७) रामनाथ कायस्थ राम उपनाम।

ग्रन्थ—हनुमन्नाटक।

जन्मकाल—१८९८।

विवरण—साधारण श्रेणी। सरोज में इस नाम के दो कवि दिये हैं, पर दोनों एक जान पड़ते हैं।

नाम—(२२७८) रामगोपाल सनाढ्य, अलवर।

जन्मकाल—१८९६।

विवरण—आप अलवरदरबार में वैद्य हैं। कविता भी उत्तम करते हैं।

नाम—(२२७९) रामभजन, गजपुर, गोरखपूर।

विवरण—राजा बस्ती के यहाँ रहे थे।

नाम—(२२८०) लक्ष्मीनाथ।

ग्रंथ—लक्ष्मीविलास।

विवरण—आप महाराज मानसिंह के भतीजे थे।

नाम—(२२८१) लछिराम बन्दीजन, होलपुर वाले।

ग्रन्थ—शिवसिंहसरोज नायिकाभेद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८२) शीतलप्रसाद तेवारी।

ग्रन्थ—जानकीमंगल।

विवरण—नाटकरचयिता हैं।

नाम—(२२८३) शंकर त्रिपाठी, बिसवाँ, सीतापूर।

ग्रन्थ—(१) रामायण, (२) व्रजसूची ग्रन्थ।

विवरण—हीनश्रेणी। अपने पुत्र सालिक के साथ बनाई।

नाम—(२२८४) शंकरसिंह तालुक़दार, चँड़रा, सीतापूर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८५) श्रीमती।

ग्रन्थ—अद्‌भुतचरित्र या गृहचंडी नाटक।

नाम—(२२८६) सालिक, बिसवाँ, सीतापूर।

ग्रन्थ—रामायण।

विवरण—हीन श्रेणी। अपने पिता शंकर के साथ बनाई।

नाम—(२२८७) साँवलदासजी साधु, उदयपूर।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(२२८८) सुखदीन।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८९) सुदर्शनसिंह राना चन्दापूर।

ग्रन्थ—सुदर्शन कविता संग्रह।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२९०) सूखन।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२९१) हनुमतसिंह हाड़ा, क़िला नैणवे।

जन्मकाल—१९०५।

विवरण—ये महाशय राजा बूँदी के २००००) सालाना आमदनी के जागीरदार तथा क़िलेदार हैं। संस्कृत तथा भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(२२९२) हरखनाथ झा, विहार।

ग्रन्थ—ऊषाहरण नाटक।

जन्मकाल—१९०४।

नाम—(२२६३) हरिदास साधु निरंजनी।

ग्रन्थ—(१) रामायण, (२) भरथरीगोरख संवाद, (३) दयालजी का पद।

जन्मकाल—१९०१।

नाम—(२२६४) हिमाचलराम, ब्राह्मण शाकद्वीपी भटौली, ज़ि० फ़ैज़ाबाद।

ग्रन्थ—कालीनाथन लीला।

जन्मकाल—१९०४।

विवरण—निम्नश्रेणी के कवि। इनकी पुस्तक हमने देखी है।

नाम—(२२६५) होमनिधिशर्मा।

ग्रन्थ—(१) हुक्कादोषदर्पण, (२) जातिपरीक्षा।

जन्मकाल—१९०५।

नाम—(२२६६) मदनपाल।

ग्रन्थ—निघंट भाषा।

कविताकाल—१९३१ के पूर्व।

समय संवत् १९३१।

नाम—(२२६७) फतूरीलाल, मिथिला।

ग्रन्थ—कवित्त अकाली।

नाम—(२२६८) रामचन्द्र।

ग्रन्थ—मामक़ीमा भाषा।

नाम—(२२९९) अग्रअली।

ग्रन्थ—अष्टयाम।

कविताकाल—१९३२ के पूर्व।

समय संवत् १९३२।

नाम—(२३००) कन्हैयालाल अग्निहोत्री, गोंड़वा ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) ज्योतिषसारावली, (२) अवतारपचीसी, (३) शंभुसाठिका।

जन्मकाल—१९०७ (वर्तमान)।

नाम—(२३०१) रामचरण कायस्थ, गौहार, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—हनुमतपचासा।

जन्मकाल—१९०७।

नाम—(२३०२) रामसेवक शुक्ल, बलसिंहपूर, सीतापूर।

ग्रन्थ—(१) स्फुट, (२) अखरावली। (३) ध्यानचिन्तामनि।

जन्मकाल—१९०८।

समय संवत् १९३३।

नाम—(२३०३) अलीमन।

नाम—(२३०४) केशवराम विष्णुलाल पण्ड्या।

ग्रन्थ—गणेशगंज आर्य्यसमाज का इतिहास।

जन्मकाल—१९०८।

नाम—(२३०५) ज़ालिमसिंह कायस्थ, अकबरपूर, ज़िला फ़ैज़ाबाद।

ग्रन्थ—(१) तर्कसंग्रहपदार्थादर्श, (२) गीता टीका, (३) कई उपनिषदों की टीका।

विवरण—ये महाशय लखनऊ में पोस्टमास्टर थे। अब पेंशन ले ली है। इस समय इनकी अवस्था ६० साल की होगी।

नाम—(२३०६) तारानाथ।

विवरण—आप महाराज मानसिंह के भतीजे थे।

नाम—(२३०७) धनुर्धरराम ब्राह्मण, मु० डगडीहा, राज्य रीवाँ।

जन्मकाल—१९०८ (वर्त्तमान)।

नाम—(२३०८) परमहंस इलाहाबाद।

ग्रन्थ—आरत भजन।

नाम—(२३०९) बलदेवप्रसाद कायस्थ, मौज़ा खटवारा, डा० राजपुर, ज़िला बाँदा।

ग्रन्थ—(१) रामायण रामसागर, (२) शक्तिचंद्रिका, (३) विष्णुपदी रामायण, (४) भारतकल्पद्रुम, (५) हनुमंतहाँक, (६) हनुमानसाठिका, (७) वज्रांगबीसा, (८) चंडीशतक, (९) बलदेवहज़ारा, (१०) कान्हवंशावली, (११) उक्तिपरीक्षा, (१२) ज्ञानप्रभाकर।

जन्मकाल—१९०८ (वर्तमान)।

विवरण—सब छोटे बड़े ३२ ग्रंथ आपने बनाये हैं। महाराजा प्रतापसिंह कटारी वाले के यहाँ थे।

नाम—(२३१०) साधोगिरि गोसांई, मकनपूर, ज़िला मिरज़ापुर।

ग्रन्थ—(१) काव्यशिक्षक, (२) साधो संगीत सुधा, (३) नीति शृंगार वैराग्यशतक, (४) कवित्तरामायण, (५) हनुमान अष्टक, (६) वर्णविलास, (७) गंगास्तोत्र।

जन्मकाल—१९०८ (वर्तमान)।

नाम—(२३११) रामानंद।

ग्रन्थ—(१) भगवतगीता भाषा, (२) भजनसंग्रह।

विवरण—पहले फ़ौज में सुबेदार थे। पेंशन लेकर संन्यासी होगये।

नाम—(२३१२) सुखविहारीलाल।

ग्रन्थ—सुखदावली।

नाम—(२३१३) हरदेवबख़्श कायस्थ, पैंतेपुर, ज़िला बारहबंकी।

जन्मकाल—१९०८।

नाम—(२३१४) हरिविलास खत्री, लखनऊ।

ग्रन्थ—गोविंदविलास (पृ० २६८)।

नाम—(२३१५) अर्जुनसिंह, बनारस।

ग्रन्थ—कृष्णरहस्य।

कविताकाल—१९३४ के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी। नारायण के शिष्य।

समय संवत् १९३४।

नाम—(२३१६) अजीतसिंहजी।

जन्मकाल—१९०९।

विवरण—ये महाराज खेतड़ीनरेश थे जो हाल ही में अकबर के रौज़े से गिरकर मर गये। ये कविता भी करते थे।

नाम—(२३१७) कृष्णसिंह राजा भिनगा, ज़िला बहरायच।

ग्रन्थ—गंगाष्टक।

जन्मकाल—१९०९।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२३१८) जनकधारी लाल कुर्मी, दानापुर।

ग्रन्थ—सुनीतिसंग्रह।

जन्मकाल—१९०९।

नाम—(२३१९) देवदत्त शास्त्री, कानपूर।

ग्रन्थ—वैशेपिक-दर्शन-भाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेन्दुपराग।

जन्मकाल—१९०९।

विवरण—आप गुरुकुल मथुरा के अध्यापक हैं।

नाम—(२३२०) भगवानदास, मु० ईचाक, ज़िला हज़ारीबाग़।

ग्रन्थ—(१) प्रेमशतक, (२) गोविंदशतक, (३) कृष्णाष्टक, (४)

पञ्चामृतकल्याण, (५) गीतामाहात्म्य, (६) गौरीस्वयंवर, (७) गोविंदाष्टक आदि अनेक ग्रन्थ रचे हैं।

जन्मकाल—१९०९ (वर्त्तमान)।

नाम—(२३२१) भैरवदत्त त्रिपाठी, सरायमीरा।

ग्रन्थ—वाल्मीकीय अयोध्याकांड भाषा।

नाम—(२३२२) मातादीन शुक्ल; मौज़ा अजगर, ज़िला प्रतापगढ़।

ग्रन्थ—(१) रससारिणी, (२) नानार्थनव संग्रहावली।

विवरण—साधारण कवि हैं। इनकी रससारिणी हमारे पास है। दोहों में रस व नायिकाभेद कहा है।

नाम—(२३२३) मंगलसेन शर्मा, अम्बहटा, सहारनपूर।

ग्रन्थ—श्राद्धविवेक।

जन्मकाल—१९७९।

नाम—(२३२४) रघुनाथप्रसाद ब्राह्मण, मु० विरसुनपुर, राज्य पन्ना।

कविताकाल—१९०९ (वर्तमान)।

नाम—(२३२५) रमादत्त त्रिपाठी, नैनीताल।

ग्रन्थ—(१) शिक्षावली, (२) बालबोध, (३) गणितारम्भ, (४) नीतिसार।

जन्मकाल—१९०९।

नाम—(२३२६) रामप्रकाश शर्मा, मिर्ज़ापुर।

ग्रन्थ—(१) विवाहपद्धति, (२) सत्योपदेश।

कविताकाल—१९०९।

नाम—(२३२७) लतीफ़।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२३२८) हीराप्रधान।

ग्रन्थ—नर्मदाजागेश्वरविलास।

समय संवत् १९३५ के पूर्व।

नाम—(२३२९) जमुनादास।

ग्रन्थ—जमुनालहरी।

नाम—(२३३०) दयाराम वैश्य।

ग्रन्थ—(१) सीताचरित्र उपन्यास, (२) मनुस्मृति आल्हा।

जन्मकाल—१९०९।

नाम—(२३३१) फ़रासीसी वैद्य।

ग्रन्थ—अंजुलिपुरान, इंजीलपुरान।

समय संवत् १९३५।

नाम—(२३३२) चिम्मनलाल वैश्य, तिलहर, शाहजहाँपुर।

ग्रन्थ—(१) गृहस्थाश्रम, (२) दयानन्दजीवनचरित्र, (३) नीति-शिरोमणि आदि २० ग्रन्थ हैं।

जन्मकाल—१९१० (वर्तमान)।

नाम—(२३३३) जदुदानजी चारण।

ग्रन्थ—(१) ज़िमीदारी री पीदियान रैनचाकरी जेर चाकरी री विगति, (२) ताजीमो सरदारी रानरी खलगति।

विवरण—राजपूतानी कवि।

नाम—(२३३४) जनकेस बंदीजन, मऊ, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९१२।

विवरण—ये कवि महाराज छतरपूर के यहाँ थे। इनकी कविता तोष कवि की श्रेणी की है।

नाम—(२३३५) मोहनलाल।

ग्रन्थ—(१) शालि होत्र, (२) श्रीनरसिंह जू को अष्टक।

नाम—(२३३६) रविदत्त शास्त्री वैद्य, बेरी, ज़िला रोहतक।

ग्रन्थ—वैद्यक के ४६, ज्योतिष के १६, व्याकरण के ४, न्याय के ७ ग्रंथ।

जन्मकाल—१९११।

विवरण—आप गौड़ ब्राह्मण हैं। आप ग्रंथरचना में विशेष रुचि रखते हैं।

नाम—(२३३७) श्रीहर्ष जी ब्राह्मण, काशी।

ग्रंथ—(१) राधाकृष्णहोरी (पृ० १८), (२) राधाजी को व्याह (पृ० १२)।

नाम—(२३३८) सीताराम वैश्य, पैंतेपुर, ज़िला बारहबंकी।

ग्रंथ—ज्ञानसारावली।

जन्मकाल—१९०७।

सैंतीसवाँ अध्याय।

उत्तर हरिश्चन्द्र-काल (१९३६—४५)।

(२३३९) भीमसेन शर्म्मा।

इनका जन्म संवत् १९११ में एटा ज़िले में हुआ था। संस्कृत विद्या में अच्छा अभ्यास करके ये महाशय काशी में आर्य्यसमाजी हो गये और बहुत दिन तक समाज के अच्छे उपदेशकों में रहे। पीछे से इन का मत बदल गया और ये फिर सनातनधर्मी हो कर ब्राह्मणसर्वस्व नामक एक पत्र निकालने लगे। ये महाशय एक अच्छे उपदेशक और पूर्ण पंडित हैं। हिन्दी और संस्कृत में ये बड़ी सुगमता के साथ उत्तम व्याख्यान देते हैं। ये अपनी धुन के बड़े पक्के हैं। इनका यन्त्रालय इटावे में है और वहाँ से ब्राह्मणसर्वस्व निकलता है।

सन् १९१२ से ये कलकत्ता की यूनीवरसिटी के कालिज में वेदव्याख्याता के पद पर काम कर रहे हैं।

(२३४०) बलदेवदास।

ये महाशय श्रीवास्तव कायस्थ मौज़ा दौलतपूर परगना कल्यानपूर, ज़िला फ़तेहपूर के रहने वाले थे। स्वामी छीतूदास जी इनके मन्त्रगुरु थे, जिनकी आज्ञा से इन्होंने संवत् १९३६ में जानकीविजय नामक २३ पृष्ठ का एक ग्रन्थ बनाया। इसकी कथा अद्भुतरामायण के आधार पर कही गई है। वास्तव में यह कथा बिल्कुल

निर्मूल है क्योंकि अद्भुत रामायण कोई प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं है। बलदेवदास ने प्रधानतः दोहा चौपाइयों में यह ग्रन्थ लिखा है, परन्तु कहीं कहीं और भी छन्द लिखे हैं। इन्होंने गोस्वामीजी के मार्ग का अधिकतर अवलम्ब लिया है, यहाँ तक कि दो चार जगह उन्हींके पद अथवा भाव भी इन्होंने अपनी कविता में रख दिये हैं। इनकी गणना कथा-प्रसंग के कवियों में मधुसूदनदास की श्रेणी में की जा सकती है।

राम रजाय सुनत सब बीरा। सजे सबेग सेन रनधीरा॥
चले प्रथम पैदल भट भारी। निज निज अस्त्र शस्त्र सब धारी॥
मनिगनजटित चली रथ पाँती। भरे बिपुल आयुध बहुभाँती॥
चले तुरँग बहु रंगबिरंगा। जुग पद चर प्रति सूरन संगा॥

असित बिसाल गात मातु महाकाल की सी
　　　पीतपट देखि कै छटा की छबि छपकत।
राजैं मुंड माल रुंड जाल भुजदंड बाजू
　　　भाल खड्ग खप्पर कृपान सान लपकत॥
छूटे बिकराल बाल नैन बलदेव लाल
　　　दिव्य मुख देखि कै दिनेस छबि झपकत।
सालक के घालिबे को काली ने निकाली जीह
　　　लाल लाल लोहू ते लपेटी लार टपकत॥

(२३४१) फ़्रेडरिक पिनकाट।

इनका जन्म संवत् १८९३ में इंगलैंड देश में हुआ और वहीं ये प्रायः अपने जीवन पर्यन्त रहे। पर भारतीय भाषाओं पर

आपका इतना प्रेम था कि आर्थिक दरिद्रता होते हुए भी आप ने संस्कृत, उर्दू, गुजराती, बँगला, तामिल, तैलंगी, मलायलम, और कनाड़ी भाषायें सीखीं। अन्त में इन को हिन्दी से भी प्रेम हुआ और इसे सीख कर इनका अन्य भाषाओं से प्रेम इसके माधुर्य्य के आगे फीका पड़ गया। इन्होंने हिन्दी में सात पुस्तकें सम्पादित कीं, जिनमें कुछ इन्हीं की बनाई हुई भी थीं। आप ने यावज्जीवन हिन्दी का हित और हिन्दीलेखकों का प्रोत्साहन किया। अन्त में संवत् १९५२ में ये भारत को पधारे, पर इसी संवत् के फ़रवरी में इनका शरीरपात लखनऊ में होगया। आप हिन्दी के अच्छे जाननेवालों में से थे।

(२३४२) साहित्याचार्य्य अम्बिकादत्त व्यास।

इनका जन्म संवत् १९१५ चैत्र सुदी ८ को जयपुर में हुआ था। ये महाशय गौड़ ब्राह्मण थे और काशी इनका निवासस्थान था। संस्कृत के ये अच्छे विद्वान् थे और यावज्जीवन पाठशालाओं एवं कालेजों में संस्कृत पढ़ाने का काम करते रहे। इनके अन्तिम पद का वेतन १००) मासिक था। अपनी नौकरी के सम्बन्ध से ये महाशय विहार में वहुत रहे। इनका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। ये महाशय संस्कृत तथा भाषा गद्य पद्य के अच्छे लेखक थे और इन्होंने चार नाटकग्रंथ भी वनाये हैं। यत्र तत्र इन्हें वहुत से प्रशंसापत्र तथा उपाधियाँ मिलीं और इनकी आशुकविता की भी सराहना हुई। इन्होंने संस्कृत और हिन्दी मिलाकर ७८ ग्रंथ निर्माण किये हैं, जिनके नाम सन् १९०१ वाली सरस्वती में

पृष्ठ ४४४ पर लिखे हैं। ललिता नाटिका, गोसंकट नाटक, मरहट्टा नाटक, भारतसौभाग्य नाटक, भाषाभाष्य, गद्यकाव्यमीमांसा, विहारीविहार, विहारीचरित्र, शीघ्रलेखप्रणाली और निज वृत्तान्त इनके ग्रंथों में प्रधान हैं। विहारीविहार में विहारीसतसई के दोहों पर कुंडलियायें लगाई गई हैं। इसकी रचना प्रशंसनीय होने पर भी कुछ शिथिल है। गद्यकाव्यमीमांसा बहुतही विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है। कविता की दृष्टि से इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जा सकती है। इनके अकालमृत्यु से हिन्दी में गवेषणा-विभाग की बड़ी क्षति हुई। इनकी कविता का महत्त्व जैसा इनके गद्य से है वैसा पद्य से नहीं। उदाहरण।

"अब गद्य विभाग की परीक्षा की जाती है। यहाँ साहित्यदर्पणकार के कथनानुसार तीन गद्य तो असमास, अल्पसमास, दीर्घ समास हैं और चौथा वृत्तगंधि है। परन्तु यह विचारना है कि प्रथम ही तीन गद्यों से सरस्वती का सारा गद्यभंडार भर जाता है, फिर कौनसा स्थान शेष रहजाता है जहाँ वृत्तगंधि गद्य स्थिर हो !! हाँ, वृत्तगंधि गद्य जब होगा तब उन्हीं तीन में से कोई सा होगा। इस लिये इसे प्रविभाग कहें तो कहें पर गद्यविभाग में तो नहीं ही रख सकते"।

परनिन्दा ठगपनो कबहुँ नाहिँ चोरी करि हैं।
जन्तुन को दै पीर कबहुँ नहिँ जीवन हरि हैं॥
मिथ्या अप्रिय बचन नाहिँ काहू सन कहि हैं।
पर उपकारन हेत सबै विधि सब दुख सहि हैं॥

(२३४३) चौधरी बदरीनारायण (प्रेमघन)।

आपके पिता का नाम गुरुचरणलाल है। ये पहले मिर्ज़ापुर रहते थे परन्तु अब विशेषतया शीतलगंज, ज़िला गोंडा में रहते हैं। इनका जन्म संवत् १९१२ भाद्रकृष्ण ६ को मिर्ज़ापूर में हुआ। ये सरयूपारीण ब्राह्मण उपाध्याय भरद्वाजगोत्री हैं। आप बहुत दिन तक नागरीनीरद तथा आनन्दकादम्बिनी नामक मासिक-पत्र निकालते रहे। ये भारतेन्दु जी के साथियों में हैं और भाषा के बड़े प्राचीन लेखक तथा कवि हैं। आपके रचित निम्नलिखित ग्रन्थ हैं:—

(१) भारतसौभाग्य नाटक, (२) प्रयाग-रामागमन नाटक, (३) हार्दिकहर्षादर्श काव्य, (४) भारतबधाई, (५) आर्याभिनंदन, (६) मंगलाश, (७) क़लम की कारीगरी, (८) शुभसम्मिलन काव्य,

पटरानी नृप सिन्धु की त्रिपथगामिनी नाम।
तुहिँ भगवति भागीरथी बारहिँ बार प्रनाम॥
बारहिँ बार प्रनाम जननि सब सुख की दाइनि।
पूरनि भक्तन के मनोरथनि सहज सुभाइनि॥
ब्रह्मलोकहू लैांकरि निज अधिकार समानी।
पूरैा मम मन-आस सिन्धु नृप की पटरानी॥ १॥

कौन भरोसे अब इत रहिए कुमति आय घर घाली।
फूट्यो फूट बैर फलि फैल्यो बिधि की कठिन कुचाली॥
चलिए बेगि इहाँ ते आली।
जिन कर नाँहि छड़ो ते करि हैं कहा करद करवाली।
छमा-कवच्च-धारी ये बिहँसत खाय लात औ गाली॥
जिनसों सँभरि सकत नहिँ तनकी धोती ढीली ढाली।
देश-प्रबंध करैंगे वे यह कैसी खामखयाली॥
दास वृत्ति की चाह चहूँ दिसि चारहु बरन बढ़ाली।
करत खुसामद झूठ प्रसंसा मानहु बने ढफाली॥ २॥

इनका गद्य और पद्य पर अच्छा अधिकार है और ये हिन्दी के बड़े लेखकों में गिने जाते हैं। इनको हिन्दी का सदैव से अच्छा शौक़ है।

नाम—(२३४४) लक्ष्मीनारायणसिंह कायस्थ, सिकंदराबाद, ज़िला बुलंदशहर।

ग्रन्थ—तैलङ्गबोध।

रचनाकाल—१९३७। वर्तमान।

(२३४३) चौधरी बदरीनारायण (प्रेमघन)।

आपके पिता का नाम गुरचरणलाल है। ये पहले मिर्ज़ा रहते थे परन्तु अब विशेषतया शीतलगंज, ज़िला गोंडा में हैं। इनका जन्म संवत् १९१२ भाद्रकृष्ण ६ को मिर्ज़ापूर में हु ये सरयूपारीण ब्राह्मण उपाध्याय भरद्वाजगोत्री हैं। आप दिन तक नागरीनीरद तथा आनन्दकादम्बिनी नामक म पत्र निकालते रहे। ये भारतेन्दु जी के साथियों में हैं और आ बड़े प्राचीन लेखक तथा कवि हैं। आपके रचित नि ग्रन्थ हैं:—

(१) भारतसौभाग्य नाटक, (२) प्रयाग-रामाग (३) हार्दिकहर्षादर्श काव्य, (४) भारतबधाई, (५) आ (६) मंगलाश, (७) क़लम की कारीगरी, (८) २ (९) आनंदअरुणोदय, (१०) युगलमंगल स्तोत्र, (११ गान; (१२) वसंत-मकरंद-विन्दु, (१३) कजली-क वारांगनारहस्य महानाटक, (१५) ... पीयूषवर्षा, (१७) आनंदबधाई, (१८) पितरप्रलाप कालतर्पण, (२०) मन की मौज, (२१) ... स्वभावविन्दुसौन्दर्य गद्यकाव्य; (२३) शोकाश्रु विधवाविपत्तिवर्षा गद्य, (२५) भारतभाग्योदय का कामिनी उपन्यास, (२७) वृद्धविलाप प्रहसन, (काव्य, (२९) दुर्दशा दत्तापुर।

और इन्होंने पहले चाणक्यनीति का एकादश अध्याय पर्यन्त भाषा छन्दों में अनुवाद किया और फिर संवत् १९३७ में भुवनेश-भूषण नामक ५० पृष्ठों का स्फुट शृङ्गार कविता का एक स्वतन्त्र ग्रन्थ बनाया। इस ग्रन्थ के अन्त में कुछ चित्र कविताभी की गई है। भुवनेशविलास, भुवनेशअङ्कप्रकाश, भुवनेशयन्त्रप्रकाश नामक इनके और ग्रन्थ हैं। इनके भाई नरदेव, लक्ष्मीनाथ और तारानाथ भी कवि थे। इनके कुटुम्ब में और दो तीन महाशय भी काव्य-रचना करते थे। इनके पितृव्य महाराजा मानसिंह जी उपनाम द्विजदेव अच्छे कवि हो गये हैं। भुवनेश जी का स्वर्गवास हुए क़रीब १४ वर्ष के हुए हैं। इनके ग्रंथों का एवं इनके कुटुम्बियों के कवि होने का हाल भुवनेशभूषण ग्रन्थ में इन्होंने लिखा है। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है जो सरस और मनोहर है। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनका केवल एक छन्द नीचे लिखा जाता है:—

कर कंज केवार पै राजि रहे छहरी छिति लौं छुटि कै अलकैं।
अँगिराति जम्हाति भली विधि सों अधनैननि आनि परीं पलकैं॥
भुवनेश जू भाषे बनै न कछू मुख मंजुल अम्बुज से झलकैं।
मनमोहन नैन मलिन्दन सों रस लेत न क्यों कढ़ि कै कलकैं॥

(२३४७) डाक्टर जी०ए० ग्रियर्सन सी० आई० ई।

इनका जन्म विलायत में संवत् १९१३ में हुआ था। आप सिविलसर्विस पास करके भारत में १९५५ पर्यन्त रहे। इनको हिन्दी से बड़ा प्रगाढ़ प्रेम था और सदैव इनके द्वारा हिन्दी का

उपकार होता रहा है। इन्होंने मिथिला भाषा का व्याकरण, विहारी-कृषक-जीवन, और विहारी बोलियों का व्याकरण नामक ग्रंथ बनाये तथा विहारीसतसई, पद्मावती, भाषाभूषण, तुलसी-कृत रामायण आदि ग्रंथों को सम्पादित किया। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आप ने माडर्न वर्नैक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान नामक इतिहास-ग्रन्थ शिवसिंहसरोज एवं अन्य ग्रंथों के आधार पर भाषासाहित्य के विषय बनाया। इसमें प्रायः सब बड़े कवियों के नाम आ गये हैं। आज कल भी ये महाशय भाषाओं की खोज का ग्रन्थ लिख रहे हैं, जिसके कई भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें इन्होंने हिन्दी की बड़ी प्रशंसा की है। अब ये महाशय विलायत में रह कर पेंशन पाते हैं। आपका हिन्दीप्रेम एवं श्रम सर्वथा सराहनीय है।

नाम—(२३४८) गदाधर जी ब्राह्मण, बाँसी।

ग्रन्थ—(१) घृतसुधातरंगिणी (पद्य, ९६ पृ० १९५६), (२) देवदर्शन स्तोत्र (पद्य, १० पृ० १९५८), (३) क्वाथकल्पद्रुम (गद्य, ९२ पृ० १९५९) (४) कामांकुशमदतरङ्गिणी (गद्य, ४२ पृ० १९५९), (५) वदरीनाथमाहात्म्य (पद्य, २२ पृ० १९५९), (६) गजशाला-चिकित्सा (गद्य, ५२ पृ० १९६०), (७) वैद्यनाथमाहात्म्य (पद्य, १४ पृ० १९६०), (८) अश्वचिकित्सा (पद्य, ३३८ पृ० १९६१), (९) हरिहरमाहात्म्य (पद्य, १० पृ० १९६२), (१०) साधुपचीसी (पद्य, १० पृ० १९६३), (११) नारीचिकित्सा (गद्य, १२८ पृ० १९६२) (१२) जगन्नाथमाहात्म्य, (१३) नयनगदतिमिरभास्कर, (१४) तैल-सुधातरंगिणी, (१५)

तैलघृतसुधातरंगिणी, (१६) चूरनसंग्रह, (१७) प्रमेहतैल-सुधातरंगिणी, (१८) बृहत्रसराजमहोदधि, (१९) रामेश्वर-माहात्म्य, (२०) अयोध्यातीर्थयात्राज्ञान।

विवरण—वर्तमान। ये महाशय अच्छे वैद्य हैं और कविता भी करते हैं। आपकी अवस्था इस समय लगभग ५५ साल के होगी।

(२३४९) नाथूराम शंकरशर्मा।

ये हरदुआगंज अलीगढ़ के निवासी हिन्दी के एक प्रसिद्ध सुकवि हैं। आप समस्यापूर्ति अच्छी करते थे और आजकल खड़ी बोली की भी ललित रचना करते हैं। आपकी अवस्था इस समय प्रायः ५५ साल की है। आपने एक वंगीय उपन्यास का अनुवाद भी किया है।

(२३५०) भगवानदास खत्री, लखनऊ।

ये हिन्दी के पुराने लेखक तथा शुभचिंतक हैं। इन्होंने कई पुस्तकें गद्य तथा पद्य की हिन्दी में लिखी हैं। आज कल ये रेलवे के मोहकमे में नौकर हैं। इनके बनाये और अनुवादित पश्चिमोत्तर देश का भूगोल, ब्रैडलास्वागत, योगवासिष्ठ इत्यादि हमने देखे हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से ग्रंथ आपने रचे तथा अनुवादित किये हैं। इस समय इनकी अवस्था लगभग ५५ साल के है।

नाम—(२३५१) चंडीदान कविराजा मीशन चारण, बूँदी।

ग्रन्थ—(१) सारसागर, (२) बलविग्रह, (३) वंशाभरण, (४) तीजतरंग, (५) विरुदप्रकाश।

जन्मकाल—१८४८।

कविताकाल—१९३९। मृत्यु १९४९।

विवरण—महाराव राजा विष्णुसिंह बूँदीनरेश के दरबार में थे। इनकी कविता प्रशंसनीय है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण।

घूमत घटा से घनघोर से घुमँड़ घोख
उमड़त आए कमठान तेँ अधीर से।
चपट चपेट चरखीन की चलाचल तेँ
धूरि धूम धूसत धकात बलि बीर से॥
मसत मतंग रामसिंह महिपाल जू के,
डाकिनि डराए मद्छाकिनि छकीर से।
साजे साँटमारन अखारन के जैतवार,
आरन के अचल पहारन के पीर से॥

नाम—(२३५२) राव अमान।

ग्रन्थ—(१) लाल-बावा-चरित्र, (२) लालचरित्र, (३) महाराज तख़त-सिंहजी की कविता, (४) महाराज तख़तसिंह जी का जस।

कविताकाल—१९३९ तक।

विवरण—इनकी रचना देखने में नहीं आई।

(२३५३) कालीप्रसाद त्रिवेदी।

ये बनारस वाले हैं। इनका रचनाकाल १९४० के लगभग है।

आपने भाषा-रामायण और सीय-स्वयंवर के अतिरिक्त अनेक मदर्सों की पुस्तकें रचीं।

(२३५४) पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र ।

इनका जन्म संवत् १९१६ में रियासत कश्मीर में हुआ था। ये महाशय संस्कृत, हिन्दी और बँगला में परमप्रवीण थे और अँगरेज़ी भी जानते थे। जीविकार्थ ये सकुटुम्ब कलकत्ते में रहते थे। इन्होंने कई पत्र चलाये तथा सम्पादित किये। प्रसिद्ध पत्र भारत-मित्र इन्हीं का चलाया हुआ है। इस के अतिरिक्त सारसुधानिधि, उचितवक्ता और मारवाड़ीबन्धु नामक पत्र भी इन्होंने चलाये। इन्होंने २०, २२ पुस्तकें अनुवाद आदि मिलाकर लिखीं। इनका स्वर्गवास १९६७ में हो गया। ये महाशय हिन्दी के परमोत्तम लेखकों में से थे।

नाम—(२३५५) मातादीन द्विवेदी (हरिदास), गजपुर, गोरख-पुर।

रचना— स्फुट काव्य, २०० छंद।

जन्मकाल—१९११।

रचनाकाल—१९४०। वर्तमान।

विवरण—कविता सरस है।

उदाहरण।

टेसू पलासन औ कचनार अनार की डार अँगार लखायगो।
तापर पौन प्रसंगन ते रजके कन धूम के धार सो छायगो॥

त्योंही कछारन मैं सरसैां के प्रसूनन पै जरदी दरसायगो।
हाय दई हरिदास आये बसंत बिसासी कसाई सो आय गो॥

नाम—(२३५६) पंडित नकछेदी तेवारी, उपनाम अजान कवि।

ग्रन्थ—(१) कविकीर्तिकलानिधि, (२) मनोजमंजरीसंग्रह, (३) भँड़ौआसंग्रह, (४) वीरोल्लास, (५) खड्गावली, (६) होरी-गुलाल, (७) लछिराम की जीवनी।

जन्मकाल—१९१९।

कविताकाल—१९४०।

विवरण—ये महाशय हल्दी-ग्राम-निवासी त्रिपाठी थे। इन्होंने स्फुट काव्य तथा गद्यरचना की और बहुत सी साहित्य-सम्बन्धिनी पुस्तकें भी प्रकाशित कराई हैं। आपने कविकीर्तिकलानिधि नामक ग्रंथ भी रचा, जिसमें भाषा के कवियों का हाल और ग्रन्थ इत्यादि लिखे हैं। यह ग्रंथ विशेषतया शिवसिंहसरोज के आधार पर लिखा गया। आपके भाषाप्रेम और गवेषणा आदरणीय हैं।

परभात लैां केलि करी ललना वगरे कच पेंड़िन लैां छहरें।
रसराती उनींदी भईं अँखियाँ रद लागे कपोलन मैं छहरैं॥
दरकी अँगिया मैं उरोज लसैं लट तापै अजान परी लहरैं।
मनो केसरिकुंभ के शृंग पै सुन्दर सांपिनि के चेटुवा विहरैं॥

(२३५७) रामकृष्ण वर्म्मा।

इनका जन्म संवत् १९१६ में काशी पुरी में हुआ था। इनके पिता हीरालाल खत्री थे। रामकृष्ण जी ने बी० ए० तक पढ़ा था

पर आप उस परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सके । ये गद्य और पद्य दोनों के लेखक थे । इन्होंने १९४० में भारतजीवन पत्र निकाला । इनके भारतजीवन प्रेस में कविता के अच्छे अच्छे ग्रन्थ छपे, पर ये उनका मूल्य अधिक रखते थे । नाटकों की भी रचना इन्होंने की है । इनका शरीरपात संवत् १९६३ में हो गया । इनके रचित तथा अनुवादित ग्रंथ ये हैं :—

(१) कृष्णकुमारी नाटक, (२) पद्मावती नाटक, (३) वीर नारी, (४) अकबर उपन्यास, प्रथम भाग, (५) अमलावृत्तान्तमाला, (६) कथासरित्सागर, १२ भाग, अपूर्ण, (७) कान्स्टेबुलवृत्तान्तमाला, (८) ठगवृत्तांतमाला, चार भाग, (९) पुलिसवृत्तांतमाला, (१०) भूतों का मकान, (११) स्वर्णबाई उपन्यास, (१२) संसारदर्पण, (१३) बलबीरपचासा, (१४) बिरहा, (१५) ईसाईमतखंडन, (१६) चित्तौरचातकी,

नाम—(२३५८) जानकीप्रसाद, पँवार जोहबेनकटी, ज़िला रायबरेली ।

ग्रन्थ—(१) शाहनामा (उर्दू में भारत का इतिहास), (२) रघुवीरध्यानावली, (३) रामनवरत्न, (४) भगवतीविनय, (५) रामनिवास रामायण, (६) रामानंद-विहार, (७) नीतिविलास ।

कविताकाल—१९४० ।

विवरण—इनकी कविता उत्कृष्ट यमक एवं अन्य अनुप्राससयुक्त होती है । इनकी गणना तोष श्रेणी में है :—

लेखक थे। जायसी की पद्मावत बड़े श्रम से इन्होंने सम्पादित की थी। ये सरल हिन्दी के पक्षपाती थे। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के आप सभापति भी रहे हैं।

(२३६१) रामशंकर व्यास (पंडित)।

आपका जन्म संवत् १९१७ में हुआ था। आपने कई स्थानों पर नौकरी की और अब २५०) मासिक पर एक रियासत के मैनेजर हैं। आपने कई वर्ष कविवचनसुधा और आर्य्यमित्र का सम्पादन किया। आप भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के अन्तरंग मित्रों में थे और उन्हें वह उपाधि पहले इन्हों ने दी थी। व्यासजी ने खगोल-दर्पण, वाक्यपंचाशिका, नैपोलियन की जीवनी, बात की करामात, मधुमती, वेनिस का बाँका, चन्द्रास्त, नूतनपाठ, और राय दुर्गा-प्रसाद का जीवनचरित्र नामक ग्रन्थ रचे हैं। आप गद्य के एक अच्छे लेखक हैं।

(२३६२) जामसुता जाड़ेचीजी श्रीप्रताप बाला।

ये महारानी जामनगर के महाराज रिड़मलजी की राजकुमारी तथा जोधपुर के भूतपूर्व महाराज श्रीतख़तसिंह की महारानी हैं। इनका जन्म संवत् १८९१ और विवाह संवत् १९०८ वैक्रमीय में हुआ था। ये बड़ी ही उदारहृदया और प्रजा को पुत्रवत् मानने वाली हैं। इन्हें स्वधर्म पर बड़ी ही श्रद्धा है। इन्होंने अकाल में बड़ी उदारता से भोजन वितरण किया था और कई मन्दिर भी बनवाये हैं। यद्यपि काल की कराल गति से इनको कई स्वजनों की अकाल मौत के असह्य दुःख भोगने पड़े हैं, तथापि इन्होंने

धैर्य्य नहीं छोड़ा और धर्म पर अपना पूर्ववत् विश्वास दृढ़ रक्खा है। ये बड़ी विदुषी हैं और इन्होंने बहुत स्फुट भजन बनाये हैं। इनके बहुत से पद "प्रतापकुँवरिरत्नावली" नामक पुस्तक में छपे हैं। इनकी रचना बहुत सरस और भक्तिपूर्ण है, और वह सुकवियों कृत कविता की समानता करती है। उदाहरणार्थ इनके दो पद उद्धृत किये जाते हैं।

वारी थारा मुखड़ा री श्याम सुजान (टेक)।
मंद मंद मुख हास बिराजै कोटिन काम लजान।
अनियारी अँखियाँ रसभीनो बाँकी भौंह कमान॥
दाड़िम दसन अधर अरुनारे बचन सुधा सुख खान।
जामसुता प्रभुसों कर जोरे हो मम जीवन प्रान॥

दरस मोंहि देहु चतुरभुज श्याम (टेक)।
करि किरपा करुनानिधि मोरे सफल करौ सब काम॥
पाव पलक बिसरूँ नहिँ तुमको याद करूँ नित नाम।
जामसुता की यही बीनती आनि करौ उर धाम॥

इनका कविताकाल १९४१ जान पड़ता है।

(२३६३) आर्यमुनिजी।

इनका जन्म संवत् १९१९ में हुआ था। आप दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज लाहौर के एक सुयोग्य अध्यापक हैं। वेदान्तार्य-भाष्य, गीताप्रदीप और न्यायार्य-भाष्य ग्रन्थ आपके निर्मित किये हुए हैं।

(२३६४) महेश।

राजा शीतलाबख़्श बहादुरसिंह उपनाम महेश बस्ती के राजा वर्तमान राजा परेश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के पिता थे। ये महाशय कवियों के बड़े आश्रयदाता थे और कवि लछिराम का इनके यहाँ बड़ा सत्कार हुआ था। इनका शृंगारशतक नामक एक ग्रंथ हमारे देखने में आया है। ये संवत् १९४१ के लगभग तक जीवित थे। इनकी कविता अच्छी हुई है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

सुनि बोल सुहावन तेरे अटा यह टेक हिये मैं धरैं पै धरैं।
मढ़ि कंचन चोंच पखौवन मैं मुकताहल गूँदि भरैं पै भरैं॥
सुख-पींजर पालि पढ़ाय घने गुन औगुन कोटि हरैं पै हरैं।
बिछुरे हरि मोहिँ महेश मिलैं तोहिँ काग ते हंस करैं पै करैं॥१

(२३६५) प्रतापनारायण मिश्र।

इनके पिता का नाम संकटाप्रसाद था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण बैजेगाँव, ज़िला कानपुर के मिश्र थे। इनका जन्म संवत् १९१३ आश्विन शुक्ल ९ को हुआ। इन्होंने पहले अपने पिता से कुछ संस्कृत पढ़ी, फिर स्कूल में नागरी तथा अँगरेज़ी की शिक्षा पाई और उसी के साथ साथ उर्दू और फ़ारसी का भी अभ्यास किया। इनका मन पढ़ने में नहीं लगता था, अतः ये कोई भाषा भी अच्छी तरह नहीं पढ़ सके। हिन्दी पर इनका विशेष प्रेम था और जातीयता भी इनमें कूट कूट कर भरी थी। ये गोभक्त भी बड़े थे और हरिश्चन्द्र जी को पूज्य दृष्टि से देखते थे। कांगरेस

के ये बड़े पक्षपाती थे। इनका मत यह था कि—चहहु जु साँचो निज कल्यान। तौ सब मिलि भारतसंतान। जपौ निरंतर एक जबान। हिंदी, हिन्दू, हिन्दुस्तान॥ काव्य करना इन्होंने ललित त्रिवेदी मल्लावाँ-निवासी से सीखा था।

ये महाशय एक उत्तम कवि और बड़े ही ज़िन्दःदिल मनुष्य थे। प्रतिभा इनमें बहुत ही विलक्षण थी। इनका स्वर्गवास संवत् १९५१ में ३८ वर्ष की अवस्था में हो गया। ये महाशय मज़ाक़ की कविता बहुत चटकीली करते थे, जो कभी कभी ग्रामीण भाषा में भी होती थी। 'अरे बुढ़ापा तोहरे मारे अब तौ हम नकुन्याय गयन' आदि इनके छन्द बड़े मनोहर हैं। ये कानपुर में रहते थे और इन्होंने ब्राह्मण नामक एक पत्र भी सन् १८८३ से निकाला जो दस वर्ष तक चलता रहा। इनके रचित तथा अनुवादित निम्नलिखित ग्रंथ हैं, पर कोई बृहत् ग्रन्थ बनाने के पहले ही ये कुटिल काल के वश हो गये। तृप्यन्ताम् में इन्होंने ९० छन्दों में तर्पण के कुल नामों पर एक एक छन्द देशहितैषिता का लिखा था। इनके असमय स्वर्ग वास से हिन्दी का बड़ा अपकार हुआ। ये महाशय व्रजभाषा के प्रेमी थे और खड़ी बोली की कविता को आदर नहीं देते थे। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

अपने समाचार पत्र के ग्राहकों प्रति कविता—

आठ मास बीते जजमान। अब तौ करौ दच्छिना दान।

हर गंगा॥

(२३६४) महेश।

राजा शीतलाबख्श बहादुरसिंह उपनाम महेश बस्ती के राजा वर्तमान राजा पटेश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के पिता थे। ये महाशय कवियों के बड़े आश्रयदाता थे और कवि लछिराम का इनके यहाँ बड़ा सत्कार हुआ था। इनका शृंगारशतक नामक एक ग्रंथ हमारे देखने में आया है। ये संवत् १९४१ के लग-भग तक जीवित थे। इनकी कविता अच्छी हुई है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

सुनि बोल सुहावन तेरे अटा यह टेक हिये मैं धरौं पै धरौं।
मढ़ि कंचन चोंच पखोवन मैं मुकताहल गूँदि भरौं पै भरौं॥
सुख-पींजर पालि पढ़ाय घने गुन औगुन कोटि हरौं पै हरौं।
बिछुरे हरि मोहिँ महेश मिलैं तोहिँ काग ते हंस करौं पै करौं॥१॥

(२३६५) प्रतापनारायण मिश्र।

इनके पिता का नाम संकटाप्रसाद था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण बैजेगाँव, ज़िला कानपुर के मिश्र थे। इनका जन्म संवत् १९१३ आश्विन शुक्ल ९ को हुआ। इन्होंने पहले अपने पिता से कुछ संस्कृत पढ़ी, फिर स्कूल में नागरी तथा अँगरेज़ी की शिक्षा पाई और उसी के साथ साथ उर्दू और फ़ारसी का भी अभ्यास किया। इनका मन पढ़ने में नहीं लगता था, अतः ये कोई भाषा भी अच्छी तरह नहीं पढ़ सके। हिन्दी पर इनका विशेष प्रेम था और जातीयता भी इनमें कूट कूट कर भरी थी। ये गोभक्त भी बड़े थे और हरिश्चन्द्र जी को पूज्य दृष्टि से देखते थे। कांग्रेस

के ये बड़े पक्षपाती थे। इनका मत यह था कि—चहहु जु साँचो निज कल्यान। तौ सब मिलि भारतसंतान। जपौ निरंतर एक जबान। हिंदी, हिन्दू, हिन्दुस्तान॥ काव्य करना इन्होंने ललित त्रिवेदी मल्लावाँ-निवासी से सीखा था।

ये महाशय एक उत्तम कवि और बड़े ही ज़िन्दःदिल मनुष्य थे। प्रतिभा इनमें बहुत ही विलक्षण थी। इनका स्वर्गवास संवत् १९५१ में ३८ वर्ष की अवस्था में हो गया। ये महाशय मज़ाक़ की कविता बहुत चटकीली करते थे, जो कभी कभी ग्रामीण भाषा में भी होती थी। 'अरे बुढ़ापा तोहरे मारे अब तो हम नकुन्याय गयन' आदि इनके छन्द बड़े मनोहर हैं। ये कानपुर में रहते थे और इन्होंने ब्राह्मण नामक एक पत्र भी सन् १८८३ से निकाला जो दस वर्ष तक चलता रहा। इनके रचित तथा अनुवादित निम्नलिखित ग्रंथ हैं, पर कोई बृहत् ग्रन्थ बनाने के पहले ही ये कुटिल काल के वश हो गये। तृप्यन्ताम् में इन्होंने ९० छन्दों में तर्पण के कुल नामों पर एक एक छन्द देशहितैषिता का लिखा था। इनके असमय स्वर्ग वास से हिन्दी का बड़ा अपकार हुआ। ये महाशय व्रजभाषा के प्रेमी थे और खड़ी बोली की कविता को आदर नहीं देते थे। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

अपने समाचार पत्र के ग्राहकों प्रति कविता—

आठ मास बीते जजमान। अब तौ करौ दच्छिना दान।

हर गंगा॥

काव्यप्रभाकर इस बात के साक्षि-स्वरूप हैं। आप गद्य के अच्छे लेखक हैं, और पद्यरचना भी अच्छी करते हैं। आप के रचित निम्न लिखित ग्रन्थ हैं। आप संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, प्राकृत, उड़िया, मराठी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं।

(१) छन्दःप्रभाकर, (२) काव्यप्रभाकर, (३) नवपंचाशत रामायण, (४) कालप्रबोध, (५) दुर्गा सान्वय भाषा टीका, (६) गुलज़ारसख़ुन उर्दू।

छन्द को प्रबन्ध त्योंही व्यंग्य नायकादि भेद उद्दीपन भाव अनु भाव पति बामा के। भाव सनचारी असथायी रस भूपन हैं दूपन अदूषन जे कविता ललामा के॥ काव्य को बिचार भानु ठोक उक्ति सार कोष काव्य परभाकर में साजि काव्य सामा के। कोविद कवी-सन को कृष्ण मानि भेंट देत अंगीकार कीजै त्यारि चाउर सुदामा के॥ १॥

नाम—(२३६७) मानालाल (द्विजराम) त्रिवेदी, मल्लावाँ, जिला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) साहित्यसिंधु, (२) नखशिख।

जन्मकाल—१९१७।

कविताकाल—१९४२। वर्त्तमान।

विवरण—आप सुकवि हैं।

कीधौं कंज मंजु ये बनाये हैं बिरंचि जुग लोचन भँवर हित मुदित मुरारी के। कीधौं पारिजात के हैं लोहित नवल पात दुति दरसात यों प्रवाल लाल भारी के॥ कवि द्विजराम कीधौं विप

अनुराग लसै देखिमन फँसै अति आनँद अपारी के। जावक जपा गुलाब आब के हरनहार सोहत चरन वृषभानुकी दुलारी के ॥१॥

(२३९८) शिवनन्दन सहाय ।

आप आरा ज़िला अख़्तियारपूर ग्राम के क़ानूनगो वंशी एक कायस्थ महाशय के यहाँ संवत् १९१७ में उत्पन्न हुए। अँगरेज़ी में एन्ट्रेंस पास करके आपने दीवानी में नौकरी कर ली और इस समय आप आरा में ट्रँसलेटर हैं। आप फ़ारसी भी अच्छी तरह जानते हैं। आप गद्य तथा पद्य के प्रसिद्ध और अच्छे लेखक हैं। नाटक-रचना भी आपने की है। आपका रचित हरिश्चन्द्र-जीवनचरित्र हमने देखा है। यह बड़ा ही प्रशंसनीय ग्रंथ है। भाषा में शायद इससे अच्छे जीवनचरित्र कम होंगे। आपकी भाषा और समालोचना बहुत अच्छी होती हैं। कविता भी आपने अच्छी की है। आपके रचित ग्रंथ ये हैं:—

(१) बङ्गाल का इतिहास, (२) विचित्रसंग्रह स्वरचित पद्य, (३) कविताकुसुम (पद्य), (४) सुदामा नाटक (गद्य पद्य), (५) कृष्णसुदामा (पद्य), (६) भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र की जीवनी, (७) बाबू साहबप्रसादसिंह की जीवनी, (८) श्रीसीतारामशरण भगवान प्रसाद की जीवनी, (९) बाबा सुमेरसिंह साहबज़ादे की जीवनी, (१०) गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी (लिखी जारही है)।

आप उर्दू की भी शायरी करते हैं और समस्यापूर्ति भी मंडलों और समाजों में भेजते हैं।

(२३६९) उमादत्तजी, उपनाम दत्त।

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण दरबार अलवर के कवियों में हैं। आपकी अवस्था इस समय लगभग ५० साल की होगी। इनकी कविता बड़ी ही सरस तथा सोहावनी होती है। उदाहरणः—

गेह ते निकसि बैठि बेंचत सुमनहार
देह-दुति देखि दीह दामिनि लजा करै।
मदन उमंग नव जोबन तरंग उटैं
बसन सुरंग अंग भूषन सजा करै।
दत्त कवि कहै प्रेम पालत प्रवीनन सों
बोलत अमोल बैन बीन सी बजा करै॥
गजब गुजारत बजार मैं नचाय नैन
मंजुल मजेज भरी मालिनि मजा करै॥ १॥

मूकि जातीं सोतैं सब दीरघ दिमाक देखि
रसिक बिलोकि होत बिकल निहारे मैं।
झारत न झारे थके गाड़रू बिचारे
जरी जंत्र मंत्र बिबिध प्रकार उपचारे मैं॥
दत्त कवि कहै मन धरत न धीर अजौं
कैसे बचैं कुटिल कटाच्छ फुसकारे मैं।
बिषधर भारे नाग कारे नैन कामिनि के
काटि छिपि जात हाय पलक पिटारे मैं॥ २॥

(२३७०) रामनाथ जी कविराव, बूँदी।

ये कविराव गुलाबसिंह के भतीजे तथा दत्तक पुत्र हैं। आप संस्कृत तथा भाषा के अच्छे पंडित और कवि, दरबार बूँदी के

के आश्रित हैं। कविता अच्छी करते हैं। इस समय आपकी अवस्था लगभग ५० वर्ष की होगी। आपने छोटे बड़े ११ ग्रन्थ बनाये, जिनके नाम समस्यासार, सतीचरित्र, रामनीति, नीतिसार, शंभुशतक, परमेश्वराष्टक, गणेशाष्टक, सूर्याष्टक, दुर्गाष्टक, शिवाष्टक, और नीतिशतक हैं। उदाहरण :—

बंदन बलित अति मंडित बिचित्र भाल
तमके समूह सम भ्रात गिरिराज के।
मदजल झरत चलत लचकत भूमि
पर दल मलत सुनत गल गाज के॥
कहै रामनाथ भननात भौंर चारौ ओर लखि
अभिलाख होत मन सुख साज के।
कज्जल ते कारे बलवारे दिग दंतिन ते
उन्नत दतारे भारे रामसिंह राज के॥ १॥

(२३७१) सीताराम बी० ए०, उपनाम भूप कवि।

ये महाशय कायस्थ कुलोद्भव अयोध्यानिवासी लाला शिवरत्न के पुत्र हैं। इन्होंने बी० ए० पास करके फ़ैज़ाबाद स्कूल में द्वितीय शिक्षक का पद ग्रहण किया। थोड़े दिनों के पीछे आप डेपुटी-कलेक्टर नियत हुए और आज कल पेंशनर हैं। इनकी अवस्था प्रायः ५८ वर्ष की है। ये महाशय संस्कृत और भाषा के अच्छे विद्वान् हैं और इनकी प्रकृति ऐसी श्रमशील रही है कि ये अपने सरकारी कार्य्य के अतिरिक्त देशोपकारार्थ भी कुछ न कुछ लिखा ही करते थे। इन्होंने संवत् १९४३ तक कालिदासकृत रघुवंश के सात

सर्गों का भाषानुवाद किया था और फिर संवत् १९४९ में उसे पूर्ण किया। फिर क्रमशः इन्होंने कालिदासकृत मेघदूत, कुमारसम्भव, ऋतुसंहार और शृंगारतिलक का अनुवाद किया। रघुवंश और कुमारसम्भव की रचना दोहा चौपाइयों में, मेघदूत की घनाक्षरियों में, और शेष दोनों छोटे छोटे ग्रन्थों की विविध छन्दों में हुई है। इस कवि ने कालिदास की कविता का चमत्कार लाने का उतना प्रयत्न नहीं किया जितना कि सीधी सादी कथा कहने का। इसी कारण योरोपियन समालोचकों ने तो इनकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की, परन्तु हिन्दी के सब समालोचकों ने इनकी कविता को उतना पसंद नहीं किया। इन्होंने कविसम्मानित शब्दों को विशेष आदर नहीं दिया है और जहाँ ऐसे शब्द आ सकते थे, वहाँ भी कहीं कहीं अव्यवहृत शब्द रख दिये हैं। यह भी एक कारण था जिससे कि कविजनों ने इनकी कविता बहुत पसंद नहीं की। इन्होंने कालिदास की रीति पर चल कर एक अध्याय में एक ही छन्द रक्खा है और जैसे अन्त के दो एक छन्दों में कालिदास ने छन्द बदल दिया है उसी तरह इन्होंने भी किया है। यह रीति संस्कृत में तो आदरणीय है, परन्तु भाषा में एकही छन्द लिखने से वर्णन प्रायः अरुचिकर हो जाता है। इन सब बातों के होते हुए भी इन्होंने परिश्रम बहुत किया है और संस्कृत से अनभिज्ञ पाठकों का इनके ग्रन्थों द्वारा उपकार अवश्य हुआ है। इन सब ग्रन्थों में कोई विशेष दोष नहीं है और इनकी भाषा श्रुतिकटु-दोष से रहित और मधुर है। इन सब में मेघदूत और ऋतुसंहार की रचना अच्छी है। हमारे लाला साहब ने

संस्कृत के कुछ नाटकों का भी उलथा किया है, जिनमें से मृच्छकटिक, महावीरचरित, उत्तर रामचरित, मालतीमाधव, मालविकाग्निमित्र, श्रौर नागानंद हमने देखे हैं। इनकी रचना गद्य श्रौर पद्य दोनों में हुई है। हमको इनके अन्य ग्रन्थों की अपेक्षा नाटक-रचना अधिक रुचिकर हुई। गद्य में इन्होंने खड़ी बोली का प्रयोग किया है श्रौर वह सर्वथा आदरणीय है। गद्य में हम लाला साहब को उत्तम लेखक समझते हैं। दोहा चौपाइयों में इन्होंने अवध की भाषा का प्राधान्य रक्खा है, परन्तु घनाक्षरी आदि में अवधी श्रौर व्रजभाषा का मिश्रण कर दिया है। इन्होंने पद्य में खड़ी बोली का प्रयोग नहीं किया। इन महाशय ने गद्य के भी ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें सावित्री का वर्णन हमारे पास मौजूद है। आपने श्रौर भी बहुत से छोटे छोटे ग्रन्थ बनाये हैं, जिनको यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। इनकी गणना हम मधुसूदनदास की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं:—

महाकाल जो बसत महेसा। यह रहि तासु समीप नरेसा॥
पाख अँधेरेहु करत बिहारा। शुक्लपक्ष सुख लहत अपारा॥१॥

राखतसँयोग आस प्रान सों पियारि आज्ञु
करहुँ मनोरथ अनेक जिय धीर धरि।
आपन सोहाग मम जीवन अधार जानि
होहु ना निरास कछु चित्तहि उदास करि॥
यहि जग कौन सुख भोगत सदैव भूप
काहि पुनि दुःख एक रहत जनम भरि।

ऊपर उठावत गिरावत धरनि पर

चक्र-कोर सरिस नचावत सबहिँ हरि ॥ २ ॥

सुनत अप्सरन गीत मनोहर। भये समाधि भंग नहिँ शंकर ॥
जिन निज चित्त वृत्ति धरि साधी। सकै तोरि को तासु समाधी ॥३॥

बन लगत डाढ़ा प्रबल चहुँ दिसि भूमि सब लखियत जरी।
लू चलत इत उत उड़त सूखे पात रूखन सन झरी ॥
दिननाथ तेज प्रचंड बस नहिँ नीर देखिय ताल में।
डर लगत देखत बन सकल यहि कठिन ग्रीषम काल में ॥४॥

नाम—(२३७२) फ़तेहसिंहजी (चन्द्र) राजा, पवाँया, ज़िला शाहजहाँपुर।

ग्रन्थ—(१) चन्द्रोपदेश, (२) वर्षा व्यवस्था, (३) फलित ज्योतिष सिद्धांत, (४) प्लेग-प्रतीकार, (५) स्फुट काव्य, समस्यापूर्ति इत्यादि।

कविताकाल—वर्तमान।

विवरण—ये पवाँया के राजा हैं। कविता अच्छी करते हैं और काव्य तथा कवियों के बड़े प्रेमी हैं। आपकी अवस्था इस समय लगभग ५० साल के होगी। यह ग्रंथ हमने देखे हैं। इनके अतिरिक्त शायद आपके और भी ग्रंथ हों।

(२३७३) बलवन्तराव।

ये सेंधिया (प्रिंस) ग्वालियर निवासी हैं। ये भी हिन्दी गद्य लिखते हैं। आपका एक लेख सरस्वती पत्रिका की छठी संख्या में है। आप की अवस्था इस समय लगभग ५० साल के होगी।

(२३७४) सूर्य्यप्रसाद मिश्र।

ये मकनपूर ज़िला फ़र्रुख़ाबाद के निवासी हैं। आप हिन्दी के अच्छे व्याख्यानदाता एवं आर्य्यसमाजी हैं। आपने कान्यकुब्ज सभा के हित में विशेष यत्न किया और बहुत से लेख भी लिखे। कुछ दिन के लिए आप मार्तंडानन्द नाम धारण करके फ़क़ीर भी हो गये थे, परन्तु अब फिर गृहस्थ हैं। आप की अवस्था प्रायः ५० वर्ष की होगी।

सुक़रात की मृत्यु और मारपूजा, नामक दो ग्रंथ आपके हैं।

(२३७५) दीनदयालु शर्मा।

ये भारतधर्म्ममहामंडल के सबसे बड़े व्याख्यानदाता हैं। आपकी वाणी में बड़ा बल है और आप बहुत उत्तम व्याख्यान देते हैं। आपकी अवस्था प्रायः ५५ वर्ष की होगी। आपने घूम घूम कर भारत में सभी प्रान्तों में व्याख्यान दिये हैं और अच्छी सफलता प्राप्त की है।

(२३७६) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

द्विवेदी जी का जन्म १९२१ में हुआ था। आप दौलतपूर, ज़िला रायबरेली के निवासी हैं। आप पहले जी० आई० पी० रेल के नौकर थे और झाँसी में हेडक्लार्क थे, जहाँ आपका मासिक वेतन १५०) था, परन्तु हिन्दी-प्रेम के कारण आपने वह नौकरी छोड़ कर संवत् १९६० से सरस्वती का सम्पादन आरम्भ किया और तब से बराबर बड़ी योग्यता से आप उसे चला रहे हैं। आपके

सम्पादकत्व में सरस्वती ने बड़ी उन्नति की है। केवल एक साल अस्वस्थता के कारण आपने इस काम से छुट्टी लेली थी। हिन्दी की उन्नति का कार्य्य आपने सदैव बड़े उत्साह से किया और अब तो आप उसी कार्य्य में सब छोड़ कर तत्पर हैं। कुछ लोगों का विचार है कि आप वर्त्तमान समय में सर्वोत्कृष्ट गद्यलेखक हैं। आपने बहुतेरे छोटे बड़े ग्रंथों का गद्यानुवाद किया है। आपने कई समालोचना-ग्रन्थ भी लिखे हैं, जिनमें नैषधचरितचर्चा और विक्रमांकदेवचरितचर्चा प्रधान हैं। कालिदास की भी समालोचना आपने लिखी है। आपने खड़ी बोली की कुछ कविता भी की है जो प्रायः २०० पृष्ठों के ग्रन्थ-स्वरूप में छपी है। आज कल आप जुही, कानपूर में रहते हैं। आपके ग्रन्थों में हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, शिक्षा, सम्पत्तिशास्त्र, बेकनविचाररत्नावली, स्वतंत्रता, सचित्र हिन्दी-महाभारत, जलचिकित्सा आदि हमने देखे हैं।

वानी वसै सुकवि आनन में सयानी।
मानी जु जाय यह बात कही पुरानी॥
तो सत्य सत्य कविता कविरत्न तेरी।
वाही त्रिलोकपरिपूजित देवि प्रेरी॥
तेजोनिधान रविविम्ब सु दीप्ति धारी।
आह्लाद कारक शशीनिशितापहारी॥
जो थे प्रकाशमय पिंड न ये बनाये।
तो व्योम बीच कब ये किस भाँति आये॥

समालोचना लिखने में द्विवेदी जी ने दोषों का वर्णन खूब किया है। आप की रचनाओं में अनुवादग्रंथों की प्रचुरता है।

(२३७७) नन्दकिशोर शुक्ल।

ये टेढ़ा, ज़िला उन्नाव के निवासी हैं। आपने राजतरंगिणी नामक काश्मीर के प्रसिद्ध इतिहास-ग्रन्थ के प्रथम भाग का हिन्दी-गद्य में अनुवाद किया है। इनके और भी कई ग्रन्थ अनुवादित तथा रचित हैं। आपकी अवस्था ५० साल की होगी। आपके ग्रन्थों में सनातनधर्म वा दयानन्दी मर्म, उपनिषद् का उपदेश और भारतभक्ति प्रधान हैं। आपने कुल १३ ग्रन्थ रचे। आप भारतधर्ममहामंडल के महोपदेशक हैं।

(२३७८) रत्नकुँवरि बीबी।

ये महाशया मुर्शिदाबाद के जगत्सेठ घराने में जन्मी थीं और इन्होंने वृद्धावस्था तक बहुत सुखपूर्वक पुत्र पौत्रों में अपना समय विताता किया। बाबू शिवप्रसाद सितारेहिंद इनके पौत्र थे। ये संस्कृत और फ़ारसी की अच्छी ज्ञाता थीं और योगाभ्यास में भी इन्होंने श्रम किया था। इनका आचरण बहुत प्रशंसनीय और अनुकरणीय था। इन्होंने संवत् १९४४ में प्रेमरत्न नामक ग्रन्थ बनाकर उसमें "श्रीकृष्ण व्रजचन्द आनन्दकंद की लीलाओं का उल्लेख परम प्रेम और प्रचुर प्रीति से किया है"। इनकी कविता अच्छी है। इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में की जाती है। उदाहरणार्थ दो छंद नीचे दिये जाते हैं:—

अविगत आनँदकन्द परम पुरुष परमातमा।
सुमिरि सु परमानंद गावत कछु हरि जस विमल॥

भगत हृदय सुखदैन प्रेम पूरि पावन परम।
लहत श्रवन सुनि वैन भववारिधि तारन तरन॥

(२३७९) ज्वालाप्रसाद मिश्र।

इनका जन्म संवत् १९१९ में मुरादाबाद में हुआ था। ये महाशय संस्कृत तथा हिन्दी के बहुत अच्छे विद्वान् हैं और स्वतन्त्र ग्रन्थ तथा अनुवाद मिला कर कितनेही ग्रन्थ बना चुके हैं। भारतधर्ममहामंडल के ये उपदेशक भी हैं और मंडल ने इन्हें विद्यावारिधि एवं महोपदेशक की उपाधियाँ प्रदान की हैं। हिन्दी में ये महाशय बहुत उत्तमतापूर्वक धारा बाँध कर व्याख्यान देते हैं और सारे भारत में घूम घूम कर सनातन धर्म पर व्याख्यान देना इनका काम है। कई सभाओं में आर्य्यसमाजी पण्डितों से इन्होंने शास्त्रार्थ में जय पाई है। आपने शुक्ल यजुर्वेद पर 'मिश्र भाष्य' नामक एक विद्वत्तापूर्ण टीका रची है। इसके अतिरिक्त तीस उत्कृष्ट संस्कृत ग्रन्थों का आपने भाषानुवाद भी किया है। तुलसीकृत रामायण एवं विहारी सतसई की टीकायें भी पण्डितजी की प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त दयानन्दतिमिरभास्कर, जाति-निर्णय, अष्टादशपुराण, सीतावनवास नाटक, भक्तमाल आदि कई अच्छी पुस्तकें भी इन्होंने लिखी हैं। इनकी विद्वत्ता तथा लेखन-शक्ति की आज बड़ी प्रशंसा है।

(२३८०) माननीय मदनमोहन मालवीय।

इनका जन्म संवत् १९१९ में प्रयाग में हुआ था। आपने २२ वर्ष की अवस्था में बी० ए० पास किया और संवत् १९४३ से ढाई वर्ष
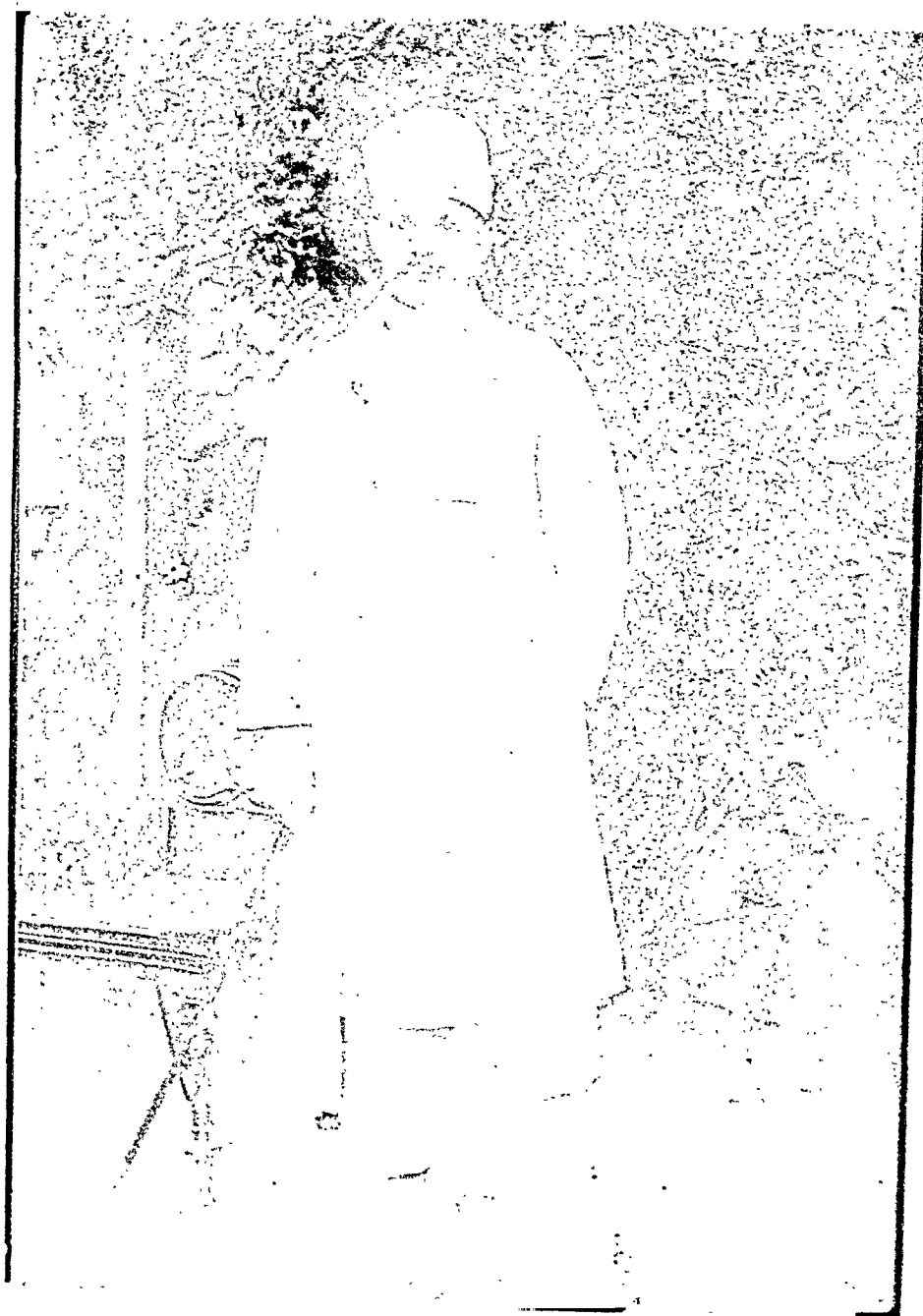
आनरेब्ल पंडित मदनमोहन मालवीय बी. ए. एल. एल. बी.।

हिन्दोस्थान नामक हिन्दी दैनिक पत्र का सम्पादन किया। इस पत्र के लेख देखने से मालवीयजी की हिन्दी की योग्यता का परिचय मिलता है। संवत् १९४९ में आपने एल० एल० बी० परीक्षा पास कर ली और तभी से आप प्रयाग हाईकोर्ट में वकालत करते हैं। आपने वकालत में लाखों रुपये पैदा किये और फिर भी देशहित की ओर प्रधानतया ध्यान रक्खा। आप छोटे तथा बड़े लाट की सभाओं के सभ्य हैं और युक्तप्रान्तों के राजनैतिक विषय में नेता हैं। १९६६ में लाहौर की कांग्रेस के आप सभापति हुए थे। प्रयाग में हिन्दूबोर्डिङ्गहाउस केवल आपके प्रयत्नों से बन गया। आपने सदैव लोकहितसाधन को अपना एकमात्र कर्त्तव्य माना है और वकालत से बहुत अधिक ध्यान उस ओर रक्खा है। अब आप वकालत छोड़ कर लोकहित ही में लग जाने के विचार में हैं। आप अँगरेज़ी के बहुत बड़े व्याख्यानदाताओं में हैं और शुद्ध हिन्दी का धारा बाँध कर उत्तम व्याख्यान आपके बराबर कोई भी नहीं दे सकता। वर्त्तमान समय के बड़े बड़े व्याख्यानदाताओं के व्याख्यानों में हमें बहुधा मूर्खमोहिनी विद्याही देख पड़ी, पर मालवीयजी के व्याख्यानों में पण्डित-मोहिनी विद्या पूर्णरूपेण पाई जाती है। आपका जन्म धन्य है और आपका जीवन वास्तव में सार्थक है। मालवीय जी ने कोई हिन्दी का ग्रन्थ नहीं रचा, पर आप लेखक बहुत अच्छे हैं। आप प्रायः डेढ़ साल से हिन्दू-विश्वविद्यालय बनाने के प्रयत्न में लगे हैं, जिसमें लाखों रुपयों का वादा लोगों से ले चुके हैं।

(२३८१) माधवप्रसाद मिश्र ।

ये झज्झर ज़िला रोहतक के निवासी थे। प्रायः तीन साल हुए क़रीब ४० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हुए। आप सुदर्शन मासिक पत्र के सम्पादक और गद्य हिन्दी के बड़े ही प्रबल लेखक थे। आपने कुछ छंद भी कहे हैं। आपने दर्शन-शास्त्र पर दो एक लेख लिखे थे और स्फुट विषयों पर अनेकानेक गम्भीर प्रबन्ध रचे। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और प्रायः गम्भीर विषयों ही पर लेख लिखते थे। आपका रहना विशेषतया काशी में होता था। आपके अकालमृत्यु से हिन्दी को बड़ी हानि हुई।

(२३८२) जुगुलकिशोर मिश्र, उपनाम ब्रजराज कवि।

आपका जन्म संवत् १९१८ में गँधौली, ज़िला सीतापूर में हुआ था। आपके पिता पंडित नन्दकिशोर मिश्र उपनाम लेखराज एक परमप्रसिद्ध हिन्दी के कवि थे। बाल्यावस्था में ब्रजराज जी ने फ़ारसी तथा हिन्दी पढ़ कर अपने चचा बनवारीलाल जी से कविता सीखी। ये महाशय रचना तो नहीं करते थे, परन्तु दशांग कविता में बड़े ही निपुण थे। लेखराज जी साधारणतया एक बड़े ज़िमींदार थे। इनकी प्रथम स्त्री से द्विजराज का जन्म हुआ और द्वितीय से ब्रजराज और रसिक बिहारी उपनाम साधू का। लेख-राज जी रईसों की भाँति रहते थे और अपना प्रबन्ध कुछ भी नहीं देखते थे। इस कारण इनके ज्येष्ठ पुत्र द्विजराज जी सब प्रबन्ध

करते थे। इनके बहुव्ययी होने के कारण सब आय उड़ जाती थी और कुछ ऋण भी हो गया। व्रजराज जी अच्छे प्रबन्धकर्त्ता हैं, सो ये बातें इनको बहुत अरुचिकारिणी हुईं। अतः अपने पिता से कह कर इन्होंने सम्पत्ति का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। इस बात से द्विजराज जी से इनसे मनोमालिन्य हो गया, जो दिनोंदिन बढ़ते बढ़ते प्रचंड शत्रुता की हद तक पहुँच गया। कभी इनके हाथ में प्रबन्ध रहता था, कभी द्विजराज के। इस प्रकार प्रबन्ध ठीक कभी न हुआ और ऋण बना ही रहा। कुछ दिनों में इन्हें पेशाब रुकने का रोग हो गया, जिससे ये मरणप्राय अवस्था को पहुँच गये। २८ वर्ष की अवस्था में डाक्टर के शस्त्राघात से इनके प्राण बचे, परन्तु रोग कुछ कुछ बना ही रहा। संवत् १९४९ में इनके पिता का स्वर्गवास हुआ। मृत्यु के पूर्व उन्होंने आधी रियासत द्विजराज जी को दे दी और आधी व्रजराज जी एवं साधू को। व्रजराज जी अपुत्र हैं और साधू से इनसे विशेष मेल था, इसी कारण लेखराज जी ने ऐसा बटवारा किया कि उनके दोनों पुत्रवान् लड़कों के सन्तान अन्त में आधा आधा पावें। अपने पिता के पीछे इन्होंने तो प्रबन्ध करके तीन ही वर्ष में सब पैत्रिक ऋण अपने भाग का चुका दिया, पर द्विजराज जी का ऋण बहुत बढ़ गया। अब भी साधू और व्रजराज जी एक ही में रहते हैं और ये साधू के तीनों पुत्रों को अपने ही पुत्र समझते हैं।

व्रजराजजी दशांग कविता में बड़े ही निपुण हैं। हमने आज तक ऐसा हिन्दी-कविता-रीति-निपुण मनुष्य नहीं देखा। सब कविता के जाननेवालों में रीति-नैपुण्य में हम इन्हीं को सिरे

मानते हैं। बड़े बड़े कविगण इनके शिष्य हैं। हममें से शुकदेव-विहारी मिश्र ने भी इन्हीं से कविता रीति पढ़ी। परसाल ये ऐसे अस्वस्थ हो गये थे कि इनको जीवन की आशा नहीं रही थी। उस समय इन्होंने साधू और शुकदेवविहारी से यही कहा था कि "मरने का मुझे कुछ भी पश्चात्ताप नहीं है, परन्तु केवल इतना खेद है कि मेरे पास जो कविता-रत्न है वह तुममें से किसी ने न ले लिया और वह अब मेरे ही साथ जाता है"। ईश्वर ने इन्हें फिर नीरोग कर दिया और अब फिर ये पूर्ववत् अच्छे हैं, केवल रोग का थोड़ा सा खटका, जो इनका चिरसाथी रहा है, अब भी वर्त्तमान है। इनके पास हस्तलिखित हिन्दी के उत्तम ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है। ग्रन्थावलोकन का इन्हें अच्छा शौक़ है, पर ये रचना बहुत नहीं करते। फिर भी समस्यापूर्ति आदि पर सैकड़ों छन्द आपने बनाये हैं। समस्यापूर्ति के पत्रों की प्रथा आपही के अनुरोध से निकली थी। आप साहित्य-पारिजात नामक एक दशांग कविता का ग्रन्थ बना रहे हैं, जो अभी पूर्ण नहीं हुआ है। आजकल देवकृत शब्द-रसायन पर आप काव्यात्मक-टिप्पणी लिख रहे हैं। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती है और उस में ऊँचे ऊँचे भाव बहुत रहते हैं। हम इनकी गणना तोष की श्रेणी में करते हैं।

समुहातहि मैली प्रभा को धरैं नित नूतन आनि कै फेरयो करैं।
सरसी ढिग जात मुँदेई लखात न या डर सों दृग ओरयो करैं॥
ब्रजराज हितै नभ ओर चितै नहिँ तू भरमै यों निहारयो करैं।
तऊ आरसी कंज ससी सकुचैं इनसों कब लौं मुख मोरयो करैं॥१॥

सारी सिर बैंजनी मैं कंचन बुटी की ओप
मुकुत किनारी चहुँओरन गसत हैं।
जरबीली जरित जरी की जाफरानी पाग
कोर मैं जमुर्रदी जवाहिर लसत हैं॥
रतन-सिँहासन पै दीन्हे गल बाहीं
मुख-चन्द मुसुकाय भवताप को नसत हैं।
या विधि अनन्द-भरे राधाब्रज चन्द
सदा दम्पति चरण मेरे हिय मैं बसत हैं॥२॥

(२३८३) गोपालरामजी गहमर ज़िला ग़ाज़ीपूर-निवासी।

आपका जन्म १९१३ में हुआ था। आप हिन्दी-गद्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। कई वर्षों से आप जासूस पत्र के सम्पादक हैं। अच्छे उपन्यास भी आपने कई लिखे हैं। चतुरचंचला, माधवीकंकण, भानमती, सौभद्रा, नयेबावू, मैं और मेरा दादा तथा अनेक जासूसी उपन्यास आपके बनाये हुए भाषा-संसार को चमत्कृत कर रहे हैं। आपका कविताकाल संवत् १९४५ से समझना चाहिए। आपकी बनाई हुई प्रायः १०० पुस्तकें हैं।

(२३८४) ज्वालाप्रसाद वाजपेयी।

इनका उपनाम मखजातक था। ये तार गाँव ज़िला उन्नाव के निवासी थे। आपका रचनाकाल संवत् १९४५ के लगभग समझ पड़ता है। आप साधारण श्रेणी के कवि थे।

(२३८५) अमृतलाल चक्रवर्ती।

ये नावरा ज़िला चौबीस-परगना के निवासी संवत् १९२० में उत्पन्न हुए थे। आप एक प्रसिद्ध प्राचीन लेखक हैं और समय समय पर हिन्दी बङ्गवासी, वेङ्कटेश्वर एवं हिन्दोस्थान का सम्पादन कर चुके हैं। आपकी रची हुई पुस्तकों के नाम ये हैं:—गीता की हिन्दी टीका, सिखयुद्ध, महाभारत, सामुद्रिक, गीत-गोविन्द गद्यानुवाद, देश की बात, विलायत की चिट्ठी, भरतपुर का युद्ध, सती सुखदेई, हिन्दू विधवा और चन्दा। आप धन्य हैं कि बङ्गाली होकर भी हिन्दी पर इतना अनुराग रखते हैं।

(२३८६) श्रीधर पाठक।

ये महाशय पन्नी गली आगरा के रहने वाले और नहर-विभाग में उच्च पदाधिकारी हैं। इनका जन्म १९१६ में हुआ था। ये बहुत दिनों से कविता करते हैं और ऊजड़ ग्राम, इवँजिलाइन, श्रान्त-पथिक तथा एकान्तवासी योगी नामक चार ग्रन्थ अँगरेज़ी कविता के पद्यानुवाद खड़ी बोली में बना चुके हैं और अपनी स्फुट कविता का संग्रह-स्वरूप मनोविनोद नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं। इसमें कुछ संस्कृत कविता के अच्छी व्रजभाषा में भी मनोहर अनुवाद हैं। पाठक जी ने खड़ी बोली तथा व्रजभाषा दोनों की कविता परम विशद की है और इनका श्रम सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है। गद्य के भी लेख इनके अच्छे होते हैं। इन्होंने अपनी रचना में पदमैत्री की प्रधानता रक्खी है और कुछ चित्र-काव्य भी किया है। आपने प्राचीन शृङ्गाररस-वर्णन की प्रणाली छोड़ कर साधारण

कामकाजी बातों का वर्णन अधिक किया है। उद्योग, परिश्रम, वाणिज्य आदि की प्रशंसा इनकी रचना में बहुत है। सामाजिक सुधारों पर भी इनका ध्यान है। इनकी रचना में अनुवादों की संख्या स्वतन्त्र-रचना से बहुत अधिक है, पर इनके अनुवाद स्वतन्त्र-रचनाओं का सा स्वाद देते हैं। उदाहरण :—

ए घन स्यामता तो मैं घनी तन बिज्जु छटा को पितम्बर राजै
दादुर-मोर-पपीहा-मई अलबेली मनोहर बाँसुरी बाजै॥
सौ विधि सों नवला अवला उर आस विलास हुलास उपाजै।
जो कछु स्याम कियो ब्रज मंडल सो सब तू भुव-मंडल साजै॥१॥
उस कारीगर ने कैसा यह सुन्दर चित्र बनाया है।
कहीं पै जलमै कहीं रेतमै कहीं धूप कहिँ छाया है॥
नव जोवन के सुधा सलिल में क्या विष बिन्दु मिलाया है।
अपनी सौख्य वाटिका में क्या कंकट वृक्ष लगाया है॥२॥
प्रानपियारे की गुन गाथा साधु कहाँ तक मैं गाऊँ।
गाते गाते नहीं चुकै वह चाहे मैं ही चुक जाऊँ॥३॥
चंचल जो सफरी फरकैं मनु मंजु लसी कटि किंकिनि डोरी।
सेत विहंगनि की सुठि पंगति राजति सुन्दर हार लौं गोरी॥
तीर के वृच्छ विसाल नितम्ब सु मन्द प्रवाह भई गति थोरी।
राजति या ऋतु मैं सरिता गजगामिनि कामिनि सी रसबोरी॥४॥

(२३८७) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा रायबहादुर।

इन पंडितजी का जन्म संवत् १९२० में सिरोही राज्यान्तर्गत रोहिड़ा ग्राम में हुआ था। आप सहस्र औदीच्य ब्राह्मण हैं। आपने

संस्कृत तथा भाषा की अच्छी योग्यता प्राप्त की है और आप अँगरेज़ी भी जानते हैं। पुरातत्व-अनुसन्धान में आपको बड़ी रुचि है; इस विषय में आप परम प्रवीण हैं। ये अजमेर अजायब घर के अध्यक्ष हैं। आपने प्राचीन लिपिमाला, कर्नल टाड का जीवन-चरित्र, सिरोही का इतिहास, टाड राजस्थान के अनुवाद पर टिप्पणियाँ और सोलंकियों का इतिहास नामक ग्रन्थ रचे हैं। प्राचीन लिपिमाला के पढ़ने से प्राचीन लिपियों के जानने में योग्यता प्राप्त हो सकती है। पंडित जी ऐतिहासिक ग्रन्थमाला नामक एक पुस्तकावली प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें इतिहास-ग्रन्थ छपेंगे। आप एक सुलेखक और परम सतोगुणी प्रकृति के मनुष्य हैं और आपके प्रयत्नों से भाषा में इतिहासविभाग के पूर्ण होने की आशा है। हाल में सरकार ने आपको रायबहादुर की उपाधि दी है।

(२३८८) विनायकराव (पंडित)।

आपका जन्म १९१२ में हुआ था। आप १००) मासिक पर होशंगाबाद के हेड मास्टर थे। अन्त में २२०) के वेतन से आपने पेंशन पाई। आपने हिन्दी की प्रायः २० पुस्तकें रचीं, जो विशेषतया शिक्षाविभाग की हैं। आज कल आप रामायण की टीका कर रहे हैं। आप काव्यरचना भी अच्छी करते हैं।

(२३८९) विशाल कवि (भैरवप्रसाद वाजपेयी)।

इनका जन्म संवत् १९२६ में लखनऊ शहर, मोहल्ला खेतगली में हुआ था। आपके पिता का नाम पंडित कालिकाप्रसाद था

और आप की माता उमाचरण शुक्ल की बहन थीं। आप उपमन्यु-गोत्री चूड़ापति वाले आँक के वाजपेयी थे। आप का विवाह हमारी दूसरी बहन के साथ संवत् १९३८ में हुआ था और उसी समय से आप हमारे यहाँ विशेष आने जाने लगे तथा कुछ वर्षों के पीछे हमारे ही यहाँ रहने भी लगे। इन कारणों से इनसे हम लोगों का विशेष प्रेम हो गया था। आपने अँगरेज़ी-मिडिल पास किया, पर उसकी प्रसन्नता में यंट्रैंस में अच्छा परिश्रम न किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस परीक्षा में आप उत्तीर्ण न हो सके। हमारे पिता जी कवि थे, तथा गँधैालीनिवासी लेखराज जी और उनके पुत्र लालविहारी और जुगुलकिशोर भी कविता करते थे। ये लोग हमारी विरादरी में हैं और इनके यहाँ जाना आना सदैव रहता था। शिवदयालु पाँण्डेय उपनाम भेष कवि भी हमारे सम्बन्धी थे और हमारे यहाँ आया जाया करते थे। इन कारणों से हमारे यहाँ कविता की सदैव चर्चा रहती थी। सो विशाल जी को भी वाल्यावस्था से ही काव्य-रचना का शैाक़ हो गया। पहले तुलसीकृत रामायण एवं काशिराज का भाषा-भारत इन्होंने पढ़ा और पीछे हमारे पिता जी से केशवदास की रामचन्द्रिका पढ़ी। इसी के पीछे आप काव्यरचना करने लगे। लालविहारी जी ने इनका कविता का नाम विशाल रख दिया और तभी से ये इसी नाम से रचना करने लगे। यंट्रैंस फ़ेल हो जाने के पीछे इनके माता पिता का देहान्त हो गया। इनके भाई वहन आदि कोई निकट का सम्बन्धी न था। इधर जीविकानिर्वाह की कोई चिन्ता न थी। सो इनका मन काम काज से छुटकर कविता ही में लग गया। अब

संस्कृत तथा भाषा की अच्छी योग्यता प्राप्त की है और आप अँगरेज़ी भी जानते हैं। पुरातत्व-अनुसन्धान में आपको बड़ी रुचि है; इस विषय में आप परम प्रवीण हैं। ये अजमेर अजायब घर के अध्यक्ष हैं। आपने प्राचीन लिपिमाला, कर्नल टाड का जीवन-चरित्र, सिरोही का इतिहास, टाड राजस्थान के अनुवाद पर टिप्पणियाँ और सोलंकियों का इतिहास नामक ग्रन्थ रचे हैं। प्राचीन लिपिमाला के पढ़ने से प्राचीन लिपियों के जानने में योग्यता प्राप्त हो सकती है। पंडित जी ऐतिहासिक ग्रंथमाला नामक एक पुस्तकावली प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें इतिहास-ग्रन्थ छपेंगे। आप एक सुलेखक और परम सतोगुणी प्रकृति के मनुष्य हैं और आपके प्रयत्नों से भाषा में इतिहासविभाग के पूर्ण होने की आशा है। हाल में सरकार ने आपको रायबहादुर की उपाधि दी है।

(२३८८) विनायकराव (पंडित)।

आपका जन्म १९१२ में हुआ था। आप १००) मासिक पर होशंगाबाद के हेड मास्टर थे। अन्त में २२०) के वेतन से आपने पेंशन पाई। आपने हिन्दी की प्रायः २० पुस्तकें रचीं, जो विशेषतया शिक्षाविभाग की हैं। आज कल आप रामायण की टीका कर रहे हैं। आप काव्यरचना भी अच्छी करते हैं।

(२३८९) विशाल कवि (भैरवप्रसाद वाजपेयी)।

इनका जन्म संवत् १९२६ में लखनऊ शहर, मोहल्ला खेतगली में हुआ था। आपके पिता का नाम पंडित कालिकाप्रसाद था

और आप की माता उमाचरण शुक्ल की बहन थीं। आप उपमन्यु-गोत्री चूड़ापति वाले आँक के वाजपेयी थे। आप का विवाह हमारी दूसरी बहन के साथ संवत् १९३८ में हुआ था और उसी समय से आप हमारे यहाँ विशेष आने जाने लगे तथा कुछ वर्षों के पीछे हमारे ही यहाँ रहने भी लगे। इन कारणों से इनसे हम लोगों का विशेष प्रेम हो गया था। आपने अँगरेज़ी-मिडिल पास किया, पर उसकी प्रसन्नता में यंट्रैंस में अच्छा परिश्रम न किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस परीक्षा में आप उत्तीर्ण न हो सके। हमारे पिता जी कवि थे, तथा गँधौलीनिवासी लेखराज जी और उनके पुत्र लालविहारी और जुगुलकिशोर भी कविता करते थे। ये लोग हमारी बिरादरी में हैं और इनके यहाँ जाना आना सदैव रहता था। शिवदयालु पाँण्डेय उपनाम भेष कवि भी हमारे सम्बन्धी थे और हमारे यहाँ आया जाया करते थे। इन कारणों से हमारे यहाँ कविता की सदैव चर्चा रहती थी। सो विशाल जी को भी बाल्यावस्था से ही काव्य-रचना का शैाक़ हो गया। पहले तुलसीकृत रामायण एवं काशिराज का भाषा-भारत इन्होंने पढ़ा और पीछे हमारे पिता जी से केशवदास की रामचन्द्रिका पढ़ी। इसी के पीछे आप काव्यरचना करने लगे। लालविहारी जी ने इनका कविता का नाम विशाल रख दिया और तभी से ये इसी नाम से रचना करने लगे। यंट्रैंस फ़ेल हो जाने के पीछे इनके माता पिता का देहान्त हो गया। इनके भाई बहन आदि कोई निकट का सम्बन्धी न था। इधर जीविकानिर्वाह की कोई चिन्ता न थी। सो इनका मन काम काज से छुटकर कविता ही में लग गया। अब

ग्रन्थ था, तथापि उसकी प्रशंसा में आपने एक छोटा मोटा प्रायः १५० छन्दों का ग्रंथ ही रच डाला। होली से सम्बन्ध रखने वाले अश्लील विषयों पर भी आप ने बहुत रचना की है। होलिकाभरण नामक एक अलङ्कार-ग्रन्थ आपने ऐसा रचा, जिसके प्रत्येक दोहे में अलङ्कार अश्लील वर्णन में निकाला। उसमें सब अलङ्कार आ गये हैं। इसी प्रकार नायिका-भेद के भी बहुत से छन्द इसी विषय में रचे गये। ये छन्द सवैया एवं घनाक्षरी हैं और बहुत उत्तम बने हैं, परन्तु कहीं पढ़ने योग्य नहीं हैं। आप ने दोहा चौपाइयों में एक श्रवणोपाख्यान बनाया था, परन्तु वह गुम हो गया। पाप-विमोचन नामक ८४ सवैया कवित्तों का आपने एक शंकरस्तुति का ग्रन्थ रचा था, जो अच्छा है। अपने मित्रों एवं रईसों की प्रशंसा के आप ने बहुत से उत्कृष्ट छन्द बनाये और भँड़ौआ छन्दों की भी अच्छी बहुतायत रक्खी। शृङ्गार रस एवं अन्य विषयों के भी स्फुट छन्द आपने सैकड़ों रचे। आपके अश्लील, भँड़ौआ और प्रशंसा के छन्द बहुत अच्छे बनते थे। हम आप को तोष की श्रेणी में समझते हैं।

अँगरेजी पढ़ी जब सों तब सों हमरो तुमपै बिसवास नहीं।
तुम हौ कि नहीं यहै सोचो करैं परमान मिलै परकास नहीं॥
विनु जाने न होत सनेह बिसाल सनेह बिना अभिलास नहीं।
यहि कारन ते हमको सिवजी तरिवे की रही कछु आस नहीं॥१॥
जीव वधै न हरै परसम्पति लोगन सों सति बैन कहै नित।
काल पै दान यथागति दै पर-तीय कथान मैं मौन रहै नित॥

तृष्णहि त्यागै बड़ेन नवै सब लोगन पै करुना को गहै नित ।
शास्त्र समान गनै सिगरे सुखदा यह गैल बिसाल अहै नित ॥ २ ॥
जो पर-तीय रम्यो न कवौं तै। कहा दुख झेलत गंग के भारन ।
जो भवसूल नसावत हौ तौ करयो केहि हेत त्रिसूल है धारन ॥
देत जु माल बिसाल सदा तौ लपेटे रहैा कत व्याल हजारन ।
कामहि जारयो जु हे सिव तौ गिरिजा अरधंग धरयो केहि कारन॥३॥
आवत हैं परभात इतै चलि जात हैं रात उतै निज गेहैं ।
मो ढिग जो पै रहैं कबहूँ तबहू उतही की लिये रहैं टोहैं ॥
सैाहैं बिसाल करैं इत लाखन पै अभिलाषि उतै मन मोहैं ।
होति अरी हित हानि खरी तऊ लालची लोचन लाल को जोहैं॥४॥
कोलिया कूकन लागी बिसाल पलास की आँच सों देह दहै लगी ।
बैारन लागे रसाल सबै कल कंजन को अलि भीर चहै लगी ॥
जीव को लेन लगे पपिहा तिय मान की बात क्यों मोसों कहै लगी ।
आजु इकन्त मिलै किन कन्त सों बीर बसंत बयारि वहै लगी ॥५॥
जलदान की वृष्टि भई चहुँघा महिमंडल को दुख दूरि गयो ।
खल आस जवास नसी छिन मैं वक ध्यानिन बास अकास लयो ॥
द्विज दादुर वेद ररैं सुख सों मन साल विहाय विसाल भयो ।
पिक मागध गान करैं जस को ऋतु पावस कै नृप नीति मयो ॥६॥

(२३९०) रामराव चिंचोलकर ।

इनका संवत् १९६० के लगभग प्रायः ४० वर्ष की अवस्था में देहान्त होगया । आपकी प्रकृति बड़ी ही सौजन्यपूर्ण और सरल थी । आप पंडित माधवराव सप्रे के साथ छत्तीसगढ़-

मित्र का सम्पादन करते थे। एक बार हमने मज़ाक़ में कहा कि इस पत्र को 'नाऊगढ़मित्र' भी कह सकते हैं, क्योंकि 'नाऊ' को छत्तीसा कहते हैं। इस पर आपने केवल इतना ही कहा कि "ऐसा!" और ज़रा भी बुरा न माना। आप छत्तीसगढ़-निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे।

नाम—(२३६१) शिवसम्पति सुजान भूमिहार, उदियावँ ज़िला आज़मगढ़।

ग्रन्थ—(१) शतक, (२) शिक्षावली, (३) शिवसम्पतिसर्वस्व, (४) नीतिशतक, (५) शिवसम्पतिसंवाद, (६) नीतिचन्द्रिका, (७) आर्यधर्मचन्द्रिका, (८) वसंतचन्द्रिका, (९) चौताल-चन्द्रिका, (१०) सभामोहिनी, (११) यौवनचन्द्रिका, (१२) जौनपुर-जलप्रवाह-विलाप, (१३) मनमोहिनी, (१४) पचरा-प्रकाश, (१५) भारतविलाप, (१६) प्रेमप्रकाश, (१७) ब्रज-चंदबिलास, (१८) प्रयागप्रपंच, (१९) सावन-बिरहविलाप, (२०) राधिका-उराहनो, (२१) ऋतुविनोद, (२२) कजली-चंद्रिका, (२३) स्वर्णकुँवरि विनय, (२४) शिवसम्पतिविजय, (२५) शत्रुसंहार, (२६) शिवसम्पति साठा, (२७) प्राणपियारी, (२८) कलिकालकौतुक, (२९) उपाध्यायी-उपद्रव, (३०) चित-चुरावनी, (३१) स्वारथी संसार, (३२) नये बाबू, (३३) पुरानी लकीर के फ़क़ीर, (३४) शतमूर्ख प्रकाशिका, (३५) भूमिहारभूषण, (३६) कलियुगोपकार-ब्रह्महत्या।

जन्मकाल—१९२०। वर्तमान।

कविताकाल—१९४५।

(२३९२) लाजपतराय (लाला)।

इनका जन्म संवत् १९२२ में ज़िला लुधियाना के जगरन नाम नगर में एक अग्रवाल वैश्य घराने में हुआ था। आपने वकालत में अच्छी ख्याति पाई और आर्य्यसमाज एवं देशहित-साधन के कार्य्यों के कारण आपको बहुतेरे भारतवासी ऋषिवत् पूज्य समझते हैं। लाला साहब ने दयानन्द-कालेज को अच्छी सहायता दी और अकाल-पीड़ितों के लिये श्लाघ्य श्रम किया। एक बार राजद्रोह के सन्देह में आप प्रायः छः मास तक बर्मा में क़ैद कर दिये गये थे। हिन्दी-गद्य-लेखन की ओर भी आपका ध्यान रहता है। आपने अच्छे अच्छे लेख लिखे हैं।

इस समय के अन्य कविगण।

समय सं० १९३६।

नाम—(२३९३) दयानिधि ब्राह्मण, पटना।

विवरण—कविता बहुत रोचक और उत्तम है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में है।

नाम—(२३९४) सांधेराम कायस्थ, मौ० पनगरा, ज़ि० बाँदा।

ग्रन्थ—(१) रामविनयशतक, (२) चित्रकूटमाहात्म्य।

समय सं० १९३७।

नाम—(२३९५) कालीचरण (सेवक) कायस्थ, नरवल, कानपूर।

विवरण—कायस्थकान्फ़रेंसगज़ट के संपादक थे।

नाम—(२३९६) जगन्नाथसहाय कायस्थ बड़ा बाज़ार, हज़ारीबाग़।

ग्रन्थ—(१) आनन्दसागर, (२) प्रेमरसामृत, (३) भक्तरसनामृत, (४) भजनावली, (५) कृष्णबाललीला, (६) मनोरञ्जन, (७) चौदह रत्न, (८) गोपालसहस्रनाम।

नाम—(२३९७) ठकुरेश जी।

ग्रन्थ—स्फुट छंद लगभग १०००।

जन्मकाल—१९१२।

नाम—(२३९८) ठाकुरदास।

ग्रन्थ—(१) भक्तकवितावली (१९५०), (२) रुक्मिणीमंगल, (३) कृष्णचंद्रिका (१९३७), (४) श्रीजानकीस्वयंवर (१९४८), (५) गोवर्द्धनलीला मेला सदन (१९४०)।

नाम—(२३९९) देवीसिंह राजा चन्देरी।

ग्रन्थ—(१) नृसिंहलीला, (२) आयुर्वेदविलास, (३) रहसलीला, (४) देवीसिंहविलास, (५) अर्बुदविलास, (६) बारहमासी।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी में।

नाम—(२४००) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, बस्ती।

ग्रन्थ—चौतालबाटिका।

नाम—(२४०१) नारायणदास, वृन्दावन।

जन्मकाल—१९१२। वर्त्तमान।

नाम—(२४०२) मथुराप्रसाद ब्राह्मण, सुकुलपुर ।

ग्रन्थ—(१) गोपालशतक, (२) मथुराभूषण, (३) हनुमतविरदावली, (४) फागविहार ।

जन्मकाल—१९११ । वर्त्तमान ।

नाम—(२४०३) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, काशी ।

ग्रन्थ—राधानखशिख (पृ० ७६) ।

नाम—(२४०४) रामचरित्र तेवारी, आज़मगढ़ ।

ग्रन्थ—जंगल में मंगल ।

नाम—(२४०५) लन्नूलाल गुप्त, बुलन्दशहर ।

ग्रन्थ—(१) स्त्रीसुबोधिनी, (२) बालाबोधिनी, (३) सुरभिसन्ताप ।
जन्मकाल—१९१२ ।

नाम—(२४०६) सीताराम ब्राह्मण, शंकरगंज, राज्य रीवाँ ।

जन्मकाल—१९१२ । वर्त्तमान ।

नाम—(२४०७) हरदेवबख़्श (हरदेव) कायस्थ ।

ग्रन्थ—(१) पिंगलभास्कर, (२) ऊषाचरित्र, (३) जानकीविजय, (४) लवकुशी ।

जन्मकाल—१९१२ । वर्त्तमान ।

समय सं० १९३८ के पूर्व ।

नाम—(२४०८) किनाराम, बाबा रामनगर, बनारस ।

ग्रन्थ—रामरसाल ।

नाम—(२४०९) बोधीदास।

ग्रन्थ—बोधीदासकृतझूलना।

समय सं० १९३८।

नाम—(२४१०) गिरिजादत्त शुक्ल, महेशदत्त के पुत्र, धनौली, ज़िला बारहबंकी।

ग्रन्थ—(१) श्रीकृष्णकथाकर, (२) संस्कृतव्याकरणाभरण।

जन्मकाल—१९१३।

विवरण—ये आज कल तहसीलदारी की पेंशन पाते हैं।

नाम—(२४११) गुलाबराम राव।

ग्रन्थ—नीतिमंजरी।

नाम—(२४१२) दरियाव दौवा।

नाम—(२४१३) दुर्गाप्रसाद कायस्थ, चरखारी, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—(१) भानुपुराण, (२) गोवर्धनलीला, (३) भक्तिशृंगारशिरोमणि, (४) ध्यानस्तुति, (५) मिलापलीला, (६) राधाकृष्णाष्टक।

जन्मकाल—१९१३। वर्त्तमान।

नाम—(२४१४) पञ्चदेव पाण्डेय, रेवती, बलिया।

ग्रन्थ—पञ्चदेव रामायण ग्रन्थ।

विवरण—आप अध्यापक हैं और पाठ्य पुस्तकें भी आपने बनाई हैं।

नाम—(२४१५) भोलानाथ लाल ब्राह्मण गोस्वामी, मुक़ाम श्रीवृन्दावन, हाल वारी राज्य रीवाँ।

ग्रन्थ—(१) प्रेमरत्नाकर, (२) राधावरविहार, (३) चंद्रधरचरित-चिन्तामणि, (४) गंगापञ्चक, (५) गोपीपचीसी, (६) कृष्णाष्टक, (७) हरिहराष्टक, (८) प्रातःस्मरणीय (आदि कई अष्टक रचे हैं), (९) कृष्णपचासा।

जन्मकाल—१९१३। वर्त्तमान।

नाम—(२४१६) राघवदास साधु।

ग्रन्थ—गुरुमहिमा।

समय संवत् १९३९।

नाम—(२४१७) देवराज खत्री, जालन्धर।

ग्रन्थ—(१) अक्षरदीपिका, (२) शब्दावली, (३) बालविनय, (४) बालोद्यान संगीत, (५) सावित्रीनाटक, (६) कथाविधि, (७) पाठावली, (८) सुबोधकन्या, (९) पत्रकैामुदी, (१०) गणितभूषण, (११) गृहप्रबन्ध।

नाम—(२४१८) परमेश्वरीदास कायस्थ, बाँदा।

ग्रन्थ—दस्तूरसागर।

विवरण—यह लीलावती का छन्दोबद्ध अनुवाद है।

नाम—(२४१९) विंध्येश्वरी तिवारी, सहगैारा, ज़िला गोरखपूर।

ग्रन्थ—मिथिलेशकुमारी नाटक।

जन्मकाल—१९१४। वर्त्तमान।

नाम—(२४२०) श्री वीरवल, श्री वृन्दावनवासी।

ग्रन्थ—(१) वृन्दावनशतक, (२) राधाशतक।

जन्मकाल—१९१४। वर्त्तमान।

नाम—(२४२१) बैजनाथप्रसाद, इखलासपुर।

जन्मकाल—१९२४ (वर्त्तमान)।

नाम—(२४२२) मन्नूलाल कायस्थ, बुलंदशहर।

ग्रन्थ—स्त्रीसुबोधिनी।

नाम—(२४२३) मेलाराम वैश्य, भिवानी, ज़िला हिसार।

ग्रन्थ—गन्दे सीठनों की अपील, गृहस्थविचारसुधारक काव्य।

नाम—(२४२४) रामगयाप्रसाद (दीन), अयोध्या।

ग्रन्थ—(१) रामलीला नाटक, (२) प्रहलादचरित्र नाटक, (३) प्रेमप्रवाह, (४) पावसप्रवाह।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—आप टाँड़ा, जिला फ़ैज़ाबाद के रहने वाले अच्छे भक्त हैं।

नाम—(२४२५) रामधारीसहाय कायस्थ, डीही, ज़िला सारन।

ग्रन्थ—(१) गुरुभक्तिपचीसी, (२) गोरक्षाप्रहसन, (३) महिमाचालीसी, (४) शिवमाला, (५) कुमारसम्भव अनुवाद।

जन्मकाल—१९१४। वर्तमान।

विवरण—ये मधुवनी में वकालत करते हैं ।

नाम (२४२६) साधोसिंह महाराज ।

ग्रन्थ—काव्यसंग्रह ।

समय संवत् १६४० के पूर्व ।

नाम—(२४२७) छतर ।

विवरण—शृंगार संग्रह में काव्य है ।

नाम—(२४२८) जगतनारायण शर्मा, काशी ।

ग्रन्थ—(१) ईसाईमतपरीक्षा, (२) गोरक्षा, (३) दयानन्दियों की अपार महिमा, (४) यवनों की दुर्दशा ।

जन्मकाल—१९१५ । वर्त्तमान ।

नाम—(२४२९) तुलाराम ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है ।

नाम—(२४३०) देवन ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है ।

नाम—(२४३१) धनेश ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है ।

नाम—(२४३२) भीम ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है । भक्त-कवि थे ।

नाम—(२४३३) मिथिलेश ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है ।

नाम—(२४३४) रतिनाथ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३५) समाधान।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

समय संवत् १६४०।

नाम—(२४३६) अम्बर, भाट चौजीतपूर, बुँदेलखंड।

नाम—(२४३७) अंबिकाप्रसाद, ज़िला शाहाबाद (बिहार)।

नाम—(२४३८) कन्हैयालाल (कान्ह) कायस्थ, सोठियावाँ, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—चन्द्रभालशतक।

जन्मकाल—१९१५। वर्त्तमान।

नाम—(२४३९) कान्ह कायस्थ, राजनगर, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४४०) कुंजलाल, मऊ रानीपूर, झाँसी।

जन्मकाल—१९१८।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(२४४१) गिरधारी भाट, मऊ रानीपुर, झांसी।

नाम—(२४४२) गुरदयाल कायस्थ, पदारथपूर, बाँदा।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—मैहर में वकील हैं।

नाम—(२४४३) गंगादयाल दुबे, निसगर, ज़िला रायबरेली।

विवरण—संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२४४४) गंगादास नैमिषारण्य, कायस्थ।

ग्रन्थ—विनयपत्रिका।

विवरण—हीन श्रेणी के कवि थे।

नाम—(२४४५) गंगाप्रसाद (गंग), सपौली, ज़िला सीतापुर।

ग्रन्थ—दूतीबिलास।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४४६) चन्द्र झा।

ग्रन्थ—रामायण।

विवरण—महाराजा दरभंगा के यहाँ थे।

नाम—(२४४७) जगन्नाथ अवस्थी, सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव।

विवरण—ये संस्कृत के बड़े विद्वान् हैं और कई ग्रंथ भी बना चुके हैं। भाषा में इनके स्फुट छंद मिलते हैं। ये राजा अयोध्या और अलवर के यहाँ रहे। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

नाम—(२४४८) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, छतरपूर।

विवरण—ये महाशय दरबार छतरपूर में हेड अकौंटैंट हैं और भाषा के बड़े प्रेमी हैं। आपके यहाँ पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। आप भाषा के उत्तम लेखक हैं।

नाम—(२४४९) जबरेस बंदीजन, बुँदेलखंड।

विवरण—ये महाराज रीवाँनरेश के यहाँ थे।

नाम—(२४५०) जवाहिर, श्रीनगर, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९१५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४५१) जान ईसाई, अँगरेज़।

ग्रन्थ—मुक्तिमुक्तावली छंदोबद्ध।

विवरण—ईसाई भजन एवं ईसाचरित्र इसमें वर्णित है।

नाम—(२४५२) ठाकुरप्रसाद (पूरन) कायस्थ, विजावर। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—दशम स्कन्ध भागवत का पद्यानुवाद।

नाम—(२४५३) ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी, अलीगंज, खीरी।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४५४) दुःखभंजन।

ग्रन्थ—चंद्रशेखर काव्य।

विवरण—राजा चंद्रशेखरजी त्रिपाठी तअल्लुक़दार सिसेंडी की आज्ञानुसार बनाया । उसमें कुछ खंडित होगया था, जिसकी पूर्ति रघुवीर कवि ने की ।

नाम—(२४५५) देवसिंह, मु० वराज, राज्य रीवाँ ।

जन्मकाल—१९१७ । वर्तमान ।

नाम—(२४५६) देवीदीन, बिलग्रामी ।

ग्रन्थ—(१) नखशिख, (२) रसदर्पण ।

नाम—(२४५७) नारायण राय बन्दीजन, बनारसी ।

ग्रन्थ—(१) टीका भाषाभूषण (छन्दोबद्ध), (१) टीका कविप्रिया (वार्तिक) ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२४५८) पंचम, बुँदेलखंडी ।

जन्मकाल—१९११ ।

विवरण—गुमानसिंह राजा अजयगढ़ के यहाँ थे । निम्न श्रेणी के कवि थे ।

नाम—(२४५९) प्रभुदयाल कायस्थ, अजयगढ़, बुँदेलखंड ।

ग्रन्थ—ज्ञानप्रकाश ।

जन्मकाल—१९१५ ।

नाम—(२४६०) बच्चूलाल, बछरावाँ ।

नाम—(२४६१) विश्वनाथ, टिकारी, रायबरेली ।

नाम—(२४६२) विश्वेश्वरानन्द महात्मा ।

नाम—(२४७४) रणजीतसिंह जाँगरे राजा ईसानगर, खीरी।

ग्रन्थ—हरिवंश पुराण भाषा।

नाम—(२४७५) राधाचरण गौड़ ब्राह्मण।

ग्रन्थ—(१) चैतन्यचरितामृत, (२) नवभक्तमाल, (३) विदेश-यात्रा-विचार, (४) विधवाविवाहविवरण, (५) अमरसिंह, (६) चन्द्रावली आदि छोटे बड़े सब ४० ग्रन्थ हैं।

जन्मकाल—१९१५। वर्त्तमान।

नाम—(२४७६) राधेलाल कायस्थ, राजगढ़ बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९११।

नाम—(२४७७) रामनारायण कायस्थ, अयोध्या।

ग्रन्थ—(१) स्फुट छंद, (२) षटऋतुवर्णन।

विवरण—महाराजा मानसिंह के मंत्री। साधारण श्रेणी।

नाम—(२४७८) रामलाल स्वामी, बिजावर।

ग्रन्थ—(१) अमरकंटकचरित्र (१९४३), (२) भवानी जी की स्तुति, (३) महावीर जू कौ तीसा, (४) रामसागर (रामविलास) (१९४३), (५) श्रीब्रह्मसागर (१९४४), (६) श्रीकृष्णप्रकाश (१९४४)।

विवरण—राजा भानुप्रकाश बिजावर के गुरु थे।

नाम—(२४७९) रामेश्वरदयाल कायस्थ, सरैयाँ, ज़िला ग़ाज़ीपूर।

ग्रन्थ—चित्रगुप्तचरित्र।

जन्मकाल—१९१४। मृत्यु १९५६।

नाम—(२४८०) लालसिंह उपनाम रसगेन्द्र (रसिकेन्द्र) मु० घूरडोंग, राज्य रीवाँ।

ग्रन्थ—ग्रन्थ रचा है। स्फुट कविता भी है।

जन्मकाल—१९१५। वर्त्तमान।

नाम—(२४८१) शिवदत्त ब्राह्मण बनारसी।

ग्रन्थ—१९११।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८२) शिवप्रसन्न ब्राह्मण, रामनगर, रायबरेली।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८३) सतीदासजी पांडे, श्रीकांत के पुत्र, सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव।

ग्रन्थ—(१) मनोष्टक, (२) अयोध्याष्टक, (३) विश्वनाथाष्टक, (४) सारस्वत भाषा।

जन्मकाल—१९१५। मृत्यु १९५४।

विवरण—इनका कोई ग्रन्थ हमने नहीं देखा।

नाम—(२४८४) सुखरामदास ब्राह्मण, स्थान चहोतर, उन्नाव।

ग्रन्थ—नृपसम्वाद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८५) सुमेरसिंह साहबज़ादे (सुमिरेस हरी) पटना।

ग्रन्थ—बिहारीसतसई के दोहों पर बहुत से कवित्त बनाये हैं।

नाम—(२४८६) सूर्यनारायणलाल कायस्थ।

विवरण—ये कोढ़, मिर्ज़ापूर में सरकारी वकील हैं।

नाम—(२४८७) सन्तबकस बन्दीजन, होलपूर, बारहबंकी।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८८) हज़ारीलाल त्रिवेदी, अलीगंज, ज़िला खीरी।

विवरण—नीतिसम्बन्धी काव्य है, निम्न श्रेणी।

समय संवत् १९४१।

नाम—(२४८९) कौलेश्वरलाल कायस्थ, मदरा, ज़िला ग़ाज़ीपुर।

ग्रन्थ—(१) सत्यनारायणकथा (पृ० ३८), (२) रामशब्दावली (पृ० १६), (३) सरितावर्णन (पृ० २४), (४) कविमाला (पृष्ठ २२)।

नाम—(२४९०) गणेशीलाल (देव) ब्राह्मण, मथुरा।

ग्रन्थ—(१) श्रीयमुना (नदी) माहात्म्य, (२) श्रीशिवाष्टक आदि।

जन्मकाल—१९१५। वर्त्तमान।

नाम—(२४९१) गुलाबदास हलवाई, पटना।

जन्मकाल—१९१६ (वर्त्तमान)।

नाम—(२४६२) चतुर्भुज ब्राह्मण, वृन्दावन।

जन्मकाल—१९१६। वर्त्तमान।

नाम—(२४६३) पत्तनलाल (सुशील) वल्द बाबू मोहनलाल अगरवाल, दाऊदनगर, गया।

ग्रन्थ—(१) रोला रामायण, (२) जुबिलीसाठिका (पद्य), (३) भर्तृहरिनीतिशतक भाषा (पद्य), (४) साधु (पद्य), (५) उजाड़ गाँव (पद्य), (६) यात्री (पद्य), (७) ग्रियर्सन साहब की बिदाई (पद्य), (८) देशी खेल (दो भागों में, गद्य)।

जन्मकाल—१९१६।

विवरण—कविता उत्तम है। आज कल आप कलकत्ते में काम करते हैं।

समय संवत् १९४२।

नाम—(२४६४) कन्हैयादास (कान्ह), वृन्दावन।

ग्रन्थ—छन्दपयोनिधि (भाषा) (पिङ्गल)।

जन्मकाल—१९१७ (वर्त्तमान)।

नाम—(२४६५) गुप्तरानी बाई (दासी) कायस्थ।

ग्रन्थ—भजनावली।

जन्मकाल—१९१७।

नाम—(२४६६) वेनीमाधो दुबे, हुसैनगंज, फ़तेहपुर।

ग्रन्थ—सांकेतिकमाला।

ग्रन्थ—(१) अलंकारादर्श, (२) व्यंग्यार्थविनोद, (३) षटऋतु विनोद, (४) काव्यादर्शसंग्रह।

जन्मकाल—१९१९ (वर्त्तमान)।

नाम—(२५११) गणेशप्रसाद शर्मा, फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रन्थ—(१) भागवतव्यवस्था, (२) ईश्वरभक्ति, (३) वृक्षों में जीव-निर्णय, (४) गुरुमंत्रव्याख्या।

जन्मकाल—१९१९।

विवरण—आप 'भारत-सुदशाप्रवर्तक' के सम्पादक हैं।

नाम—(२५१२) छोटूराम तेवारी, बनारसी।

ग्रन्थ—रामकथा।

जन्मकाल—१८९७।

नाम—(२५१३) जीवाराम शर्मा, मुरादाबाद।

ग्रन्थ—(१) अष्टाध्याई, (२) माघ, (३) रघुवंश, (४) कुमारसम्भव (५) तर्कसंग्रह का भाषाभाष्य।

विवरण—आप बलदेवआर्यपाठशाला में अध्यापक हैं।

नाम—(२५१४) दयालदासजी चारण।

ग्रन्थ—आर्य-आख्यानकल्पद्रुम।

नाम—(२५१५) नित्यानन्द ब्रह्मचारी।

ग्रन्थ—(१) पुरुषार्थप्रकाश, (२) सनातनधर्म, (३) वेदानुशासिका।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५१६) पंकजदास (कमालदास)।

ग्रन्थ—सत्यनारायण की कथा।

नाम—(२५१७) बदरीप्रसाद शर्मा दुबे, कानपूर।

ग्रन्थ—ईश्वरनाममाला।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५१८) बलदेवसिंह चौहान, मकरन्दपुर, मैनपुरी।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५१९) बालकृष्णसहाय वकील कायस्थ, राँची।

ग्रन्थ—समुद्रयात्रा।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५२०) वृन्दावन (वन) कायस्थ, पन्ना।

ग्रन्थ—(१) कायस्थकुलचन्द्रिका, (२) देवीभागवत।

जन्मकाल—१९१९ (वर्त्तमान)।

नाम—(२५२१) भानुप्रताप तिवारी, चुनार।

ग्रन्थ—(१) विहारीसतसई सटीक, (२) भानुप्रताप का जीवन-चरित्र, (३) भक्तमालदीपिका, (४) जीवनी गुरु नानकशाह, (५) कबीर साहब का जीवन, (६) रायबहादुर शालग्राम की जीवनी, (७) भक्तमालदृष्टान्तदर्पण।

नाम—(२५२२) मदारीलाल शर्मा, बुलन्दशहर।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५२३) मातादीन शुक्ल, बिसवाँ।

ग्रन्थ—जन्मशतक।

जन्मकाल—१९१९। वर्त्तमान।

नाम—(२५२४) मंगलीप्रसाद दुबे बरधा, होशंगाबाद।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५२५) रघुनाथदास जड़िया, खत्री।

ग्रन्थ—नवधा भक्तिरत्नावली।

जन्मकाल—१९१९। (वर्त्तमान)।

नाम—(२५२६) रघुनन्दनप्रसादसिंह (रघुवीर) हल्दी।

ग्रन्थ—सभातरंग।

जन्मकाल—१९१९। वर्त्तमान।

नाम—(२५२७) शिवशंकर शर्मा कायस्थ, काव्यतीर्थ।

ग्रन्थ—(१) त्रिदेवनिर्णय, (२) ओंकारनिर्णय, (३) वैदिक इतिहासा
(४) वशिष्ठनन्दिनीनिर्णय, (५) चतुर्दशभुवन, (६) अलौकि
माला, (७) बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य भाषा।

नाम—(२५२८) शीतलाप्रसाद तेवारी, बनारसी।

ग्रंथ—(१) जानकीमंगल, (२) रामचरितावली नाटक, (३) विनय
पुष्पावली, (४) भारतोन्नतिस्वप्न।

नाम—(२५२९) चन्द्र।

ग्रन्थ—(१) चंद्रप्रकाश सटीक, (२) अनन्यशृङ्गार।

कविताकाल—१९४५ के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

समय संवत् १९४५ ।

नाम—(२५३०) अयोध्याप्रसाद (औध) कायस्थ, बिजावर ।

वर्त्तमान ।

नाम—(२५३१) उदितनारायणलाल, बनारस ।

ग्रन्थ—दीपनिर्वाण ।

विवरण—पद्य-लेखक थे ।

नाम—(२५३२) कालिकाप्रसादसिंह (कालिका), हल्दी ।

जन्मकाल—१९२१ ।

नाम—(१५३३) कृष्णदत्तसिंह ।

जन्मकाल—१९१९ ।

विवरण—राजा भिनगा के यहाँ थे ।

नाम—(२५३४) जगन्नाथ वैश्य, पैंतेपुर, ज़िला बारहबंकी ।

ग्रन्थ—(१) कालिकाष्टक, (२) स्फुट काव्य ।

जन्मकाल—१९२० । मृत्यु १९५८ ।

नाम—(२५३५) दूधनाथ, दया, बलिया ।

ग्रन्थ—(१) हरेरामपच्चीसी, (२) हरिहरशतक ।

जन्मकाल—१९२३ । वर्त्तमान ।

नाम—(२५३६) नारायणप्रसाद मिश्र, शाहजहाँपूर।

ग्रन्थ—(१) विश्रामसागर, (२) नूतन सुखसागर, (३) पद्य-पंचाशिका टीका, (४) वंशावली, (५) बृहद्वंशावली, (६) रसराजमहोदधि, (७) जातकाभरण भाषा टीका।

नाम—(२५३७) बाबूरामजी शुक्ल, नुनिहाई कटरा, फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रन्थ—(१) हरिरंजन, (२) सावित्रीविनोद, (३) मानसमणि (४) शालीनसुधाकर आदि १० पुस्तकें रची हैं।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—भूतपूर्व-सम्पादक कान्यकुब्ज।

नाम—(२५३८) बिहारीलाल चौबे।

ग्रन्थ—(१)बिहारी तुलसी-भूषणबोध, (२) गणितचन्द्रिका, (३) कायस्थकुलचन्द्रिका।

विवरण—पटना कालिज के संस्कृत प्रोफ़ेसर थे।

नाम—(२५३९) मंगलदीन उपाध्याय सरयूपारी, राजापुर, ज़िला बाँदा।

ग्रन्थ—(१) सिंहावलोकनशतक, (२) बारहमासा ३, (३) भक्तिविलास, (४) हनुमानपचासा, (५) देवीचरित्र, (६) फागरत्नाकर, (७) हनुमानबत्तीसी, (८) समस्याशतक, (९) कृष्णपचासा, (१०) षटऋतुपचासा, (११) रामायणमाहात्म्य।

नाम—(२५४०) रमाकान्त, पंडितपुरा, ज़िला बलिया।

जन्मकाल—१९२०।

नाम—(२५४१) रघुवरदयाल पाण्डेय, कानपूर।

ग्रन्थ—(१) कृष्णकलिचरित्र, (२) कृष्णानुराग नाटक।

नाम—(२५४२) रामकुमार खंडेलवाल बनिया, अलवर।

जन्मकाल—१९२०।

नाम—(२५४३) ललितराम।

ग्रन्थ—छुटक साखी छन्द।

नाम—(२५४४) मुकुन्दीलाल कायस्थ, मोहनसराय, ज़िला बनारस।

ग्रन्थ—(१) फागचरित्र, (२) मुकुन्दविलास, (३) देवी-पैज।
विवरण—१९२० (वर्त्तमान)।

नाम—(२५४५) सरयूप्रसाद कायस्थ, पिहानी, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) रामायण, (२) कृष्णायन, (३) सरयूलहरी, (४) अलिफ़नामा, (५) नसीहतनामा।

जन्मकाल—१९१९।

नाम—(२५४६) हंसराम (हंस) क्षत्रिय, ग्राम करोंदी, ज़िला उन्नाव।

ग्रन्थ—रामप्रातःस्मरणीय पञ्चक आदि।

जन्मकाल—१९२०। वर्त्तमान।

अड़तीसवाँ अध्याय।

पूर्व गद्य-काल (१९४६–५७)।

(२५४७) भगवानदीन मिश्र (दीन)।

ये ख़ैराबाद सीतापुर-निवासी एक प्रशंसनीय कवि हैं। आपकी अवस्था ४७ वर्ष के लगभग होगी। आपने विविध छन्दों में एक रामायण कही है और आपके स्फुट छन्द बहुत हैं। होली-विषयक बहुत से कबीरवत् विषय के भी आपने घनाक्षरी आदि छन्द रचे हैं। साहित्य के आप बड़े अनुरागी हैं। साहित्य-विषय के आनन्द में प्रायः आप निमग्न हो जाते हैं। अनुचित अभिमान के ये ऐसे विरोधी हैं कि उसको कदापि सहन नहीं कर सकते। दीन कवि दरिद्रता की दशा में भी उदारता का सुख अनुभव करते और श्रीमान् मनुष्यों की भाँति व्यय करने से मुख नहीं मोड़ते हैं।

इनके विषय में इनके मित्र ने क्या ही ठीक ठीक कहा था कि—

"भनत विशाल जग-सोधक भँडौवा रचि
मानिन को मान भ्तरसावत फिरत हैं।
चारु कविताई के अनन्द को सरूप निज
मीतन को दीन दरसावत फिरत हैं" ॥

(२५४८) लज्जाराम महता।

आपका जन्म बूँदी राज्य में सं० १९२० में हुआ था। आपने श्रीवेंकटेश्वर पत्र का सम्पादन ७ वर्ष तक किया और अब आप बूँदी

में एक उच्च पदाधिकारी हैं। आपका स्वभाव बड़ा ही अच्छा और व्यवहार बड़ा शिष्ट है। आपने अनेकानेक ग्रन्थ रचे, जिनमें धूर्त-रसिकलाल, हिन्दूगृहस्थ, आदर्शदम्पति, बिगड़े का सुधार, अमीर अब्दुलरहमान, विक्टोरियाचरित्र, वीरबलविनोद, भारत की कारीगरी, कपटी मित्र, विचित्र स्त्रीचरित्र, राजशिक्षा, बालोपदेश, नवीन भारत आदि प्रधान हैं।

(२५४६) शरच्चंद्र सोम।

इन्होंने १२ पंडितों द्वारा समस्त १८ पर्व महाभारत को, प्रति श्लोक अनुवाद कराके सं० १९४७ में प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ बड़े ही महत्त्व का है और इसकी भाषा भी सरल और सोहावनी है। काशीनरेश का महाभारत छन्दोबद्ध है और कुछ संक्षेप से लिखा गया है, परन्तु इसमें महाभारत के सम्पूर्ण श्लोकों का अनुवाद साधु भाषा में किया गया है। यदि इसमें अनुवादकर्ता पंडितों के नाम भी दे दिये जाते तो कोई हर्ज न होता। इस तरह जान नहीं पड़ता कि कौन किसकी रचना है। सोम महाशय ने यह काम बड़ा ही उत्तम किया कि भिन्न भाषाभाषी होकर भी उन्होंने महाभारत सरीखे भारी तथा लाभकारी ग्रंथ को हिन्दी में लिखवा कर प्रकाशित किया। इसके लिए वह समस्त हिन्दी जानने वालों के धन्यवादयोग्य हैं। उदाहरणार्थ हम थोड़ा सा अनुवाद यहाँ पर देते हैं:—

श्री वैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इस प्रकार कुरुकुलश्रेष्ठ पांडवों ने अपने संगियों के सहित प्रसन्न होकर अभि-

मन्यु का विवाह किया, फिर रात्रि भर सुख से अपने घर में रहे और प्रातःकाल होते ही राजा विराट की सभा में आये। वह राजा विराट की सभा मणियों से खिंची हुई, फूल की मालाओं से सुशोभित और सुगन्धित जल से छिड़की थी। उसी में सब राजाओं में श्रेष्ठ पांडव लोग आकर बैठे। उनके बैठते ही सब राजाओं से पूजित बूढ़े महाराज विराट और द्रुपद आसनों पर बैठे। उनके पश्चात् श्रीकृष्ण बैठे। द्रुपद के पास कृतवर्म्मा और बलदेव बैठे, राजा विराट के पास महाराज युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण बैठे। राजा द्रुपद के सब पुत्र, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, प्रद्युम्न, साम्ब, अभिमन्यु और राजा विराट के महावीर पुत्र, ये सब एक स्थान पर बैठे। पांडवों के तुल्य रूपवान् और पराक्रमी द्रौपदी के पाँचों महावीर पुत्र मणिजटित सोने के सिंहासनों पर बैठे। जब उत्तम वस्त्र और आभूषणधारी राजा लोग अपने अपने योग्य आसनों पर बैठ चुके, तब वह राजाओं से भरी सभा ऐसे शोभित हुई जैसे निर्म्मल तारों से भरा आकाश सोहता है।

(२५५०) राय देवीप्रसाद (पूर्ण)।

ये महाशय प्रायः ४५ बरस के हैं। ये कायस्थ हैं और कानपुर में वकालत करते हैं। इनकी वकालत अच्छी है। राय साहब कविता के बड़े प्रेमी हैं और गाने बजाने में भी निपुण हैं। इनके रचित तथा अनुवादित मृत्युञ्जय, धाराधरधावन, चन्द्रकला भानुकुमार नाटक और बहुत से [illegible] हैं। ये रसिकसमाज के उपसभापति हैं और रसवाटि[illegible] बहु[illegible] समस्या-

पूर्ति की प्रकाशित हुई है। सरस्वती में भी इनकी कविता प्रायः छपा करती है। इनका काव्य बहुत सरस होता है। गद्य के भी ये अच्छे लेखक हैं।

इनका धाराधरधावन, (मेघदूत भाषा) एक सुन्दर ग्रन्थ है, जिसमें कालिदास के पूर्णभाव लाने में ये समर्थ हुए हैं, और उस पर भी इसमें शिथिलता नहीं आने पाई, जो प्रायः अनुवादों में आजाती है। ये खड़ी बोली का काव्य भी करते हैं जो प्रशंसनीय है। इनका नाटक भी अच्छा है। इनकी भाषा प्रायः व्रजभाषा होती है, जो सानुप्रास और हृदयग्राहिणी है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

कंचन के भूखन सँवारे पुखराज वारे
　　धारी जरतारी पीत सारी सुखकारी है॥
सूनी दुपहर मैं निदाघ की विहारी पास
　　पूरन सिधारी वृषभानु की कुमारी है॥
व्रजचंद ध्यान मैं मगन रसखान प्यारी
　　ताती पौन लेखत बसंत की बयारी है।
आतप अखंड चंडकर की प्रचंड सोऊ
　　मानत सुचंद की अमंद उजियारी है॥ १॥
कुंजन के सघन तमालन के पुंजन में
　　करत प्रवेश न दिनेश उजियारो है।
प्यारी सुकुमारी श्याम सारी सजे ठाढ़ी तहाँ
　　नीलमणि-मालन को जाल छवि वारो है॥

छिटके बदन चंद कुंतल अमंद स्याम
स्यामा रंग पागी मान रंभा को विदारो है।
पूरन सुअंगन पै सौरभ प्रसंग पाय
झूमै स्याम भौंरन को झुंड मतवारो है॥२॥

(२५५१) ग्रीव्स (रेवरेंड एडविन)।

आपका जन्म संवत् १९१७ में लंदन नगर में हुआ। आप पादरियों के काम पर संवत् १९३८ में पहले पहल भारत में आकर मिर्ज़ापूर में दस ग्यारह वर्ष रहे। वहीं आपने हिन्दी सीखी। पीछे से आप काशी में रहने लगे हैं। आपने ईसाई मत की पाँच पुस्तकें हिन्दी में लिखीं और तुलसीदास के जीवनचरित्र पर एक निवन्ध भी रचा। आप नागरीप्रचारिणी सभा के एक प्राचीन सहायक और बड़े ही उदारचेता सज्जन हैं।

(२५५२) जगन्नाथ दास रत्नाकर बी० ए० (वैश्य) काशी।

आपका जन्म १९२३ में हुआ। बहुत काल से आप अयोध्या-नरेश के यहाँ निजी अमात्य (प्राइवेट सेक्रेटरी) हैं। आपने हिँडोला, समालोचनादर्श, साहित्यरत्नाकर, घनाक्षरी-नियमरत्नाकर और हरिश्चन्द्र नामक ग्रन्थ रचे। कई वर्षों तक आपने "साहित्य-सुधानिधि" नामक मासिकपत्रिका का सम्पादन किया। आप एक उत्कृष्ट कवि हैं, किन्तु कई वर्षों से आप का हिन्दी-कार्य्य बन्द सा हो गया है।

(२५५३) राधाकृष्णदास ।

ये महाशय काशी के रहने वाले वैश्य थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के ये फुफेरे भाई थे। इनका मृत्यु २ अपरैल संवत् १९६४ में केवल ४२ वर्ष की अल्पावस्था में हो गया। स्वयं भारतेन्दु ने इन्हें हिन्दी लिखने को प्रोत्साहित किया था और धीरे धीरे ये विशद हिन्दी लिखने भी लगे थे। ये महाशय बड़े ही सज्जन पुरुष और हमारे मित्र भी थे। इनसे मिल कर चित्त प्रसन्न हो जाता था। इन्हों ने नागरी-प्रचारिणी सभा की सदैव सहायता की। ये उसके कुछ समय तक मन्त्री और ग्रन्थमाला के सम्पादक रहे। हमारे बाबू साहब काव्य पर भी विशेष ध्यान रखते थे। बहुत से प्राचीन कवियों का थोड़ा बहुत हाल भी इन्हों ने लिखा है। आपने भारतेन्दु जी के कालचक्र, प्रशस्तिसंग्रह, सतीप्रताप, राजसिंह आदि अधूरे ग्रन्थों को पूर्ण किया है। इनके रचित ग्रन्थों के नाम नीचे लिखे जाते हैं:—
आर्य्यचरितामृत, धर्म्मालाप, मरता क्या न करता, स्वर्णलता, बापा रावल, दुःखिनी बाला, निःसहाय हिन्दू, सामयिक पत्रों का इतिहास, बाबू हरिश्चन्द्र, सूरदास, नागरीदास, और बिहारी लाल के संक्षिप्त जीवनचरित, दुःखिनीबाला, महारानी पद्मावती, राजस्थानकेसरी नाटक, स्वर्णलता, दुर्गेशनन्दिनी आदि। इन्हों ने नहुष नाटक, सूरसागर, और भक्तनामावली का सम्पादन भी अच्छे प्रकार से किया। इनका गद्य उत्कृष्ट होता था और पद्य भी ये साधारणतया अच्छा लिखते थे। इनके नाटक परम रुचिर हैं, पर उनमें कहीं कहीं भारतेन्दु के नाटकों की छाया आ गई है। हम कविता की दृष्टि से इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

हे हे वीर-सिरोमनि सब सरदार हमारे।
हे विपत्ति-सहचर प्रताप के प्रान-पियारे॥
तव भुज बल सों मैं भयों रक्षा करन समर्थ।
मातृ-भूमि-स्वाधीनता प्रबल शत्रु करि व्यर्थ॥
अनेकन कष्ट सहि।

या प्रताप ने उचित कह्यो कै अनुचित भाखो।
पर स्वतन्त्रता हेत जगत सुख तृन सम नाखो॥
ढाय महल खँडहर किये सुख सामान बिहाय।
छानि बनन की धूरि को गिरि गिरि मैं टकराय॥
जनम दुख झेलि कै॥

(२५५४) भगवान दीन (लाला)

आपका जन्म १९२३ में हुआ था। आप इस समय हिन्दी कोश बनाने में उप-सम्पादक हैं। आपने शृङ्गारशतक, शृंगारतिलक, तथा रामायण के दोहों पर कुंडलियायें रचीं, एवं भक्तिभवानी, धर्म और विज्ञान, वीरप्रताप, वीरबालक, वीरक्षत्राणी आदि पुस्तकों की भी रचना की। "रूस पर जापान क्यों विजयी हुआ" नामक निबंध पर आप को १००) पुरस्कार मिला था।

(२५५५) बलदेवप्रसाद मिश्र।

ये महाशय मुरादाबाद शहर के रहनेवाले पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र के छोटे भाई थे। इनकी अकालमृत्यु केवल ३६ वर्ष की अवस्था में संवत् १९६२ में ७ अगस्त को हो गई। ये महाशय हिन्दी और संस्कृत के अच्छे लेखक थे, और तन्त्रप्रभाकर नामक

पत्र भी इन्होंने कुछ दिन निकाला। मिश्रजी ने बहुत से ग्रन्थ स्वतन्त्र एवं अनुवाद करके रचे और कुछ नाटक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें नन्दविदा नाटक हमारे पास है। ये महाशय कविता भी प्रशस्त करते थे। इनके ग्रन्थों में पानीपत, देवी उपन्यास, कुन्दनन्दिनी, दंडसंग्रह, राजस्थान, नैपाल का इतिहास, ताँतिया भील, पृथ्वीराज चौहान, अध्यात्मरामायण भाषा, प्रफुल्ल और कल्कि पुराण भाषा प्रधान हैं। हमारे मिश्रजी ही वर्त्तमान समय के लेखकों में एक ऐसे लेखक थे जिनका निर्वाह केवल अपनी पुस्तकों की बिक्री से होता था। यह इनके लिए बड़े गौरव की बात थी। इनके लेख बड़े गम्भीर होते थे और भाषा ललित होती थी, पर इनके छन्द वैसे अपूर्व न थे। इन्होंने महावीरचरित्र और उत्तर रामचरित्र नामक भवभूति के नाटक ग्रन्थों के उलथा ग्रन्थ भी बनाये थे जो अप्रकाशित अवस्था में महाराज छतरपूर के पास हैं।

लखो यह मुंज बान नग नीको।
जनस्थान पश्चिम की भूमी चित्र बनो सुख जीको॥
दानवगण अरु ऋषि मतंग को थान यही सुगती को।
श्रमणा धरम-चारिणि शबरी लखौ प्रेम यह तीको॥

ये दोनों नाटक प्रायः डेढ़ डेढ़ सौ पृष्ठ के हैं।

(२५५६) देवकीनन्दन खत्री।

काशीवासी बाबू देवकीनन्दन का जन्म संवत् १९१८ में मुज़फ़्फ़रपूर में हुआ था। २४ वर्ष की अवस्था तक ये मुज़फ़्फ़रपूर एवं गया ज़िले में रहे और इसके पीछे काशी में रहने लगे। इन्होंने जंगलों

की अच्छी सैर की थी। अपने देखे हुए स्थानों एवं जंगलों का वर्णन इन्होंने अपने उपन्यासों में ख़ूब किया है। इनके बनाये हुए चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्तासन्तति, नरेन्द्रमोहनी, कुसुमकुमारी, वीरेन्द्रवीर, काजर की कोठरी आदि उपन्यास परमलोकप्रिय एवं मनोहर हैं। आजकल ये भूतनाथ उपन्यास लिख रहे थे। इनके उपन्यास ऐसे रोचक हैं कि बहुत से लोगों ने उन्हें पढ़ने ही को हिन्दी सीखी। इन्होंने पंडित माधवप्रसाद के सम्पादकत्व में सुदर्शन नामक एक उत्तम मासिकपत्र भी निकाला था पर वह बन्द होगया। इनकी देखादेखी हिन्दी में बहुत से उपन्यासलेखक हो गये हैं और इस विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है। इनके उपन्यासों में असम्भव बातें भी रहती हैं जो अनुचित है। इनकी भाषा बहुत सरल होती है और वह मनोहर भी है। इनके उपन्यासों में लोकहित-साधन का बहुत विचार नहीं रहता। इनका शरीरपात हाल ही में हुआ है।

(२५५७) बालमुकुन्द गुप्त।

इनका जन्म संवत् १९२२ में रोहतक ज़िले में हुआ था। इनको हिन्दी लेखन से सदैव बड़ी रुचि थी और इन्होंने पत्रों के सम्पादन से ही अपनी जीविका भी चलाई। आपने सात वर्ष बंगवासी का सम्पादन किया और फिर भारतमित्र के आप जीवनपर्य्यन्त सम्पादक रहे। आपने रत्नावली नाटिका, हरिदास, शिवशम्भु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं। इन की गद्य और पद्य रचनाओं में मज़ाक़ की मात्रा ख़ूब रहती थी और वे बड़ी मनोरंजक होती थीं। होली के सम्बन्ध में ये टेसू आदि ख़ूब मार्के के बनाते

थे। इनका शिवशम्भु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। गुप्तजी एक बड़े ही जिन्दःदिल लेखक थे और समालोचना भी अच्छी करते थे। इनका शरीरपात १९६४ में हुआ।

हुए मारली पद पर पक्के। बण्डरिक के लग गये धक्के॥
बंगाली समझे पौ छक्के। होली है भई होली है॥
बंग-भंग की बात चलाई। काटन ने तकरीर सुनाई॥
तब मुरली ने तान लगाई। होली है भई होली है॥
होना था सो हो गया भैया। अब न मचाओ तोबा दैया॥
घर को जाओ लेउँ बलैया। होली है भई होली है॥
जैसे लिबरल तैसे टोरी। जो परनाला सोई मोरी॥
दोनों का है पंथ अघोरी। होली है भई होली है॥

(२५५८) अयोध्यासिंह उपाध्याय।

इनका जन्म संवत् १९२२ में निज़ामाबाद ज़िला आज़मगढ़ में हुआ था। आपने कुछ अँगरेज़ी भी पढ़ी है और आज कल आप सदरक़ानूनगो के पद पर नियत हैं। आप हिन्दी के एक बहुत अच्छे लेखक और कवि हैं। आप ठेठ हिन्दी, साधारण हिन्दी, कठिन हिन्दी आदि सभी प्रकार की भाषाओं में गद्य लिखते हैं और पद्य के भी कई ग्रंथ आपने बनाये हैं। आप ने बँगला की कई पुस्तकों का भाषानुवाद किया। वेनिस का बाँका, रिपवान विङ्कल, नीतिनिबन्ध, विनोदवाटिका, नीति-उपदेशकुसुम आदि भी आप के अच्छे अनुवाद हैं। ठेठ हिन्दी का ठाट नामक आपका ग्रन्थ विलायत की सिविलसर्विस के कोर्स में नियत है। अधखिला

फूल भी आपका एक अच्छा ग्रन्थ है। रुक्मिणीपरिणय नाटक आप बना चुके हैं और आजकल खड़ी बोली के तुकान्त-हीन पद्य में १७ अध्यायों में व्रजांगना विलाप नामक महाकाव्य बना रहे हैं, जिसके प्रथम चार अध्याय आपने हमें सुनाये हैं। उपाध्यायजी ने प्रायः २५ ग्रन्थ बनाये हैं। आप हिन्दी के एक अच्छे लेखक हैं।

(२५५९) किशोरीलाल गोस्वामी।

काशीवासी इन गोस्वामी जी का जन्म संवत् १९२२ में हुआ था। आप संस्कृत तथा हिन्दी के बहुत अच्छे पंडित हैं और आप के लेख परम विद्वत्तापूर्ण होते हैं। आप ने कई ग्रन्थ संस्कृत में, प्रायः १०० हिन्दी ग्रन्थ स्फुट विषयों पर और ६५ हिन्दी उपन्यास लिखे हैं और उपन्यास मासिक पुस्तक अब भी निकालते हैं। लेखों में आप उच्च हिन्दी का व्यवहार करते हैं और उपन्यासों में साधारण भाषा का। गोस्वामी जी एक ऊँचे दरजे के लेखक हैं। आज कल ये मथुरा में रहते हैं।

(२५६०) शिवविहारीलाल मिश्र।

आपका जन्म संवत् १९१७ में इटौंजा ग्राम में हुआ था। आप के पिता पंडित वालदत्तमिश्र वड़े प्रसिद्ध महाजन, ज़िमीदार और कवि थे। आपने वाल्यावस्था में इटौंजा और फिर महोना में उर्दू की शिक्षा पाई और अन्त में लखनऊ में रह कर अँगरेज़ी पढ़ी। एंट्रेंस पास करके नौ मास तक आपने एफ़० ए० में शिक्षा पाई, पर इस समय आप कुछ ऊँचा सुनने लगे सो क्लास में अध्यापकों का पढ़ाना भली भाँति सुन न पाते थे। इस कारण पढ़ने से आप

का चित्त ऊब गया और आपने सरकारी नौकरी कर ली। थोड़े दिनों में वकालत पास करके संवत् १९४५ से आप लखनऊ में वकालत करने लगे। यही काम आप अब तक करते हैं। अपने इस काम से पैत्रिक सम्पत्ति बढ़ने में आपने बड़ी सहायता दी और महाजनी के व्यापार को ज़िमींदारी में बदल दिया। संवत् १९५० में आप हैज़ा रोग से बहुत पीड़ित हुए और आप के जीवन की कम आशा रही, पर ईश्वर ने अच्छा कर दिया। संवत् १९५४ में आपको कुछ मास खाँसी और ज्वर का रोग रहा और एक बार छः मास समुद्र तट पर वाल्टेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परन्तु श्वास की शिकायत कुछ कुछ अब भी चली जाती है।

कविता की ओर पहले आप का ध्यान न था, पर पीछे से यह रुचि भी आपको हुई और संवत् १९४८ के लगभग से आप रचना करने लगे। उदाहरण—

झूमत हैं मद सों भरिकै मृग से पुनि चौंकि चहूँ दिसि जोहैं।
खंजन से उड़ि जात सबै थल मीन सपच्छ मनो जुग सोहैं॥
नूतन कंज समान विकास धरे चख ये सबको मन मोहैं।
पै उलटो गुन धारि सदा बनि बान समान हनैं मन को हैं॥१॥

मीन मृग खंजन तुरंग सों चपलताई
कंजदल ही सों लै सरूप मुद पायो है।
बेधकपनो है जौन अति अनियारो ताहि
बानन सों लैकै क्रूरताई उपजायो है॥

स्यामता हलाहल सों मद सों ललाई पुनि
चारु मतवारोपन लैकै छबि छायो है।
अमिय सों लैकै सेतताई जग मोहन को
बिधना जुगल इन नैनन बनायो है॥ २॥

आपके एक पुत्र और दो कन्यायें हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत में पढ़ता है।

(२५६१) गणेशविहारी मिश्र।

इनका जन्म संवत् १९२२ में इटौंजा में हुआ था। इनके पिता पंडित बालदत्त मिश्र प्रसिद्ध महाजन, ज़िमीदार और कवि थे। इन्होंने बाल्यावस्था में हिन्दी, संस्कृत और फ़ारसी पढ़ी और संवत् १९३६ में इटौंजा में कपड़े की एक दूकान खोली, जो १० वर्ष तक चलती रही। संवत् १९४६ में पिता जी ने अस्वस्थता के कारण घर का काम करना छोड़ दिया। उसी समय से दूकान उठाकर ये घर का कामकाज सम्हालने लगे। इनका बड़ा पुत्र राज-किशोर अमरिका में इंजीनियरी की शिक्षा पाने गया है और छोटा पुत्र यहीं अँगरेज़ी पढ़ता है। इनके दो विवाह आगे पीछे हुए, पर दोनों स्त्रियाँ पंचत्व को प्राप्त हो गईं। इनकी दूसरी स्त्री की मौत पाँच साल हुए हुई। फिर इन्होंने मित्रों के आग्रह पर भी विवाह नहीं किया। आपने देवकविकृत प्रेमचन्द्रिका, रागरत्नाकर और सुजानविनोद को टिप्पणीसमेत सम्पादित करके नागरीप्रचारिणी सभा ग्रन्थमाला में प्रकाशित कराया। कुछ छन्द भी इन्होंने बनाये

हैं पर इस ओर विशेष रुचि नहीं है । गद्य की ओर इन्हें विशेष रुचि है । उदाहरण—

मथन लगे जब सिन्धु देवदानव मिलि सारे ।
कढ़े त्रयोदश रत्न सबै परभा अति धारे ॥
लियो सबन तिन बाँटि कढ़्यो तब बिषम हलाहल ।
लगे जरन सब लोक दूरि भाग्यौ धीरज बल ॥
तब पान कियो जेहि विषम विष तीनि लोक तारन तरन ।
सोइ आसुतोष संकट सकल हरहु सम्भु असरन सरन ॥१॥

मन भावन छैल छबीलो लखैा इत राधिका प्रेम प्रभा सों सनी ।
उत कान्ह बजावत बाँसुरिया दुहुँ ओरन सों सुषमा है घनी ॥
इत राधिका झूलत झूला भले चमकैं जुत भूषण जामैं कनी ।
जड़े हीरन सों गहने पहने छवि देखिये जोरी अनूप बनी ॥ २ ॥

मान—(२५६२) जंगलीलाल भट्ट (जंगली), पैंतेपूर, ज़ि० सीतापूर ।

रचना—स्फुट काव्य । अच्छा है ।

जन्मकाल—१९२३ ।

समय—वर्तमान ।

विवरण—ये सीतापुर में मुदर्रिस हैं । कविता सरस करते हैं । अभी कोई ग्रंथ नहीं बनाया है, परन्तु स्फुट छन्द बहुत से रचे हैं । उदाहरण—

विलुलित अलकैं ललित भाल वाल मुख
बनक बिसाल महताबी दरसति है।
लोभी लङ्क लचनि नचनि चितवनि चख
चञ्चल तुरङ्ग सी सिताबी दरसति है॥
सौरभित फूलसी अतूल सुखमूल दुति
जङ्गली दुकूल मैं न दाबी ठहरति है।
फाबी सित कंचुकी मैं उरज सहाबी आब
ऊपर अपूरब गुलाबी दरसति है॥ १॥

नाम—(२५६३) श्यामसेवक मिश्र सनाढ्य, मऊगंज रीवाँ।

ग्रन्थ—३० पुस्तकें बनाई हैं।

समय—वर्त्तमान।

विवरण—ये महाशय महाराज रीवाँ के यहाँ नौकर हैं। आप संस्कृत, फ़ारसी, बङ्गला और हिन्दी के अच्छे विद्वान् हैं। ये कविवर केशवदास जी के वंशज हैं। आपकी अवस्था इस समय लगभग ४५ साल की होगी।

नाम—(२५६४) गोपाललाल खत्री, लखनऊ।

रचनाकाल—बहुत से लेख।

समय—वर्तमान।

विवरण—आपने कई साल तक नागरीप्रचारक पत्र को घाटा सह-कर भी चलाया; यद्यपि आपकी आर्थिक दशा वैसी अच्छी न थी। आप हिन्दी के अच्छे लेखक हैं और आपने कई

उपन्यास आदि लिखे हैं। इस समय आपकी अवस्था ४५ साल की होगी।

नाम—(२५६५) साधुशरण प्रसाद, ज़ि० बलिया।

ग्रन्थ—भारतभ्रमण, पाँच भाग।

समय—१९५०।

विवरण—इन्होंने यह ग्रंथ बड़ा ही प्रशंसनीय बड़े श्रम से बनाया है। यह ग्रंथ परिभ्रमण करने वालों को बड़ाही उपयोगी और सर्वसाधारण को दर्शनीय है। इसमें हर एक स्थान का यथोचित और प्रशंसनीय वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त और भी कई ग्रंथ आपने बनाये हैं।

(२५६६) कुँअर हनुमन्तसिंह रघुवंशी क्षत्रिय।

इनका जन्मकाल सं० १९२४ है। आप राजपूत ऐंग्लो ओरियण्टल प्रेस के अध्यक्ष और हिन्दी के एक सुयोग्य एवं प्रसिद्ध लेखक हैं। आपके बनाये १७ ग्रन्थों में मेवाड़ का इतिहास, क्षत्रिय-कुल-तिमिरप्रभाकर, महाभारत-सार, वीर बालक और अभिमन्यु मुख्य जान पड़ते हैं।

(२५६७) गदाधरसिंह ठाकुर।

आपका जन्म काशीपुरी में संवत् १९२६ में हुआ था। आपका निवास-स्थान सचेंडी, ज़िला कानपूर है। आप १८ वर्ष सरकारी पल्टन में नौकर रहे और अब प्रायः छः वर्ष से डाक-विभाग में पोस्ट मास्टर हैं और १५०) मासिक वेतन पाते हैं। सेना-विभाग

में बर्मा एवं चीन के युद्धों में आप लड़े थे, तथा महाराजा एडवर्ड के तिलकोत्सव में निमन्त्रित होकर विलायत गये थे। इन्होंने चीन में तेरह मास, हमारी एडवर्ड तिलक यात्रा, तथा रूस जापान युद्ध नामक तीन परमोत्तम भारी पुस्तकें लिखी हैं। इनके ग्रन्थों में भारतोत्थान पर हर जगह बड़ा ज़ोर दिया गया है। देशहित इस महापुरुष की नस नस में भरा है और रचनाओं से वह भली भाँति प्रदर्शित होता है। इनके ग्रन्थों में ज़िन्दःदिली की मात्रा ख़ूब है और उनसे बहुत अच्छे उपदेश मिलते हैं। ये महाशय प्रायः १६ वर्ष से हमारे मित्र हैं और इनका व्यवहार सदैव एक सा सच्चा रहा है। आर्य्यसमाज के ये एक बड़े पक्के सभासद हैं और उसकी प्रार्थनाओं एवं कार्य्यवाहियों में बड़ी रुचि रखते हैं। आर्य्यसामाजिक पत्रों में भी इन्होंने बहुतायत से लेख लिखे हैं। इनके ग्रन्थ परम सजीव एवं उच्चाशयपूर्ण हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त और भी कई ग्रंथ आपने बनाये हैं।

(२५६८) कविराजा मुरारिदान जी।

ये महाशय जोधपूरनरेश के आश्रय में रहते थे और उनके

उनके लक्षण निकाले हैं, और गद्य की भी उत्तम रचना की है। इनका स्वर्गवास प्रायः १० वर्ष हुए हुआ। इनकी गणना कविता की दृष्टि से साधारण श्रेणी में है। उदाहरण—

कैसी अली की भली यह बानि है देखिये पीतम ध्यान लगाय कै।
छाक गुलाब मधू सों मुरारि सु बेलि नवेलिन में बिरमाय कै॥
खेलत केतकी जाय जुहीन में केलत मालती वृन्द अघाय कै।
आन को जोवत खोवत दौस पै सोवत है नलिनी सँग आय कै॥

(२५९९) ठाकुर रामेश्वरबख़्शसिंह।

ये तालुक़दार परसेहँडी सीतापूर हैं। आपका जन्म संवत् १९२४ में परसेहेंडी में ठाकुर बेनीसिंह के यहाँ हुआ। आपके पिता बड़े शिवभक्त और हिन्दी-साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। हमारे ठाकुर साहब ने हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत और उर्दू भी पढ़ी है। आपने हिन्दी काव्य के तीन ग्रन्थ रचे हैं, अर्थात् साहित्य-श्रीनिधि, सोरठा-शतक और स्फुट काव्य। हिन्दी में आपका उपनाम श्रीनिधि है। आपने उर्दू में ग़ज़ल और हिन्दी में बहुत सी गाने की चीज़ें भी रची हैं। गानविद्या में आपको अच्छा बोध है। आप बड़े उदार और सज्जन पुरुष हैं। आपके छन्द अनुप्रासपूर्ण और बड़े ही उत्कृष्ट होते हैं।

श्रीनिधिजू मानुस्व महीपन की कहै कौन
　　जहाँ देवराज कैसे चँवर ढरयो करैं।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र से परे हैं चरनाम्बुज मैं
　　ऋषि मुनि जाको ध्यान उर मैं धरयो करैं॥

ऐसी आदिशक्ति मातु सोहति सिँहासन पै
जा के रूप आगे रमा रति हू डरयो करैं ।
दौस निसि भानु सितभानु जाकी फेरी करैं
चेरी सम ऋद्धि सिद्धि टहल करयो करैं ॥ १ ॥

राजती पताकी वेस अजब कताकी
प्रभा हेरि हरिता की हरी हरित लता की है ।
पन्नगसुता की और नर बनिता की
कहा अन्य समता की है न काहू देवता की है ॥
जगत पिता की बाम अंगिनी सु नैमिष मैं
श्रीनिधि को दाइनी प्रकास कविता की है ।
सुभ सुचि ताकी दीह दुति सविता की नहीं
ऐसी छवि ताकी जैसी मातु ललिता की है ॥ २ ॥

अँगराय प्रभा भरी ओछे उरोज महारस के नद बोरै लगी ।
सखियान सों सैनन बैनन मैं कछु चातुरी कै चित चोरै लगी ॥
नृप श्रीनिधि भावती भाग भरी लघु लाजन सों दृग जोरै लगी ।
मृदु मन्द हँसी सों नसीली चितै दिन द्वै ते पियूष निचोरै लगी ॥३॥

धन सम्पति कुल काय श्रीनिधि लहि नहिँ गरब गहु ।
वढ़ि कै ज्यों घटि जाय समै परे ससि वढ़ि घटै ॥ ४ ॥
श्रीनिधि यों छवि देहिँ अँखियाँ अलकन के तरे ।
खंजरीट गहि लेहिँ मदन बधिक जनु जाल लै ॥ ५ ॥
यों कानन के तीर नैन कोर कज्जल-कलित ।
कढ़ी कलंक लकीर श्रीनिधि मानहुँ चन्द बिच ॥ ६ ॥

कैधौं बेलि सुन्दर सिँगार सुधा सींची
कैधौं खींची विधि रेख जोबनागम मदन तैं ।
के धैां धरी नीलम छरी उरज नाभि मध्य
उपटी किधैां या बेनी पीठि की हदन तैं ॥
श्रीनिधिजू पाँति कै पिपीलिका बनायो
कैधौं मंत्र शिव मदन चलायो है कदन तैं ।
युगुल उरोज बीच राजी रोमराजी
किधौं कढ़त सु पन्नगी पिनाकी के सदन तैं ॥ ७ ॥

नाम—(२५७०) जगन्नाथ चौबे (माथुर) कवि झारसीराम के पुत्र बूंदी।

ग्रन्थ—(१) अलंकारमाला, (२) रामायणसार, (३) माथुर-कुल-कल्पद्रुम, (४) शिक्षादर्पण, (५) यमुनापच्चीसी।

जन्मकाल—१९२८।

कविताकाल—१९५०।

विवरण—ये महाशय बूंदी दरबार के आश्रित कवि झारसीराम के पुत्र हैं। कविता साधारण करते हैं। उदाहरण—

भूमि करयो अम्बर दिगम्बर तिलक भाल
विप्र उपवीत करयो यज्ञ के हवन मैं।
माथुर कहत सुरनाथ सुरभोग करयो
वाहन बनायो विधि आपने गवन मैं ॥
विस्व को सिँगार भयो सुखमा अपार धारि
दौस निसि बाढ़ै तऊ छवि की छवनि मैं।

बूंदीनाथ प्रबल प्रतापी रघुवीरसिंह
तेरो जस मावत न चौदहौ भुवन मैं ॥ १ ॥

(२५७१) सकलनारायण पांडेय।

आपका जन्म १९२८ में हुआ था। आप बड़े ही उत्साही पुरुष और उन्नति के नवीन सामाजिक विचारों के पक्षपाती हैं। मुख्यशः आपही के परिश्रम से आरा नागरीप्रचारिणी सभा स्थापित हुई। आपने अनेक ग्रन्थ रचे हैं, जिनमें से हिन्दीसिद्धान्त-प्रकाश, सृष्टितत्त्व, प्रेमतत्त्व, आरापुरातत्त्व, वीरबाला-निबन्ध-माला, व्याकरण-तत्त्व आदि प्रधान हैं। राजरानी और अपराजिता आपके उपन्यास हैं। आप बड़े ही मिलनसार और उदार प्रकृति वाले पुरुष हैं। आपने जैनेन्द्रकिशोर की एक अच्छी जीवनी लिखी है।

(२५७२) हेमन्तकुमारी चौधरी।

आपका जन्म १९२५ में लाहौर में हुआ था और १९४२ में विवाह के पश्चात् ये शिलांग चली गईं। आप कई एक स्थानों में रहीं और सदैव परोपकारी कार्य्य करती रहीं। आपने आदर्शमाता, माता और कन्या, नारीपुष्पावली, और हिन्दी बँगला प्रथम शिक्षा नामक पुस्तकें रचीं। आप हिन्दी में वक्तृता भी देती हैं।

नाम—(२५७३) चन्द्रकला बाई, बूँदी।

ग्रन्थ—(१) करुणाशतक, (२) रामचरित्र, (३) पदवीप्रकाश, (४) महोत्सवप्रकाश।

समय—१९५०।

विवरण—ये कविराव गुलाबसिंह जी की दासी-पुत्री हैं। कविता अच्छी करती हैं। उदाहरण—

सागर धरम को उजागर प्रबीन महा
　　परम उदार मन जन सुखटारनो।
गुन रिझवार कवि कोविद निहालकार
　　वैरी मद गार उपकार उर धारनो॥
चन्द्रकला कहै रनधीर परपीरटार
　　जस विसतार कर जग सुखसारनो।
माड़वारनाथ सरदारसिंह सीलसिंधु
　　आनँद को कंद दीन दारिद विदारनो॥ १॥

(२५७४) बक्सराम पाँडे हल्दी-निवासी (सुजान कवि)।

पंडित बक्सराम जी की कविता ललित है। आपने ७ ग्रन्थ रचे हैं। (१) सं० १९५८में बना हुआ तन्मयादर्श पृ० ३० का ग्रन्थ पद्यमय शृङ्गार-रस से परिपूर्ण है, (२) श्रीकृष्णचन्द्राभरण नाम का अलंकार का ग्रन्थ पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है। यह ग्रंथ भी सं० १९५८ का रचा हुआ है। (३) कमलानंदविनोद पृ० १५४ का है। यह पद्यमय ग्रन्थ भी सं० १९५८ में रचा गया है। (४) राधाकृष्ण-विजय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठ का ग्रन्थ है। इनके अतिरिक्त (५) रुक्मिणी-उद्वाह पृ० ५४, (६) सदुपदेशमालिका पृ० २०, और (७) श्रीरामेश्वरभूषण पृष्ठ १०६ का अलंकार ग्रन्थ भी आपने रचे।

ये तीनों ग्रन्थ सं० १९६० में ही बने। कृष्णचन्द्रचन्द्रिका संवत् १९५० में आपने रची।

आपने समस्यापूर्ति में बहुतेरे छन्द रचे हैं। आपकी अवस्था प्रायः ५० साल की होगी।

(२५७५) मथुराप्रसाद जी मिश्र।

आपका जन्म स्थान ज़िला सुलतांपूर अमेठी राज्य के अंतर्गत पच्छिम गाँव में है। ये संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और भाषा का काव्य भी मनोहर करते थे। बँगला का भी अभ्यास आपने किया था। इन्होंने बाबू कालीप्रसन्नसिंह सबजज लखनऊ की आज्ञानुसार और उन्हीं की सहायता से कृत्तिवास-कृत बँगला रामायण के लंकाकांड का छन्दोबद्ध अनुवाद करके संवत् १९५१ में प्रकाशित किया था, और उसके पीछे उत्तरकांड का भी अनुवाद आरम्भ किया था परंतु वह प्रकाशित नहीं हो सका और बीचही में पंडितजी एवं सबजज साहब का स्वर्गवास होगया। यह लंकाकांड ही संपूर्ण तुलसीदास की रामायण से आकार में कुछ कम न होगा। इसमें रायल अठपेजी के ५१० पृष्ठों में कथा, १० पृष्ठों में भूमिका, ५ में विषय-सूची, तथा ७८ पृष्ठों में टिप्पणी इत्यादि हैं। कुल ६०३ पृष्ठों में यह कांड समाप्त हुआ है। इसमें कथा बहुत विस्तार से लिखी गई हैं। भाषा इसकी संस्कृत, व्रजभाषा तथा बैसवाड़ी मिश्रित है। हम मथुराप्रसाद जी को मधुसूदन दास की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण—

रविकिरण तनुते प्रकट शशधर ज्योति ज्योतिष्मान।
श्रम बिंदु झलकत चंद्रमुख अरविंद-बुंद समान ॥
रवि उदयते लगि अस्त युद्ध प्रवृत्त नहिँ अवसान।
कर मध्य भीषण धनुष बरषहिँ प्रखर अगणित बान ॥
तूणीर ते शर लेत क्षण यकमात्र बाण लखाय।
दरशात रिपुदल पर परत शत सहस ते अधिकाय ॥

संग्राम जासु यम आदि गये पराई ।
कोदण्ड हाथ लखि कम्पत देवराई ॥
जेते सुरासुर सुवीर त्रिलोक माहीँ ।
जाके कराल शर ते थिर कोउ नाहीँ ॥
आदेशकारि शशि सूर समीर जाके ।
त्रैलोक्य हर्षित महा विनिपात ताके ॥
सानंद देव-मुनिवृंद ऋचा सुनावैं।
गंधर्व दुंदुभि बजाय सुगीत गावैं ॥

(२५७६) द्विजगंग (गंगाधर) अवस्थी ।

ये दासापुर, सीतापुर-निवासी थे । आपका कविता-काल संवत् १९५१ से था। आपका हाल बलदेव (नं० २०८८) कवि के वर्णन में है।

(२५७७) ठाकुरप्रसाद खत्री, काशी ।

इनका जन्म १९२२ में हुआ था। आपने काशी-नागरीप्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया है। आज कल आप बैपारी और कारीगर नामक पत्र निकाल रहे हैं, जो बड़ा उपयोगी है। आपने

व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखी हैं और इसी प्रकार के उत्तम लेख लिखने पर सभा से पदक आदि भी पाये हैं। आपके निम्नलिखित ग्रंथ हमने देखे हैं:—लखनऊ की नवाबी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, करछा, सुघड़ दरजिन, मिस्ट्रीज़ कोर्ट आफ़ लंदन के कुछ अंश का अनुवाद, और व्यापारिक कोश।

(२५७८) महेंदुलाल गर्ग (पंडित)।

आप का जन्म सं० १९२७ में हुआ था। आप सेना-विभाग में डाक्टर हैं और इसलिए स्थान स्थान पर ख़ूब घूमे हैं। आपने कश्मीर और चीन भी देखा है। गर्गविनोद, अनन्त ज्वाला, पृथ्वी-परिक्रमा, पतिपत्नी-संवाद, तरुणों की दिनचर्य्या, जापानदर्पण, चीनदर्पण, जापानीय स्त्रीशिक्षा, प्लेग चिकित्सा, ध्रुवदेश, सुख-मार्ग, परिचर्याप्रणाली आदि अनेक उपयोगी ग्रन्थ आपने लिखे हैं। इनके अतिरिक्त डाक्टरी विषयों के भी आपके कुछ अन्य ग्रन्थ हैं।

(२५७९) व्रजनंदनसहाय।

आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आप ज़िला आरा में अख़्तियारपूर के कायस्थ क़ानूनगोवंशी बाबू शिवनंदनसहाय के पुत्र हैं। अँगरेज़ी बी० ए० पास करके अब आरा में आप वकालत करते हैं और इस समय आरा नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री तथा नागरीहितैषिणी पत्रिका के सम्पादक हैं। आप भाषा गद्य और पद्य के अच्छे लेखक हैं। आपकी कविता प्रशंसनीय होती है। अब

तक निम्नलिखित २० ग्रंथ हिन्दी में आपके रचित तथा अनुवादित हैं। इनके अतिरिक्त समाचारपत्रों में आपके लेख तथा कविताएं प्रायः छपती रहती हैं। आप हिन्दी के ऐसे बड़े उत्साही सहायक हैं कि वकालत में फँसे रहने पर भी अपना अमूल्य समय हिन्दी-सेवा में भी व्यय करते हैं। हिंदी की उन्नति के वास्ते ऐसे ही सहायकों की आवश्यकता है। आपके ग्रंथ ये हैं:—

पद्य—(१) हनुमानलहरी, (२) श्रीव्रजविनोद, (३) सत्यभामा-मंगल, (४) एक निर्जनद्वीपवासी का विलाप।

नाटक—(१) सप्तमप्रतिमा त्रोटक, (२) उद्धव नाटक, (३) वूढ़ा वर गद्यपद्य-मिश्रित प्रहसन।

अनुवाद—(१) चन्द्रशेखर उपन्यास, (२) कमलाकांत का इज़-हार प्रहसन।

(१) अर्थशास्त्र।

समालोचना—(१) चन्द्रशेखर उपन्यास की समालोचना।

उपन्यास—(१) राजेन्द्रमालती, (२) अद्‌भुतप्रायश्चित्त, (३) सौन्दर्योपासक, (४) आदर्शमित्र।

जीवनचरित्र—(१) पंडित वलदेवप्रसाद की जीवनी (२) राय वहादुर वंकिमचन्द्र की जीवनी, (३) विद्यापति ठाकुर की जीवनी, (४) वावू राधाकृष्णदास की जीवनी।

संपादित—(१) मैथिलकोकिल।

आपने भाषा में कई आवश्यकीय विषयों पर रचना की है। यह वड़ी प्रशंसनीय वात है। आपका कविताकाल संवत् १९५२ समझना चाहिए।

नाम—(२५८०) कृष्णबलदेव खत्री कालपी।

ग्रन्थ—(१) भर्तृहरि नाटक, (२) फ़ाहियान भाषा, (३) ह्यूएन्सांग भाषा, (४) विद्याविनोद पत्र।

जन्मकाल—१९२७ के लगभग।

समय—वर्त्तमान।

विवरण—ये महाशय हिन्दी के बड़े रसिक और गद्य के सुलेखक हैं। प्राचीन विषयों की खोज में भी इन्होंने समय लगाया है। इनका भर्तृहरि नाटक पढ़ने से रुलाई आ जाती है। विद्याविनोद पत्र भी इन्होंने कुछ साल निकाला था।

नाम—(२५८१) जयदेवजी भाट, अलवर।

रचना—स्फुटकाव्य।

जन्मकाल—१९२८।

रचनाकाल—१९५३।

विवरण—आप रावराजा अलवर के आश्रित हैं। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती है। उदाहरण।

फैली सुगंधभरी लतिका सोई गोरखधन्ध प्रवन्ध वनायो।
त्यों जयदेव विभूति की भाँति वड़े अनुराग पराग लगायो॥
नीरज नील निचोल अमोल पिकी धुनि वोल अतोल सुनायो।
प्रान की भीख वियोगिन पै रितुराज फकीर ह्वै माँगन आयो॥१॥
सोरन को करिकै चहुँओरन मोदभरे वन मोर नचैंगे।
वारिद वीजु छटा जुत देखि वियोगिन के तन ताप तचैंगे॥

त्यौं जयदेव उमंगन सों नरनारि अपार विहार रचैंगे।
पावस की रितु मैं सजनी बिन पीतम के किमि प्रान बचैंगे ॥ १ ॥

(२५८२) अमरकृष्ण चौबे (अमर)।

ये प्रसिद्ध महाकवि बिहारीलालजी के वंश में हैं। इस समय इनकी अवस्था अनुमान से ४० साल की है। इनका सम्बन्ध बिहारी से इस तरह है।

प्रथम बिहारीदास प्रगट जिन सप्तसती कृत।
विसद ज्ञान के धाम कहूँ लवलेश न दुरमत ॥
तिनके गोकुलदास तनय तिहि खेमकरन गनि।
दयाराम सुत तासु बहुरि तिनके मानिक भनि ॥
पुनि भे गनेस तिनके तनय बालकृष्ण तिनके भयेउ।
गुन निपुन चतुरता सहन सो कविता तिय नायक कहेउ ॥१॥

तिनके भो अति मंदमति कविजन किंकर जानि।
विद्या विमल विवेक बिन अमरकृष्ण पहिचानि ॥२॥

ये बूंदी दरबार के राजकवि हैं। कविता इनकी सरस होती है। उदाहरण—

आरति हरन निगमागम बखानै तोहि
भारी निज विरद प्रभाव क्यों पसारै ना।
अमर भनत गुनहीन जन दीन जानि
मीन ज्यों विहीन वारि खीनता विसारै ना ॥

अतुल उदार त्रिपुरारि प्रान प्यारे जग
जलधि अथाह पेखि चित्त धीर धारै ना।
कारन सकल कलि बारन पै सिंह रूप
तारन कहाय नाम काहे पार पारै ना॥ १॥

(२५८३) श्यामसुंदर (श्याम)।

ये असनी ज़िला फ़तेहपुर-निवासी पंडित मन्नालाल मिश्र के पुत्र और कवि सेवक के शिष्य हैं। इन्होंने संवत् १९५२ में ठाकुर महेश्वर बख्श सिंह तअल्लुक़दार रामपुर मथुरा ज़िले सीतापुर की आज्ञानुसार महेश्वरसुधाकर नामक ग्रंथ बनाया। इसमें नायिकाभेद का वर्णन है और अंत में समस्यापूर्ति के छंद हैं। इस ग्रंथ की भाषा व्रजभाषा है। कवि ने प्रायः सब उदाहरणों का तिलक भी कर दिया है। ये महाशय साधारण श्रेणी में गिने जाते हैं। उदाहरणार्थ इनका एक छंद लिखा जाताहै।

सोभित मोरपखा श्रुति कुंडल माल विसाल हिये विलसी है।
स्याम सरोज विनिंदक नैन सु आनन की समता न ससी है॥
वैन सुधा मुसुकानि अमी सम देखु अरी उर आनि गसी है।
मूरति माधुरी मोहन की सुनते सजनी मन माहिँ वसी है॥

(२५८४) बचनेश मिश्र।

ये रियासत कालाकाँकर में नौकर हैं। आप गद्य और पद्य दोनों के अच्छे लेखक हैं। आपकी अवस्था ४० वर्ष के लगभग देखने से समझ पड़ती है। आप बड़े उत्साही पुरुष हैं।

(२५८५) गंगाप्रसाद अग्निहोत्री (पंडित)।

ये हमारे प्राचीन मित्र हैं। आप हिन्दी के एक परम प्रसिद्ध गद्य-लेखक हैं और कई स्वतन्त्र ग्रन्थ एवं अनुवाद ग्रन्थ आपने लिखे हैं। आप मध्य प्रदेश की छुईखदान रियासत में ऊँचे कर्म्मचारी थे। आपका जन्म १९२७ में हुआ। आपने मराठी के चिपलूणकर नामक प्रसिद्ध लेखक के संस्कृत कविपंच एवं निबन्धमालादर्श का भाषानुवाद किया है तथा रसवाटिका नामक रससम्बन्धी एक अच्छा रीति-ग्रंथ लिखा है। भवभूति के आधार पर इन्होंने मालती माधव नामक एक ग्रन्थ उपन्यास के ढङ्ग पर बनाया है। नर्मदा पर आपने एक कविता-ग्रन्थ भी रचा है। आप भाषा के बड़े ऊँचे लेखकों में गिने जाते हैं। आपके ग्रन्थों में निबन्धमाला, प्रणयी माधव, राष्ट्रभाषा, संस्कृत-कविपंच, मेघदूत, डाकृर जानसन की जीवनी और नर्मदाविहार मुख्य हैं। इस समय आप कोरिया रियासत के दीवान हैं।

(२५८६) गंगानाथ झा (डाक्टर) महामहोपाध्याय।

ये संस्कृत के महान् पंडित हैं। आप की अवस्था अभी ४० वर्ष से अधिक नहीं है, पर तो भी आप महामहोपाध्याय और डी लिट की पदवियों से विभूषित हैं। आप अँगरेज़ी एम० ए० तक पढ़ चुके हैं और आज कल म्योर कालेज इलाहाबाद में शिक्षक हैं। आपने संस्कृत के अनेक ग्रन्थ रचे हैं और कुछ भाषा के भी गद्य-ग्रन्थ गम्भीर विषयों पर बनाये हैं।

(२५८७) रामजीलाल शर्मा।

ये प्रयाग में रहते हैं। आपकी अवस्था प्रायः ३४ वर्ष की है। आपने गद्य में कई उत्तम पुस्तकें लिखी हैं, जिन में २३५ पृष्ठों का एक ग्रंथ सीताचरित है। आपकी लेखन-शैली सराहनीय है। आपके १६ ग्रन्थों में से ९ बालकों के लिए लिखे गये हैं। आज कल आप विद्यार्थी नामक मासिक पत्र निकालते हैं।

(२५८८) राधाकृष्ण मिश्र।

ये प्रसिद्ध लेखक माधवप्रसाद के कनिष्ठ भ्राता झज्झर ज़िला रोहतक के रहने वाले हैं। आप की अवस्था अब प्रायः ४० वर्ष की होगी। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं और अपने भ्राता के समान सुलेखक हैं।

(२५८९) राजाराम शास्त्री।

इनका जन्म सं० १९२७ में हुआ था। आप दयानन्दकालेज लाहौर में अध्यापक हैं। वाल्मीकीय रामायण, वेदान्तदर्शन, योगदर्शन, मनुष्यसमाज, शङ्कराचार्य्य (जीवनचरित्र), बृहदारण्यकोपनिषत् और दशोपनिषत् भाष्य नामक ग्रंथ आपने बनाये हैं। आप भाषा के मर्मज्ञ हैं और उपरोक्त ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य कई ग्रंथ लिख चुके हैं। आप बड़े ही परोपकारी और धर्म्मनिष्ठ सज्जन हैं।

(२५९०) गणेशदत्त शास्त्री वाजपेयी, कन्नौज।

इनकी अवस्था प्रायः ४० वर्ष की होगी। आप भारत-धर्म-महामण्डल के एक सुयोग्य और उच्चाशय उपदेशक हैं। आपके

उपदेशों को जनसमुदाय बहुत पसन्द करता है। आपने धर्म एवं दर्शनशास्त्रविषयक कुछ ग्रंथ भी लिखे हैं। आप बड़ा सबल व्याख्यान देते हैं।

नाम—(२५९१) हरिपालसिंह क्षत्रिय सोहिलामऊ डा० ख़ा० संडीला, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) दुर्गाविजय, (२) प्रेमगीतावली, (३) अन्नपचीसा, (४) प्रेमपचासा, (५) ऊषा-अनिरुद्ध नाटक, (६) वसंत-विनोद, (७) पावसप्रमोद, (८) सिंहासनबत्तीसी पद्य, (९) प्रेमपारिजात, (१०) हरिपालविनोद, (११) ऋतुरसांकुर, (१२) रागरङ्ग, (१३) रागरत्नावली, (१४) वियोग वज्राघात, (१५) चन्द्रहास नाटक, (१६) इंदुमती उपन्यास।

जन्मकाल—१९३६।

कविताकाल—१९५४।

विवरण—आप उत्साही और उत्तम लेखक हैं।

(२५९२) रामप्रिया जी।

श्रीमती महारानी रघुराज कुँवरि उपनाम रामप्रिया अवधप्रदेशांतर्गत ज़िला प्रतापगढ़ के आनरेबुल राजा प्रतापबहादुरसिंह सी० आई० ई० की रानी हैं। इन्होंने महाराज सप्तम एडवर्ड के तिलकोत्सव में इँगलैंड जाकर महारानी से मुलाक़ात की थी। ये बड़ी विदुषी हैं और महिलाओं की सभासोसाइटी इत्यादि से बड़ी सहानुभूति रखती हैं। इन्होंने भक्तिपद्य के अनेक रागों में रामप्रियाविलास नामक ग्रंथ रचा है, जिससे इनकी विद्या का

परिचय मिलता है। इसी ग्रंथ से एक छंद नीचे लिखते हैं:—

कहि रामप्रिया गुन गावैं जो राम के छंद रचैं जो हुलासन सों।
सु अलंकृत छंद बिचारयौ करैं नित बैठे रहैं दृढ़ आसन सों॥
फल चारिहु पावैं बिना श्रम के भय ताहि कहा जम-पासन सों।
फिरि अंतहुँ स्वर्ग पयान करैं कबि बैठे बिमान हुतासन सों॥

इन्होंने उपरोक्त ग्रंथ के अतिरिक्त स्फुट रचना भी की है। इनकी भाषा साधारण और भाव सरल हैं।

इनका स्वर्गवास वैशाख सं० १९७१ में हो गया।

(२५६३) भगवानदीनजी (लाला, दीन)।

आपका जन्म संवत् १९३२ में ज़िला फ़तेहपुर के मौज़ा बरवट में हुआ। आप कायस्थ श्रीवास्तव क़ानूनगो हैं। आपने पहले फ़ारसी भाषा पढ़ी, तदनंतर उर्दू, हिन्दी और अँगरेज़ी एफ़, ए० तक पास की और संस्कृत तथा बँगला में भी अभ्यास किया। आपने कायस्थपाठशाला इलाहाबाद, गर्ल्स स्कूल इलाहाबाद, छतरपूर स्कूल और हिन्दू कालिजियट स्कूल में शिक्षक का काम किया है। नागरीप्रचारिणी सभा के कोष-विभाग में भी इन्होंने कुछ दिन काम किया है। इस समय आप गया में लक्ष्मी पत्रिका के सम्पादक हैं। आप भाषा गद्य तथा पद्य के योग्य लेखक और सुकवि हैं। आप हिन्दी के बड़े ही प्रेमी तथा शुभचिंतक हैं। हमारे केवल एक कार्ड भेजने पर आपने स्वरचित ५ पुस्तकें भेजीं और आपके पास जो हिन्दी-साहित्य-इतिहास-विषयक बहुत सा

मसाला जमा था, उसके देने का वचन दिया, तथा और कई उचित परामर्श भी दिये। हम आपके हिन्दी-प्रेम तथा उत्साह की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। आपही सरीखे उत्साही पुरुषों से हिन्दी साहित्य का उपकार हो सकता है। आपकी रचित, अनुवादित तथा सम्पादित पुस्तकें ये हैं:—

(१) भक्तिभवानी (पद्य), (२) आदर्शहिन्दू रमणी (गद्य); (३) धर्म और विज्ञान (अनुवाद), (४) वीर बालक (पद्य), (५) वीर क्षत्रानी, (६) रामचरणांक माला, (७) वीरप्रताप काव्य, (८) हिम्मत बहादुर विरुदावली संपादित, (९) राजविलास सम्पादित, (१०) ठाकुर कवि की जीवनी, (११) आनंदघन, हंसराज, पोहकर, और अक्षर अनन्य की जीवनी, (१२) तुलसीसतसई का पद्यबद्ध अनुवाद, (१३) भाल रामायण।

आपकी कविता के उदाहरण में "वीरप्रताप" से कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जाता है। अकबरी फ़ौज की आमद सुनकर राणा प्रतापसिंह अपने शूर वीरों से कहते हैं:—

सब वीरों से ललकार के यक बात सुनाई।
　　यह आख़िरी विन्ती मेरी सुनलो मेरे भाई॥
पैदा हुआ संसार में यक रोज़ मरैगा।
　　मरना तो मुक़द्दम है न टारे से टरैगा॥
फिर इससे भला मौक़ा कहो कौन पड़ैगा।
　　रजपूती की क्या गोट का पौ रोज़ अड़ैगा॥
पांसे करो तलवार तबर तीर के यारो।

परिचय मिलता है। इसी ग्रंथ से एक छंद नीचे लिखते हैं:—

कहि रामप्रिया गुन गावैं जो राम के छंद रचैं जो हुलासन सों।
सु अलंकृत छंद विचारयो करैं नित बैठे रहैं दृढ़ आसन सों॥
फल चारिहु पावैं विना श्रम के भय ताहि कहा जम-पासन सों।
फिरि अंतहुँ स्वर्ग पयान करैं कवि बैठे बिमान हुतासन सों॥

इन्होंने उपरोक्त ग्रंथ के अतिरिक्त स्फुट रचना भी की है। इनकी भाषा साधारण और भाव सरल हैं।

इनका स्वर्गवास वैशाख सं० १९७१ में हो गया।

(२५६३) भगवानदीनजी (लाला, दीन)।

आपका जन्म संवत् १९३२ में ज़िला फ़तेहपुर के मौज़ा बरवट में हुआ। आप कायस्थ श्रीवास्तव क़ानूनगो हैं। आपने पहले फ़ारसी भाषा पढ़ी, तदनंतर उर्दू, हिन्दी और अँगरेज़ी एफ़, ए० तक पास की और संस्कृत तथा बँगला में भी अभ्यास किया। आपने कायस्थपाठशाला इलाहाबाद, गर्ल्स स्कूल इलाहाबाद, छतरपूर स्कूल और हिन्दू कालिजियट स्कूल में शिक्षक का काम किया है। नागरीप्रचारिणी सभा के कोष-विभाग में भी इन्होंने कुछ दिन काम किया है। इस समय आप गया में लक्ष्मी पत्रिका के सम्पादक हैं। आप भाषा गद्य तथा पद्य के योग्य लेखक और सुकवि हैं। आप हिन्दी के बड़े ही प्रेमी तथा शुभचिंतक हैं। हमारे केवल एक कार्ड भेजने पर आपने स्वरचित ५ पुस्तकें भेजीं और आपके पास जो हिन्दी-साहित्य-इतिहास-विषयक बहुत सा

मसाला जमा था, उसके देने का वचन दिया, तथा और कई उचित परामर्श भी दिये। हम आपके हिन्दी-प्रेम तथा उत्साह की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। आपही सरीखे उत्साही पुरुषों से हिन्दी साहित्य का उपकार हो सकता है। आपकी रचित, अनुवादित तथा सम्पादित पुस्तकें ये हैं :—

(१) भक्तिभवानी (पद्य), (२) आदर्शहिन्दू रमणी (गद्य), (३) धर्म और विज्ञान (अनुवाद), (४) वीर बालक (पद्य), (५) वीर क्षत्रानी, (६) रामचरणांक माला, (७) वीरप्रताप काव्य, (८) हिम्मत बहादुर विरुदावली संपादित, (९) राजविलास सम्पादित, (१०) ठाकुर कवि की जीवनी, (११) आनंदघन, हंसराज, पोहकर, और अक्षर अनन्य की जीवनी, (१२) तुलसीसतसई का पद्यबद्ध अनुवाद, (१३) भाल रामायण।

आपकी कविता के उदाहरण में "वीरप्रताप" से कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जाता है। अकबरी फ़ौज की आमद सुनकर राणा प्रतापसिंह अपने शूर वीरों से कहते हैं :—

सब वीरों से ललकार के यक बात सुनाई।
यह आख़िरी विन्ती मेरी सुनलो मेरे भाई॥
पैदा हुआ संसार में यक रोज़ मरैगा।
मरना तो मुक़द्दम है न टारे से टरैगा॥
फिर इससे भला मौक़ा कहो कौन पड़ैगा।
रजपूती की क्या गोट का पौ रोज़ अड़ैगा॥
पाँसे करौ तलवार तवर तीर के यारो।

रन खेल मरद का है नरद शत्रु की मारो॥
पुरखों के बड़े बोल की इज़्ज़त को बचाना।
माता व बहन बेटी का सत धर्म रखाना॥
निज धर्म व सुरधामों का सनमान बढ़ाना।
तीरथ व महा धामों का सत्कार कराना॥
इन कामों में गर जान का डर हो तो न डरिए।
क्षत्री का परम धर्म है यह ध्यान में धरिए॥
दिल में जो हो यकलिंगजी भगवान का आदर।
बापा के व साँगा के हों उपकार सरों पर॥
बहनों कि व कन्याओं की इज़्ज़त की हो कुछ दर।
यश लेने का कुछ ध्यान हो निन्दा का हो कुछ डर॥
श्रीराम की औलाद की इज़्ज़त प नज़र हो।
तो भाइयो यह वक़्त है बस बाँधो कमर को॥

कैसी ज़ोरदार तक़रीर है? रानाजी मानसिंह को लड़ाई में ढूढते हुए उनके पास पहुँचे :—

आख़िर को बड़ी देर में श्रीमान को पाया।
ललकार के परताप ने यह बोल सुनाया॥
ऐ मान मुसलमान अँबारी में सँभल बैठ।
अब देख ले छत्री की भी मूछों की ज़रा ऐंठ॥
यह कह के तमक ताव से भाले को सँभाला।
भुज दण्ड के बल तौल किया वार निराला॥
बस छोड़ दिया मान पै यक साँप सा काला।
डस पाता तो बस उम्र का भर जाता पियाला॥

अफ़सोस महावत ही गिरा उससे लिपट कर।
लोहे की अँबारी में रुका ज़ोर से ठट कर॥
चेतक को दपट हाथी के मस्तक पै उड़ाया।
और चाहा कि तलवार से कर दीजे सफ़ाया॥
चेतक ने क़दम हाथी के मस्तक पै जमाया।
इतने ही में उस हाथी ने रुख़ अपना फिराया॥
और चीख़ के भागा कि भगे मान के औसान।
औसान तो भागे पै रहे मान के तन प्रान॥

(२५६४) बदरीप्रसादजी वैश्य।

ये लखनऊ में ओवरसियर थे। आपकी मौत संवत् १९६५ में प्रायः ३५ साल की अवस्था में हुई थी। आप हिन्दी के बड़े उत्साही उन्नायक थे। लखनऊ में एक देवनागरी सभा आपने स्थापित की थी, जिसमें प्रायः ३० सभ्य थे। वह सभा आपके साथ ही टूट गई। आप गद्य के एक लेखक भी थे।

(२५६५) अक्षयवट मिश्र उपनाम (विप्रचन्द)।

इनका जन्म ज्येष्ठ शुक्ल १२ संवत् १९३१ को डुमराँव में हुआ था। इनके पिता राजेश्वरजी राधाप्रसादसिंह महाराज डुमरावँ के सभासद थे। ये शाकद्वीपी ब्राह्मण हैं। इन्होंने संस्कृत भाषा अच्छी पढ़ी है। चार वर्ष मालवा में इन्होंने जैन ग्रन्थों का मागधी से संस्कृत में अनुवाद किया और तीन वर्ष कलकत्ता एवं एक वर्ष मेरठ कालेज में संस्कृत पढ़ाया। अब ये डुमरावँनरेश के

बालक को पढ़ाते हैं। एक वर्ष इन्होंने अवधकेसरी मासिकपत्र का सम्पादन किया। आपने संस्कृत के कुछ ग्रन्थ बनाये और आनन्दकुसुमोद्यान एवं सदाबहार नामक दो पद्य-ग्रन्थ भी रचे। पहले में मनहरनों में शृंगार काव्य और द्वितीय में गाने की चीज़ें हैं। इनके अतिरिक्त मिश्रजी ने गंगालहरी, गंगाष्टक, महिम्न, शिवतांडव और भामिनीविलास का पद्य में तथा मार्कंडेय पुराण, और दशकुमारचरित्र का गद्य में अनुवाद भी किया है। आपने अयोध्यानरेश महाराजा प्रतापनारायणसिंह, पण्डित राधावल्लभ जोशी, अजान कवि, बच्चू मलिक, बालराम स्वामी, उमापतिदत्त शर्मा, कवि गोविन्द गिल्ला भाई और दुर्गादत्त परम हंस के जीवनचरित्र भी लिखे हैं। फुटकर लेख भी आपके बहुत हैं। उदाहरण में स्थानाभाव से केवल दो छन्द यहाँ लिखे जाते हैं।

बार बार चमकै चहूँघा चंचला री देखु
    विप्रचन्द बारिद हू बारि बरसावै है।
पौन पुरवाई बहै पपिहा पुकारै पीय
    मोरगन कूकि कूकि मदन जगावै है॥
ऐसे समै नाहीं निबहैगो मान तेरो बीर
    नाहक अकेली बैठि बेदन बढ़ावै है।
मानि ले हमारी बात बेगि चलु मेरे साथ
    जोरि कर आजु तोहि कान्हर बुलावै है॥

करौ सु गंग तीर की निकुंज मैं निवास कै।
    महेश को प्रणाम कै बिसारि नीच आस कै॥

कलत्र पुत्र देह गेह नेह छोड़ि दू सवै ।
उचारि शम्भु शुद्ध मन्त्र होयँगे सुखी कबै ॥

मिश्रजी के वर्णित विषय और वर्णन आदरणीय हैं ।

(२५६६) श्यामविहारी मिश्र ।

इनका जन्म संवत् १९३० में इटौंजा ज़िला लखनऊ में हुआ था । इनके पिता पण्डित बालदत्त मिश्र एक सुकवि थे । बाल्यावस्था में उर्दू पढ़ कर इन्होंने संवत् १९४२ से लखनऊ में अँगरेज़ी का पढ़ना आरम्भ किया । संवत् १९५२ में बी० ए० पास करके इन्होंने दूसरे साल यम० ए० पास कर लिया और संवत् १९५४ से ये डेपुटीकलेक्टर नियत हो गये । संवत् १९६२ में इन्होंने अपनी नौकरी पुलीस में बदलवा कर डेपुटी सुपरिंटेंडेंट का पद पाया और संवत् ६७ में महाराज छतरपूर ने इन्हें अपनी रियासत के दीवान होने के निमित्त बुलाया । तब ये पुलीस छोड़ कर फिर डेपुटी कलेक्टरी पर चले आये और श्रावण मास से छतरपूर में दीवान हो गये । इन्होंने पद्य रचना १५ या १६ वर्ष की अवस्था से आरम्भ कर दी थी और संवत् १९५५ में अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ लवकुशचरित्र नामक पद्य ग्रन्थ अलीगढ़ में रचा । इसी समय से सब छन्द और गद्य लेख साझे ही में बनते रहे । संवत् १९५६ में सरस्वती पत्रिका निकली । तभी से ये गद्य लेख भी लिखने लगे । पहला गद्य-लेख हम्मीर हठ की समालोचना विषयक था, जो सरस्वती के प्रथम भाग में छपा है । पीछे से स्फुट लेखों के अतिरिक्त विक्टोरियाअष्टादशी, व्यय, हिन्दी-अपील, रूस का

इतिहास, जापान का इतिहास, नेत्रोन्मीलन नाटक, हा काशीप्रकाश, भारतविनय, हिन्दीनवरत्न, मदनदहन और रघुसम्भव नामक ग्रन्थ समय समय पर इन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ बनाये। आज कल बूँदीवारीश बन रहा है। इनमें से व्यय, रूस का इतिहास, जापान का इतिहास और हिन्दी-नवरत्न गद्य में हैं, हा काशीप्रकाश और भारतविनय खड़ी बोली के पद्य में और नाटक छोड़ शेष व्रज-भाषा के पद्य में हैं। भूषण ग्रन्थावली नामक ग्रन्थ में भूषण की कविता पर टिप्पणी एवं समालोचना है। कविता की दृष्टि से तो ये रचनायें हीन श्रेणी में भी स्थान पाने की पात्रता नहीं रखती हैं, परन्तु आत्मस्नेह के कारण इनका यहाँ कथन कर दिया गया। उदाहरण—

समरथ सुतन पै राखत पिता है प्रेम
　　मातु पै कपूतन विसेख अपनावती।
देखि प्रौढ़ सुत को सुजस मन मोद भरै
　　कादर को तबहु छिनौ न विसरावती॥
मातु भारती को हौं तो कादर कपूत मति
　　याते अम्ब चरन सरन तकि धावती।
अरविन्द नन्द सों न सकति अमन्द पाई
　　मातु नख चन्द की छटाही चित भावती॥

(२५९७) शुकदेवविहारी मिश्र।

इनका जन्म संवत् १९३५ में इटौंजा में हुआ था। इनके पिता पण्डित बालदत्त मिश्र एक प्रसिद्ध ज़िमींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्यावस्था में इटौंजा में उर्दू पढ़ कर संवत् १९४६ से

लखनऊ जाकर अँगरेज़ी पढ़ना आरम्भ किया। संवत् १९५७ में इन्होंने बी० ए० हो कर संवत् १९५८ में हाईकोर्ट वकील की परीक्षा पास की। इन्होंने पद्यरचना १५ वर्ष की अवस्था से आरम्भ की थी, परन्तु प्रथम ग्रन्थ लवकुशचरित्र संवत् १९५५ में अपने ज्येष्ठ भ्राता श्यामविहारी मिश्र के साथ अलीगढ़ में बनाया। सरस्वती पत्रिका के निकलने के साथ इन्होंने गद्य लिखना आरम्भ किया। ग्रन्थों के विषय में जो कुछ श्यामविहारी मिश्र के वर्णन में लिखा है वही इनके विषय में भी समझना चाहिए; क्योंकि इन दोनों की सब हिन्दी रचनायें साझे ही में बनी हैं। संवत् १९६४ में ये मुंसिफ़ नियत होकर बिलग्राम भेजे गये और अब सीतापूर के मुंसिफ़ हैं। काव्योत्कर्ष की दृष्टि से इनकी भी रचना हीन श्रेणी तक नहीं पहुँचती, परन्तु आत्मस्नेह ऐसा अपूर्व पदार्थ है कि अपने विषय में भी कुछ लिख देने पर विवश करता है।

उदाहरण—

बालमीकि व्यास कालिदास भवभूति आदि
　　लाड़िले सुतन को न तेरे बिसरायों मैं।
पंगु सम तऊ गिरिलंघन को धाय मातु
　　तो सुत बनन हेतु लालसा बढ़ायों मैं॥
भ्रातन के धवल सुजस मैं कपूत बनि
　　केवल कराल कालिमा को चिपकायों मैं।
राखु मातु सारदा दया की दीठि फेरु तऊ
　　साहस कै अब तो सरन तकि आयों मैं॥

ऊधव जाय कहौ उनसों पठई पतियाँ जिन जुक्ति भरी हैं।
ज्ञानी वही जग जाहिर हैं जिनसों नहि नायन हू उबरी हैं॥
साधन योग स्वतन्त्र समाधि विरक्त भली जगसों कुबरी हैं।
ए ब्रज बाल विहाल महान बियोग की मारु प्रचंड परी हैं॥

नैन कजरारे कोरवारे धनु भौंह तानि
मारत निसंक बान नेकु ना डरत हैं।
वेसर विसेष वेष कीमति जड़ाऊ
देखि तारन समेत तारापति हहरत हैं॥
अधर कपोल दन्त नासिका बखानौं कहा
केस की सुवेस लखि सेस कहरत हैं।
श्रीफल कठोर चक्रवाक से निहारे तेरे
उरज अमोल गोल घायल करत हैं॥

(२६००) बाघेली विष्णुप्रसाद कुँवरि जी।

ये महाशया रीवाँनरेश महाराजा श्रीरघुराजसिंह जी की पुत्री हैं। इनका विवाह जोधपूर के महाराजा श्री यशवन्तसिंहजी के छोटे भाई महाराजा श्रीकिशोरसिंह जी के साथ संवत् १९२१ में हुआ था। इनकी भगवद्भक्ति सराहनीय है। इन्होंने एक अच्छा मन्दिर वनाकर उसकी प्रतिष्ठा संवत् १९४७ में की। महाराज किशोरसिंह जी का देहांत संवत् १९५५ में हो गया। कुँवरिजी ने अवधविलास और कृष्णविलास नामक दो ग्रंथ वनाये हैं। कानपूर रसिकसमाज की समस्याओं पर इनकी कविता प्रायः छपा करती है। कविता इनकी अच्छी और भक्तिपूर्ण होती है।

इनकी रचना से कुछ छन्द लिखे जाते हैं। इनका शरीरपात हुए थोड़ा समय हुआ।

छोड़ि कुलकानि और आनि गुरु लोगन की
जीवन सु एक निज जाहि हित मानी है।
दरस उपासी प्रेम रस की पियासी जाके
पद की सुदासी दया दीठि की बिकानी है॥
श्री मुख मयंक की चकोरी ये सुखोरी बीच ब्रज की
फिरत है ह्वै भोरी दुख सानी है।
जिन्हैं अतिमानी चख पूतरी सी जानी
हम सों ते रारि ठानी अब कूबरी मिठानी है॥ १॥

सुन्दर सुरंग अंग अंग पै अनंग वारों
जाके पदपंकज ये पंकज दुखारो है।
पीत पटवारो मुख मुरली सँवारो प्यारो
कुंडल झलक सिर मोर पंख धारो है॥
कोटिन सुधाकर की सुखमा सुहात जाके
मुख मों लुभाती रमा रंभा सी हजारो है।
नन्द को दुलारो श्री जसोदा को पियारो
जौन भक्त सुख सारो सो हमारो रखवारो है॥ २॥

(२६०१) गंगाप्रसाद गुप्त, काशी।

ये अग्रवाल वैश्य हैं। इनका जन्मकाल १९४२ है। आपने संवत् १९५७ से हिन्दी-लेखन का कार्य आरम्भ किया और अब तक आप ५६ ग्रन्थ रच चुके हैं, जिनमें उपन्यासों का प्राधान्य है। आपके

ग्रन्थों में मुख्य ये हैं:—राजस्थान का इतिहास (पूर्वार्द्ध), बर्नियर की भारतयात्रा, पन्नाराज्य का इतिहास, लङ्काभ्रमण, तिब्बतवृत्तान्त, कालिदास का जीवनचरित्र, रामाभिषेक, दुःख ग्रोर सुख, पूना में हलचल, ग्रोर हिन्दी का भूत वर्तमान ग्रोर भविष्य। आपने समय समय पर भारतजीवन, हिन्दीकेसरी, श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार ग्रोर मारवाड़ी का सम्पादन किया है ग्रोर ग्रब आप 'हिन्दी-साहित्य' नामक मासिक पत्र निकाल रहे हैं। आप एक बड़े ही होनहार ग्रोर प्रशंसायोग्य लेखक हैं।

(२६०२) मन्नन द्विवेदी गजपुरी (पंडित) बी० ए० एम० ए० एस० बी०।

गोरखपुर ज़िलान्तर्गत रापती-नदी-तटस्थ गजपुर गाँव में जीविका-वश कुछ कान्यकुब्ज घराने आ बसे हैं। इन्हीं में कश्यप गोत्रीय मंगलायल के दुबे लोगों का कुल भी है। इसी वंश में पं० मातादीन द्विवेदी एक प्रसिद्ध रईस ज़मीन्दार ग्रोर कवि हैं। आप व्रजभाषा के ग्रच्छे कवि हैं। पं० मन्नन द्विवेदी आपही के ज्येष्ठ पुत्र हैं। संवत् १९४७ वि० की आषाढ़प्रतिपदा के दिन आपका जन्म हुआ है। सब परीक्षाग्रों को ग्रच्छी तरह से पास करते हुए सन् १९०८ ई० में आपने गवर्नमेंट कालेज बनारस से बी० ए० पास किया। कविता करने का ग्रोर लेख लिखने का आपको लड़कपन से शौक़ है। जब आप ग्रँगरेज़ी के छठयें दरजे में थे तभी से आपके लेख ग्रोर कविता समाचारपत्रों ग्रोर पत्रिकाग्रों में छपती आई हैं। ग्रब तो हिन्दी के प्रायः सभी पत्र-पत्रि-

काओं में आपके लेख और कविता छपती हैं। अब तक आपकी सैकड़ों कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं। इनमें से निम्नलिखित कवितायें मुख्य हैं:— (१) मातृभूमि से बिदाई (२) मातृभूमि (३) मृत्युशय्याशायी रावण (४) विन्ध्याचल (५) भारत-माता गाँधी के प्रति (६) प्रेमपंचक (७) ग्रामीण दृश्य (८) अर्धरात्रि (९) जन्माष्टमी (१०) दासत्व (११) गृहलक्ष्मी (१२) सती सुलोचना (१३) प्रार्थना (१४) काशी (१५) प्रयाग (१६) हमारा ग्राम (१७) विश्वामित्र दशरथ के प्रति (१८) उच्छ्वास (१९) चकोर की वेदना और (२०) वर्षा। आप आजकल तहसीलदार हैं और काम से छुट्टी नहीं रहने पर भी कुछ न कुछ लिखा ही करते हैं। आपने निम्न लिखित पुस्तकें लिखी हैं:—

(१) बन्धुविनय (पद्य), (२) धनुषभंग (पद्य), (३) रणजीतसिंह का जीवनचरित्र, (४) आर्यललना, (५) गोरखपुरविभाग के कवि (६) भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुरुष। कविता के उदाहरण।

जन्म दिया माता सा जिसने किया सदा लालन पालन।
जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सबका तन॥
गिरिवर गण रक्षा करते हैं उच्च उठा के शृंग महान।
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान॥
माता केवल बालकाल में निज अंकम में धरती है।
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन पोषन करती है॥
मातृभूमि करती है मेरा लालन सदा मृत्यु पर्यंत।
जिसके दया प्रवाहों का नहिँ होता सपने में भी अंत॥

मरजाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं।
हिंदू जलते यवन इसाई दफ़न इसी में पाते हैं॥
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी।
जिसके पदकमलों पर मेरा तन मन धन सब बलिहारी॥

(२६०३) हेमन्तकुमारी देवी (भट्टाचार्य)।

आपका जन्म सं० १९४३ में लखनऊ में हुआ था और विवाह १९५६ में। आपको हिन्दी से बड़ा प्रेम है और उसकी उन्नति में आप सदैव श्रमशीला रहती हैं। प्रयागप्रदर्शिनी से लाभ नामक १५० पृष्ठों के निबन्ध पर आपको ५००) पुरस्कार मिला था। इसी प्रकार आदर्शपुरुष रामचन्द्र पर भी एक लेख पर आप को ५०) का पुरस्कार मिला। आपने स्त्रीकर्तव्य, युक्त प्रदेश का व्यापार और वैज्ञानिक कृषि नामक तीन ग्रन्थ लिखे हैं और हिन्दी-विश्वकोष लिखने की आप की इच्छा है। आप काशी में रह कर सदैव के लिए हिन्दीसेवा का भार लेना चाहती हैं। इस महिला-रत्न का जीवन धन्य है। ईश्वर इसे चिरायु और सफलमनोरथ करे, यही हमारा आशीर्वाद है।

(२६०४) जानकीप्रसाद द्विवेदी।

इनके पिता पंडित रामग़ुलाम गढ़ा कोटा ज़िला सागर मध्यप्रदेश के रहने वाले हैं। इनका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। कविता कर-नाही इनका रोज़गार है। निम्नलिखित ग्रंथ इनके बनाये हुए हैं:— (मुद्रित ग्रंथ) (१) जानकी सतसई, (२) मित्रलाभ, (३) शिवपरिणय,

(४) राक्षस काव्य का अनुवाद, (५) घटखर्पर काव्य, (६) नर्मदा-माहात्म्य, (७) शृंगारतिलक, (८) वेश्याषोड़श, (अमुद्रित) (९) साहित्यसरोवर, (१०) काव्यदोष, (११) भँडौवाभंडार, (१२) काव्यकौमुदी, (१३) नारीनखशिख, (१४) प्रकृति-प्रमोद, (१५) व्यंग्योक्तिविलास, (१६) अन्योक्तिपचासा, (१७) राधाकृष्णसंवाद, (१८) रम्भाशुकसंवाद, (१९) विनयशतक, (२०) समस्यापच्चीसी, (२१) सान सावन, (२२) महेन्द्रमंजरी।

इस समय के अन्य कविगण।

समय संवत् १९४६ के पूर्व।

नाम—(२६०५) सुबंस।

ग्रन्थ—ढेकी।

नाम—(२६०६) युगलमाधुरी।

ग्रन्थ—मानसमार्तण्डमाला।

समय संवत् १९४६।

नाम—(२६०७) अयोध्यानाथ सरयूपारीण।

ग्रन्थ—(१) रामविनयमाला, (२) जानकीविनयमाला, (३) भरत-विनयमाला, (४) लक्ष्मणविनयमाला, (५) शत्रुघ्नविनय-माला, (६) हनुमानविनयमाला, (७) पितृविनयमाला, (८) विनयावली।

जन्मकाल—१९२१। वर्तमान।

नाम—(२६०८) कन्हैयालाल ब्राह्मण, ग्राम कुर्को, ज़िला गया।

ग्रन्थ—(१) पिङ्गलसार, (२) समस्यापूर्ति, (३) सरलशुभकरी, (४) विद्याशक्ति, (५) गयापद्धति।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६०९) जगमोहन, दास कवि के पुत्र।

ग्रन्थ—स्फुट छन्द राजा चन्द्रशेखर सिसेंडी की प्रशंसा में।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६१०) वाचस्पति तिवारी (चेत), गोनी, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) पंचांगदीपिका व नष्टजन्मदीपिका, (२) मानसप्रश्नदीपिका, (३) कर्मसिद्धांतदीपिका, (४) आश्चर्यदीपिका (५) गंजीफ़ायकतीसी, (६) जादू-बंगाल, (७) फ़ारसी-शब्दसंज्ञा, (८) यामिनीयोगमालिका, (९) समस्याप्रकाश, (१०) सत्यनारायणकथा।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६११) रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी० ए० सम्पादक हितकारिणी, जबलपूर।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६१२) रामरत्नजी परमहंस।

ग्रन्थ—(१) शब्द, (२) कुंडलिया।

नाम—(२६१३) रामलाल ब्राह्मण, ग्राम जीगौं, ज़िला रायबरेली।

ग्रन्थ—४ ग्रन्थ भाषा में।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६१४) लक्ष्मणसिंह तिवारी, भलसंड।

जन्मकाल—१९२१। वर्त्तमान।

नाम—(२६१५) मणिमंडन मिश्र।

ग्रन्थ—पुरन्दरमाया।

कविताकाल—१९४७ के पूर्व। एक मणि मंडन मिश्र तुलसीदास के समकालीन थे।

समय संवत् १९४७।

नाम—(२६१६) गोपालदासवल्लभ शरण, विजावर।

ग्रन्थ—संगीतसागर।

नाम—(२६१७) गंगाबख़्श ठाकुर ताल्लुक़दार, रामकोट, सीतापूर।

ग्रन्थ—कृष्णचन्द्रिका।

जन्मकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी। १९५५ में ३५ साल की अवस्था में ही स्वर्गवासी होगये।

नाम—(२६१८) दलथम्भनसिंह (द्विजदास), हथिया, सीतापूर।

जन्मकाल—१९०३। मृत।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२६१९) देवीदत्त ब्राह्मण, जैथी, पो० विहार।

जन्मकाल—१९२२। वर्त्तमान।

नाम—(२६२०) भगवानदास।

ग्रन्थ—राजा भवानीसिंहप्रकाश।

विवरण—दतिया-नरेश की प्रशंसा में बनाया गया।

नाम—(२६२१) महीपतिसिंह ठाकुर।

ग्रन्थ—बालविनोद।

जन्मकाल—१९२२ (मृत)।

नाम—(२६२२) यज्ञेश्वर, रामचन्द्रपुर।

ग्रन्थ—(१) यज्ञेश्वरविहार, (२) गणेशमनोरंजनी।

जन्मकाल—१९२२। वर्त्तमान।

नाम—(२६२३) हरिचरणसिंह, अजमेर।

ग्रन्थ—(१) वीरनारायण, (२) बूँदीराजचरितावली, (३) पृथ्वीराज-महोवा-संग्राम, (४) अनंगपाल पृथ्वीराजसमय।

जन्मकाल—१९२२।

नाम—(२६२४) बचऊ चौबे (रसीले), काशी ।

ग्रन्थ—ऊधो-उपदेश ।

कविताकाल—१९४८ । के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

समय संवत् १९४८ ।

नाम—(२६२५) ईश्वरदत्त । मृत ।

नाम—(२६२६) गोपालदास. आगरा ।

जन्मकाल—१९२३ ।

विवरण—भूतपूर्व-सम्पादक जैनमित्र ।

नाम—(२६२७) छोटेलाल कायस्थ, देउरी, जिला सागर ।

जन्मकाल—१९२३ । वर्त्तमान ।

नाम—(२६२८) बदलूप्रसाद त्रिपाठी, करबिगवाँ, कानपूर ।

ग्रन्थ—(१) गूढ़ार्थसंग्रह, (२) मायाङ्कुर संग्रहावली, (३) बारहमासा (सागर), (४) बारहमासी बिरहमञ्जरी, (५) बारहमासा बिरहभार ।

नाम—(२६२९) मुनुआँ ब्राह्मण (शुक्ल), ग्राम अलीनगरकलाँ, ज़िला बहरायच ।

ग्रंथ—(१) रामराजविलास (पृ० ११४), (२) परमहंसपच्चीसी (पृ० २२) (१९५९), (३) रघुराजविलास (पृ० ३२), (४) जीवनचरित्र परमहंस को (पृ० २२) ।

नाम—(२६३०) रणजीतमल्ल (श्याम) मँझौली ।

जन्मकाल—१८३३।

विवरण—महाराज मँझौली उदयनारायणसिंह के भाई थे।

नाम—(२६३१) राधाकृष्ण अवस्थी।

ग्रन्थ—देवीप्रसाद भूषण।

नाम—(२६३२) लालमणि वैद्य, रैटगंज, फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रन्थ—प्रमोदप्रकाश।

जन्मकाल—१९२२।

नाम—(२६३३) शीतलप्रसादसिंह।

ग्रन्थ—श्रीसीतारामचरितायन।

जन्मकाल—१९२३।

विवरण—आप सुयोग्य कवि और सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(२६३४) शैलजी ब्राह्मण (शैल), वैरिहा, राज्य रीवाँ।

जन्मकाल—१९२३। वर्त्तमान।

समय संवत् १९४९।

नाम—(२६३५) आत्माराम, वड़ोदा।

ग्रंथ—वैदिकविवाहादर्श।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—आप वड़ोदा राज्य में शिक्षा के डाइरेक्टर हैं।

नाम—(२६३६) कान्हलाल (कान्ह), गयाक्षेत्र, नवा गढ़ी।

ग्रन्थ—(१) संगीत मकरंद, (२) सावन मयूर, (३) सुधातर-

गिणी, (४) आनन्दलहरी, (५) जगन्नाथमाहात्म्य, (६) नखशिख।

जन्मकाल—१९२४। वर्त्तमान।

नाम—(२६३७) देवीदयालु, जालन्धर।

ग्रन्थ—जीवनयात्रा।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—आप आर्यसमाज के उपदेशक हैं।

नाम—(२६३८) पन्नालाल ब्राह्मण, सुजानगढ़, बीकानेर।

ग्रंथ—४० पुस्तकें।

जन्मकाल—१९२३।

विवरण—भूतपूर्व सम्पादक जैनहितैषी।

नाम—(२६३९) पहलवानसिंह, मकरन्दनगर, फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रंथ—(१) नलोपाख्यान, (२) संक्षिप्त क्षत्रियव्यवस्था, (३) राठोरवंशावली।

जन्मकाल—१९२३।

नाम—(२६४०) पुत्तलाल (श्याम) हलवाई, साँडी, ज़िला हरदोई।

ग्रंथ—(१) उरगविषमर्दन, (२) श्यामकविपदावली, (३) श्यामशतक, (४) श्यामकविछंद।

जन्मकाल—१९२४। वर्त्तमान।

नाम—(२६४१) बदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल।

ग्रन्थ—(१) दशोपनिषत् (अनुवाद) (२) विवेकानन्द के व्याख्यान (भाषा), (३) अबलासंताप और (४) संस्कृतप्रबोध।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—आजकल आप कानपूर आर्यसमाचार के सम्पादक हैं, और वहीं रहते हैं।

नाम—(२६४२) बलभद्रसिंह क्षत्रिय बहेड़ा, पोस्ट खैरीघाट, ज़िला बहराइच।

ग्रंथ—शंभुशतक।

जन्मकाल—१९२४। वर्त्तमान।

नाम—(२६४३) विश्वनाथशर्मा, मथुरा।

ग्रंथ—(१) स्थावरजीवमीमांसा, (२) वर्णव्यवस्था, (३) पुराणतत्त्व।

जन्मकाल—१९२४।

नाम—(२६४४) विष्णुलाल शर्मा एम० ए०, बरेली, सबजज अलीगढ़।

ग्रन्थ—आर्यसमाजपरिचय।

जन्मकाल—१९२४।

नाम—(२६४५) बोधईराम ब्राह्मण, सरोई, ज़िला मिर्ज़ापूर।

ग्रन्थ—प्रतापविनोद।

जन्मकाल—१९२४। वर्त्तमान।

नाम—(२६४६) मालिकराम त्रिवेदी, दावरीनारायण क्षेत्र, बिलासपूर।

ग्रन्थ—(१) प्रबोधचन्द्रोदय नाटक का हिन्दी अनुवाद, (२) दावरी नारायण-माहात्म्य, (३) रामराज्यवियोग नाटक।

विवरण—खड़ी बोली की कविता।

मृत्यु—१९६६ में।

नाम—(२६४७) मीठालालजी व्यास, ब्यावर, राजपूताना।

ग्रन्थ—(१) सर्वतोभद्र चक्र, (२) भारत का वायुशास्त्र, (३) टाड साहब की भूल।

जन्मकाल—१९१७।

नाम—(२६४८) शिवदुलारे पाण्डेय, मस्तूरी।

ग्रन्थ—हनुमानतमाचा।

जन्मकाल—१९२४।

नाम—(२६४९) रामनारायण मिश्र, काशी।

ग्रन्थ—जापानदर्पण।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—आप हिन्दी के सुलेखक हैं।

नाम—(२६५०) शिवप्रसाद, जौनपुर।

जन्मकाल—१९२४। वर्त्तमान।

नाम—(२६५१) सीताराम, उपाध्याय, पिलकिछा, जौनपुर।

ग्रन्थ—(१) चैतन्यचन्द्रोदय, (२) वामामनरञ्जन, (३) नामप्रताप, (४) शृङ्गारांकुर, (५) काव्यकलामिनी, (६) मंडलीमंडन।

नाम—(२६६५) दाताप्रसाद कायस्थ, मिर्ज़ापूर ।

नाम—(२६६६) द्वारिकाप्रसाद कायस्थ, खटवारा, ज़िला बाँदा ।

ग्रन्थ—(१) स्वरसम्बोधिनी, (२) रेखता रामायण ।

जन्मकाल—१९२४ ।

विवरण—रियासत मैहर में इन्स्पेक्टर हैं ।

नाम—(२६६७) नवलदास तमोली, रीवाँ ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(२६६८) महावीरप्रसाद मालवीय, गोपीपुर, ज़ि० मिर्ज़ापुर ।

ग्रन्थ—(१) अभिनव विश्रामसागर, (२) रामरसोदधि, (३) रसराजमहोदधि वैद्यक, (४) बालतंत्र वैद्यक, (५) होलीवहार, (६) वरषावहार, (७) मानसप्रबोध, (८) वीरनिघंटु वैद्यक, (९) वैद्यदिवाकर, ।

जन्मकाल—१९२५ ।

विवरण—आप कुछ दिन प्रियंवदा मासिक पत्रिका के सम्पादक भी रहे हैं ।

नाम—(२६६९) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, पैंचवारा, ज़ि० बाँदा ।

ग्रन्थ—(१) रामभक्तभूषण, (२) रसिकविलास ।

जन्मकाल—१९२५ ।

नाम—(२६७०) शारदाप्रसाद कायस्थ, मैहर ।

ग्रन्थ—(१) श्रीरत्नमयी, (२) मुक्तिमोदक, (३) शारदाष्टक, (४) रसेन्द्रविनोद, (५) शारदाविनय, (६) उर्दू रामायण, (७) उर्दू भागवत।

जन्मकाल—१९३०।

विवरण—ये फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे ज्ञाता हैं।

नाम—(२६७१) शिवप्रसाद शर्म्मा द्विवेदी सरयूपारीण ब्राह्मण, शाहगढ़ रियासत बिजावर।

ग्रन्थ—(१) धर्म्मसोपान, (२) स्फुट कविता व लेख।

जन्मकाल—१९०८। वर्त्तमान।

नाम—(२६७२) सुदर्शनाचार्य, काशी।

ग्रन्थ—(१) भगवद्गीतासतसई, (२) आलवारचरितामृत, (३) स्त्रीचर्या, (४) नीतिरत्नमाला, (५) विशिष्टाद्वैत अधिकरणमाला, (६) अद्वैतचन्द्रिका, (७) संस्कृत भाषा, (८) श्रीरङ्गदर्शक शतक, (९) भगवद्गीता भाषाभाष्य (१०) शास्त्रदीपिका प्रकाश, (११) अनर्घनलचरित्र नाटक।

जन्मकाल—१९२५।

नाम—(२६७३) जानकीदास।

ग्रन्थ—अखंडबोध।

कविताकाल—१९५१ के पूर्व।

समय संवत् १९५१।

नाम—(२६७४) गणपति मिश्र, नोखा, आरा।

नाम—(२६८५) बालगोविंद, अनवरगंज, कानपूर।

ग्रन्थ—मनोभव, तथा स्फुट छन्द।

जन्मसंवत्—१६२७।

नाम—(२६८६) मुसद्दीराम शर्मा गौड़, ज़ि० मेरठ।

ग्रन्थ—(१) सुभाषितरत्न, (२) सुखाप्तिप्राप्ति, (३) सत्यार्थ-प्रकाश (संस्कृत)।

जन्मकाल—१६२७।

नाम—(२६८७) मेदिनीप्रसाद ब्राह्मण, रायगढ़, छत्तीसगढ़।

ग्रन्थ—(१) पद्ममञ्जूषा, (२) विष्णुषट्पदी आदि।

जन्मकाल—१६२७। वर्त्तमान।

नाम—(२६८८) रणधीरसिंह।

ग्रन्थ—(१) काव्यरत्नाकर, (२) भूषणकौमुदी, (३) पिंगल वा नामार्णव, (४) रसरत्नाकर।

जन्मकाल—१८७७।

विवरण—ताल्लुक़दार सिंहरामऊ, जौनपूर। खोज से संवत् १८६५ निकलता है।

नाम—(२६८६) रामनारायण (प्रेमेश्वर) भाट, बछरावाँ, ज़िला रायबरेली।

ग्रन्थ—प्रेमेश्वर विरद दर्पण।

जन्मकाल—१६३२। वर्त्तमान।

नाम—(२६६०) शिवदयाल (केवल) कायस्थ, मंगलपूर, ज़िला कानपूर।

ग्रन्थ—(१) काव्यसंग्रह, (२) रागविनोद, (३) नीतिशतक, (४) चौमासा चतुरंग।

जन्मकाल—१९३७। वर्त्तमान।

नाम—(२६६१) शिवदास पाण्डेय, मस्तूरी।

जन्मकाल—१९२७।

नाम—(२६६२) हनुमंत ब्राह्मण।

ग्रन्थ—मूल रामायण (पृष्ठ ३०)।

समय संवत् १९५३।

नाम—(२६६३) कामताप्रसाद गुरु, सागर।

ग्रन्थ—(१) भाषावाक्यपृथक्करण, (२) हिन्दी-व्याकरण।

जन्मकाल—१९३२।

विवरण—आज कल आप काशी में हैं।

नाम—(२६६४) गणेशप्रसाद (गणाधिप) विसवाँ, सीतापूर।

ग्रन्थ—गणाधिपसर्वस्व।

जन्मकाल—१९२८।

नाम—(२६६५) गुरुदयाल त्रिपाठी वकील, रायबरेली।

विवरण—आप कई वर्ष तक कान्यकुब्ज हितकारी के सम्पादक रहे। हिन्दी के शुभचिंतक हैं। इस समय आपकी अवस्था ४०

साल की होगी। आप इस समय रायबरेली में वकालत करते हैं।

नाम—(२६९६) गोपालदीन शुक्ल, (शुक्ल) बिसवाँ, ज़िला सीतापूर।

जन्मकाल—१८२८। वर्त्तमान।

नाम—(२६९७) नोहर (नवहरि) सिंह (अनुरूप), वृन्दावन।

ग्रन्थ—(१) हनुमानुत्पत्ति, (२) नोहरविनोद, (३) नोहरविलास।

जन्मकाल—१९२८। वर्त्तमान।

नाम—(२६९८) मुहम्मद अब्दुलसत्तार (प्यारे)।

जन्मकाल—१९२८। वर्त्तमान।

नाम—(२६९९) रामदासराय पुस्तकालयाध्यक्ष, मुज़फ़्फ़रपूर, बिहार।

ग्रन्थ—(१) शिक्षालता (२) भारतदशादर्पण (३) लिंगभ्रमसंशोधन (४) हिन्दी करीमा।

जन्मकाल—१९२८।

नाम—(२७००) रामनारायणलाल (वीरन) कायस्थ, छतरपूर।

जन्मकाल—१९३८। वर्त्तमान।

नाम—(२७०१) छुट्टनलाल शर्मा, परीक्षितगढ़, मेरठ।

ग्रन्थ—भागवतपरीक्षा।

जन्मकाल—१९२९।

समय संवत् १९५४।

नाम—(२७०२) बदरीदत्त मुदर्रिस ब्राह्मण, कानपुर।

ग्रन्थ—प्रबन्धार्कोदय।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७०३) बलदेवप्रसाद, खडेली, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) अंकगणितार्यमा, (२) सुख की खानि, (३) जीवनोद्धार, (४) रुद्री, (५) संतोषशतक।

जन्मकाल—१९२९। वर्त्तमान।

नाम—(२७०४) इन्द्रजीत कायस्थ, तिलहर, शाहजहाँपूर।

ग्रन्थ—नारीधर्मविचार (चार भाग)।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७०५) बाबूलाल ब्राह्मण, अलवर।

जन्मकाल—१९२९। वर्त्तमान।

नाम—(२७०६) बलभद्रसिंह (ठाकुर)।

ग्रन्थ—(१) संवाद गुरु नानक, (२) नवनाथ, (३) चौरासी सिद्ध।

नाम—(२७०७) ब्रह्मदेवनारायण, मु० बेलवाँ पो० देव, ज़िला गया।

ग्रन्थ—(१) कलिचरित्र, (२) कृपणचरित्र, (३) कलियुगचरित्र।

जन्मकाल—१९३९। वर्त्तमान।

नाम—(२७०८) रामदयाल कायस्थ, बेलखेड़ा, जबलपूर।

ग्रन्थ—(१) तिथिरामायण, (२) कृष्णचरित्र, (३) मुहर्रमविचार, (४) भागवतमाहात्म्य, (५) हित की बातें, (६) चित्रकेतु-कथा, (७) ज्ञानोपदेश बारहमासी, (८) दीनविनयपचासा, (९) ज्ञानप्रश्नोत्तरी, (१०) संग्रहशतक।

जन्मकाल—१९३४। वर्त्तमान।

नाम—(२७०९) रामाधीन शर्मा, लखनऊ।

ग्रन्थ—(१) पाञ्चाल ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७१०) शारदाप्रसाद (रसेन्द्र) मु० मैहर।

ग्रन्थ—रत्नत्रयी आदि।

जन्मकाल—१९२९। वर्त्तमान।

नाम—(२७११) शिवनारायण झा, मैनपुरी।

ग्रन्थ—विश्वकर्मवंशनिर्णय।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७१२) सम्पत्ति मुजफ़्फ़रपूर।

ग्रन्थ—(१) नीतिभूषण, (२) मंत्रविषोद्धारचन्द्रिका।

जन्मकाल—१९२९। वर्त्तमान।

नाम—(२७१३) सर्वसुखदास (राधावल्लभी)।

ग्रन्थ—सेवकवानी की टीका।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२७१४) सीताराम (निकुंज), पन्ना ।

ग्रन्थ—(१) रसमार्तंड, (२) रसकलानिधि, आदि कई ग्रन्थ रचे ।

जन्मकाल—१९२९ । वर्त्तमान ।

नाम—(२७१५) हरिदत्त त्रिपाठी, खेमीपुर, आज़मगढ़ ।

ग्रन्थ—(१) प्रबन्धदीप, (२) सुवर्णमाला, (३) मापनियम-चन्द्रिका, (४) संगीत रामायण, (५) दीनसप्तशती ।

जन्मकाल—१९२९ ।

समय संवत् १९५५ ।

नाम—(२७१६) अमीरराय (मीर), सागर, मध्यप्रदेश ।

ग्रंथ—कुछ ग्रन्थ रचे हैं ।

जन्मकाल—१९३० । वर्त्तमान ।

नाम—(२७१७) कृष्णानंद पाठक, माधवरामपुर, डा० गोपीगंज, ज़िला मिर्ज़ापूर ।

जन्मकाल—१९३१ । वर्त्तमान ।

विवरण—आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं । भाषा की भी कविता समस्यापूर्ति इत्यादि करते हैं । आपके लगभग ७०० स्फुट छन्द हैं ।

नाम—(२७१८) गोवर्द्धनलाल ।

ग्रंथ—(१)प्रेमप्रकाश, (२) हितपाठदर्शन ।

विवरण—पहले वृन्दावन में रहते थे, अब मिर्ज़ापुर में रहते हैं।

नाम—(२७१९) खुसालीराम (द्विज हेम), जबलपूर छावनी।

जन्मकाल—१९२९। वर्त्तमान।

नाम—(२७२०) तिलकसिंह ठाकुर, गाँगूपूर, सीतापूर।

ग्रन्थ—(१) वेश्यासागर, (२) कृष्णखंड।

जन्मकाल—१९१३।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२७२१) तिलकसिंह ठाकुर, पूरनपूर, ज़ि० कानपूर।

ग्रन्थ—(१) स्फुट काव्य, (२) बारामासी योगसार।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७२२) बरजोरसिंह परिहार, ग्राम बिहार, ज़ि० फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रन्थ—नीतिशतक।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७२३) बालमुकुंद शर्मा, मुरादाबाद।

ग्रन्थ—(१) सुधर्ममंजरी (सनातनधर्मव्याख्या पद्य), (२) मुक्तावली रामायण (दोहा चौपाई), (३) आल्हाखण्ड रामायण (रामचरित), (४) आल्हाखण्ड महाभारत (कौरवपाण्डव-लीला) आदि।

जन्मकाल—१९२९।

नाम—(२७२४) वृन्दावनराम (व्रजेश) ब्राह्मण, पड़ा, राज्य रीवाँ।

ग्रन्थ—(१) हनूमानशतक, (२) हनूमानपंचक, (३) दानलीला।

जन्मकाल—१९३० (वर्त्तमान)।

नाम—(२७२५) भगवानदीन द्विवेदी (आतम), गोड़वा, ज़ि० हरदोई।

ग्रन्थ—(१) तमाखूमाहात्म्य, (२) शिवविनयपचीसी, (३) कलियुगी संन्यास नाटक, (४) हत्याहरणमाहात्म्य, (५) बारामासा, (६) अनूठी भगतिन उपन्यास, (७) सदुपदेशदोहावली, (८) प्राणप्यारी, (९) रसिकराग-पंचाशिका।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७२६) मधुरप्रसाद ब्राह्मण, रीवाँ।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७२७) माधवप्रसाद कान्हर कायस्थ, अजयगढ़।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७२८) यशराजदास भाट, श्रीनगर।

ग्रन्थ—(१) जगदम्बपसाली, (२) कोदाकली, (३) रामायणमाला, (४) सूरसागरतरंग, (५) भट्टोपाख्यान, (६) वैद्यनाथमाहात्म्य।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान ।

नाम—(२७२९) रघुनाथप्रसाद उपाध्याय, जौनपुर।

ग्रंथ—निर्णयमंजरी।

जन्मकाल—१९०१। मृत।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२७३०) रघुपतिसहाय कायस्थ, ग़ौसपूर, ज़ि० ग़ाज़ीपूर।

ग्रंथ—तुलसीदास का जीवनचरित्र।

जन्मकाल—१९३०।

नाम—(२७३१) रामचन्द्र (चन्द्र) ब्राह्मण, जैत, मथुरा।

ग्रंथ—(१) आनंदोद्यान, (२) आनंदकल्पद्रुम, (३) चन्द्रसरोवर आदि १२ ग्रंथ रचे हैं।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७३२) रामचन्द्र आनन्दराव देशपांडे, अध्यापक नार्मलस्कूल, नागपूर।

ग्रन्थ—(१) शिक्षाविधि, (२) महाजनी हिसाब।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७३३) रिखि (ऋषि) लाल, मु० गौरा, बादशाहपुर।

ग्रन्थ—(१) पावसप्रेमलता, (२) वैद्यवल्लभ, (३) नानाछन्दोर्णव, आदि।

जन्मकाल—१९३० । वर्त्तमान ।

नाम—(२७३४) रोशनसिंह, बंगरा, ज़ि० जालौन ।

ग्रन्थ—वेदसार ।

जन्मकाल—१९३० ।

नाम—(२७३५) रंगनारायणपाल ठाकुर, हरिपुर, बस्ती ।

ग्रन्थ—(१) प्रेमलतिका, (२) रसिकानन्द ।

जन्मकाल—१९२१ ।

विवरण—तोषश्रेणी ।

नाम—(२७३६) श्यामकरण ।

ग्रन्थ—(१) अभयोदय भाषा, (२) अजितोदय भाषा ।

नाम—(२७३७) शिवचरण लाल, कालपी ।

ग्रन्थ—कई पुस्तकें ।

नाम—(२७३८) हज़ारीलाल कायस्थ, गोंडा ।

ग्रन्थ—साखी भाषा नानक साहब (पृ० २३४) ।

नाम—(२७३९) हरिशंकर ब्राह्मण, हरदा ।

जन्मकाल—१९३० । वर्त्तमान ।

विवरण—आपको सेठ की पदवी भी प्राप्त है ।

समय संवत् १९५६ के पूर्व ।

नाम—(२७४०) बाबा साहब मज़ुमदार ।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान ।

नाम—(२७२९) रघुनाथप्रसाद उपाध्याय, जौनपुर।

ग्रंथ—निर्णयमंजरी ।

जन्मकाल—१९०१। मृत ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२७३०) रघुपतिसहाय कायस्थ, ग़ौसपूर, ज़ि० ग़ाज़ीपूर।

ग्रंथ—तुलसीदास का जीवनचरित्र ।

जन्मकाल—१९३०।

नाम—(२७३१) रामचन्द्र (चन्द्र) ब्राह्मण, जैत, मथुरा।

ग्रंथ—(१) आनंदोद्यान, (२) आनंदकल्पद्रुम, (३) चन्द्रसरोवर आदि १२ ग्रंथ रचे हैं ।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७३२) रामचन्द्र आनन्दराव देशपांडे, अध्यापक नार्मलस्कूल, नागपूर।

ग्रन्थ—(१) शिक्षाविधि, (२) महाजनी हिसाब।

जन्मकाल—१९३०। वर्त्तमान।

नाम—(२७३३) रिखि (ऋषि) लाल, मु० गौरा, बादशाहपुर।

ग्रन्थ—(१) पावसप्रेमलता, (२) वैद्यवल्लभ, (३) नानाछन्दोर्णव, आदि ।

विचरण, (५) भारत की वर्त्तमान दशा, (६) स्वदेशी आन्दो-लन, (७) गद्यमाला ।

जन्मकाल—१९३२ ।

विवरण—विशेषतया उपन्यास-लेखक ।

नाम—(२७४७) बुधन चौहान हल्दी ।

जन्मकाल—१९३१ । वर्त्तमान ।

नाम—(२७४८) भाग्यवती देवी ठकुराइन, गहलै, कानपुर ।

जन्मकाल—१९३१ ।

विवरण—भूतपूर्व सम्पादिका "वनिताहितैषी" ।

नाम—(२७४९) भागीरथ दीक्षित (कवीन्द्र) ऊगू, ज़ि० उन्नाव ।

ग्रन्थ—(१) गोकर्णमाहात्म्य, (२) भाँगअफीम-विवाद, (३) अयाचक की याचना, (४) अनिरुद्ध-विजय, (५) रूस-जापान-युद्ध (पद्य) ।

जन्मकाल—१९३१ । वर्त्तमान ।

नाम—(२७५०) महेशप्रसाद ब्राह्मण, शंकरगंज, राज्य-रीवाँ ।

जन्मकाल—१९३१ । वर्त्तमान ।

नाम—(२७५१) रघुनाथदास ।

ग्रन्थ—(१) विप्रसुदामा की गुड़िया, (२) द्रौपदीजू की गुड़िया, (३) स्वामीजू की गुड़िया, (४) हनुमानजू की गुड़िया, (५)

ग्रन्थ—(१) अमृतसंजीवन वैद्यक, (२) ज्वरचिकित्साप्रकरण, (३) स्त्रीरोगचिकित्सा, (४) उपदंशारि।

नाम—(२७४१) सहचरिशरण, अयोध्या।

ग्रन्थ—सरसमंजावली।

विवरण—पद भी इन्होंने उत्तम बनाये हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(२७४२) ज्ञानअली।

ग्रन्थ—सियवरकेलिपदावली।

समय संवत् १९५६।

नाम—(२७४३) गणेशप्रसाद मिश्र (धनेस), खागी, ज़ि० खीरी।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७४४) गदाधरसिंह ठाकुर वगौछा, ज़ि० हरदोई।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७४५) गिरधरप्रसाद (प्रेम), विदोखर, तहसील हमीरपुर।

ग्रन्थ—(१) अञ्जनीलालसुधा, (२) श्यामलीलाशतक, (३) प्रेम-पाती।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७४६) जगन्नाथप्रसाद चौबे, मलयपुर, मुंगेर।

ग्रन्थ—(१) वसन्तमालती, (२) संसारचक्र, (३) तूफ़ान, (४) विचित्र-

विचरण, (५) भारत की वर्त्तमान दशा, (६) स्वदेशी आन्दोलन, (७) गद्यमाला।

जन्मकाल—१९३२।

विवरण—विशेषतया उपन्यास-लेखक।

नाम—(२७४७) बुधन चौहान हल्दी।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७४८) भाग्यवती देवी ठकुराइन, गहलैा, कानपुर।

जन्मकाल—१९३१।

विवरण—भूतपूर्व सम्पादिका "वनिताहितैषी"।

नाम—(२७४९) भागीरथ दीक्षित (कवीन्द्र) ऊगू, ज़ि० उन्नाव।

ग्रन्थ—(१) गोकर्णमाहात्म्य, (२) भाँगअफीम-विवाद, (३) अयाचक की याचना, (४) अनिरुद्ध-विजय, (५) रूस-जापान-युद्ध (पद्य)।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५०) महेशप्रसाद ब्राह्मण, शंकरगंज, राव्य-रीवाँ।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५१) रघुनाथदास।

ग्रन्थ—(१) विप्रसुदामा की गुड़िया, (२) द्रौपदीजू की गुड़िया, (३) स्वामीजू की गुड़िया, (४) हनुमानजू की गुड़िया, (५)

मीराबाई का चरित्र, (६) मोरध्वज की कथा, (७) रघुनाथविलास।

नाम—(२७५२) रामनाथ शुक्ल, भैरवपुर, डा० खजुरो, ज़िला रायबरेली।

ग्रन्थ—(१) शांतिसरोरुह, (२) ऋतुरत्नाकर।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५३) रामावतार पाण्डेय एम० ए० (साहित्याचार्य्य), पटना।

ग्रंथ—(१) योरोपीयदर्शन, (२) हिन्दीव्याकरणसार।

जन्मकाल—१९३४।

विवरण—धुरन्धर पंडित, सरल श्रोर निष्कपट पुरुष।

नाम—(२७५४) शीतलाबख़्शसिंह सेंगर ठाकुर, कांथा, ज़िला उन्नाव।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५५) श्यामजी शर्मा (पाण्डेय), भदावरि, श्रारा।

ग्रन्थ—(१) वृन्दविलास, (२) भाग्यशालिनी, (३) श्यामविनोद, (४) खड़ीबोलीपद्यादर्श, (५) प्रेममोहिनी, (६) प्रियावल्लभ, (७) श्यामहर्षवर्धन, (८) सत्वामृतकाव्य, (९) बालविधवा, (१०) गोहारि, (११) स्वाधीनविचार, (१२) विधवाविवाह, (१३) पंडित मानोमतिचपेटिका।

जन्मकाल—१९३१।

विवरण—गद्य श्रोर व्रजभाषा एवं खड़ी बोली पद्य के लेखक।

नाम—(२७५६) लालमणि, बाँदा।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५७) हरिगोविन्द।

जन्मकाल—१९३१। वर्त्तमान।

नाम—(२७५८) हरिहरलाल गोस्वामी, वर्त्तमान। मुक़ाम बारी, राज्य रीवाँ।

समय संवत् १९५७ के पूर्व।

नाम—(२७५९) ओरीलाल शर्म्मा।

ग्रन्थ—रमलतजक।

नाम—(२७६०) भगतकवि।

ग्रन्थ—भगतचालीसा।

समय संवत् १९५७।

नाम—(२७६१) कालीशंकर व्यास, काशी।

जन्मकाल—१९३७। मृत्यु १९६२।

नाम—(२७६२) किशोरसिंह।

ग्रन्थ—रामप्रभावती।

नाम—(२७६३) छेदाशाह सैयद, पैहार, ज़िला कानपूर।

ग्रन्थ—(१) काव्यशिक्षा, (२) भगवद्गीता की टीका, (३) हरगंगा रामायण, (४) ज्ञानोपदेशशतक, (५) भक्तिपंचाशिका, (६) करुणाबत्तीसी, (७) नारीगारी, (८) गंगापंचा-

शिका, (९) मार्कंडेयवंशावली, (१०) कृष्णप्रेमपचीसी, (११) कान्यकुब्जपुष्पांजली, (१२) काव्यसंग्रह, (१३) सत्य-नारायण, (१४) जानपाडे उपन्यास, (१५) हितोपदेश।

जन्मकाल—१९३७। वर्त्तमान।

नाम—(२७६४) जगन्नाथसिंह चौहान, भोगियापूर, ज़िला हरदोई।

जन्मकाल—१९३२। वर्त्तमान।

नाम—(२७६५) ज्योतिःस्वरूप शर्मा, गम्भीरपुरा, अलीगढ़।

ग्रन्थ—(१) कृषिचन्द्रिका, (२) सदाचार, (३) धर्मरक्षा आदि ४१ ग्रन्थ लिखे हैं।

जन्मकाल—१९३२।

नाम—(२७६६) परमेश परमेश्वरदयालु (रसिक) तमोली, डुमरावँ।

ग्रन्थ—(१) भक्तिलता, (२) गाने की चीज़ें।

जन्मकाल—१९३२। वर्त्तमान।

नाम—(२७६७) मितानसिंह, बरखेरवा।

ग्रन्थ—स्फुट छंद ५००।

जन्मकाल—१९३२।

नाम—(२७६८) रामगुलामराम जायसवाल, जमोर, गया।

ग्रन्थ—(१) रामगुलाम शब्दकोष, (२) शकुनावली रामायण, (३) नामरामायण, (४) पैसाप्रतापपचासा।

जन्मकाल—१९३२।

नाम—(२७६९) रामलगन लाल (छेम) कायस्थ, मंदरा, जि० ग़ाज़ीपुर।

ग्रन्थ—(१) विनयपचीसी, (२) शंकरपचीसी।

जन्मकाल—१९३२।

नाम—(२७७०) रामेश्वरी नेहरू, देहली।

ग्रन्थ—सम्पादिका स्त्रीदर्पण।

जन्मकाल—१९४२।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी कमिश्नर मुलतान की पुत्री और ब्रजलाल नेहरू असिस्टैंट अकौंटैंट जनरल देहली की धर्मपत्नी हैं। आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है। आपने भाषा-व्याकरण-सम्बन्धी कुछ काम किया है।

नाम—(२७७१) लक्ष्मणाचार्य गोस्वामी, मथुरा।

ग्रन्थ—(१) मृतकश्राद्धविषयक प्रश्नोत्तर, (२) मुहूर्तप्रकाश, (३) भीषण भविष्य, (४) वेदनिर्णय, (५) श्राद्धसिद्धि, (६) शिक्षा-तत्व, (७) भारतसेवा (काव्य)।

जन्मकाल—१९३२।

नाम—(२७७२) शीतलप्रसाद, पदार्थपुर, ज़ि० बाँदा।

जन्मकाल—१९३२। वर्त्तमान।

नाम—(२७७३) शंकरप्रसाद, माधवगढ़, राज्य रीवां।

जन्मकाल—१९३२। वर्त्तमान।

उन्तालीसवाँ अध्याय।

उत्तर गद्य-काल (१९५८ से अब तक)।

(२७७४) चन्द्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुँदेलखंड।

ये महाशय इस समय प्रायः ३५ वर्ष के हैं। इनकी आय ४०००० रु० सालाना है और स्वतन्त्र राजाओं में इनकी भी गणना है। आप हिन्दी के प्रेमी हैं।

(२७७५) माधवराव सप्रे (पंडित) बी० ए०।

ये रायपूर छत्तीसगढ़ के निवासी हिन्दी के बड़े उत्साही सुलेखक हैं। आपका जन्म १९२० में हुआ था। छत्तीसगढ़-मित्र नामक एक समालोचना-पत्र पं० रामराव चिंचोलकर के साथ इनके सम्पादकत्व में निकला था, जिसमें इन्होंने एक बार हमारे ग्रन्थ लवकुशचरित्र की तीव्र आलोचना की थी। आपने हिन्दीकेसरी नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला था, और गद्य की कुछ पुस्तकें भी रची हैं। आप बड़े सज्जन पुरुष और हिन्दी के उपकारी हैं। आप महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं और महाराष्ट्र विद्या के रत्न भी हिन्दी में लाने का प्रयत्न करते हैं। कुछ दिन आपने हिन्दी-ग्रन्थमाला का भी प्रकाशन किया था। हिन्दीदास-बोध, रामदास स्वामी की जीवनी, आत्मविद्या, एकनाथचरित्र, भारतीय युद्ध आदि आपने कई ग्रन्थ रचे। आप बड़े ही सौम्य प्रकृति

और साधु-चरित्र हैं। देशभक्ति में कुछ उद्धत विचार रखने से एक बार आपको कष्ट उठाने पड़े थे।

नाम—(२७७६) गौरीशंकरप्रसाद, बी० ए०, एल एल० बी, वैश्य, बुल्लानाला, बनारस।

ग्रन्थ—स्फुट लेख।

विवरण—वर्त्तमान। आप कई वर्षों तक नागरीप्रचारिणी सभा के मंत्री रहे हैं। हिन्दी के आप बड़े शुभचिंतक और उत्साही पुरुष हैं। आपकी अवस्था इस समय अनुमान से ३५ साल की होगी। बनारस में आप वकालत करते हैं।

(२७७७) ठाकुर रघुनाथसिंह बी० ए०।

ये बाराबंकी में वकालत करते हैं। आपका जन्म संवत् १९३४ में शाहपूर में हुआ था। आप के पिता ठाकुर पिरथासिंह एक प्रतिष्ठित ज़िमींदार थे। आपने गद्य और पद्य दोनों में रचना करने का अभ्यास बालकपन से ही रक्खा। स्फुट छन्दों के अतिरिक्त आपने एक लखनऊ-वर्णन छन्दों में लिखा था जो सरस्वती पत्रिका में निकला। आपकी कविता बड़ी मनोहर होती है।

फ़ैशन नूतन और पुरानो इन सबमें लखि लीजै।
चौक जाय शाही को अनुभव पूरन मन सों कीजै॥
ठसक नवाबी लम्बे पट्टे चूड़ीदार दुटंगा।
कान फुरेहरी हाथ रुमलिया जूता रंग बिरंगा॥
बने लिफ़ाफ़ा ऊपर चितवैं फूँकहु सों उड़ि जावैं।
घर में बेगम नंगी बैठी आप नवाब कहावैं॥

ऊँचे महल गली सँकरी अति कोठे नरक कि दूती।
सबक पढ़ाय छीनि धन सरबस पीछे मारैं जूती॥
इत सित चलदल असित स्वान सह भैरवनाथ विराजैं।
तेजपुंज अभिराम स्याम तन कोटि काम छवि लाजैं॥
प्रति रविवार देव-दरसन लगि होति इहाँ बड़ि भीरा।
गुरु रवि द्यौस भीर-भारन चपि धरति धरनि नहिँ धीरा॥

(२७७८) देवीप्रसाद शुक्ल।

ये कानपुर मोहल्ला कुरसवाँ के निवासी एक बड़े ही उत्साही पुरुष और हमारे मित्र हैं। आप गद्य हिन्दी अच्छी लिखते हैं। एक साल सरस्वती पत्रिका का आपने बड़ी योग्यता से सम्पादन भी किया था और कान्यकुब्ज सभा एवं पत्र में भी आपने बड़ा काम किया। आपका जन्म संवत् १९३४ में हुआ था। आप कानपूर के कालेज में अध्यापक हैं और देशहित के कार्य्यों में सदैव तत्पर रहते हैं। आपने बी० ए० परीक्षा पास की है।

(२७७९) त्रिलोचन झा।

इनका जन्म सं० १९३५ में हुआ था। आप बेतिया ज़िला चम्पारन के निवासी मैथिल ब्राह्मण हैं। गणपतिशतक, मंगलशतक, आत्मविनोद, शोकोच्छ्वास, जनेश्वरविलाप, शकुन्तलोपाख्यान और कलानन्दविनोद नामक ७ ग्रन्थ आपने रचे हैं, जिनमें कुछ गद्य के हैं और कुछ व्रज भाषा पद्य के।

नाम—(२७८०) रूपनारायण पाण्डेय, लखनऊ।

ग्रन्थ—(१) शिवशतक, (२) श्रीकृष्णमहिम्न, (३) गीतगोविन्द की टीका, (४) रमा उपन्यास, (५) पतित-पति उपन्यास, (६) गुप्त-रहस्य उपन्यास, (७) हरीसिंह नलवह, (८) आँख की किरकिरी उपन्यास, (९) फूलों का गुच्छा, (१०) चौबे का चिट्ठा, (११) नीतिरत्नमाला पद्य, (१२) कृष्णलीला नाटक, (१३) तारा उपन्यास, (१४) कृत्तिवासीय रामायण बालकांड, (१५) रसिकरंजन पद्य, (१६) आचारप्रबंध, (१७) प्रसन्न-राघव नाटक, (१८) शुकोक्ति-सुधासागर, (१९) रंभा-शुक-संवाद, (२०) बालकालिदास, (२१) चन्द्रप्रभचरित, (२२) आशा-कानन, (२३) पत्र-पुष्प, इत्यादि ।

जन्मकाल—१९४१ ।

रचनाकाल—१९६० । वर्त्तमान ।

विवरण—आज कल ये भारतधर्ममहामंडल में निगमागमचन्द्रिका का सम्पादन करते हैं। कविता अच्छी करते हैं और गद्य-रचना भी की है। ये अच्छे होनहार लेखक हैं।

उदाहरण—

बुद्धि-विवेक की जोति बुझी, ममता-मद-मोह-घटा घनी घेरी ।
है न सहारो अनेकन हैं ठग, पाप के पन्नग की रहै फेरी ॥
त्यों अभिमान को कूप इतै, उतै कामना-रूप सिलान की ढेरी ।
तू चलु मूढ़ सँभारि अरे मन, राह न जानी है, रैनि अँधेरी ॥

(२७८१) भुवनेश्वर मिश्र ।

ये दरभंगा-निवासी हिन्दी गद्य के एक प्रतिष्ठित लेखक

हैं। आपकी अवस्था ४५ साल की होगी। आपने अनेकानेक उत्तम लेख कई पत्रों में छपवाये हैं और कई ग्रन्थ भी रचे हैं, जिन में घराऊ घटना हमारे देखने में आया है। यह स्वभावोक्ति एवं हास्यरस-पूर्ण ग्रन्थ है। मिश्रजी की लेखनशैली बड़ी विलक्षण एवं चामत्कारिक है। ये महाशय दरभंगा में विकालत करते हैं। आपकी अवस्था इस समय अनुमान से ४० साल की होगी।

(२७८२) अनिरुद्धसिंह।

ये जैपालपूर ज़िला सीतापूर-निवासी पँवार ठाकुर थे। आपकी अकाल मृत्यु सात वर्ष हुए प्रायः २७ वर्ष की अवस्था में हो गई। आप हमारे मित्र थे और कविता अच्छी करते थे। समस्या-पूर्ति के छन्द काव्य सुधाधर पत्र में आप भेजा करते थे। आप साधारणतया एक बड़े ज़िमींदार थे।

नाम—(२७८३) रामनारायण पाँड़े कान्यकुब्ज, पैंतेपूर ज़िला सीतापूर।

ग्रन्थ—(१) जैमिनिपुराण आल्हा (२) जनरघुनाथजीवनचरितामृत (३) रमारामा शतक।

जन्मकाल—१९३९।

रचनाकाल—१९६०।

विवरण—अच्छी कविता की है। काव्य के बड़े उत्साही हैं। हमने परलोकवासी मंगलदासजी के नाम कार्ड भेजा था, परन्तु आपने उसका उत्तर और १४ कवियों के

जीवनचरित्र तथा उदाहरण तुरन्त हमारे पास भेजे।

उदाहरण।

आछे राम काछे कटि काछनी पितंबर की
पाछे कछु दच्छिन सो लच्छन लसे रहैं।
सोहै उर बनमाल मोतिन की माल पुनि
भाल पै तिलक श्रुति कुंडल लसे रहैं॥
सुखमा मुकुट सीस सरसै कलित कंठ
कंठहू ललित कल कौतुक कसे रहैं।
धारे धनु बान अरि मान के मथन वारे
जानकी समेत मेरे मानस बसे रहैं॥ १॥

नाम—(२७८४) देवनारायण क्षत्रिय सटवा, जौनपूर, हाल राज्य कालाकाँकर ज़िला प्रतापगढ़ (लला)।

ग्रन्थ—(१) रामेशमनोरंजनी (२) वियोगवारिधि (३) बन्धुबिछोह (४) पावनपंचाष्टक (५) वत्सवंशार्णव (६) अखंड इतिहास (७) प्रेमपदावली (८) शृंगार-आरसी।

जन्मकाल—१९३४।

रचनाकाल—१९६०। वर्त्तमान।

विवरण—पद्य और गद्य में उत्कृष्ट काव्य किया है।

गंग तरंग उठैं कच बीच में अंग उमा अरधंग बसी है।
नंग है अंग अनंग न संग भुवंगम भूषण भाल ससी है॥
प्यारे लला पग सेवत ही तव सेवक की विपदा विनसी है।
संकट आय सहाय करो अब मेरी हँसी नहिँ तेरी हँसी है॥ १॥

बरजो रहत नहिँ गरजो करत नित
हरजो हमारो होत सुनि कैरी छम छम।
जूगुनू चमाकैं चहु चातकी अलापैं
अलि धुरवा धरा पै धरो दरदरी दम दम॥
घहरि घहरि आवैं ठहरि ठहरि जायँ
फहरि फहरि उठैं गगन मैं घम घम।
बिज्जु गन बिरही बिचारी उर चीरन को
तीरन की लीन्यो मनो प्यारे लला चम चम॥२॥

नाम—(२७८५) रामनारायण मिश्र सांख्यरत्न तथा काव्य-तीर्थ, आरा, हाल छपरा।

ग्रन्थ—(१) जनकबागदर्शन नाटक, (२) कंसबध नाटक, (३) विरुदावली, (४) भक्तिसुधा। स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य।

जन्मकाल—१९४३।

कविताकाल—१९६०। वर्त्तमान।

विवरण—संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् हैं। आपको सरकार से काव्यतीर्थ तथा कलकत्ते के विद्वानों से सांख्यरत्न की उपाधि मिली। भाषा गद्य तथा पद्य के आप अच्छे लेखक हैं। दो नाटक भी आपने उत्तम बनाये हैं।

(२७८६) बुँदेलाबाला।

ये विदुषी लाला भगवानदीन जी सम्पादक लक्ष्मीपत्र की धर्म-पत्नी थीं। शोक कि इनका इसी साल आषाढ संवत् १९६७ में

वैकुंठवास हो गया। इनकी रचित कविता का संग्रह करके चतुर्भुज-सहाय वर्मा छतरपूर-वासी ने बालाविचार नाम से प्रकाशित किया है। इसमें १२ विषयों पर कविता है:—मातामहिमा, पुत्री प्रति माता का उपदेश, गृहिणीसुख, संसारसार, अबला-उपालंभ, चाहिए ऐसे बालक, पुत्र, भारत का नक़्शा, सावधान, बालदिन-चर्या, राधिकाकृत कृष्णचिंतवन और कृपाकौमुदी। ये सब ग्रन्थ ४० पृष्ठों में समाप्त हुए हैं। इसके प्रथम लाला भगवानदीन जी रचित विरह-विलाप नामक काव्य छपा है। बालाजी का काव्य बहुत ही सरस, मनोहर तथा उपदेशपूर्ण है। इसी तरह के विषयों पर कविता रचना आजकल प्रत्येक शिक्षित का काम है। बाला-विचार बहुत प्रशंसनीय ग्रंथ है। उदाहरणार्थ हम भारत का नक़्शा से कुछ कविता यहाँ देते हैं। नक़्शे का वर्णन माता अपने पुत्र से कर रही है:—

माता—

हे प्यारे कदापि तू इसको तुच्छ श्याम रेखा मत मान।
यह है शैल हिमाचल इसको भारतभूमि-पिता पहिँचान॥
नेह सहित ज्यों पितु पुत्री को सादर पालन करता है।
यह हिमिगिरि त्योंही भारत हित पितृ-भाव हिय धरता है॥
गंगा यमुना युगुल रूप से प्रेम धार का देकर दान।
भारतभूमि-रूप दुहिता का नेह सहित करता सनमान॥

पुत्र—

यह जो वाम ओर नक़्शे के रेखा मय अतिशय अभिराम।
शोभामय सुन्दर प्रदेश है मुझे बतादे उसका नाम॥

माता—

बेटा ! यह पंजाब देश है पुण्यभूमि सुख-शांति-निवास।
सर्वप्रथम इस थल पर आकर किया आर्यों ने निजवास॥
कहीं गानध्वनि कहीं वेदध्वनि कहीं महा मंत्रों का नाद।
यज्ञ-धूम से रहा सुवासित यह पंजाब सहित अहलाद॥
इसी देश में बसके 'पोरस' ने रक्खा है भारत-मान।
जब सम्राट सिकंदर आकर किया चाहता था अपमान॥
इससे नीचे देख पुत्र यह देश दृष्टि जो आता है।
सकल बालुका मय प्रदेश यह राजस्थान कहाता है॥
इसके प्रति गिरिवर पर बेटा अरु प्रत्येक नदी के तीर।
देशमान हित करते आये आत्म बिसर्जन क्षत्री बीर॥
कोई ऐसा थान नहीं है जहाँ अमर चिन्हों के रूप।
बीर कहानी रजपूतों की लिखी न होवे अमर अनूप॥
क्षत्रीकुल अवतंस बीरवर है 'प्रताप' जीका यह देश।
रानी 'पद्मावती' सती ने यहीं किया है नाम विशेष॥
क्षत्रीवंश-जात को चहिए करना इसको नित्य प्रणाम।
इससे छत्री वर्ग क जग में सदा रहैगा रोशन नाम॥

है। यह बड़ा गवेषणा-पूर्ण गद्य-ग्रन्थ है। ऐसे ग्रन्थों की आवश्यकता है।

(२७८८) मैथिलीशरण गुप्त।

की अवस्था प्रायः २५ साल की है। आप जाति के वैश्य ग्य कवि हैं। आप खड़ी बोली की कविता करते हैं और -वध नामक एक खड़ी बोली का बड़ा ग्रन्थ भी बना चुके स्वती पत्रिका में चित्रों एवं अन्य विषयों पर आप की कविता प्रकाशित हुआ करती है।

(२७८९) लोचनप्रसाद पाण्डेय।

बालपूर ज़िला विलासपूर-निवासी हैं। इनकी अवस्था २५ वर्ष। आपने गद्य एवं खड़ी बोली पद्य में अनेक ग्रन्थ रचे हैं। आप नहार लेखक हैं। ग्रन्थों के नाम ये हैं:—(१) दो मित्र (२) (३) नीति कविता आदि छोटे मोटे ११ ग्रन्थ। आपने कुसुममाला में कई वर्तमान कवियों की रचनाओं का किया है। आपने देश-भक्ति पर भी अच्छी रचना की है।

७९०) माणिक्यचन्द्र जैन बी. ए., बी. एल.।

खंडवा मध्यप्रदेश के वकील हैं। आपकी अवस्था प्रायः २८ की होगी। आप हिन्दीग्रंथ-प्रसारिणी मंडली प्रयाग के मन्त्री बड़े ही उत्साही पुरुष हैं। आप हिन्दी के अनेकानेक ग्रंथ खोज कर प्रकाशित करते हैं। हमारा हिन्दी-नवरत्न और तिहास भी आपही ने बड़े उत्साहपूर्वक हमसे स-हठ लेकर

प्रकाशित किया है। आप हिन्दी गद्य के एक उत्तम लेखक भी हैं। आप बड़ेही होनहार पुरुष हैं और हिन्दी की उन्नति की आपसे बड़ी आशा है।

(२७९१) जैनवैद्य जयपूर।

मिष्टर जैनवैद्य का नाम जवाहिरलाल था। ये जाति के जैन वैद्य अल्ल के थे। इनके पिता महाराजा जयपूर के यहाँ अच्छे पद पर नियुक्त हैं। इनका जन्म संवत् १९३७ में हुआ था। इन्होंने यंट्रैंस तक ही अँगरेज़ी पढ़ी, परन्तु विद्यारसिक होने के कारण उसमें अच्छी उन्नति कर ली थी। आपने बंगला, उर्दू, मराठी, गुजराती, और मागधी का भी अभ्यास किया था। ये हिन्दी के बड़े रसिक थे और नागरी-प्रचार का सदैव यत्न करते रहते थे। इन्होंने जैनमतपोषक, उचितवक्ता, जैन और जैनगज़ट पत्र निकाले परन्तु वह चल न सके। समालोचक पत्र भी इन्होंने चार साल तक बड़े परिश्रम तथा व्यय से चलाया, जिसके कारण हिन्दी-संसार में इनकी बड़ी ख्याति हुई। छात्रावस्था में इन्होंने हिन्दी के "कमलमोहिनी भँवरसिंह नाटक, "व्याख्यानप्रबोधक" और "ज्ञानवर्णमाला" नामक तीन पुस्तकें लिखीं। नागरीप्रचारिणी सभा के ये बड़े सहायक थे। सभाओं एवं समाजों में ये सदैव योग देते रहते थे। इन्होंने जयपूर में एक नागरीभवन खोला था, जो अब तक अच्छी दशा में है। ये बड़े ही उदार, विद्याप्रेमी तथा मित्रवत्सल थे। थोड़ी अवस्था में मित्रों तथा कुटुम्बियों को शोक देकर ये संसार से चैत्र संवत् १९६६ में चल बसे।

(२७९२) सत्यदेव।

ये महाशय अमेरिका से विद्या प्राप्त करके आज कल लौट कर भारत में आये हैं। आपका हिन्दीप्रेम बड़ा सराहनीय है। आप अमेरिका से उत्तम उत्तम गद्य लेख प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रों में सदा छपवाते रहे और स्वदेशानुरागपूर्ण लेखों में अनेकानेक बातों का वर्णन करते रहे। आपके यहाँ आ जाने से हिन्दी-प्रयत्न की विशेष आशा है। आप जाति के खत्री हैं। आपकी अवस्था ३३ साल के लगभग है। आज कल आपने कई उत्कृष्ट ग्रन्थ रचे हैं। कुछ दिनों से आप देशभक्त संन्यासी हो गये हैं।

(२७९३) पूर्णानन्द शास्त्री।

ये जैनाबाद ज़िला गुड़गाँव के रहनेवाले २३ वर्ष के ब्राह्मण हैं। आपने हिन्दी और संस्कृत की कविता की है। उत्सवतत्व, शिक्षाविधि और हिन्दीकविता नामक आपके छोटे छोटे ग्रन्थ हैं।

नाम—(२७९४) महेशचरणसिंह कायस्थ, लखनऊ, उमर ३५ साल।

ग्रन्थ—(१) हिन्दी-केमिस्ट्री।

समय—१९६५। वर्त्तमान।

विवरण—बड़ी ही उपादेय पुस्तक आपने बनाई है। हिन्दीसाहित्य को ऐसी ऐसी पुस्तकों की बड़ी ही आवश्यकता है। बाबू साहब ने एक बड़े अभाव की पूर्ति की। आपने अमेरिका तथा जापान जाकर विद्या पढ़ी थी।

(२७६५) सोमेश्वरदत्त शुक्ल।

ये बी० ए० पास हैं। इनका जन्म संवत् १९४४ में सीतापूर में हुआ था। आपने अपने मातामह से अच्छी सम्पदा उत्तराधिकार में पाई। आपने इतिहास एवं अन्य विषयों के कई अच्छे गद्य-ग्रन्थ लिखे हैं। आप एक होनहार लेखक हैं।

(२७६६) चन्द्रमनोहर मिश्र।

ये सराय मीरां ज़िला फ़र्रुख़ाबाद के रहने वाले पंडित बतानूलाल मिश्र के पुत्र और हमारे जामाता हैं। ये कानपूर-कालेज में बी० ए० क्लास में पढ़ते हैं। इन्होंने स्पेन का इतिहास गद्य हिन्दी में उत्तम बनाया है। इनके पिता भी सुलेखक हैं।

इस समय के अन्य कविगण।

समय सं० १९५८।

नाम—(२७९७) किशनलाल बी० ए० ओसवाल, दरबार जोधपुर।

ग्रन्थ—मारवाड़ मरोड़ (साहित्य)।

जन्मकाल—१९३३। वर्त्तमान।

नाम—(२७९८) केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसेंडी, लखनऊ।

जन्मकाल—१९३३ (वर्त्तमान)।

नाम—(२७९९) गोकुलानन्दप्रसाद कायस्थ, मानपुरा मुज़फ़्फ़रपूर।

ग्रन्थ—(१) कमला-सरस्वती, (२) पवित्रजीवन, (३) मोती, (४) गार्हस्थजीवन ।

जन्मकाल—१९३३ ।

विवरण—आजकल बनैलीराज में हैं । सम्पादक आत्मविद्या ।

नाम—(२८००) गोविन्ददास (दास), खँगार, छतरपूर ।

ग्रन्थ—(१) बाग़की सैर, (२) पेट-चपेट, (३) स्वदेशसेवा, (४) काव्य और लोकशिक्षा, (५) प्रेम, (६) बुँदेलखंडरत्नमाला, (७) सभामाहात्म्य ।

जन्मकाल—१९३४ । वर्त्तमान ।

नाम—(२८०१) गोरेलाल (मंजुसुशील) कायस्थ, देउरी-सागर ।

ग्रन्थ—स्फुट समस्यापूर्ति ।

जन्मकाल—१९३८ । मृत्यु १९६२ ।

विवरण— पहले लक्ष्मी-पत्रिका गया के सम्पादक थे ।

नाम—(२८०२) गंगाप्रसाद एम० ए० डिप्टीकलेक्टर, गोरख-पूर ।

ग्रन्थ—(१) ज्योतिषचन्द्रिका, (२) सूर्य्यसप्ताश्ववर्णन ।

जन्मकाल—१९३४ ।

नाम—(२८०३) ज्वालाप्रतापसिंह (लाल), पन्नाकोटा राज्य सिगरौली ।

ग्रन्थ—(१) पावसप्रेमतरंग, (२) वसंतविनोद, (३) प्रेमविन्दु, (४) वैरनवसंत ।

जन्मकाल—१९३३। वर्त्तमान।

नाम—(२८०४) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, बाँदा।

ग्रन्थ—श्रीकृष्णचन्द्रिका।

जन्मकाल—१९३४। वर्त्तमान।

नाम—(२८०५) धनीराम शुक्ल सुकलनपुरवा, ज़िला लखनऊ।

जन्मकाल—१९३३। वर्त्तमान।

नाम—(२८०६) नारायणलाल (रसलीन) गोस्वामी, बारी, राज्य रीवाँ।

ग्रन्थ—श्रीकृष्णाष्टक आदि।

जन्मकाल—१९३३। वर्त्तमान।

नाम—(२८०७) बनवारीलाल वैश्य, जबलपूर।

ग्रन्थ—(१) बारहमासा, (२) बनवारीकला।

जन्मकाल—१९३३। वर्त्तमान।

नाम—(२८०८) व्रजरत्न भट्टाचार्य, मुरादाबाद।

ग्रन्थ—आपके प्रायः १०० अनुवाद एवं टीका-ग्रन्थ हैं।

जन्मकाल—१९३२।

विवरण—आप बड़े परोपकारी एवं उदार महाशय हैं।

नाम—(२८०९) शिवनरेशसिंह ताल्लुक़दार, जगतापुर, ज़िला बहराइच। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—शृङ्गारशिरोमणि (पृष्ठ २६)।

नाम—(२८१०) शंभुराम।

ग्रन्थ—प्रेममालिका ।

विवरण—सरयूप्रसाद आचारी ने भी शंभुराम के साथ यह ग्रन्थ रचा ।

नाम—(२८११) सरयूप्रसाद आचारी रईस, जगदीशपुर, ज़िला बस्ती ।

ग्रन्थ—प्रेममालिका (पृ० १२०)।

विवरण—वर्त्तमान हैं । प्रति एक है। कर्त्ता दो हैं। शम्भुराम मझारी भी कर्त्ता हैं ।

समय सं० १६५६ ।

नाम—(२८१२) काशीप्रसाद जायसवाल एम० ए०, बैरिस्टर मिर्ज़ापुर, हाल कलकत्ता ।

ग्रन्थ—(१) कलवारगज़ट, (२) कई स्फुट लेख ।

जन्मकाल—१९३८ ।

विवरण—आप बड़े मिलनसार सज्जन पुरुष हैं। पुरातत्त्व में आप ने अच्छा श्रम किया है ।

नाम—(२८१३) कैलाशनाथ वाजपेयी, कानपुर ।

ग्रन्थ—(१) आर्यगीतावली, (२) दयानन्दजीवनी, (३) पौराणिक भ्रान्तिहरण, (४) कृष्णलीला ।

जन्मकाल—१९३४ । मृत्यु १९६३ ।

नाम—(२८१४) ब्रह्मानन्द संन्यासी ।

ग्रन्थ—सुशीलादेवी (उपन्यास) ।

जन्मकाल—१९३४ । मृत ।

नाम—(२८१५) राजेन्द्र प्रतापनारायणसिंह, हल्दी।

ग्रन्थ—पावस-प्रलाप।

जन्मकाल—१९३४। वर्त्तमान।

नाम—(२८१६) लालजी कायस्थ। काकोरी, लखनऊ। वर्त्तमान।

ग्रंथ—लक्ष्मीनारायण कवि का जीवनचरित्र (पृ० २०)।

नाम—(२८१७) शीतलप्रसाद ब्राह्मण, भरसरा, ज़िला गोरखपुर।

ग्रन्थ—(१) रामचरितावली नाटक गद्यपद्य, (२) विनयपुष्पावली, (१९६२) (पृ० ४६), (३) भारतोन्नतिसोपान, (१९६४), (पृ० १०२)।

विवरण—आपमें साहित्यसेवा जैसी है वह काव्य से प्रकट होती है। परन्तु रामभक्ति के सिवाय आप में देशभक्ति भी है। यह अनुपम गुण है।

नाम—(२८१८) सीताराम ब्राह्मण, निज़ामाबाद, ज़िला आज़मगढ़।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

जन्मकाल—१९३४। वर्त्तमान।

नाम—(२८१९) सुन्दरलाल शर्मा द्विवेदी, कटरा, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) बालोपदेश, (२) बालपञ्चतन्त्र, (३) बालगीतावलि, (४) बालस्मृतिमाला, (५) बालभोज-प्रबन्ध,

(६) बालरघुवंश, (७) योगवाशिष्ठसार, (८) रामाश्वमेध ।

जन्मकाल—१९३४ ।

विवरण—प्राचीन निवास-स्थान धनमऊ, ज़िला मैनपुरी है ।

नाम—(२८२०) सुन्दरलाल, (श्याम), बाँदा ।

जन्मकाल—१९३४ । वर्त्तमान ।

नाम—(२८२१) हनुमानप्रसाद त्रिपाठी, शिउली, कानपूर ।

ग्रन्थ—(१) वेदशास्त्रतालिका, (२) दशधर्मलक्षणव्याख्या, (३) दृष्टान्तसागर, (४) पापप्रध्वंसिनी, (५) हनुमानचालीसा, (६) मद्यदोषदर्पण, (७) छुआछूत ।

जन्मकाल—१९३४ ।

नाम—(२८२२) हरीराम चौधरी जाट, हिसार ।

ग्रन्थ—(१) कृषिविद्या, (२) कृषिकोष ।

जन्मकाल—१९३४ ।

विवरण—आप इन्स्पेक्टर ज़िराअत प्रतापगढ़ हैं ।

नाम—(२८२३) देवीसहाय कायस्थ ।

ग्रन्थ—भजन ।

कविताकाल—१९६० के पूर्व ।

समय संवत् १९६० ।

नाम—(२८२४) अनन्यप्रधान ।

ग्रन्थ—ज्ञानपचासा।

विवरण—महाराजा बिजावर के चचा हैं। वर्त्तमान।

नाम—(२८२५) अनिरुद्ध दास। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—पद्मपचीसी।

नाम—(२८२६) अक्षयवरप्रसाद साही क्षत्रिय ग्राम महुअवा, ज़िला गोरखपुर।

ग्रन्थ—(१) पुरश्री नाटक (गद्य पृ० १३४), विहुला (पृ० १७४ गद्य)।

विवरण—वेनिस के व्यापारी के आधार पर प्रथम ग्रन्थ है।

नाम—(२८२७) ऋषिलाल साहु कलवार, महोली, ज़िला सीतापुर।

ग्रन्थ—(१) शृंगारदर्पण, (२) पिंगलादर्श, (३) विज्ञानप्रभाकर, (४) अलंकारभूषण, (५) निदानमंजरी।

जन्मकाल—१९३६। वर्त्तमान।

नाम—(२८२८) केदारनाथ, बस्तर स्टेट।

ग्रन्थ—(१) विपिनविज्ञान, (२) बस्तरभूषण, (३) वसन्तविनोद, (४) मैथिलवंश वार्ता।

जन्मकाल—१९३४।

नाम—(२८२९) खगेश कवि (श्यामलाल)।

जन्मकाल—१९४५।

नाम—(२८३०) गजाधरप्रसाद शुक्ल (द्विज शुक्ल), पाता बोझ, सीतापूर।

ग्रन्थ—रघुवंश भाषा ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२८३१) गुरदीन भाट, ईसानगर, खीरी ।

ग्रन्थ—(१) मुनेश्वरबख्शभूषण, (२) रणजीतविनोद, (३) पिंगल

विवरण— साधारण श्रेणी ।

नाम—(२८३२) चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी, जयपूर ।

ग्रन्थ—समालोचक पत्र ।

जन्मकाल—१९४७ ।

विवरण—अच्छे पंडित और बड़े ही नम्र एवं निष्कपट पुरुष हैं ।

नमा—(२८३३) दामोदरसहाय, बांकीपूर ।

विवरण—आप की मौत हाल ही में हुई है। विशेष हाल ज्ञात नहीं है ।

नाम—(२८३४) देवीसहाय ब्राह्मण । मृत ।

ग्रन्थ—गद्यलेखक ।

नाम—(२८३५) प्रतिपालसिंह ठाकुर, पहरा, राज्य छतरपूर ।

ग्रन्थ—(१) वीरबाला, (२) स्फुट लेख ।

जन्मकाल—१९३८ ।

विवरण—ये अँगरेज़ी भी पढ़े हैं । भाषा की भी रचना करते हैं ।

नाम—(२८३६) बालमुकुंद पांड़े, बलुआ, सारन ।

ग्रन्थ—(१) गंगोत्तरीनाटक, (२) लेख सामयिक पत्रों में ।

जन्मकाल—१९३५ ।

नाम—(२८३७) बाँकेलाल चौबे, मंगलपूर, ज़िला कानपूर।

ग्रन्थ—(१) स्फुट छंद, (२) सतसई (अपूर्ण, बन रही है ४०० दोहे बने)।

जन्मकाल—१९३८।

नाम—(२८३८) वीरेश्वर उपाध्याय कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जारी इलाका छोटा नागपुर।

ग्रन्थ—(१) आल्हा रामायण, (२) अद्भुतावतार कांड, (३) आनंदसंजीवनी, (४) फागचित्तचोरचालीसा, (५) भक्तिसंजीवनी, (६) भजनप्रातचालीसी, (७) मदनमोहिनी उपन्यास (गद्य)।

जन्मकाल—१९३८।

नाम—(२८३९) ब्रजेश महापात्र, असनी, फ़तेहपूर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२८४०) भैरववल्लभ ब्राह्मण।

ग्रन्थ—पापविमोचन (शिवस्तुति)।

नाम—(२८४१) माधौसिंहजी कविराज बूँदी।

विवरण—ये कविराव रामनाथ के पुत्र हैं। कविता उत्तम करते हैं। इनका फ़ारसी में भी अच्छा दख़ल है।

नाम—(२८४२) राधेश्याम मंत्री एडवर्डहिन्दीपुस्तकालय, हाथरस।

ग्रन्थ—स्फुट छन्द एवं लेख।

जन्मकाल—१९३५।

नाम—(२८४३) रामचरण भट्ट ब्राह्मण, पिहानी ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—(१) सुरभीशतक, (२) गोविलाप, (३) अर्धमिलाप, (४) प्रेमामृततरंगिणी, (५) प्रेमामृतवर्षिणी, (६) मतामत-विचार।

जन्मकाल—१९३७। वर्त्तमान।

नाम—(२८४४) रामलालजी मनिहार, बलिया।

ग्रन्थ—शम्भुपच्चीसी।

जन्मकाल—१९३५।

नाम—(२८४५) रामावतार द्विवेदी, फ़तेहपुर, ज़ि० बारह-बंकी।

जन्मकाल—१९३६।

नाम—(२८४६) लालजी वन्दीजन, असनी, फ़तेहपूर।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाशय बैरीसाल के वंशधर हैं। आप महाराजा रीवाँ के यहाँ नौकर हैं।

नाम—(२८४७) शिवदास पाँड़े, मौज़ा आँव, ज़ि० उन्नाव। रघुवरदयाल के पुत्र।

ग्रन्थ—(१) बृहद्विश्रामसागर, (२) चाणक्यनीति काव्य, (३) रघुवंश की भाषा टीका, (४) महाभारत का कविता में अनुवाद (अपूर्ण)।

जन्मकाल—१९३९। वर्त्तमान।

नाम—(२८४८) शिवबालकराम पाँडे, (बालक) दिलवल-ख़ानपुर, जि० कानपुर।

ग्रन्थ—(१) धनुषयज्ञनाटक, (२) स्वदेशीकाव्यकल्पद्रुम, (३) स्फुटकाव्य गद्य तथा पद्य।

जन्मकाल—१९३८।

नाम—(२८४९) शिवरत्न शुक्ल। बछरावाँ, रायबरेली। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—(१) प्रभुचरित्र, (२) स्वामी विवेकानंद के लेखों का अनुवाद, (३) स्वामी शंकराचार्य्य का जीवनचरित्र, (४) उपदेशपुष्पांजलि, (५) परदा, (६) रामावतार, (७) कान्यकुब्जरहस्य, (८) ऋतु-कविता।

जन्मकाल—१९३६।

नाम—(२८५०) सूर्यनारायण पाँड़े, (रविदेव) पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्मकाल—१९४६।

नाम—(२८५१) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा बाज़ार, ज़िला मिर्ज़ापूर।

ग्रन्थ—(१) जानकीस्वयंवर, (२) दुर्गाप्रभाकर, (३) चन्द्रलता, (४) हनुमानहाँक, (५) चन्द्रकलाचन्द्रिका, (६) कवितासुधार, (७) स्फुट काव्य।

जन्मकाल—१९३८।

समय संवत् १९६१।

नाम—(२८५२) गोवर्द्धनलाल, (लाल), बसौदा, ग्वालियर।

ग्रंथ (१) पूर्त्तिप्रमोद भाग दो, (२) साहित्यभास्कर, (३) नगदवन, (नागदमन)।

जन्मकाल—१९३६। वर्त्तमान।

नाम—(२८५३) चम्पालाल जौहरी, (सुधाकर), रामगंज, खंडवा।

ग्रन्थ—(१) माधवीकङ्कण, (२) वियोगिनी, (३) शिक्षकों का कर्तव्य, आदि ८ पुस्तकें आपने बनाई हैं।

जन्मकाल—१९३६।

नाम—(२८५४) बजरंगसिंह, हथिया, सीतापूर।

ग्रन्थ—(१) रुद्रपचीसी, (२) षटऋतु, (३) वैद्यनाथछत्तीसी, (४) स्फुट कविता, (५) काशीकोतवालपचीसी।

जन्मकाल—१९३६। वर्त्तमान।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२८५५) महादेवप्रसाद मिश्र।

ग्रन्थ—(१) आसावरदेवीमाहात्म्य, (२) बजरंगपचासा, (३) रसिकपचीसी।

जन्मकाल—१९४१। वर्त्तमान।

नाम—(२८५६) राघवेन्द्र त्रिपाठी, गोनी, ज़िला हरदोई।

ग्रन्थ—दुःखभञ्जनस्तोत्र, गंगास्तोत्र, नंदिनीनंदन नाटक आदि सात आठ पुस्तकें तथा सामयिक पत्रों में लेख।

जन्मकाल—१९३८। वर्त्तमान।

नाम—(२८६९) मयूर मदारीसिंह, बाछिल, महसुई, ज़िला सीतापूर।

जन्मकाल—१९३८। वर्त्तमान।

नाम—(२८७०) माधो तेवारी, जौनपूर।

ग्रन्थ—अध्यात्मरामायण-सारसंग्रह।

नाम—(२८७१) श्यामसुन्दरलाल कायस्थ एम० ए०, एल०एल० बी०, मैनपुरी।

ग्रन्थ—(१) स्थावरजीवमीमांसा, (२) मानववर्णव्यवस्था।

जन्मकाल—१९३७।

नाम—(२८७२) शिवनारायण कायस्थ (मित्र), सनिगवाँ, ज़िला कानपूर।

ग्रन्थ—सुखदसंगीत, (२) स्फुट काव्य।

जन्मकाल—१९४२।

नाम—(२८७३) सत्यनारायण पाँडे (सत्यदेव) सरवरिया, विष्णुपूर, आज़मगढ़।

ग्रन्थ—(१) सत्यदेवविनोद, (२) चौतालदिवाकर ८ भाग, (३) साहित्यशिरोमणिसंग्रह।

जन्मकाल—१९४२। वर्त्तमान।

नाम—(२८७४) हरिकृष्ण जौहर, कलकत्ता।

ग्रन्थ—(१) जापानवृत्तान्त, (२) अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास, (३) भारत के देशी राज्य, (४) रूस जापान युद्ध, (५) पलासी की लड़ाई, (६) कुसुमलता ।

जन्मकाल—१९३७ ।

विवरण—आप हिन्दी-बङ्गवासी के सम्पादक हैं ।

समय संवत् १९६३ ।

नाम—(२८७५) गयाप्रसाद (माणिक), गया ।

जन्मकाल—१९३८ । वर्त्तमान ।

नाम—(२८७६) गोवर्द्धननाथ (लल्लूजी) वल्द पं० गोपीनाथ ।

जन्मकाल—१९३८ । वर्त्तमान ।

नाम—(२८७७) चतुर्भुजसहाय कायस्थ, छत्रपुर ।

ग्रन्थ—लंबे घूंघटवाली (पृ० १२२) (उपन्यास) गद्य, (२) वावू ताराचंद (पृ० १७६) (१९६३) उपन्यास गद्य, (३) बीवी हमीदा (पृ० १८२) (१९६४) (उपन्यास) गद्य, (४) मंत्री हरिश्चन्द्र (पृ० ६०) (१९६५) ।

जन्मकाल—१९३४ ।

विवरण—आपको हिन्दी वालकपन से ही अच्छी लगती थी । अब भी उसी की सेवा में आपका वहुत समय व्यतीत होता है ।

नाम—(२८७८) विश्वेश्वरप्रसाद ब्राह्मण, घुँघुचिहाई, राज्य रीवाँ ।

जन्मकाल—१९३८। वर्त्तमान।

नाम—(२८७९) राधाकृष्ण वाजपेयी, चौपटियाँ, लखनऊ।

जन्मकाल—१९३८।

विवरण—ये द्विजराज कवि के जामातृ हैं और आज कल वैद्यक करते हैं।

समय संवत् १९६४।

नाम—(२८८०) अखिलानन्द शर्मा, बदाऊँ।

ग्रन्थ—(१) दयानन्दलहरी, (२) दयानन्ददिग्विजयार्क, (३) आर्यशिक्षा, (४) आर्यविद्योदय (काव्य), (५) दयानन्ददिग्विजय।

जन्मकाल—१९३९।

नाम—(२८८१) चन्द्रशेखर (द्विजचन्द्र) ब्राह्मण, रानीपुर, ज़िला आज़मगढ़।

जन्मकाल—१९३९। वर्त्तमान।

नाम—(२८८२) व्रजनाथ बी० ए०, एल्‌एल्० बी०, मुरादाबाद।

जन्मकाल—१९३९।

नाम—(२८८३) मोहनदास महन्त, गोरखपुर।

ग्रन्थ—वृहत्सनातनधर्मसार (पृ० ३९८, गद्य)।

नाम—(२८८४) रमेश पाँड़े (रामेश्वर), पंडित पुरवा, ज़िला लखनऊ।

जन्मकाल—१९४३। वर्त्तमान।

नाम—(२८८५) राधाकृष्ण (घनश्याम), जयेन्द्रगंज, ग्वा-लियर।
ग्रन्थ—(१) भजनसार, (२) उपकार-बत्तीसी आदि।
जन्मकाल—१९३९। वर्त्तमान।

नाम—(२८८६) रामचन्द्र शास्त्री, लाहौर।
ग्रन्थ—(१) शुद्धि, (२) भारतगौरवादर्श।
जन्मकाल—१९३९।

नाम—(२८८७) श्री लक्ष्मणसिंह क्षत्रिय, लोमामऊ।
ग्रन्थ—कई ग्रन्थ रचे हैं।
जन्मकाल—१९३९। वर्त्तमान।

नाम—(२८८८) शिवकरणप्रसाद, (सत्यदेव), ग्राम महा-राजगञ्ज, ज़िला आज़मगढ़।
ग्रन्थ—(१) सत्यदेवविनोद, (२) पूर्ति-प्रमोद, (३) भक्तिशिरोमणि।
जन्मकाल—१९४२। वर्त्तमान।

समय संवत् १९६५।

नाम—(२८८९) अशर्फ़ीलाल कायस्थ, बलरामपुर।
ग्रन्थ—बालविहार (कृष्णचरित्र) (पृ० ६४६)।

नाम—(२८९०) इन्द्रदेवलाल कायस्थ, मनियार, बलिया।
ग्रन्थ—स्फुट।
जन्मकाल—१९४०।

नाम—(२८९१) कदम्बलाल गोस्वामी, बूँदी।

जन्मकाल—१८४३। वर्त्तमान ।

विवरण—इनकी अवस्था इस समय २५ वर्ष की होगी। कविता भी कुछ कुछ करते हैं।

नाम—(२८९२) कालीप्रसाद (भट्ट), उरई।

ग्रन्थ—रसिकविनोद।

विवरण—१९६६ में मृत्यु हुआ। पिता का नाम छबिनाथ भट्ट।

नाम—(२८९३) गिरिराजशरण, वृन्दावन।

जन्मकाल—१९४०।

नाम—(२८९४) चंद्रमती देवी (इन्दुमती), बनकटा, आज़मगढ़।

जन्मकाल—१९५०। वर्त्तमान ।

नाम—(२८९५) जगन्नाथ द्विवेदी (जगदीश), पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्मकाल—१८४८। वर्त्तमान।

नाम—(२८९६) जुगुलानंद ब्राह्मण, गोंडा। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—स्वभावसुधासिंधु, (पृ० ४८)।

नाम—(२८९७) धनुर्धर शर्मा। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—(१) रामकेकईसम्वाद, (२) जनकमरणोत्ताप, (३) भीष्मभीष्मागमन, (४) भट्टि काव्य का पद्यानुवाद, (५) अन्योक्तिपुष्पावली, (६) समस्यापूर्ति।

जन्मकाल—१९४०।

नाम—(२८९८) बचईलाल, भाऊनपुर, इलाहाबाद।

ग्रन्थ—बजरंगविनय आदि।

जन्मकाल—१९४५। वर्त्तमान।

नाम—(२८९९) वेणीमाधव, झिन्ना, राज्य रीवाँ।

ग्रन्थ—आनन्दरामायण का छन्दोबद्ध अनुवाद।

जन्मकाल—१९४०। वर्त्तमान।

नाम—(२९००) भगवानदीन मिश्र, शाहपुरा, ज़िला मँडला।

ग्रन्थ—(१) राजेन्द्रविलास, (२) श्रीरामरघुवंशविनय, (३) श्रीराम-धनुषयज्ञ, (४) शंभुविवाह, (५) रामरंजनी, (६) फूल-वाटिका।

जन्मकाल—१९४०।

नाम—(२९०१) भवानीचरण (लालन), फतेपुर।

ग्रन्थ—(१) कालिकास्तुति, (२) विनयरसिकलहरी, (३) छवि-प्रिया, (४) अयोध्यामाहात्म्य, आदि।

जन्मकाल—१९४०। वर्त्तमान।

नाम—(२९०२) राधारमणप्रसादसिंह रईस। वर्त्तमान।

ग्रन्थ—(१) महिम्नस्तोत्र भाषा (१९६५,) (२) स्तोत्ररत्नावली, १९६६।

नाम—(२९०३) रामचन्द्र शुक्ल, मिर्ज़ापूर।

ग्रन्थ—(१) कल्पना का आनन्द, (२) मेगास्थिनीज़ का भारत-वर्षीय विवरण, (३) राज्यप्रबन्ध-शिक्षा, (४) बाबू राधा-

कृष्णदास का जीवनचरित्र, (५) अमिताभ, (६) स्फुट गद्य और पद्य लेख।

जन्मकाल—१९४१।

विवरण—उत्कृष्ट कवि एवं लेखक।

नाम—(२६०४) रामनरेश ब्राह्मण ग्राम कोईरीपुर, ज़िला जौनपुर।

ग्रन्थ—(१) बालकसुधारशिक्षा, (२) भर्तृहरिशतक भाषानुवाद, (३) वीराङ्गना, (४) वीरबाला, (५) वीरवृत्तान्त, (६) आर्य-संगीतमाला, (७) हिम्मतसिंह और मारवाड़ी, (८) पिशाचिनी।

जन्मकाल—१९४५। वर्त्तमान।

नाम—(२६०५) रामलोचन पांडे, पैकवली, बलिया।

ग्रन्थ—(१) कर्मदिवाकर, (२) सच्चा सुधार।

जन्मकाल—१९३०।

नाम—(२६०६) लालदेव नारायणसिंह (लाल) सटवा, पो० बादशाहपुर।

ग्रन्थ—रमेशमनोरञ्जनी।

जन्मकाल—१९४३। वर्त्तमान।

नाम—(२६०७) लालबहादुर, अनेई ग्राम, काशी।

ग्रन्थ—हल्दीघाट का युद्ध।

नाम—(२६०८) सत्यनारायण त्रिपाठी, मन्धना, ज़िला कानपूर।

ग्रन्थ—गोविलाप।

जन्मकाल—१९४१। वर्त्तमान।

समय संवत् १९६९।

नाम—(२९०९) उदयनारायण वाजपेयी।

ग्रन्थ—(१) प्राचीन भारतवासियों की विदेशयात्रा और वैदेशिक व्यापार, (२) महाराज पञ्चम जार्ज, (३) विकाश सिद्धान्त, (४) कर्मक्षेत्र।

जन्मकाल—१९४२।

नाम—(२९१०) गणेशदत्त।

ग्रन्थ—सरवरिया-कुलदीपक।

नाम—(२९११) नंदकिशोर ब्राह्मण, मुरारिमऊ।

ग्रन्थ—संगीतविद्यारत्न आदि।

जन्मकाल—१९४१। वर्त्तमान।

नाम—(२९१२) विष्णुलाल एम० ए०।

ग्रन्थ—आर्य्यसमाजपरिचय।

नाम—(२९१३) वृन्दावन वैश्य, काशीपुर तराई।

ग्रन्थ—भारतीय-शिष्टाचार।

नाम—(२९१४) राजेश्वरप्रसाद (अचनोन्द्र), ग्राम सेगरौली।

ग्रन्थ—सामन (श्रावण) सुहाग आदि।

जन्मकाल—१९४८। वर्त्तमान।

नाम—(२६१५) शिवकुमार ब्राह्मण, ग्राम मच्छागर, पो० मंसूरगंज।

जन्मकाल—१९४६। वर्त्तमान।

वर्त्तमान समय के कुछ अन्य कवि व गद्यकार।

नाम—(२६१६) अमीरअली सैयद, देवरी कलाँ सागर।

ग्रन्थ—(१) नीतिदर्पण की भाषा टीका, (२) बूढ़े का ब्याह, (३) बच्चे का ब्याह, (४) सदाचारी बालक।

विवरण—कविता उत्तम।

नाम—(२६१७) उदयनारायणसिंह ज़मींदार बिद्दूपुर, मुज़फ्फ़रपुर।

ग्रन्थ—(१) सर्वदर्शनसंग्रह, (२) सिद्धान्तशिरोमणि, (३) आर्यभट्टीय सूर्यसिद्धान्त।

नाम—(२६१८) अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, कानपुर, सम्पादक भारतमित्र।

ग्रंथ—शिक्षा (अनुवाद)।

जन्मकाल—१९३७।

विवरण—नृसिंह, हिन्दी-वङ्गवासी एवं हितवार्त्ता का सम्पादन किया।

नाम—(२६१९) इन्द्रदेवनारायण शर्म्मा।

नाम—(२६२०) ईश्वरीप्रसाद मिश्र, आरा।

ग्रन्थ—(१) सुशीलाशिक्षा, (२) सच्ची मैत्री, (४) बालगल्पमाला, तथा ११ उपन्यास और अनुवाद।

जन्मकाल—१९५०।

नाम—(२६२१) ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) लक्ष्मी उपन्यास, (२) दो कन्याओं की बातचीत, (३) शान्ता।

जन्मकाल—१९३८।

विवरण—अच्छे गद्य-लेखक हैं।

नाम—(२६२२) कर्णसिंह (कर्ण), चहँडोली, अलीगढ़।

ग्रंथ—(१) शुद्धिपथ, (२) यवनमतादर्श, (३) मेरामत, (४) कर्णामृत, (५) अमृतोदधि, (६) काव्यकुसुमोद्यान, (७) संगीतरत्नप्रकाश।

जन्मकाल—१९३८।

विवरण—गद्य-पद्य-लेखक।

नाम—(२६२३) कैलाशरानी बाटल।

ग्रन्थ—(१) जीवनचरित्र पं० मदनमोहन मालवीय।

नाम—(२६२४) यशोदा देवी, सम्पादिका स्त्रीधर्मशिक्षक।

ग्रन्थ—(१) सच्ची माता।

नाम—(२६२५) कृष्ण ब्रह्मभट्ट, असनी।

विवरण—महाराज डुमरावँ के यहाँ राजकवि हैं।

नाम—(२६२६) गणेशप्रसाद कायस्थ, टीकमगढ़।

ग्रन्थ—मणिद्वीपमंजरी।

नाम—(२६२७) गणेश रामचन्द्र शर्मा, अजमेर।

ग्रन्थ—स्वामीजी के मराठी तथा गुजराती व्याख्यानों का अनुवाद।

नाम—(२६२८) गदाधरप्रसाद पाठक, दारानगर, इलाहाबाद।

ग्रन्थ—(१) लेक्चर्स टीचर, (२) ब्रह्मकुल-परिवर्त्तन, (३) शिक्षा-कल्पद्रुम, (४) कर्तव्यदर्पण।

नाम—(२६२६) गिरिजाकुमार घोष।

ग्रन्थ—उत्तररामचरित्र (अनुवाद)।

नाम—(२६३०) गोपालदास देवगण शर्मा, लाहौर।

ग्रन्थ—दयानन्दजीवनचरित्र।

नाम—(२६३१) गोपाल देवी।

ग्रन्थ—उपसंपादिका गृहलक्ष्मी।

नाम—(२६३२) चक्रपाणि त्रिपाठी, सुहागपुर, होशंगाबाद।

ग्रन्थ—रामयशकल्पद्रुम।

नाम—(२६३३) चतुरसिंह रूपाहेली, मेवाड़ राजपूताना।

ग्रन्थ—(१) चतुरकुलचरित्र, (२) खगोल-विज्ञान।

विवरण—आप एक प्रतिष्ठित लेखक हैं।

नाम—(२६३४) चिरञ्जीलाल शर्मा, अलीगढ़।

विवरण—हिन्दी के चपल कवि और गद्य-लेखक।

नाम—(२६३५) चंद्रशेखरधर मिश्र, चम्पारन।

ग्रन्थ—(१) संपादक विद्याधर्मदीपिका, (२) रत्नमाला चंपारन।

विवरण—उत्तम लेखक हैं। कई ग्रन्थ रचे।

नाम—(२६३६) चंद्रावती देवी, बनकटा, आज़मगढ़।

नाम—(२६३७) छबीले गोस्वामी, फ़तेहपूर।

नाम—(२६३८) छेदालाल कायस्थ।

ग्रन्थ—अबला-मन-रञ्जन।

नाम—(२६३९) जगन्नाथ शुक्ल, ख़ानजहाँचक, ज़िला मुज़फ़्फ़र-पूर।

नाम—(२६४०) जगन्नाथ शुक्ल पुच्छरत, अमृतसर।

ग्रन्थ—(१) स्त्रीशिक्षामणि, (२) व्याख्यानविधि।

नाम—(२६४१) जयदेव उपाध्याय, ज़िला बलिया।

नाम—(२६४२) ज्वालादत्त शर्मा, मुरादाबाद।

ग्रन्थ—प्रायश्चित्तादर्श।

नाम—(२६४३) ज्वालादेवी।

ग्रन्थ—स्त्रीशिक्षासम्बन्धी कई पुस्तकें।

विवरण—आप डाकृर रामचन्द्र की पत्नी हैं।

नाम—(२६४४) जानकीप्रसाद द्विवेदी, मुड़वारा।

ग्रन्थ—(१) शृङ्गारतिलक भाषा, (२) नर्मदामाहात्म्य।

नाम—(२६४५) तोरनदेवी, प्रयाग (ब्राह्मणी)।

ग्रंथ—स्फुट लेख पत्रों में तथा समस्यापूर्ति रसिकमित्र इत्यादि में।

विवरण—आप पंडित कन्हैयालाल प्रयागवाले की पुत्री हैं।

नाम—(२६४६) दयाशङ्कर, मथुरा।

ग्रन्थ—(१) शिशुबोध।

नाम—(२६४७) दुर्गाशङ्कर पाँडे, उन्नाव।

ग्रंथ—(१) नटवरपचीसी, (२) लेख और लेखक, (३) पुस्तकावलोकन, (४) अभिषेक, (५) धर्मनीतिशिक्षा, (६) व्रजनाथशतक।

जन्मकाल—१९४६।

नाम—(२६४८) दूधनाथ उपाध्याय।

ग्रन्थ—गोरक्षा पर आपकी पुस्तकें हैं।

नाम—(२६४९) देवदत्त वाजपेयी (पुरन्दर), लखनऊ।

नाम—(२६५०) देवीप्रसाद उपाध्याय, (नैपाली)।

ग्रन्थ—सुन्दरसरोजिनी उपन्यास।

विवरण—आप राज्य रामनगर चम्पारन के दीवान हैं।

नाम—(२६५१) देवीप्रसाद चौधरी मुंसिफ़, आगरा प्रान्त।

नाम—(२६५२) दौलतरामजी रिटायर्ड सब डिप्टी इन्स्पेक्टर।

ग्रन्थ—गद्यपद्य में कई ग्रन्थ।

नाम—(२६५३) द्विज श्याम द्विवेदी, ज़िला बाँदा।

नाम—(२६५४) धर्मराज मिश्र, शिवपुर दियर ज़िला बलिया।

ग्रन्थ—रसिकमोहन।

नाम—(२६५५) नाथूराम प्रेमी, देवरी सागर।

ग्रन्थ—कई ग्रंथ।

जन्मकाल—१९३१।

विवरण—सम्पादक जैनहितैषी।

नाम—(२६५६) पन्नालाल, घाटमपूर, ज़िला कानपूर।

नाम—(२६५७) पुरुषोत्तमदास खत्री टंडन एम० ए०, एल० एल० बी०, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) राजपूतवीरता, (२) लेख सामयिक पत्रों में।

विवरण—आप बड़े ही हिन्दी-प्रेमी और हिन्दी के एक उत्साही लेखक तथा प्रचारक हैं।

नाम—(२६५८) पुरुषोत्तमप्रसाद पाण्डेय, बालपुर, विलासपुर।

ग्रंथ—(१) लाल गुलाल अनन्तलेखावली।

नाम—(२६५९) पूरनमल, झाँसी।

नाम—(२६६०) प्यारेलाल कायस्थ, गैरहर।

नाम—(२६६१) प्रभूदान चारण (सांहू जाति) मारवाड़।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा जसवंतसिंह।

नाम—(२६६२) प्रयागनारायण मिश्र (मिश्र), लखनऊ।

ग्रंथ—(१) वंशीशतक, (२) मनोरमा, (३) राघवगीत, (४) ऋतु-काव्य।

विवरण—गद्य में कुछ नहीं लिखा।

नाम—(२९६३) प्रीतम (देवीप्रसाद) कायस्थ बिजावर (बुन्देलखंड)।

ग्रन्थ—बुन्देलखंड का अलबम।

विवरण—विजावर में हैं। इतिहास-वर्णन।

नाम—(२९६४) वचनेश, फ़तेहगढ़।

नाम—(२९६५) बद्रीसिंह वर्मा, अटिया, उन्नाव।

ग्रन्थ—बीराङ्गनाचरित्र।

जन्मकाल—१९४४।

नाम—(२९६६) बलदेव दास कायस्थ, खटवारा, ज़ि॰ बाँदा।

ग्रन्थ—(१) जानकीविजय, (२) रामायण विष्णुपदी।

नाम—(२९६७) वामनाचार्य बामन गोस्वामी, मिर्ज़ापूर।

ग्रन्थ—पंचाननपचीसी।

नाम—(२९६८) विन्ध्याचलप्रसाद कायस्थ हरपुरनाग चम्पारन।

ग्रन्थ—१८ पूर्ण और ८ अपूर्ण छोटे छोटे ग्रन्थ।

नाम—(२९६९) बीरसिंह उपदेशक आर्यसमाज फुलपुरा, हिसार।

जन्मकाल—१९४४।

विवरण— आज कल राजपूत सभा की ओर से उपदेशक हैं।

नाम—(२९७०) वैजनाथ शुक्ल पैंतेपुर, ज़ि॰ वारहबंकी।

नाम—(२९७१) भगवानदास, हालना।

नाम—(२६७२) भगवानबख़्श (श्रीकर) बाबू।

विवरण—इटौंजा, ज़ि० लखनऊ।

नाम—(२६७३) भीमसेन ब्राह्मण, गुरुकुल काँगड़ी।

ग्रन्थ—योगशास्त्र भाषा।

नाम—(२६७४) मधुसूदन गोस्वामी।

ग्रन्थ—अमियनिमाईचरित्र। चैतन्य महाप्रभु का जीवनचरित्र वार्तिक २७२ सफ़ा रायल १२ पेजी में लिखा गया है। यह पहले बाबू शिशिर कुमार घोष ने बंगला में बनाया था। उसी का यह अनुवाद है। कहीं कहीं एकाध छंद भी है। यह पुस्तक हमें दरबार छतरपूर में देखने को मिली।

नाम—(२६७५) महादेवप्रसाद (मदनेश) पटना मो० झाऊगंज।

ग्रन्थ—(१) गंगालहरी, (२) नखशिख रामचन्द्रजी, (३) मदनेश मौजलतिका, (४) मदनेश कल्पद्रुम, (५) संकटमोचन आरसी, (६) मदनेश कोष, (७) तनतीव्रताला की तरहदार कुञ्जी, (८) भैरवाष्टक।

नाम—(२६७६) महादेवशरण पांडे, सारन।

नाम—(२६७७) महावीरप्रसाद कायस्थ, रुद्रपूर।

ग्रन्थ—ईश्वरभक्ति, स्त्रीजीवनसुधार।

नाम—(२६७८) महेशबख़्शसिंह, पन्हौना, उन्नाव।

ग्रन्थ—महेशमनरंजन।

नाम—(२६६७) शम्भूनाथ, मझारी।

ग्रन्थ—प्रेममालिका।

विवरण—सरयूप्रसाद के साथ बनाया।

नाम—(२६६८) शिवप्रसाद हेडपंडित, दरभंगा।

नाम—(२६६६) शिवरत्न शुक्ल, बछरावाँ।

ग्रंथ—प्रभुचरित्र।

नाम—(३०००) शिवसागरराम शर्मा, रेना फ़तेहपुर।

ग्रन्थ—सत्यनारायण भाषा।

नाम—(३००१) श्यामविहारी।

नाम—(३००२) सगुनचन्द्र कायस्थ।

ग्रन्थ—साधारण धर्म।

नाम—(३००३) सत्यव्रत शर्मा, मुरादाबाद।

नाम—(३००४) सत्यानंद जोशी।

ग्रंथ—सम्पादक अभ्युदय।

विवरण—अच्छे लेखक हैं।

नाम—(३००५) सत्यानंद संन्यासी।

ग्रन्थ—पाखंडमतकुठार, कबीरपन्थ की समीक्षा।

नाम—(३००६) सालिग्राम शर्मा, अजमेर।

ग्रन्थ—न्यायदर्शन भाषाटीका।

नाम—(३००७) सावित्री देवी, ब्राह्मणी।

विवरण—पं० बालकृष्णजी भट्ट की पुत्री हैं।

नाम—(३००८) सुभद्रा कुँवरि।

नाम—(३००९) संतराम लाहोर।

विवरण—आप 'आर्यप्रभा' पत्र का सम्पादन करते हैं।

नाम—(३०१०) हरसहायलाल बी० ए० डिप्टी मजिस्ट्रेट, बाँकीपुर।

ग्रन्थ—(१) अवतारपराभव, (२) कान्तावियोग, (३) शकुन्तला अनुवाद।

नाम—(३०११) हरिदास जैन।

विवरण—वृन्दावन, जैन कवि के पौत्र।

नाम—(३०१२) हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य।

ग्रंथ— (१) तुलसीतत्त्व-भास्कर, (२) तिलकतत्त्व।

वर्तमान अन्य लेखकों की सूची।

२०१३ अकरमफ़ैज़ क़ाज़ी।
२०१४ अक्षयबटसिंह।
२०१५ अखिलचंद पालित।
२०१६ अच्युतप्रसाद दुबे।
२०१७ अनोखेलाल त्रिपाठी, गाज़ियाबाद।
२०१८ अनंतबापू शास्त्री।
२०१९ अनंतराम त्रिपाठी।
२०२० अनंतराम पाँडे, रायगढ़।
२०२१ अनंतराम वाजपेयी माहूअलीखां सराय, लखनऊ।
२०२२ अब्दुल्लाह।
२०२३ अमरनाथ शुक्ल, बंबई।
२०२४ अमरसिंह।
२०२५ अमृतलाल चक्रवर्ती, कई पत्रों के संपादक रहे हैं।
२०२६ अम्बिकाप्रसाद गुप्त।
२०२७ अम्बिकाप्रसाद त्रिपाठी वैंदकी, फ़तेहपूर।
२०२८ अम्बिकाप्रसाद मिश्र, नगर भरतपूर।
२०२९ अयोध्याप्रसाद त्रिपाठी, झौंझक, कानपूर।
२०३० अयोध्याप्रसाद मधुवन (अनाम) आज़मगढ़।
२०३१ अयोध्याप्रसाद मालवीय, मिर्ज़ापूर।
२०३२ अर्जुननाथ रैना।
२०३३ अलःदाद।
२०३४ अवधबिहारीलाल, प्रतापगढ़।
२०३५ अवंतिकाप्रसाद शुक्ल, दुगावां, लखनऊ।
२०३६ आत्माराम ब्राह्मण।
२०३७ आदित्यनारायण औरंगाबाद, गया।
२०३८ आनंदीप्रसाद द्विवेदी, बैरिष्टर।
२०३९ आरिफ़।
२०४० आसियापीर।
२०४१ ओंकारप्रसाद मिश्र, कानपूर।
२०४२ ओंकारसिंह।
२०४३ औसेरीलाल त्रिपाठी, नीमच।
२०४४ अंगमती, गया।
२०४५ अंजनीसहाय शुक्ल, खीरी।
२०४६ इच्छाराम कृष्णलाल, बंबई।
२०४७ इजदानी, मुसल्मान, भक्त।

२०४८ इंदुदत्त शर्मा ।
२०४९ इंशा ।
२०५० ईश्वरीप्रसाद गौतम, अमरपाटन, रीवाँ ।
२०५१ उदयप्रतापसिंह, दलजीतपूर, बहरायच ।
२०५२ उमापतिदत्त पांडे, चिलहरी, आरा ।
२०५३ उमापतिदत्त शर्म्मा, बी० ए० ।
२०५४ उमाशंकर दुवे ।
२०५५ कतवारूराय, निज़ामाबाद, आज़मगढ़ ।
२०५६ कन्हैयालाल गोस्वामी, गोकुल ।
२०५७ कन्हैयालाल शर्म्मा, राई, पटना ।
२०५८ कन्हैयालाल सेठ ।
२०५९ कपिलनाथ पुजारी, लखनेश्वर क्षेत्र, खरोद, विलासपूर ।
२०६० कमलाकर त्रिपाठी ।
२०६१ कमलाकिशोर, त्रिपाठी ।
२०६२ कमलाप्रसाद शर्म्मा, जगन्नाथडीह, हज़ारीवाग ।
२०६३ कमलावती, आगरा ।
२०६४ करुणाकवि, चँडौली ।
२०६५ कलाधर शर्म्मा, विसवाँ सीतापूर ।
२०६६ कल्यानीश्वरी ।
२०६७ कस्तूरी बाई, बरेली ।
२०६८ कान्हूलाल, गयावाल, गया ।
२०६९ कामताप्रसाद, शिवगढ़, रायबरेली ।
२०७० कारेलालतुलसीराम, मिश्र, मथुरा ।
२०७१ कालिकाप्रसाद त्रिपाठी, कानपूर ।
२०७२ कालीचरण मिश्र, सनिगवाँ कानपूर ।
२०७३ कालीशंकर अवस्थी, बदरका ।
२०७४ काशीदत्त पांडे ।
२०७५ काशीप्रसाद ।
२०७६ काशीप्रसाद शुक्ल, विलासपूर ।
२०७७ किशोरीदत्त ।
२०७८ किशोरीदयाल शुक्ल, कानपूर ।
२०७९ किशोरीलाल रावत, अजमेर ।
२०८० कुन्दनलाल साह ।
२०८१ कुमुद बंधुमित्र ।
२०८२ कुंजीलाल वर्मा ।
२०८३ कुँवर कन्हैयाजू, छतरपूर ।

३०८४ केदारनाथ अग्रवाल, कानपूर।
३०८५ केदारनाथ पाठक।
३०८६ केवलप्रसाद मिश्र, सिउनी, छपरा।
३०८७ केशरीसिंह।
३०८८ केशरीसिंह बारहट।
३०८९ केशवदेव शास्त्री।
३०९० केशवप्रसादसिंह।
३०९१ कैलासनारायण शुक्ल, अजयगढ़।
३०९२ कृपाशंकर।
३०९३ कृष्णदास।
३०९४ कृष्णप्रसादसिंह, एतिकादपूर, गया।
३०९५ कृष्णबक्सराय, पलामू, जयपूर।
३०९६ कृष्णबिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापूर।
३०९७ कृष्णसहाय।
३०९८ कृष्णानंद पाठक, गोपीगंज, मिर्ज़ापुर।
३०९९ क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक-कंपनी, मथुरा।
३१०० खड्गजीत मिश्र।
३१०१ खानआलम।
३१०२ खानसुल्तान।
३१०३ खुन्नामल शर्म्मा मास्टर, मुरादाबाद।
३१०४ खुसालचंद वेहटी, सीतापूर।
३१०५ खैरातीखाँ, देवरी, सागर।
३१०६ गजराजसिंह ठाकुर, अहिरोरी, हरदोई।
३१०७ गणपति जानकीराम दुवे।
३१०८ गणपतिप्रसाद उपाध्याय, स्वर्गद्वार, अयोध्या।
३१०९ गणपति राव खेर।
३११० गणेशजी, भरतपूर।
३१११ गणेशप्रसाद, चितईपुर।
३११२ गणेशप्रसाद, तिलसहरी, कानपुर।
३११३ गणेशसिंह, कोट ढेगबस।
३११४ गदाई शेख़।
३११५ गदाधरप्रसाद दुबे, नवाबगंज
३११६ गदाधरप्रसाद वाजपेयी, (गदाधर) केसरीगंज, सीतापूर।
३११७ गदाधरप्रसाद मिश्र।
३११८ गयादीन पटवारी, तोंदमोढी, विलासपूर।
३११९ गयाप्रसाद अवस्थी, कानपूर।
३१२० गयाप्रसाद जड़िया, नयागाँव।
३१२१ गयाप्रसाद त्रिपाठी, सिवारपूर, मंडला।

३१२२ गयाप्रसाद माणिक, औरंगाबाद, गया।
३१२३ गवीश।
३१२४ गायत्री देवी।
३१२५ गार्गीदीन शुक्ल डाक्टर, कानपूर।
३१२६ गिरिजादत्त वाजपेयी।
३१२७ गिरिजाप्रसाद दुबे।
३१२८ गिरिजाप्रसाद शर्म्मा, जगन्नाथडीह, हज़ारीबाग।
३१२९ गिरिधरलाल, गया।
३१३० गिरिधर शर्म्मा, झालावार, झालरापाटन।
३१३१ गिरिधारी कवि।
३१३२ गिरिवरसिंह ठाकुर।
३१३३ गुरुदत्त शुक्ल, कालाकाँकर।
३१३४ गुरुदयाल, मौरपूर, कानपूर।
३१३५ गुरुबक्ससिंह, अबुध, कानपूर।
३१३६ गुलज़ारीलाल (लाल) अकबरपूर, कानपूर।
३१३७ गुलज़ारीलाल अवस्थी, बाँदा।
३१३८ गुलज़ारीलाल तेवारी, घाटमपूर, कानपूर।
३१३९ गुलाबराम गुप्त, छतरपूर।
३१४० गुलाबसेठ, छतरपूर।
३१४१ गुलामी।
३१४२ गुलालचंद चौबे।
३१४३ गोकर्णनाथ, चौबेपूर, कानपूर।
३१४४ गोकर्णप्रसाद, केसरीगंज, सीतापूर।
३१४५ गोकुलदास, बनारस।
३१४६ गोकुलप्रसाद त्रिपाठी, नयाबाज़ार, अजमेर।
३१४७ गोकुलप्रसाद त्रिपाठी, हेल्थ आफ़िसर, बनारस।
३१४८ गोकुलप्रसाद शुक्ल।
३१४९ गोपालदास।
३१५० गोपालदास असिस्टंट मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस।
३१५१ गोपालप्रसाद।
३१५२ गोपालप्रसाद खत्री।
३१५३ गोपालप्रसाद दुबे, डिप्टी इन्स्पेक्टर, काँकेर।
३१५४ गोपीनाथ पुरोहित।
३१५५ गोपीनाथ, बाँकीपूर।
३१५६ गोवर्द्धनलाल, भेलसा।
३१५७ गोवर्धननाथ नग, पटना।
३१५८ गोविंददास, लखनऊ।
३१५९ गोविंदप्रसाद घिरडयाल।
३१६० गोविंदवल्लभ।

३०८४ केदारनाथ अग्रवाल, कानपूर।
३०८५ केदारनाथ पाठक।
३०८६ केवलप्रसाद मिश्र, सिउनी, छपरा।
३०८७ केशरीसिंह।
३०८८ केशरीसिंह बारहट।
३०८९ केशवदेव शास्त्री।
३०९० केशवप्रसादसिंह।
३०९१ कैलासनारायण शुक्ल, अजयगढ़।
३०९२ कृपाशंकर।
३०९३ कृष्णदास।
३०९४ कृष्णप्रसादसिंह, एतिकादपूर, गया।
३०९५ कृष्णबक्सराय, पलामू, जयपूर।
३०९६ कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली, सीतापूर।
३०९७ कृष्णसहाय।
३०९८ कृष्णानंद पाठक, गोपीगंज, मिर्ज़ापुर।
३०९९ क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक-कंपनी, मथुरा।
३१०० खड्गजीत मिश्र।
३१०१ खानआलम।
३१०२ खानसुल्तान।
३१०३ खुन्नामल शर्म्मा मास्टर, मुरादाबाद।
३१०४ खुसालचंद बेहटी, सीतापूर।
३१०५ खैरातीखाँ, देवरी, सागर।
३१०६ गजराजसिंह ठाकुर, अहिरोरी, हरदोई।
३१०७ गणपति जानकीराम दुवे।
३१०८ गणपतिप्रसाद उपाध्याय, स्वर्गद्वार, अयोध्या।
३१०९ गणपति राव खेर।
३११० गणेशजी, भरतपूर।
३१११ गणेशप्रसाद, चितईपुर।
३११२ गणेशप्रसाद, तिलसहरी, कानपुर।
३११३ गणेशसिंह, कोट ढेगब्रस।
३११४ गदाई शेख़।
३११५ गदाधरप्रसाद दुबे, नवाबगंज
३११६ गदाधरप्रसाद वाजपेयी, (गदाधर) केसरीगंज, सीतापूर।
३११७ गदाधरप्रसाद मिश्र।
३११८ गयादीन पटवारी, तोंदमोढी, विलासपूर।
३११९ गयाप्रसाद अवस्थी, कानपूर।
३१२० गयाप्रसाद जड़िया, नयागाँव।
३१२१ गयाप्रसाद त्रिपाठी, सिवारपूर, मंडला।

३१२२ गयाप्रसाद माणिक, औरंगाबाद, गया।
३१२३ गव्रीश।
३१२४ गायत्री देवी।
३१२५ गार्गीदीन शुक्ल डाक्टर, कानपूर।
३१२६ गिरिजादत्त वाजपेयी।
३१२७ गिरिजाप्रसाद दुबे।
३१२८ गिरिजाप्रसाद शर्म्मा, जगन्नाथडीह, हज़ारीबाग।
३१२९ गिरिधरलाल, गया।
३१३० गिरिधर शर्म्मा, झालावार, झालरापाटन।
३१३१ गिरिधारी कवि।
३१३२ गिरिवरसिंह ठाकुर।
३१३३ गुरुदत्त शुक्ल, कालाकाँकर।
३१३४ गुरुदयाल, मौरपूर, कानपूर।
३१३५ गुरुबक्ससिंह, अबुध, कानपूर।
३१३६ गुलज़ारीलाल (लाल) अकबरपूर, कानपूर।
३१३७ गुलज़ारीलाल अवस्थी, बाँदा।
३१३८ गुलज़ारीलाल तेवारी, घाटमपूर, कानपूर।
३१३९ गुलाबराम गुप्त, छतरपूर।
३१४० गुलाबसेठ, छतरपूर।
३१४१ गुलामी।
३१४२ गुलालचंद चौबे।
३१४३ गोकर्णनाथ, चौबेपूर, कानपूर।
३१४४ गोकर्णप्रसाद, केसरीगंज, सीतापूर।
३१४५ गोकुलदास, बनारस।
३१४६ गोकुलप्रसाद त्रिपाठी, नयाबाज़ार, अजमेर।
३१४७ गोकुलप्रसाद त्रिपाठी, हेल्थ आफ़िसर, बनारस।
३१४८ गोकुलप्रसाद शुक्ल।
३१४९ गोपालदास।
३१५० गोपालदास असिस्टंट मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस।
३१५१ गोपालप्रसाद।
३१५२ गोपालप्रसाद खत्री।
३१५३ गोपालप्रसाद दुबे, डिप्टी इन्स्पेक्टर, काँकेर।
३१५४ गोपीनाथ पुरोहित।
३१५५ गोपीनाथ, बाँकीपूर।
३१५६ गोवर्द्धनलाल, भेलसा।
३१५७ गोवर्धननाथ नग, पटना।
३१५८ गोविंददास, लखनऊ।
३१५९ गोविंदप्रसाद बिरडयाल।
३१६० गोविंदवल्लभ।

३१६१ गोविंदमाधव मिश्र।
३१६२ गोविंदराव दिनकर दाजी शास्त्री पदे।
३१६३ गोविंदशरण।
३१६४ गोविंदशरण त्रिपाठी।
३१६५ गौरीदत्त वाजपेयी।
३१६६ गौरीशंकर जी मिश्र, रंजीत-पुरवा।
३१६७ गौरीशंकर व्यास, इन्द्रगढ़, राजपुताना।
३१६८ गंगानारायण दुबे, लाहौर।
३१६९ गंगाप्रसाद अवस्थी, अली-पूर।
३१७० गंगाप्रसाद वेदपाठी, राजा-पुर।
३१७१ गंगाराम दीक्षित, औनहा, कानपूर।
३१७२ गंगाराम, सोनपुर, सारन।
३१७३ गंगाराम, (रमेश), हसुवा, गया।
३१७४ गंगाशंकर, पचौली।
३१७५ गंगासहाय।
३१७६ गंगोत्रीप्रसादसिंह।
३१७७ ग्यानेन्द्रदत्त त्रिपाठी।
३१७८ ग्यानेन्द्रप्रसाद।
३१७९ घनश्याम आचारी, मिर्ज़ापूर।
३१८० घनश्याम शर्म्मा, मुल्तान।
३१८१ चतुर्भुज औदीच्य।
३१८२ चारवाक भट्ट।
३१८३ चिंतामणि पांडे।
३१८४ चैतन्य नारायण, नारुफगंज, पटना।
३१८५ चंडिकाप्रसाद अवस्थी।
३१८६ चंद्रदेव शर्म्मा।
३१८७ चंद्रमाधव मिश्र।
३१८८ चंद्रशेखर अग्निहोत्री कानपूर।
३१८९ चंद्रशेखर झा, शारदा-सभा, मैहर।
३१९० चंद्रशेखरप्रसाद।
३१९१ चंद्रशेखर मिश्र, कैलास आ-ज़मगढ़।
३१९२ चंद्रावती देवी बनकटा आ-ज़मगढ़।
३१९३ चंद्रिकाप्रसाद, चौंडिया, सीतापूर।
३१९४ चंद्रिकाप्रसाद तेवारी, निहा-लपूर, प्रयाग।
३१९५ चंद्रिकाप्रसाद शुक्ल, बिसवाँ, सीतापूर।
३१९६ छविलालराज कविराव, पेंडरा, विलासपूर।
३१९७ छेदालाल शर्म्मा, नागपूर।
३१९८ छेदासिंह वैरिस्टर, भंड़ारा, मध्यदेश।

३१९९ छेदीलाल ।
३२०० छेदीलाल मिश्र, कन्नौज ।
३२०१ छोटेलाल वैश्य, (लघुलाल) अहरोरी, हरदोई ।
३२०२ जगदीशनारायणसिंह, गोरखपूर ।
३२०३ जगदीश्वरी बाई, बरेली ।
३२०४ जगदेव उपाध्याय ।
३२०५ जगन्नाथ पुच्छरत ।
३२०६ जगन्नाथप्रसाद अवस्थी, पिहानी, हरदोई ।
३२०७ जगन्नाथप्रसाद, डिप्टी-कलेक्टर, बिलासपूर ।
३२०८ जगन्नाथप्रसाद त्रिपाठी ।
३२०९ जगन्नाथ मिश्र, समस्तीपूर, दरभंगा ।
३२१० जगन्नाथसिंह ठाकुर, वरखेरवा, हरदोई ।
३२११ जगेश्वरप्रसाद शुक्ल, अमेठी, लखनऊ ।
३२१२ जग्यराज श्रीनगर ।
३२१३ जनार्दन जोशी ।
३२१४ जनार्दन झा ।
३२१५ जनार्दन मिश्र, (परमेश्वर) सनौर, भागलपूर ।
३२१६ जमुनाप्रसाद पांडेय ।
३२१७ जयदेवप्रसाद, भदनपूर, मैहर ।
३२१८ जयदेवी द्वारा, हाट रानीखेत ।
३२१९ जवाहिरलाल शास्त्री, जयपूर ।
३२२० जानकीप्रसाद त्रिपाठी ।
३२२१ जानकीप्रसाद रंगून ।
३२२२ जानकी बाई, डूंगरपूर ।
३२२३ जानेजाना ।
३२२४ जीतनसिंह ।
३२२५ जीतमल खत्री, कानपूर ।
३२२६ जीवानन्द शर्म्मा ।
३२२७ जुराखनलाल सोनार, बगिया मनीराम, कानपूर ।
३२२८ जुलकरनैन ।
३२२९ जैगोबिन्द, श्रीनगर ।
३२३० जैदेवजी, अलवर ।
३२३१ जैदेवी, जसवन्तनगर ।
३२३२ जैनारायणप्रसाद वाजपेयी, कानपूर ।
३२३३ जैरामदास ब्राह्मण, बनारस ।
३२३४ जैशङ्करसाह ।
३२३५ जोतीप्रसाद देवबन्द ।
३२३६ जोधासिंह महता कुँवर ।
३२३७ ज्वालादत्त शर्म्मा ।
३२३८ ज्वालाप्रसाद मस्तूरी, बिलासपूर ।
३२३९ ज्वालाप्रसाद, मैहर ।
३२४० ज्वालाप्रसाद शुक्ल, नागपूर, जगदीश ।

३२४१ टोडरमल पूर्णमल झुंझुनवाला ।

३२४२ टोहलराम गंगाराम, देराइसमाइल खां पंजाब ।

३२४३ ठाकुरप्रसाद दुबे, गोपालपूर जौनपूर ।

३२४४ ठाकुरप्रसाद शर्म्मा, मथुरा ।

३२४५ तकी खां मोहम्मद ।

३२४६ तनसुख, ब्यावर, राजपूताना ।

३२४७ तरिपालसिंह, सुतिलापग हरदोई ।

३२४८ ताराचरण भट्ट, (तारक) कृष्ण द्वारिक गया ।

३२४९ तिलोचनशर्म्मा बानू, छपरा ।

३२५० तुलसीदास ।

३२५१ तुलसीदास, जबलपूर ।

३२५२ तुलसीराम पांडे ।

३२५३ तुलसीराम वैद्य, छिबरामऊ, फरुखाबाद ।

३२५४ तुंगनारायण मिश्र, खेती कालेज, कानपूर ।

३२५५ तेगअली, (बदमाश दर्पण बनाया) ।

३२५६ तेजनारायण मिश्र, कानपूर ।

३२५७ तोपकुमारी ।

३२५८ त्रिलोचन झा ।

३२५९ दंनासिंह ठाकुर, भोगियापूर, हरदोई ।

३२६० दामोदर दुबे, गंजीपूर, जबलपूर ।

३२६१ दामोदरसहायसिंह ।

३२६२ दिग्पालसिंह ठाकुर, भोगियापूर, हरदोई ।

३२६३ दिग्विजयसिंह ठाकुर, डिकोलिया, सीतापूर ।

३२६४ दीनदयाल त्रिपाठी, इलाहाबाद ।

३२६५ दीनदयाल शर्म्मा, नवीनगर, सीतापूर ।

३२६६ दीनदरवेश ।

३२६७ दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी, मभ्कगवाँ, रायबरेली ।

३२६८ दुर्गाप्रसाद बी० ए० खत्री, काशी ।

३२६९ दुर्गाप्रसाद शुक्ल, गौरी, कानपूर ।

३२७० दुर्गाशंकर हेडमास्टर, सपोल, विलासपूर ।

३२७१ देवदत्तरामकृष्ण, भंडारकर ।

३२७२ देवदत्त शर्म्मा ।

३२७३ देवदत्त शर्म्मा, रतूड़ी ।

३२७४ देवीदयाल, गठिगरा, हरदोई ।

३२७५ देवीदयाल, त्रिपाठी ।

३२७६ द्वारिकाप्रसाद खत्री, वेहटी, सीतापूर ।

३३१६ पुत्तीलाल तेरवा, फ़रुखा-बाद।
३३१७ पुत्तीलाल शुक्ल, अटवा, कानपूर।
३३१८ पुत्तूलाल मिश्र, पिहानी।
३३१९ पुत्तूलाल वैद्य, पिहानी, हरदोई।
३३२० पुरुषोत्तमप्रसाद पण्डित।
३३२१ पुरुषोत्तमप्रसाद पांडे, संभल-पूर।
३३२२ पुरुषोत्तमलालतेवारी, माला खेरी, होशंगाबाद।
३३२३ पूर्णसिंह।
३३२४ पृथ्वीपालसिंह राजा, बारा बंकी।
३३२५ पंचानन।
३३२६ पंथीमिरजा, रोशनज़मीर।
३३२७ प्यारेलाल मिश्र।
३३२८ प्रतापसिंह ठाकुर, हरौनी, लखनऊ।
३३२९ प्रद्युम्नकृष्ण।
३३३० प्रमथनाथ भट्टाचार्य्य।
३३३१ प्रयागदत्त भाट, घासमंडी, कानपूर।
३३३२ प्रयागनारायण (संगम) लखनऊ।
३३३३ प्रयागप्रसाद तेवारी, हड़हा, उन्नाव।
३३३४ प्राणनाथ, ग्वालियर।
३३३५ प्रसिद्धनारायणसिंह।
३३३६ प्रेमनाथयोगेश्वर, इलाहाबाद।
३३३७ फ़ज़ायलख़ाँ।
३३३८ फ़तेहबहादुरलाल, लखनपूर।
३३३९ फ़तेहसिंह वर्मा राजा, पुवायाँ, शाहजहाँपूर।
३३४० फ़रीद।
३३४१ बच्चूलाल दुबे, ग़ाज़ीपूर।
३३४२ बच्चूलाल पंडित, धनवार, हज़ारीबाग।
३३४३ बजरंगलाल शर्मा, झाला-वार, झालरापाटन।
३३४४ बटुकप्रसाद मिश्र, काशी।
३३४५ बटेश्वरदयाल अग्निहोत्री, (लालन) मंगलपूर, कानपूर।
३३४६ बतानूलाल मिश्र, सराय-मीरां।
३३४७ बदरीदत्त शर्मा।
३३४८ बदरीनारायण मिश्र।
३३४९ बद्रीप्रसाद कायस्थ, कठि-गरा, हरदोई।
३३५० बद्रीप्रसाद गुप्त, (गुप्त) कानपूर।
३३५१ बनमालीशंकर मिश्र, मुरादाबाद।

३३५२ बनवारीलाल तेवारी।
३३५३ वरदाकांत लाहरी, दीवान, फ़रीदकोट।
३३५४ बलदेवप्रसाद शुक्ल।
३३५५ बलभद्रप्रसाद (बाल) कानपूर।
३३५६ बलभद्र मिश्र, लखनऊ।
३३५७ बलभद्रसिंह बेहड़ा, बहरायच।
३३५८ बागीश्वर मिश्र, मऊनाटभंजन।
३३५९ वागेश्वरीप्रसाद मिश्र।
३३६० वाजिद (अरेला बनाये)।
३३६१ बाबादीन शुक्ल, यकडला, फ़तेहपूर।
३३६२ बाबूराम शर्मा, इटावा।
३३६३ बाबूराव पराड़कर।
३३६४ बालकृष्णदास पंडित।
३३६५ बालगोविंद (गोविंद) कानपूर।
३३६६ बालचंद शास्त्री, पंडित।
३३६७ बालमुकुंद पांडे, बलुवासारन।
३३६८ बालमुकुंद शुक्ल, कासिया, गोरखपूर।
३३६९ बालाजी माधव लवाटे।
३३७० बालूराम तेवारी, कानपूर।
३३७१ वासुदेव कवि, इस्माईलपूर, गया।
३३७२ वासुदेवतेवारी, गिलिसगंज, कानपूर।
३३७३ वासुदेव मिश्र।
३३७४ वासुदेवराव, सिंगनापुरकर।
३३७५ वाहिद।
३३७६ विद्याधर।
३३७७ विद्याधर दीक्षित, मऊ।
३३७८ विद्याधर शर्मे, बालपूरा।
३३७९ विद्यानाथ।
३३८० विद्यापंडित, ग्वालियर।
३३८१ विद्यावती, सेठाणी।
३३८२ विद्यावती, हरद्वार।
३३८३ विनायक विश्वनाथ।
३३८४ विवेकानंद ब्राह्मण।
३३८५ विश्वनाथजी मिश्र, मिसरौली सुल्तांपूर।
३३८६ विश्वंभरदत्त, टिकैतपूर, बारहबंकी।
३३८७ विश्वंभरनाथ दुबे।
३३८८ विश्वेश्वरप्रसाद अवस्थी, तिलोकपूर, बाराबंकी।
३३८९ विष्णुदत्त शर्मा।
३३९० विष्णुदेवसिंह, रीवां।
३३९१ विष्णुपद वाजपेयी, त्रिधूना, कानपूर।

३३९२ विष्णुप्रसाद, घाटमपूर, कानपूर।
३३९३ बिहारीलाल चतुर्वेदी, प्रोफ़ेसर।
३३९४ बिहारीलाल जानी, भरतपूर।
३३९५ बिहारीलाल, बिदासरिया, आरा।
३३९६ बिहारीलाल, हदुवागंज, अलीगढ़।
३३९७ विहारीसिंह (रसराज) छपरा।
३३९८ बीजा बारगी।
३३९९ बीरलाल रेंडडी, सागर।
३४०० बुद्धुलाल सरावक, बंबई।
३४०१ बेनीप्रसाद पंडित।
३४०२ बेनीप्रसाद बेनी, कानपूर।
३४०३ बेनीमाधव मिश्र, पंडित।
३४०४ बेनीमाधव शुक्ल।
३४०५ बैकुंठनंदन शर्म्मा, (द्विजेंद्र मारुफपुर) प्रयाग।
३४०६ बैजनाथ।
३४०७ बैजनाथप्रसादसिंह, इखलासपूर, शाहाबाद।
३४०८ बैजनाथ मिश्र, लखनऊ।
३४०९ बैजनाथसिंह शर्मा, श्रीकंठपूर, आज़मगढ़।
३४१० बैद्यनाथ।
३४११ बैद्यनाथ नारायणसिंह।
३४१२ बैद्यनाथ मिश्र, गौसगंज, हरदोई।
३४१३ बैद्यनाथ शुक्ल।
३४१४ बृंदावन बांदा।
३४१५ बृंदाबनलाल।
३४१६ बृंदवनालाल वर्म्मा।
३४१७ बंशीधर बेहटी, सीतापूर।
३४१८ बंशीधर शर्मा, ओयलखीरी।
३४१९ बंशीधर शर्मा, वालपूर।
३४२० बंशीधर शुक्ल, मास्टर, सैलाना, मालवा।
३४२१ बांकेविहारी चौबे, (बांके-मंगलपूर) कानपूर।
३४२२ व्यंकटेशनारायण त्रिपाठी।
३४२३ ब्रजचंद, बाबू बनारस।
३४२४ ब्रजनाथ शर्मा, गोस्वामी।
३४२५ ब्रजवल्लभ मिश्र, (पद्यलेखक) सासनी, अलीगढ़।
३४२६ ब्रजविहारीलाल शुक्ल।
३४२७ ब्रजभूषनलाल गुप्त, नौधरा, कानपूर।
३४२८ ब्रजमोहन झा, मैथिल।
३४२९ ब्रजेश भाट, रीवाँ।
३४३० ब्रह्मदत्त उपदेशक, आर्यप्रतिनिधि सभा, लाहौर।

३४३१ भगवतीप्रसाद, पांडे ।
३४३२ भगवानदास, बनारस ।
३४३३ भगवानदीन दीक्षित, मल्लावां ।
३४३४ भगवानदीन, वाजपेयी ।
३४३५ भगवानबक्स, गौरा जामो, ज़िला सुलतानपूर ।
३४३६ भगवानसिंह, अध्यापक, रायपूर ।
३४३७ भगवानी मास्टर, छतरपूर ।
३४३८ भवदेव शास्त्री, वैदिक पाठशाला, नरसिंहपूर ।
३४३९ भवान कवि, अलवर ।
३४४० भवानीदत्त जोशी ।
३४४१ भवानीप्रसाद तेवारी, कैलगढ़ ।
३४४२ भवानीप्रसाद पटवारी, हसनापूर, लखनऊ ।
३४४३ भागवतप्रसादजी पांडे, लखनऊ (मृत) ।
३४४४ भागीरथ मिश्र, ऐरवा, इटावा ।
३४४५ भागीरथी मुदर्रिस, पिलकिछा, जवनपूर ।
३४४६ भुजंगभूषण भट्टाचार्य्य ।
३४४७ भूपसिंह, (भूप) कानपूर ।
३४४८ भुवनेश्वरी देवी ।
३४४९ भैयालाल लक्ष्मीप्रसाद, शुक्ल, येलिचपूर, बग्नेरगंगाई ।
३४५० भैयालाल शुक्ल ।
३४५१ भैरव झा, पीरपैंती ।
३४५२ भैरवप्रसाद, (विप्र) कानपूर ।
३४५३ भोलादत्त पांडे ।
३४५४ भोलानाथ डाक्टर (रायबहादुर) मिश्र, कानपूर ।
३४५५ भोलानाथ फ़तेहपूर, होशंगाबाद ।
३४५६ भोंदूलाल अनंतराम, रायपूर ।
३४५७ मक्खनलाल वकील, लखनऊ ।
३४५८ मदनमोहन भट्ट, (हिन्दीमहाभारत बनाया) ।
३४५९ मदनलाल तेवारी ।
३४६० मदनेश कवि, पटना ।
३४६१ मधुमंगल मिश्र ।
३४६२ मनमोहन, भागलपूर ।
३४६३ मनराखनलाल शुक्ल ।
३४६४ मनोहरलाल बाबू ।
३४६५ मनोहरलाल मिश्र, कानपूर ।
३४६६ मनोहरसिंह कप्तान, तहसीलदार, रीवाँ ।
३४६७ मन्नीलाल भाट, कानपूर ।
३४६८ मन्नीलाल मिश्र (घनश्याम), मौलगंज, कानपूर ।
३४६९ मन्नूलाल उपनाम (मनु) फ़र्रुख़ाबाद ।

३४७० मर्दनसिंह ठाकुर, नादन-टोला, रीवाँ।

३४७१ महम्मदतकीखाँ, छतरपूर।

३४७२ महादेव उपाध्याय, (शिवेश) माया-बिगहा, गया।

३४७३ महादेवप्रसाद उपाध्याय, देवराजपूर, सुल्तांपूर।

३४७४ महादेवप्रसाद शर्मा, ओयल, खीरी।

३४७५ महादेवशरण पांडे, बलुवा, सारन।

३४७६ महादेव शुक्ल, भगवंत-नगर।

३४७७ महादेवी।

३४७८ महावीरप्रसाद, टेढ़ा, उन्नाव।

३४७९ महावीरप्रसाद, मधुप, कान-पूर।

३४८० महावीरसिंह अध्यापक, वेतिया, चंपारन।

३४८७ मालिकराम।

३४८८ मांगीलाल, नीमच।

३४८९ मियां।

३४९० मीरननखशिख।

३४९१ मीरमाधौ।

३४९२ मुकुंदलाल भाट, कानपूर।

३४९३ मुखराम चौवे।

३४९४ मुन्नालाल दुवे, नागपूर।

३४९५ मुन्नालाल मिश्र, नार्मल-स्कूल, रायपूर।

३४९६ मुन्नी देवी, आसाम।

३४९७ मुन्नीलाल, अलीगढ़।

३४९८ मुन्नीलाल बाबू।

३४९९ मुन्नूलाल, (छविनाथ) नौघरा, कानपूर।

३५०० मुन्नूलाल, (भुवनेश) नौवा-गढ़ी, गया।

३५०१ मुरलीधर बाबू बी० ए०।

३५०२ मुरलीधर, लखनऊ।

३५१० मेड़ीलाल त्रिवेदी, कोरौना, सीतापूर।
३५११ मोहब्बतसिंह, दोनवार।
३५१२ मंगलप्रसाद शर्मा, मथुरा।
३५१३ मंगलप्रसाद शुक्ल, कानपूर।
३५१४ मंगलानन्दपुरी, अफरीका, यहाँ अतरसूया, प्रयाग।
३५१५ मंगलीप्रसाद मिश्र, मथुरा।
३५१६ मंसाराम माड़वारी, मंगलपूर, (आनंद) कानपूर।
३५१७ यमुनाप्रसाद पाँडेय।
३५१८ यशवंतसिंह।
३५१९ यशोदा देवी, संपादिका स्त्री-धर्मशिक्षक।
३५२० यशोदानंदन अखौरी।
३५२१ यशोदानंदन शर्मा, पँचमहला टिकारी, गया।
३५२२ युगुलकिशोर मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।
३५२३ युगुलकिशोर मुख़्तार, देववंद।
३५२४ युगुलकिशोर वर्मा, छतरपूर।
३५२५ युगुलकिशोर शुक्ल।
३५२६ रघुनाथ, कटैया, सैहर।
३५२७ रघुनाथप्रसाद तेवारी, (त्रिभुवन)।
३५२८ रघुनाथप्रसाद, लखनऊ।
३५२९ रघुनाथसिंह, भगवानपूर।
३५३० रघुनंदनलाल, केसरीगंज, सीतापूर।
३५३१ रघुनंदनलालमनी, गोइहा, दरभङ्गा।
३५३२ रघुनंदनसिंह बर्मा, भाऊी, लखनऊ।
३५३३ रघुवर त्रिपाठी, संडीला।
३५३४ रघुवरदयाल भाट, कानपूर।
३५३५ रघुवरदयाल मिश्र, डिप्टी-कलेक्टर।
३५३६ रघुवरदयाल शुक्ल, फतूहावाद।
३५३७ रघुबरप्रसाद दुवे।
३५३८ रमताराम, काशी।
३५३९ रमेशदत्त पांडे।
३५४० रसिकेश, कानपूर।
३५४१ रसियानजीबख़ाँ।
३५४२ रहमतुल्ला।
३५४३ राजनारायण (द्विजराज), रानीसराय, आज़मगढ़।
३५४४ राजहंससिंह कुँवर 'झालावार, झालरापाटन।
३५४५ राजाराम (वनारस)।
३५४६ राजाराम दुवे (अधीन), फ़र्रुख़ावाद।
३५४७ राजाराम मिश्र, पदारथपूर, बाँदा।

३५४८ राजेन्द्रप्रसाद, चाकरगंज, बाँकीपूर।

३५४९ राधाबाई, जयपूर।

३५५० राधारमन चौबे।

३५५१ राधारमण मैत्र।

३५५२ राधारमणलाल, हरदोई।

३५५३ रामअवतार दुबे, संडीला (द्विजराम)।

३५५४ रामकरण पं०।

३५५५ रामकीर्तिसिंह वकील, औरंगाबाद, गया।

३५५६ रामकुमार, गोयन का बाबू।

३५५७ रामकृष्णरसिया, कानपूर।

३५५८ रामग़रीब चौबे।

३५५९ रामचन्द्र उपाध्याय, छपरा।

३५६० रामचन्द्र जैन, मथुरा।

३५६१ रामचन्द्र दुबे।

३५६२ रामचरण भाट, (राम) कानपूर।

३५६३ रामचरित उपाध्याय।

३५६४ रामचरित्र तेवारी, डुमरावँ।

३५६५ रामचीज़सिंह, चक्रधरपुर।

३५६६ रामजीलाल वैश्य, नौतनी, उन्नाव।

३५६७ रामजीरत्न पाठक, निवाजीपूर।

३५६८ रामदहिन शर्मा।

३५६९ रामदास कायस्थ, (रस) बड़ी पियरी, बनारस।

३५७० रामदास गौड़ (रस), बनारस।

३५७१ रामदास ठाकुर, नहदा, गुड़र।

३५७२ रामदीन भाट, कोंच।

३५७३ रामदुलारे पांडे, माधव, कानपूर।

३५७४ रामदुलारे मिश्र।

३५७५ रामदुलारी दुबे।

३५७६ रामदेवलाल, सूर्यपूर, आज़मगढ़।

३५७७ रामदेवी, कुँवरि, इलाहाबाद।

३५७८ रामदेवी सहारनपूर।

३५७९ रामनजरसिंह (अजित), गोरखपूर।

३५८० रामनाथ, (राम) मिर्ज़ापूर।

३५८१ रामनारायण दूगड़।

३५८२ रामनारायण, भगवानगंज, लखनऊ।

३५८३ रामनारायण मिश्र, मनियारपूर, आज़मगढ़।

३५८४ रामनारायण मिश्र, लाहबाज़ार, छपरा।

३५८५ रामनारायण मिश्र, श्रीनगर।

३५८६ रामनारायण शर्मा, बरेली।

३५८७ रामनारायणसिंह।

३५८८ रामप्यारे शुक्ल, बलसिंहपूर, सीतापूर ।

३५८९ रामप्रसाद महाजन, क्वैरीपूर, जवनपूर ।

३५९० रामप्रसाद मिश्र, गिलिसबाज़ार, कानपूर ।

३५९१ रामप्रसाद शर्मा, पीपरपाती, गया ।

३५९२ रामबहादुरसिंह, उर्दू बाज़ार, गोरखपूर ।

३५९३ रामविलास शर्मा, (गद्यपद्यलेखक) शाहाबाद, हरदोई ।

३५९४ रामविलास शारदा, अजमेर ।

३५९५ रामबिहारी उपाध्याय, (रंगीले) गोरखपूर ।

३५९६ रामभजन मिश्र, नीमच ।

३५९७ रामभद्र ओझा ।

३५९८ रामभरोसे जी सूर्या, गोरखपूर ।

३५९९ रामभरोसे त्रिपाठी, (विप्र) कानपूर ।

३६०० रामभरोसे शर्म्मा, संपादक, काव्यसुधानिधि, काशी ।

३६०१ रामभूषणदास, अयोध्या ।

३६०२ राममिश्र शास्त्री, काशी ।

३६०३ रामरणविजयसिंह ।

३६०४ रामरतन सनाढ्य, कानपूर ।

३६०५ रामलगन पांडे, बलुवा, सारन ।

३६०६ रामलाल कायस्थ, (रंग) कानपूर ।

३६०७ रामलाल गयावाल, गया ।

३६०८ रामलाल वर्मा, उपन्यासकार ।

३६०९ रामलाल मिश्र ।

३६१० रामशरण त्रिपाठी ।

३६११ रामशरण, रामखगडल, दानापूर ।

३६१२ रामसकल, बकसर, शाहाबाद ।

३६१३ रामसरूप जी महाजन, क्वैरीपूर, जवनपूर ।

३६१४ रामसरूप पाठक ।

३६१५ रामसेवक शर्म्मा ।

३६१६ रामाधीन अवस्थी, मल्लावाँ ।

३६१७ रामानंद ब्रह्मचारी, इमाम, गया ।

३६१८ रामावतार पंडित ।

३६१९ रामावतार पांडे ।

३६२० रामेश्वरप्रसाद त्रिपाठी ।

३६२१ रामेश्वर वाजपेयी ।

३६२२ रुक्मिणीनंदन पंडित ।

३६२३ रुद्रप्रसाद पांडे, पट्टी प्रतापगढ़ ।

३६२४ रुद्रसिंह ठाकुर, बरखेरवा, हरदोई।
३६२५ रूपसिंह त्रिपाठी, बकेवर, इटावा।
३६२६ रंगखानि।
३६२७ लक्खीराम, मथुरा।
३६२८ लक्ष्मणगोविंद आठले।
३६२९ लक्ष्मीदत्तशर्म्मा, आनंदपूर, गया।
३६३० लक्ष्मीधर दीक्षित, सीतापूर।
३६३१ लक्ष्मीधर वाजपेयी।
३६३२ लक्ष्मीनारायण पुरोहित।
३६३३ लक्ष्मीनारायण मिश्र, कानपूर।
३६३४ लक्ष्मीनारायण रईस, सिकंदराराव।
३६३५ लक्ष्मीनारायणलाल, वकील।
३६३६ लक्ष्मीनारायणसिंह।
३६३७ लक्ष्मीशंकर द्विवेदी।
३६३८ लक्ष्मीशंकर मिश्र, गोलागंज, लखनऊ।
३६३९ ललिताप्रसाद शर्म्मा, बरेली।
३६४० लल्लीप्रसाद पांडे।
३६४१ लालताप्रसाद सुरहुरपुर, फ़ैज़ाबाद।
३६४२ लालबहादुरसिंह ढेंगवसि, सुलतानपूर।
३६४३ लालमनिराय।
३६४४ लालसिंह ठाकुर, इन्दौर।
३६४५ लालसिंह ठाकुर, बीकानेर।
३६४६ लावण्यप्रभावसु।
३६४७ लेखनाथ झा मनीगाहरी, दरभंगा।
३३४८ लोकनाथ त्रिपाठी।
३६४९ लोकमणि।
३६५० शशिभूषण चटर्जी।
३६५१ शारदाप्रसाद, कोसी, मथुरा।
३६५२ शारदाप्रसाद, मैहर।
३६५३ शाह मोहम्मद।
३६५४ शाहशफ़ी।
३६५५ शादहादी।
३६५६ शांति देवी, बनारस।
३६५७ शिवचन्द्रबलदेव।
३६५८ शिवचंद्र शर्मा, जमालपूर, मैमनसिंह।
३६५९ शिवदत्त पांडे, फ़रुख़ाबाद।
३६६० शिवदयाल शुक्ल।
३६६१ शिवदासपांडे, मस्तूरी, बिलासपूर।
३६६२ शिवदुलारे त्रिपाठी, सिउनी, छपरा।
३६६३ शिवदुलारे पांडे, बलुवा, सारन।
३६६४ शिवनाथ शर्म्मा, संपादक आनंद, लखनऊ।

३६६५ शिवनारायण दुबे, जयपूर।
३६६६ शिवनारायण शुक्ल।
३६६७ शिवनारायणसिंह, हाजीपूर।
३६६८ शिवनंदन त्रिपाठी, अजमेर।
३६६९ शिवनंदनप्रसाद त्रिपाठी पदारथपूर, बाँदा।
३६७० शिवप्रसाद कवीश्वर।
३६७१ शिवप्रसाद, कानपूर।
३६७२ शिवप्रसाद गुप्त, काशी।
३६७३ शिवप्रसाद त्रिपाठी, उरई, कोंच।
३६७४ शिवप्रसाद दलपतिराम।
३६७५ शिवप्रसाद पाँडे, महेंद्रू, बाँकीपूर।
३६७६ शिवप्रसाद मिश्र वकील, मंत्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधिसभा, फ़र्रुख़ाबाद।
३६७७ शिवबालकराम पाँडे, खानपूर, कानपूर।
३६७८ शिवभजनलाल त्रिवेदी।
३६७९ शिवशेखरप्रसाद अवस्थी, गनियारी, बिलासपूर।
३६८० शिवशंकर दीक्षित, बिलासपूर।
३६८१ शिवशंकर भट्ट।
३६८२ शिवसिंह नेरी, बदायूँ।
३६८३ शिवाधार पाँडे।
३६८४ शिवाधार शुक्ल, बरेली।
३६८५ शीतलाप्रसाद, त्रिपाठी, अजमेर।
३६८६ शुकदेवप्रसाद त्रिपाठी।
३६८७ शेरसिंह कुमार, करणवास।
३६८८ शंकरदत्त वाजपेयी।
३६८९ शंकरप्रसाद, तमेर, बिलासपूर
३६९० शंकरप्रसाद दीक्षित, लखना, इटावा।
३६९१ शंकरप्रसाद मिश्र, अहमदाबाद।
३६९२ शंकरसहाय, ज़िला हरदोई।
३६९३ श्यामनाथ, जयपूर।
३६९४ श्यामनाथ शर्म्मा।
३६९५ श्यामलाल, कानपूर।
३६९६ श्यामलाल वर्मा, सारङ्गगढ़, रायपूर।
३६९७ श्यामलाल शर्मा, आहर, बुलंदशहर।
३६९८ श्यामलाल सिंह, आगरा।
३६९९ श्यामसुन्दर वैद्य कपूरिया।
३७०० श्यामाबाई, उमरिया, रीवाँ।
३७०१ श्रीकांत शर्मा, जहानाबाद, गया।
३७०२ श्रीकृष्ण शास्त्री तैलंग।
३७०३ श्रीकंठ शर्म्मा।

३७०४ श्रीनारायण मिश्र।
३७०५ श्रीप्रकाश।
३७०६ श्रीलाल शालग्राम पांडे।
३७०७ सखाराम गणेश देउस्कर।
३७०८ सतगुरुशरण प्रसाद, गोंड़ा।
३७०९ सत्यनारायण, धाधूपूर, आगरा।
३७१० सत्यनारायण शुक्ल, कानपूर।
३७११ सत्यबन्धुदास।
३७१२ सत्यवती देवी, सहारनपूर।
३७१३ सत्यशरण, रतूड़ी।
३७१४ सदाराम बाबुलिया, देवप्रयाग, ज़ि० गढ़वाल।
३७१५ सनातन शर्मा सकलानी।
३७१६ सरयूनारायण त्रिपाठी।
३७१७ सरयूप्रसाद वाजपेयी, गौरी, कानपूर।
३७१८ सहदेवप्रसाद।
३७१९ सहदेव सिंह।
३७२० सालार बख्श, छतरपूर।
३७२१ साहेब।
३७२२ साहेबप्रसादसिंह, बाँकीपूर।
३७२३ सिद्धिनाथ दीक्षित, नागपूर।
३७२४ सिद्धेश्वर शर्म्मा।
३७२५ सीतलप्रसाद वर्णी।
३७२६ सीताराम छोटेराम शुक्ल, औरङ्गाबाद।
३७२७ सीताराम मिश्र, भवना, छपरा।
३७२८ सीताराम सिंह।
३७२९ सुखदेवी, काशीपूर।
३७३० सुरेन्द्र शर्मा, बिसवाँ, सीतापूर।
३७३१ सुशीला देवी, गोरखपूर।
३७३२ सुंदरलाल मंडल, प्रानपट्टी, पुनिंया।
३७३३ सुंदरलाल शर्मा, मंत्री कवि-समाज, राजिम।
३७३४ सुंदरलाल शुक्ल वकील, नीमच।
३७३५ सूरजभान वकील, देववंद।
३७३६ सूरतिसिंह ठाकुर, पुवायां, हरदोई।
३७३७ सूर्य्यत्रिपाठी, लाहबाज़ार, छपरा।
३७३८ सूर्य्यनाथ मिश्र, शाहदरा, पटना।
३७३९ सूर्य्यनारायण कोढ, मिर्ज़ापूर
३७४० सूर्य्यनारायण दीक्षित, खीरी।
३७४१ सूर्य्यप्रसाद दीक्षित, तुर्तीपूर।
३७४२ सूर्य्यप्रसाद, पिहानी, हरदोई।
३७४३ सूर्य्यमल, अध्यापक, बलरामपूर, गोंड़ा।
३७४४ सैलानीराम, रायपूर।

३७४५ सोनईप्रसाद भाट, गोंडा।
३७४६ संकटाप्रसाद।
३७४७ स्वरूपलाल, जबलपूर।
३७४८ हज़ारीलाल त्रिपाठी, कानपूर।
३७४९ हनुमंतसिंह, जहँगीराबाद।
३७५० हरदयाल त्रिवेदी।
३७५१ हरदयाल बाबू एम० ए०।
३७५२ हरनारायण एम० ए०।
३७५३ हरलालप्रसाद हेडमास्टर, कुसीर, बिलासपूर।
३७५४ हरिदास माणिक।
३७५५ हरिप्रसाद सेठ।
३७५६ हरिपालसिंह, हरदोई।
३७५७ हरिवल्लभ शर्म्मा।

———

परिशिष्ट नम्बर ३

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	लिखित	उचित
१०८१	६	ढ़ाउ	उढ़ा
१०६०	५	संग्रहीत	संगृहीत
११०४	८	कवूलों	कवूलो
१११०	२	मड़े	वड़े
१११६	११	उदाय	उदय
११३१	११	भ्र	भ्रू
११५८	१६	फ़ाजिल	फ़ाज़िल
११६५	२०	१६६०	१६११
११७७	२२	मूख	मूर्ख
१२१८ व ११७६	१२ व १८	श्रणी	श्रेणी
११८८	१७	भगद्वचनामृत	भगवद्वचनामृत
११६४	१८	मिटैया	मिठैया
१२०३	२	जा	जो
१२१२	१५	पोराणिक	पौराणिक
१२१५	११	सधारण	साधारण
१२१८	१५	पूव	पूर्व
१२३७	शिरोभाग	र्त्तमान	वर्त्तमान

पृष्ठ	पंक्ति	लिखित	उचित
१२४०	१२	१६४१	१६४५
१२४७	१२	मज़ाक	मज़ाक,
१२५३	१२	राजसिंह, (जयपूर),	राजसिंह (जयपूर),
१२६०	२०	वष	वर्ष
१२६८	२१	लख़नऊ	लखनऊ
१२७०	२१	विलास	विशाल
१२६०	६	दच्चण	दक्षिण
१३०१	१३	१६७६	१६०६
१३०१ व १३०२	१६ व ३	कविता	जन्म
१३०७	८	श्रणी	श्रेणी
१३२५	१५	संप्रह	संग्रह
१३२८	७	उटैं	उठैं
१३२८	२३	बूंदीके	बूंदी
१३४३	१२	नव	नव
१३७८	६	द्रपद	द्रुपद
१३८३	२०	वावू	बाबू
१३८५	४	वण्डरिक	वराडरिक
१३६०	१७	रचनाकाल	रचना
१३६५	१२	द्रम	द्रुम
१४०१	शिरोभाग	वत्तमान	वर्त्तमान
१४०३	२	१	२
१४४८	४	मंत्रावली	मंजावली

शुद्धिपत्र।

पंक्ति	लिखित	उचित
९	तजक	ताजिक
६	लसे	रसे
५	मिष्टर	मिस्टर
९	२५२७	२८२७
१५	१२६५	१९६५
१	१८४२	१९४२
१४	१८४८	१९४८
१	सची	सूची
२७	साहय	सहाय
२०	पलपति	दलपति